आदर्श-नरेश



आदर्श नरेश

श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर खेतड़ी का जीवन-चरित्र

लेखक—

भारतीय गोधन, अरविंद-चरित, सीकर का इतिहास, खेतड़ी का इतिहास,

खेतड़ी नरेश और विवेकानन्द, शेखावतों का इतिहास—

आदि के रचयिता, भूतपूर्व दैनिक

कलकत्ता-समाचार-सम्पादक

पण्डित झाबरमल्ल शर्मा

प्रस्तावना-लेखक

पुरातत्त्वविद् रायबहादुर महामहोपाध्याय साहित्यवाचस्पति

डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा डी-लिट्,

प्रकाशक

शेखावाटी हिस्टॉरिकल रिसर्च ऑफिस,

जसरापुर—खेतड़ी (राजपूताना)

P. O. Jasrapur, Via Khetri (Rajputana)

वि० १९९७] १९४० [मूल्य २॥)

प्रकाशक :—

श्री जयदेव शर्मा बी-कॉम०

जसरापुर—खेतड़ी (राजपूताना)

प्रथम संस्करण १०००

मुद्रक—

भगवतीप्रसाद सिंह

न्यू राजस्थान प्रेस,

७३।ए, चासाधोबा पाड़ा स्ट्रीट,

कलकत्ता

आदर्श नरेश ९८



श्रीमान् राजा अजीतसिंहजी बहादुर, खेतड़ी

समर्पण

विविधगुणालंकृता, स्वधर्म-परायणा, कर्तव्य-दक्षा,

परम विदुषी

श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर (खेतड़ी) की

कनिष्ठा राजकुमारी

श्रीमती चन्द्रकुमारी देवीजी

(राज-माता प्रतापगढ़ स्टेट—राजपूताना)

के

कर कमलों में

आपके स्वर्गीय पितृदेव की

यह जीवन-गाथा

आपके प्रिय पुत्र

श्रीमान् हिज हाईनेस महारावत सर रामसिंहजी साहब बहादुर

के० सी० एस० आई० प्रतापगढ़-नरेश के

श्री० युवराज महाराजकुमार के

शुभ जन्मोपलक्ष में

सादर समर्पित।

—झाबरमल्ल शर्मा

……"What little I have done for the improvement of India would not have been done if Rajaji had not met me."

—**Swami Vivekananda.**

अर्थात्

"भारतवर्ष की उन्नति के लिये जो थोड़ा बहुत मैंने किया है, वह न होता यदि राजाजी (श्री० अजीतसिंहजी साहब, खेतड़ी-नरेश) मुझे न मिलते।"

—स्वामी विवेकानन्द

यः खेतड़ी पत्तन राज्य-पीठ—

प्रतिष्ठितः खड्गवशीकृतारिः ।

समस्त शेखावत शेखर श्री—

रंहो सजीयादजितादि सिंहः ॥

—जयपुर विलासे श्रीकृष्णराम कवेः ।

······"राजा श्री अजीतसिंहजी बहादुर बड़े यशस्वी और विद्याप्रेमी हुए। गणित-शास्त्र में उनकी अद्भुत गति थी। विज्ञान उन्हें बहुत प्रिय था। राजनीति में वे दक्ष और गुणग्राहिता में अद्वितीय थे। दर्शन और अध्यात्म की रुचि उन्हें इतनी थी कि विलायत जाने के पहले और पीछे स्वामी विवेकानन्द उनके यहां महीनों रहे। स्वामीजी से घंटों शास्त्र-चर्चा हुआ करती। राजपूताने में प्रसिद्ध है कि जयपुर के पुण्यश्लोक महाराजा श्री रामसिंहजी को छोड़कर ऐसी सर्वतोमुख प्रतिभा राजा श्री अजीतसिंहजी ही में दिखाई दी।"······

—श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी।

अजितसिंह नररत्न का, यह जीवन-वृत्तान्त,
जिसके चरितादर्श से, शिक्षा मिले नितांत।

विषय-सूची



प्रस्तावना

खेतड़ी, राजपूताना के प्रसिद्ध नगर जयपुर से प्रायः ९० मील की दूरी पर है, जहाँ के स्वामी आंबेर के कछवाहा राजा उदयकर्ण के पौत्र मोकल के पुत्र शेखा के वंशधर हैं। शेखा के नाम से उसके वंशज शेखावत और उनका आवास-स्थान शेखावाटी कहलाता है।

मुगल साम्राज्य के उन्नति-काल में शेखावत सरदार शाही मनसबदार थे। उक्त साम्राज्य की रक्षा और विस्तार के लिये अनेक बार युद्धों में भाग लेकर उन्होंने वीरता प्रदर्शित की थी, जिसके फलस्वरूप उनका अधिकार उनके अधिकृत प्रदेश पर बना रहा। मुगलों की अवनति के दिनों में आंबेर (जयपुर) के महाराजा सवाई जयसिंह ने शेखावतों की स्वतन्त्रता नष्ट कर उन्हें अपना खिराजगुजार सामन्त बनाया।

खेतड़ी भी जयपुर दरबार का खिराजगुजार है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा भारत में अंग्रेजी राज्य स्थापित होने के समय खेतड़ी के स्वामी राजा अभयसिंह ने लड़ाइयों में महत्त्वपूर्ण सैनिक सहायता दी। इसके उपलक्ष में उसको कोट-पूतली का परगना वंश परम्परा के लिये प्राप्त हुआ।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में खेतड़ी की गद्दी पर राजा शिवनाथसिंह था। वि० सं० १८६६ में उसका परलोक-वास होने के २५ दिन पीछे उत्पन्न उसका शिशु पुत्र फतहसिंह खेतड़ी का राजा हुआ। राजपूताने के क्षत्रिय नरेशों में वही सर्व प्रथम व्यक्ति था, जिसने अंग्रेजी भाषा का समुचित ज्ञान प्राप्त किया था, किन्तु उसका २८ वर्ष की आयु में ही निःसन्तान देहान्त हो गया। उसने अपनी मृत्यु के पूर्व अलसीसर के ठाकुर छत्रसिंह के पुत्र अजीतसिंह को होनहार समझ अपना दत्तक पुत्र बना लिया था। वि० सं० १६२७ में केवल ६ वर्ष की अवस्था में अजीतसिंह खेतड़ी का स्वामी हुआ। उस समय जयपुर की गद्दी पर परम विद्यानुरागी महाराजा रामसिंह (दूसरा) था।

अजीतसिंह प्रखर बुद्धिशाली था। उसने स्वल्प समय में ही हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं के साथ ही संस्कृत भाषा का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। गणित और वेदान्त के अतिरिक्त साहित्य एवं संगीत की ओर भी उसकी रुचि थी। खेतड़ी का शासन-प्रबन्ध हाथ में लेने के बाद उसने अपने राज्य और प्रजा की उन्नति की ओर ध्यान दिया। वह बड़ा मनस्वी, विवेकशील, विद्वान्, गुणग्राहक, नीतिकुशल, न्यायप्रिय, समदर्शी, मिलनसार और उदार शासक था। साहित्य और कला से उसको पूर्ण अनुराग था एवं इनका वह यथार्थ परीक्षक था। उसको खगोल का भी अच्छा ज्ञान था,

जो आजकल के नरेशों में बहुत कम पाया जाता है। हिन्दू-धर्म के अद्वितीय विवेचक और परम दार्शनिक प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्द का, जिसने अमेरिका आदि सुदूरवर्ती देशों में हिन्दूधर्म की महत्ता स्थापित कर दी थी, वह आश्रय-स्थल था। अपनी प्रजा के प्रति उसका बड़ा प्रेम था। शिक्षा प्रचार की सुव्यवस्था के साथ खेतड़ी में कई लोकोपयोगी कार्यों और सुधारों का श्रीगणेश उसके समय में ही हुआ। संवत् १९५३ और ५६ जैसे भीषण अकालों के समय उसने प्रजा और पशुओं की रक्षा के लिये निःसंकोच धन-व्यय कर प्रजा-प्रेम का आदर्श उदाहरण उपस्थित किया।

सन् १८९७ ई० में स्वर्गीया महाराणी विक्टोरिया की हीरक जयन्ती के अवसर पर राजा अजीतसिंह लण्डन गया और इङ्गलैण्ड, फ्रांस, बेलजियम, जर्मनी आदि देशों की यात्रा में तत्कालीन बड़े बड़े राजनीतिज्ञों से भेंट कर उसने अपने अनुभव में वृद्धि की। यूरोप की यात्रा से लौटने पर बम्बई में न्यायमूर्ति जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे के सभापतित्व में उसका अभिनन्दन किया गया था। वह कलकत्ते, बम्बई और देश के विभिन्न भागों में जहाँ कहीं भी गया, वहीं उसका लोगोंने अच्छा स्वागत किया। उसका उसकी प्रजा में ही नहीं वरन् भारत के अन्य प्रान्तों में भी नाम और सम्मान था।

आज से लगभग ५० वर्ष पूर्व जब राजा अजीतसिंह आगरे में स्वामी विवेकानन्द सहित ठहरा हुआ था, मेरा उससे मिलना हुआ था। उस समय उसके मिष्ट भाषण, देशप्रेम, विद्यानुराग, धर्माभिरुचि, सौजन्य और तेजस्विता से मैं बड़ा प्रभावित हुआ। खेद है कि, ऐसे परोपकारी और आदर्श नरेश का ४० वर्ष की आयु में आगरे के सिकन्दरे के मकबरे से गिर कर ई० सं० १६०१ ता० १८ जनवरी को स्वर्गबास हो गया। वस्तुतः राजा अजीतसिंह भारत का एक उज्ज्वल रत्न था और उसकी असामयिक मृत्यु से देश की जो हानि हुई, उसकी पूर्त्ति होना कठिन है।

यह पुस्तक उसी सर्वगुणालंकृत आदर्श नरेश राजा अजीतसिंह का जीवन-चरित्र है। दैनिक कलकत्ता-समाचार आदि पत्रों के भूतपूर्व सम्पादक और हिन्दी के ख्यातनामा लेखक श्री पण्डित झाबरमल्ल शर्मा ने बड़े परिश्रमपूर्वक इसे लिख कर एक खटकनेवाले अभाव की पूर्ति की है। अनुसंधान-प्रिय लेखक ने इस जीवन-चरित्र के लिखने में राजा साहब के लिखे पत्रों और प्रामाणिक सज्जनों द्वारा प्राप्त सामग्री का पूरा उपयोग किया है। इससे पुस्तक की प्रामाणिकता बढ़ गयी है।

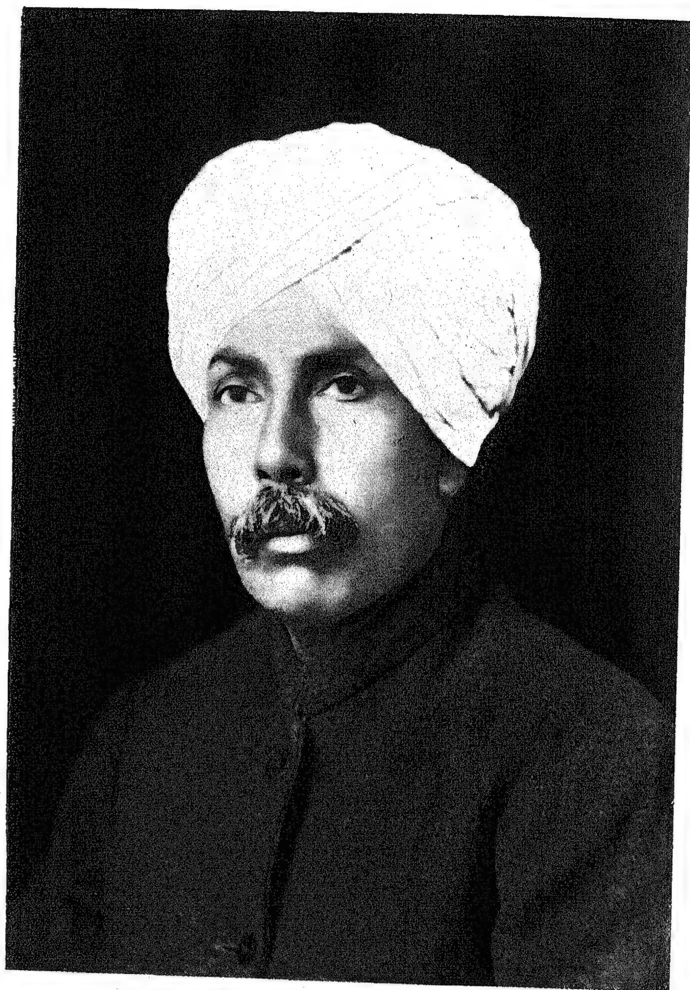
जीवन-चरित्र इतिहास के समान ही साहित्य का एक उपयोगी अंग है। चरित्र-निर्माण और जीवन-मार्ग निर्धारित करने में इसके द्वारा अच्छा एवं अनुकरणीय आदर्श उपस्थित होता है। हिन्दी-साहित्य में जीवन-चरित्रों का खेदजनक

अभाव है। यह हर्ष का विषय है कि, अब इस ओर लेखकों की रुचि बढ़ रही है और कई नये जीवन-चरित्र प्रकाश में आने लगे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हिन्दी संसार प्रस्तुत पुस्तक का समुचित आदर कर इसके लेखक का श्रम सफल करेगा।

अजमेर,
ता० २७ जुलाई, १९४० ई०

गौरीशंकर हीराचंद ओझा
(रायबहादुर, महामहोपाध्याय, डाक्टर, साहित्यवाचस्पति इत्यादि)

ग्रन्थकार



श्री पण्डित झाबरमल्ल शर्मा, साहित्य-भूषण

* श्रीहरिः शरणम् *

लेखक का वक्तव्य

सन् १९२० ई० की बात है। हिन्दी जगत् के प्रख्यात श्री पण्डित चन्द्रधरजी शर्मा गुलेरी बी० ए० का पत्र इस स्वीयत्वपूर्ण अनुरोध के साथ मिला कि खेतड़ी की राजकुमारी श्रीमती चन्द्रकुमारीजी की उत्कट इच्छा अपने पूज्य पिता की जीवनी लिखा कर प्रकाशित कराने की है, इसलिये आप स्वर्गीय खेतड़ी-नरेश राजा अजीतसिंहजी बहादुर की जीवनी लिखिये।

स्वर्गीय राजा अजीतसिंहजी बहादुर के प्रति हृदय में अत्यन्त समादर-भाव रखनेवाला मैं खेतड़ी का एक प्रजा-जन हूँ। जब सन् १९१० ई० में राजा साहब के एकमात्र मेधावी पुत्र श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर का असामयिक परलोकवास हो गया, तब से ही मैं अपने अन्तःकरण की प्रेरणा से राजा साहब की जीवनी लिखने की आवश्यकता का अनुभव कर रहा था। खेतड़ी की परमादरणीया राजकुमारी श्रीमती चन्द्रकुमारीजी की आज्ञा से बन्धुवर श्री० गुलेरीजी के लिखे पत्र ने मुझे उसी समय कर्त्तव्यारूढ़ कर दिया। मैंने स्वीकृति लिख भेजी, जिसके फलस्वरूप मैं प्रतापगढ़ बुलाया गया। वहां से श्रीमती राजकुमारीजी (खेतड़ी) की आज्ञा पाकर मैं लौटा। सामग्री सङ्कलनपूर्वक सुविधा और अवकाश के

अनुसार लिखने का क्रम जारी रहा। किन्तु 'श्रेयांसि बहु विघ्नानि' वाली कहावत हुई। ईश्वर को धन्यवाद है कि, जिसकी कृपा से आज पूरे २० वर्ष के बाद इस पुस्तक को सम्पूर्णता पर पहुँचा कर मैं अपने कर्त्तव्य से उपराम हुआ।

संवत् १९२७ विक्रमाब्द—अपनी ९ वर्ष की अवस्था में खेतड़ी की राज-गद्दी पर बैठने के अनन्तर संवत् १९३७ वि० में शिक्षा एवं अधिकार सम्पन्न होकर श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने शासन-भार ग्रहण किया था। इसके पश्चात् उन्होंने अपने विशिष्ट गुणों का परिचय दिया और वे अपने समय—संवत् १९३७ से १९५७ वि० तदनुसार सन् १८८० ई० से १९०० ई० तक के राजपूताने में एक न्यायपरायण, धर्मज्ञ, उदार, प्रजाहितसाधक, शिक्षित, शिक्षाप्रचारक, सुधारप्रिय, कविता-नुरागी और गुणग्राही आदर्श शासक समझे गये। प्राचीनता के अनुयायी होते हुए भी राजा साहब नवीनता के मित्र थे। श्री स्वामी विवेकानन्दजी को श्रीमान् ने उस समय आश्रय एवं सहायता दी थी, जिस समय कि उनकी विशेष ख्याति का डंका नहीं बजा था। स्वयं स्वामीजी ने यह मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है। मैंने उन्हीं राजा साहब के जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली मुख्य-मुख्य बातों को इस पुस्तक में क्रम-वद्ध करने का प्रयत्न किया है। मेरा विश्वास है, कि हमारे देश के वर्तमान श्रीमन्त महाराजा, राजा नवाब एवं सामंत सरदार लोग यदि उनकी तरह अपने शासन को सर्वप्रिय तथा सर्वोप-

योगी बनाने का उद्योग करें तो वे प्रजा-हित के साथ अपना भी उत्कर्ष बढ़ा सकते हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, दक्षिणी राजपूताना-स्थित राज्य देवलिया—प्रतापगढ़ की वर्तमान राजमाता—खेतड़ी की राजकुमारी श्रीमती चन्द्रकुमारीजी की—जो अपनी दयालुता एवं न्यायनिष्ठा के कारण प्रतापगढ़ राज्य की समस्त प्रजा के हृदय की अधिष्ठात्री देवी बनी हुई हैं—प्रेरणा एवं सहायता से ही इस पुस्तक को इस रूप में हिन्दी संसार के समक्ष रखने का मैं सुयोग पा सका हूँ। श्रीमतीजी ने बड़े अनुराग के साथ आद्योपान्त पढ़ कर इसका समर्पण स्वीकार करने की कृपा की है और उनके आज्ञानुवर्ती प्रजाप्रिय सुयोग्य पुत्र हिज हाईनेस श्रीमान् महारावत सर रामसिंहजी साहब बहादुर के० सी० एस० आई० प्रतापगढ़-नरेश के श्री युवराज महाराज-कुमार साहब के सर्वाकांक्षित शुभ जन्म* के उपलक्ष्य में यह प्रकाशित की जा रही है। आशा है, इसके द्वारा जीवन-चरित्र विषयक हिन्दी साहित्य के एक अङ्ग की पूर्ति में आंशिक सहायता पहुँचेगी और सहृदय पाठक—पाठिकाओं को राजस्थान के एक छोटे संस्थान—खेतड़ी के उन्नतमना प्रजावत्सल स्वर्गीय नरेश

* ईश्वर के परम अनुग्रह से ता० १७ मार्च सन् १९४० ई० को श्रीमान् प्रतापगढ़-नरेश की ध्रांगधड़ा वाली श्रीमती महारानी साहबा के गर्भ से श्री महाराजकुमार साहब का जन्म हुआ है।

का, जिसने राजपूताने के नरेशों में सर्व प्रथम विलायत-यात्रा कर स्वयं भारत-सम्राज्ञी श्रीमती महारानी विक्टोरिया द्वारा सम्मानित होने के अतिरिक्त न केवल उस समय के बृटिश राजनीतिज्ञों से ही, बल्कि जर्मनी के भूतपूर्व सम्राट् कैसर विलियम जैसे सत्ताधीश, प्रिंस बिस्मार्क जैसे राजनीति-विशारद और मैक्समूलर जैसे पण्डितप्रवर से मिल कर परिचय बढ़ाने का साहस किया था, शिक्षाप्रद जीवनवृत्त पढ़ने का सुयोग मिलेगा। इसके लिये माननीया श्रीमती राजकुमारी चन्द्रकुमारीजी (खेतड़ी) का धन्यवाद करना चाहिये।

स्वनामधन्य पुरातत्त्वविद् इतिहासज्ञ-शिरोमणि रायबहादुर महामहोपाध्याय डा० गौरीशंकरजी हीराचंद ओझा डी-लिट् साहित्यवाचस्पति महोदय की कृपा के लिये किन शब्दों में धन्यवाद किया जाय ? आप श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर के आतिथ्य द्वारा सत्कृत होने बाले विद्वानों में से हैं। आपने अति वृद्धावस्था होते हुए भी प्रेमवश इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने की अनुकम्पा की है, इसके लिये मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

श्रीमान् राजाधिराज उम्मेदसिंहजी साहब शाहपुरा (राजपूताना), श्रीमान् लेफ्टिनेंट कर्नल रावल विशनसिंहजी साहब बिसाऊ (जयपुर राज्य) और श्रीमान् लेफ्टिनेंट कर्नल राव-बहादुर ठा० दलपतसिंहजी साहब रोहेट (जोधपुर-राज्य) ने अपना अमूल्य समय देकर आवश्यक परामर्श द्वारा मुझे अनुगृहीत किया है।

इस पुस्तक के सङ्कलन में मुझे शेखावाटी के इतिहासानुसन्धान क्रम में संगृहीत अपनी सामग्री के अतिरिक्त स्वर्गीय राजा साहब के कृपापात्र सेवक बरेली निवासी पंडित कन्हैयालालजी, मुन्शी जगमोहनलालजी, पंडित लक्ष्मीनारायणजी और रामकृष्ण मिशन के अध्यक्ष श्री स्वामी अखण्डानन्दजी (श्री स्वामी विवेकानन्दजी के गुरु-भाई और सहकारी कार्यकर्त्ता) से बड़ी सहायता मिली है। दुःख है कि इस पुस्तक को प्रकाशित देखने के पहले ही ये सज्जन परलोकवासी हो गये। ईश्वर इनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। मैं मेयो कालेज अजमेर-स्थित अलवर हाउस के भूतपूर्व मोतमिद पंडित शंकरलालजी शर्मा की कृपा का भी आभार मानता हूं। आपने श्रीमान् राजा साहब के शिक्षानुराग का परिचायक विवरण देने का अनुग्रह किया है। खेतड़ी के भूतपूर्व सुपरिण्टेंडेंट मि० जी० ए० कैरल (G. A. Carroll Esqr.) द्वारा स्वर्गीय राजाजी बहादुर के समय खेतड़ी के 'वाक़आत' के रजिष्टरों से प्रयोजनीय नोट्स लेने की मुझे सुविधा प्राप्त हुई थी। एतदर्थ वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

मनुष्य से भूल होना संभव है। इस पुस्तक में भी जो भूलें, त्रुटियां और अशुद्धियां मानव-स्वभाव, दृष्टि-दोष एवं भ्रमप्रमाद से रह गयी हों, उनके लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूं।

अपने सहायकों में श्रीयुक्त शाह मन्नालालजी कामदार साहब राजे श्री कचहरी खासगी प्रतापगढ़-राज्य का धन्यवाद

न करना अकृतज्ञता होगी। आप समय समय पर मेरे पत्रों का स्मरण दिला कर श्रीमती राजमाता का ध्यान आकर्षित करते रहे।

राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता के उत्साही मन्त्री श्री० बाबू रघुनाथप्रसादजी सिंहानिया का भी मैं आभारी हूं कि जिन्होंने प्रूफ देखने और मुद्रण की व्यवस्था करने में मेरा हाथ बँटाया है। खेद है कि, सावधानी रखने पर भी प्रूफ सम्बन्धी कितनी ही अशुद्धियां रह गयीं, जिनके लिये शुद्धि-पत्र दे दिया गया है। 'व' की जगह 'ब' और 'ब' की जगह 'व' छप जाने की गलतियों को भी पाठक कृपया सुधार कर पढ़ेंगे।

जसरापुर (खेतड़ी),
श्रावण कृष्णा १० सोमवार
सं० १९९७ वि०, २९-७-४० ई०

विनयावनत,
झाबरमल्ल शर्मा

खेतड़ी का परिचय

जयपुर-राज्य के अधीन शेखावाटी प्रान्त में खेतड़ी चीफ-शिप * है। उसका क्षेत्रफल परगना कोटपूतली सहित ६०३ वर्गमील है, जिसमें प्रायः १६८ वर्गमील भूमि पर्वताच्छादित और खंदकमय है। जन-संख्या एक लाख तेतीस हजार के लगभग है।

खेतड़ी का शासक शेखावत-वंश आंबेर—जयपुर के कछ-वाहा राजवंश की एक बलिष्ठ एवं बहु संख्याविशिष्ट शाखा है। आंबेर के तेरहवें अधीश्वर राजा उदयकर्णजी (संवत् १४२३—१४४५ वि०) के अन्यतम पुत्र राव बालाजी के प्रतापी पौत्र राव शेखाजी शेखावत वंश के मूल पुरुष हुए। खेतड़ी-संस्थान के संस्थापक झुंझुनू पंचपाना के जनक बीरवर शार्दूलसिंहजी शेखावत के पौत्र (श्री ठा० किशनसिंहजी के बड़े पुत्र) भोपाल-सिंहजी थे।

---

* Report on the Political Administration of Rajputana (1865), Rajputana Gazetteer (1879), and List of Ruling Princes, Chiefs and Leading Personages.—Rajputana Ajmer (Sixth Edition 1931)

खेतड़ी की राजगद्दी पर श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर के पहले निम्नलिखित नरेश बैठ चुके हैं:—

(१) भोपालसिंहजी (सं० १८०२—१८२८
सन् १७४५—१७७१ ई०)

(२) बाघसिंहजी (सं० १८२८—१८५७
सन् १७७१—१८०० ई०)

(३) अभयसिंहजी* (सं० १८५७—१८८३
सन् १८००—१८२६ ई०)

(४) बखतावरसिंहजी (सं० १८८३—१८८६
सन् १८२६—१८२९ ई०)

(५) शिवनाथसिंहजी (सं० १८८६—१८९९
सन् १८२९—१८४३ ई०)

(६) फतहसिंहजी (सं० १८९९—१९२७
सन् १८४३—१८७० ई०)

---

* राजा अभयसिंहजी ने ईस्ट इण्डिया कंपनी की सरकार से कोटपूतली का परगना प्राप्त कर अपने राज्य की अभिवृद्धि की। आरम्भ में सन् १८०३ ई० में उन्होंने लार्ड लेक द्वारा बीस हजार रुपये वार्षिक इस्तमरारी पट्टे पर यह परगना लिया था। पीछे वही सन् १८०६ ई० में सैनिक सहायता के बदले में फ्री गिफ्ट (निःशुल्क) कर दिया गया। (देखो सनद नं० XLVI.)

—Treaties Engagements aud Sanads (Aitchison) Vol. III Page 127.



खेतड़ी--किला भोपालगढ़ सहित

खेतड़ी के दर्शनीय स्थानों में किला भोपालगढ़, किला बाघोर, अजीतनिवास बाग, बंध अजीतसागर, बंध अजीत समंद, सुखमहल, जयनिवास, दीवानखाना, कोठी, अजीत हस्पताल, जयसिंह हाईस्कूल, लाईब्रेरी तथा तालाब इत्यादि और सार्वजनिक संस्थाओं में श्री रघुनाथ गोशाला, रामायण-सत्संग, सरस्वती-पुस्तकालय एवं बालचर-संस्था उल्लेखनीय हैं। भोपालगढ़ और किला बाघोर के पहाड़ों की ऊंचाई समुद्र की सतह से क्रमानुसार २३३७ और २८७९ फुट है। बाघोर पहाड़ अपनी प्राकृतिक शोभा और सुशीलता के कारण बड़ा रमणीय समझा जाता है।

आदर्श नरेश

श्री राजा अजीतसिंहजी बहादुर, खेतड़ी

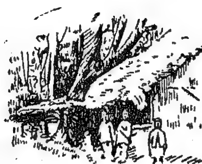
का

जीवन-चरित्र

श्रीहरिःशरणम्

अध्याय पहला

जन्म और खेतड़ी गोद बैठना।



शेखावाटी अलसीसर[1] के ठाकुर साहब छत्रसिंहजी की रत्नगर्भा धर्मपत्नी श्रीमती ऊदावतजी[2] के गर्भ से विक्रम संवत् १६१८ के आश्विन की शुक्ला त्रयोदशी को अजीतसिंह का,—खेतड़ी के भावी नरेश का,—उस नरेश का जन्म हुआ था, जिसने समय पर खेतड़ी के प्रजा-

१ ठिकाना अलसीसर, खेतड़ी-संस्थान के संस्थापक भोपालसिंहजी के अन्यतम सहोदर पहाड़सिंहजी के द्वितीय पुत्र समर्थसिंहजी के वंशजों का है। समर्थसिंहजी के पुत्र कुशलसिंहजी हुए और उनके विशालसिंहजी। विशालसिंहजी के पुत्र छत्रसिंहजी, बनेसिंहजी और गणपतसिंहजी थे। पहाड़सिंहजी के प्रथम, तृतीय और चतुर्थ पुत्र इन्द्रसिंहजी, शेरसिंहजी एवं भवानीसिंहजी के वंशधर क्रमानुसार हीरवा, बदनगढ़ और अडूका के सरदार हैं।

२ श्रीमती ऊदावतजी जोधपुर राज्यान्तर्गत ठिकाने नीमाज की थीं।

जनों तथा भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों के बहुसंख्यक अधिवासियों का ही नहीं, प्रत्युत् सुदूरवर्ती पश्चिम देशवासियों का चित्त भी अपने गुणों के प्रति आकृष्ट किया। हमारे चरित-नायक अजीतसिंह ने अपनी उम्र का पांचवां वर्ष पूरा कर छठे में पदार्पण किया, उसी समय उनके पिता ठाकुर छत्रसिंहजी का स्वर्गवास हो गया था। उनकी पति-प्राणा सहधर्मिणी श्रीमती ऊदावतजी भी पति का असह्य वियोग सहन न करके छै महीने के भीतर ही अपने एक मात्र पुत्र अजीतसिंह को निराधार छोड़कर चल बसीं। बालक अजीतसिंह पितृ-सुख और मातृ-सुख दोनों से वञ्चित हो गये। ऐसी स्थिति में उनका रक्षण एवं पोषण उनकी दादीजी की देखरेख में धाभाई उदयरामजी की उदार-हृदया स्त्री ने किया था, जो उनकी धाय थी।

राजस्थान के क्षत्रियों ने अपनी वीरता, धीरता तथा त्याग आदि सद्‌गुणों से जो कीर्ति पायी, शताब्दियाँ बीत जाने पर भी उसका साक्षी इतिहास है। उन्होंने स्व-धर्मरक्षा के लिये जो अधिक परिश्रम किया, जो प्राणों की बाजी लगायी, वह अतुलनीय है। यह नियम है कि शक्ति के अधिक विनियोग के पश्चात् अवसाद आता है। जिस परिमाण में जिस शक्ति का उपयोग करना आवश्यक होता है, उससे अधिक परिमाण में यदि उसका उपयोग किया जाय तो वह शक्ति कुछ काल के लिये स्तब्ध हो जाती है। उसकी कर्तृत्व शक्ति रह नहीं जाती। यही दशा राजस्थान के क्षत्रियों की हुई। मुसलमान बादशाहों

की चढ़ती कला के समय राजस्थान के क्षत्रियों को स्वकर्तव्य-पालन के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ा था। यह सिलसिला कुछ वर्षों तक ही नहीं रहा, किन्तु सदियों तक क्षत्रियों को अपनी शक्ति का अधिक—अत्यधिक परिमाण में विनियोग करना पड़ा। इसका परिणाम था अवसाद और उस अवसाद ने उनका पिण्ड अबतक भी नहीं छोड़ा है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, अवसाद कर्तव्य का शत्रु है। जिस जाति अथवा व्यक्ति के यहां अवसाद को स्थान मिला कि, वह अपने उच्च कर्तव्यों की ओर से मुँह फेर लेता है। राजस्थान के क्षत्रियों में जो विलासिता और मद्य-पानादि दोष अधिक मात्रा में दिखलायी दे रहे हैं, उनके मूल में वही अवसाद काम कर रहा है। उस अवसाद-ग्रस्त क्षत्रिय जाति में अजीतसिंह के समान कर्तव्यतत्पर तेजस्वी पुरुष का जन्म ग्रहण करना निस्सन्देह ईश्वर की कृपा का फल था।

बालकों में उसी प्रकार शक्तियाँ छिपी रहती हैं, जिस प्रकार छोटे बीज में विशाल वृक्ष। शिक्षा और सत्सङ्ग के प्रभाव से उन शक्तियों का क्रमिक विकास होता है। दुःख है कि, बालकों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। यही कारण है कि, बहुत से बालक उत्तम शक्तियाँ लेकर जन्म लेते हैं सही, परन्तु शिक्षा के अभाव और संग-दोष के प्रभाव से उनकी उन्नति मारी जाती है। वे फूल जो एक दिन खिलते, जिनके सौरभ से दिग्-दिगन्त सुवासित होते, सदा के लिये मुरझा जाते हैं। उनमें

बहुत से तो ऐसे होते हैं, जिनके सौरभ की किसी को खबर तक नहीं रहती। वे आते हैं और चले जाते हैं। समाज एवं संसार उनसे अपरिचित ही रह जाता है। बालक अजीतसिंह की भी यही दशा होती, यदि खेतड़ी के राजा फतहसिंहजी बहादुर की दृष्टि उन पर न पड़ती। राजा फतहसिंहजी ने अजीतसिंह का उन्नत ललाट देख कर उसकी सुप्त वृत्तियाँ पहचानी। उन्होंने देखा कि यह ग्रामीण बालक साधारण नहीं है। यह मानवी उत्तम गुणों का भण्डार है। इसमें वे सब शक्तियां बीज रूप से अन्तर्हित हैं, जिनसे मनुष्य संसार के लिये उपयुक्त हो सकता है। इन्हीं सब बातों को सोचते हुए अपुत्रक राजा फतहसिंहजी ने पितृ-मातृ हीन अजीतसिंह को गोद लेकर पुत्रवान बनने का शुभ निश्चय किया। अपने इस निश्चय की सूचना उन्होंने सर्वत्र दे दी।

राजा फतहसिंहजी का स्वर्गवास होते ही उनके पूर्व निश्चया-नुसार अलसीसर से लाये जाकर संवत् १९२७ वि० पौष कृष्णा ८ गुरुवार तदनुसार ता० १५ दिसम्बर सन् १८७० ई० को राजा अजीतसिंहजी राजा रूप से खेतड़ी की राजगद्दी पर विराजमान हुए। उस समय उनकी अवस्था केवल ९ वर्ष की थी। उस अवसर पर बृटिश गवर्नमेण्ट के प्रतिनिधि की हैसि-यत से जयपुर के पोलिटिकल एजेंट मेजर ई० आर० सी० ब्राडफोर्ड तथा जयपुर-दरबार की तरफ से जयपुर-स्टेट कौंसिल के सदस्य ठाकुर समदकरणजी राठौड़ एवं रेजिडेंसी के वकील पण्डित

मोतीलालजी खेतड़ी पधारे थे और उनकी उपस्थिति में ही राज-तिलकोत्सव सम्पन्न हुआ था।

राजा अजीतसिंहजी बहादुर खेतड़ी के स्वर्गीय राजा फतह-सिंहजी [1] के दत्तक (गोद के) पुत्र थे, इसलिये कोटपूतली के सम्बन्ध में २० हजार रुपये का नजराना बृटिश गवर्नमेंट को

---

१ श्री राजा फतहसिंहजी बहादुर का जन्म अपने पिता खेतड़ी के राजा शिवनाथसिंहजी साहब का परलोक-वास होने के २५ दिन बाद ता० १२ फरवरी सन् १८४२ ई० को हुआ था। उनकी नाबालिगी में राजकार्य का सञ्चालन राजमाता राणावतजी साहबा की आज्ञा के अनुसार होता रहा। राजा फतहसिंहजी साहब ने बालिग होकर शासनाधिकार-ग्रहण करने के बाद बड़ी उन्नति की और उनकी शासन-सुव्यवस्था के लिये पोलिटिकल एजेंट से आरंभ कर वायसराय—गवर्नर-जनरल तक ने प्रशंसा की थी। अपने समय के राजपूताना भर में राजा फतहसिंहजी बहादुर ही प्रथम अंग्रेजी शिक्षित नरेश हुए। उन्होंने अंग्रेजी भाषा में अपना आत्म-चरित्र (Autobiography of the Chief of Khetree) लिख कर सन् १८६९ ई० में प्रकाशित कराया था। इसमें तत्सामयिक राजपूताने की साधारण और शेखावाटी की विशेष रूप से प्रासङ्गिक स्थिति-वर्णना एवं निर्भीक आलोचना की गयी है। पुस्तक १५ अध्यायों में समाप्त हुई है और इसको सन् १८४५ से १८६९ ई० तक के सामाजिक और राजनैतिक विषयों का इतिहास कहना चाहिये।

राजा फतहसिंहजी साहब ने तीन विवाह किये थे। उनकी प्रथम रानी साहबा आउवा (मारवाड़) के ठाकुर साहब कुशलसिंहजी की पुत्री

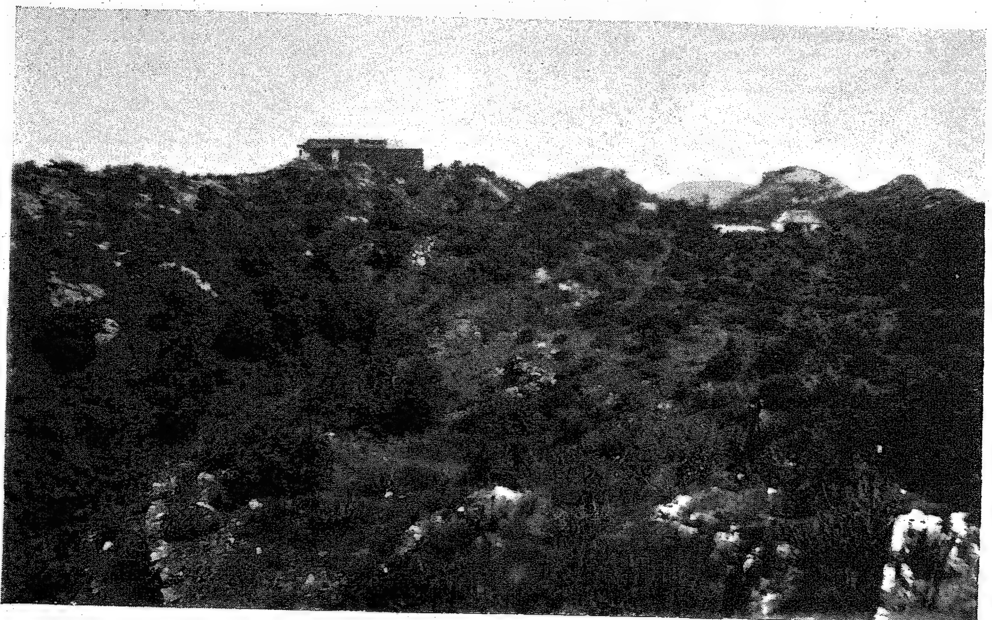
देना पड़ा था। क्योंकि, गोद होने की दशा में उस समय नज़राना लेने का गवर्नमेंट ने नियम [१] बना रक्खा था।

इसी मौके पर जयपुर दरबार ने भी राजा अजीतसिंहजी साहब की गोदनशीनी के नाम का डेढ़ लाख रुपये से अधिक का नज़राना खेतड़ी से लिया। यद्यपि इससे पहले कभी ऐसा नज़राना नहीं लिया गया था। जयपुर राज्य ने नज़राना लिया और आगे के लिये सबसे लेने का नियम बना दिया। इस नियम को लेकर जयपुर दरबार के मातहत ठिकानेदारों में बड़ा असंतोष फैल गया था। परन्तु श्री० महाराजाधिराज सर सवाई रामसिंहजी बहादुर ने अपनी नीतिमत्ता से सब सरदारों को मधुरता के साथ समझा-बुझा कर रजामंद कर लिया।

श्रीमती चांपावतजी, दूसरी नीमां (बीकानेर) के ठा० सा० हरिसिंहजी की पुत्री श्रीमती बीकावतजी और तीसरी भिनाय (अजमेर-मेरवाड़ा) के राजा जोरावरसिंहजी की पुत्री श्रीमती जोधीजी थीं। इनसे उनको कोई सन्तान नहीं हुई। एक पासवान के गर्भ से केवल एक पुत्री का जन्म हुआ था, जिसका विवाह संवत् १९३६ में राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने जोधपुर के भाभा मूलसिंहजी के साथ बड़ी धूमधाम से किया था। राजा फतहसिंहजी बहादुर सन् १८४२ से १८७० ई० तदनुसार संवत् १८९९ से १९२७ वि० तक खेतड़ी की राजगद्दी पर प्रतिष्ठित रहे।

१ Nazarana is taken by the British Government when succession is not in the direct line.

—*Treaties Engagements and Sanads (By Aitchision) Vol. II Page 98.*



वाघोर के किले का प्राकृतिक दृश्य

तत्सामयिक राजपूताना के पोलिटिकल एडमिनिस्ट्रेशन (राज-नैतिक शासन) की रिपोर्ट में इस घटना का उल्लेख है।[१]

राजा फतहसिंहजी बहादुर के द्वादशाह आदि की उत्तर-क्रिया पूरी हो जाने के अनन्तर ठाकुर समदकरणजी तथा पं० मोती-लालजी के साथ ही राजा अजीतसिंहजी बहादुर "मातमी" के लिये जयपुर चले गये और चिर-प्रथानुसार श्री० महाराजा-धिराज सवाई सर रामसिंहजी साहब बहादुर ने खेतड़ी के डेरे पधार कर "मातमपुर्सी"[२] की रस्म अदा की। 'मातमी' के बाद प्रायः डेढ़ महीने में यथा-नियम बिदाई (रुख़सत) हुई। खेतड़ी को बृटिश गवर्नमेंट की ओर से परगना कोटपूतली[३] मिला हुआ है, इस सम्बन्ध से गवर्नमेंट की ओर से भी संवत् १९२९ वि० में गवर्नर-जनरल के राजपूताना स्थित एजेंट (A G. G.) के द्वारा "ख़िलअत" आयी थी।

---

१ Political Administration of Rajputana

—*Jeypoor Agency Report (1872)*

२ मातमपुर्सी—मृतक के शोकाकुल उत्तराधिकारी के प्रति समवेदना प्रकाश करने के साथ उसका शोक दूर कराने की रस्म का नाम है।

३ इष्ट इण्डिया कम्पनी की सरकार के शासन-विस्तार के प्रारंभिक काल में सैनिक-सहायता देने के बदले में लार्ड लेक द्वारा सन् १८०३—६ ई० में कोटपूतली परगना तत्सामयिक खेतड़ी-नरेश राजा अभयसिंहजी ने प्राप्त किया था।

राजा अजीतसिंहजी बहादुर की नाबालिगी में खेतड़ी की शासन-व्यवस्था का भार जयपुर-स्टेट-कौंसिल के ता० १४ फरवरी सन् १८७१ ई० तदनुसार फाल्गुन बदि १० संवत् १९२७ वि० के रोबकार (आज्ञा-पत्र) के अनुसार महकमा मुख्तियारी को दिया गया। उसके मेम्बर ठाकुर शोभागसिंहजी लाडखानी, मुंशी हरिबख्शजी और धाभाई शिवबख्शजी नियुक्त हुए। फौजदारी और दीवानी अदालत का भार लाला हरनारायणजी श्रीमाल को सौंपा गया †

---

† Political Administration of Rajpootana

—*Jeypoor Agency Report Page 80. (1871)*

अध्याय दूसरा

शिक्षा और गुण-सञ्चय ।



जयपुराधिपति हिज हाईनेस श्री० महाराजाधिराज सर सवाई रामसिंहजी साहब बहादुर तत्सामयिक देशी नरेशों में विशेष परिगणनीय पुरुष थे। उन्होंने अपने समय में जयपुर की कीर्ति खूब बढ़ायी। प्रजा को शिक्षित बनाने के लिये महाराजाज् कालेज की स्थापना की और जयपुर को शिल्प-चातुरी का केन्द्र कहलाने का गौरव प्रदान किया। यद्यपि श्री० महाराजाधिराज का खेतड़ी के स्वर्गीय राजा फतहसिंहजी बहादुर से तीव्र विरोध रहा, तथापि राजाजी की असामयिक मृत्यु से उन्हें शोक हुआ और उन्होंने राजाजी के उत्तराधिकारी नाबालिग राजा अजीतसिंहजी को छाती से लगाया—केवल यही नहीं, बल्कि उन्हें सुयोग्य और शिक्षित बनाने का भार भी स्वयं ग्रहण किया।

महाराजाज् कालेज के प्रिन्सिपल (अध्यक्ष) उस समय बाबू कान्तिचन्द्र मुखर्जी महाशय थे और प्रधान मंत्री थे पहाँसू के नवाब मुमताजुद्दौला सर फ़ैज़अली खाँ साहिब [१] ।

१ पहाँसू (अलीगढ़) के नवाब मुमताजुद्दौला सर मुहम्मद फैज अली खाँ, खानबहादुर के० सी० एस० आई० राजपूतों की 'बड़गूजर' खाँप के लालखानी वंश के थे। उनका कुटुम्ब सन् ११८५ ई० के करीब बुलन्दशहर जिले में आबाद हुआ था। प्रबल पराक्रमी प्रतापसिंह बड़-गूजर को अंतिम हिन्दू-सम्राट् पृथ्वीराज चौहान ने अपनी सहायता के लिये बुलाकर पहाँसू में रहने वाले चन्देलों को जीतने का काम सौंपा था। वहाँ उन्होंने अपनी बड़ी शक्ति स्थापित की और कोल के डोर राजा की पुत्री के साथ विवाह करके १५० गाँव प्राप्त किये। प्रतापसिंह से ग्यारहवीं पीढ़ी में लालसिंह हुआ, जिसको बादशाह अकबर ने लालखाँ का नाम बख्शा। उसी लालखाँ के वंशज लालखानी कहलाते हैं। सन् १६३९ ई० में लालखाँ के पुत्र सालिवाहन ने बादशाह शाहजहाँ से पहाँसू सहित ६४ गावों का अधिकार पाया। बादशाह औरङ्गजेब के समय में इस लालखानी वंश को मुसलमान धर्म ग्रहण करने को वाध्य होना पड़ा। वर्तमान पहाँसू स्टेट के संस्थापक मरदानअली खां के पुत्र मुरादअली खाँ थे। सर फ़ैज़ अली खाँ बहादुर मुरादअलीजी के चार पुत्रों में से एक थे। सन् १८५७ ई० के सिपाही-विद्रोह में उनकी सेवा से प्रसन्न होकर गवर्नमेंट ने उन्हें जमीन जागीर और खानबहादुर का खिताब दिया था। जयपुर से भी उन्हें जागीर मिली थी। सन् १८६३ ई० में वे जयपुर के प्रधान मन्त्री बने। उनकी मृत्यु सन् १८९४ ई० में हुई।

दूसरा अध्याय

महाराजाधिराज ने अपने विश्वासी बाबू कान्तिचन्द्र मुखर्जी को खेतड़ी नरेश के लिये अध्यापक नियत करने का भार सौंपा। सन् १८६६ ई० में महाराजाज् कालेज की स्थापना का पहला फल प्रकट हो चुका था। उस वर्ष तीन छात्र इण्ट्रेन्स की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, जिनमें एक पण्डित गोपीनाथजी थे। पण्डित गोपीनाथजी अपने सौजन्य, विनय और विद्यानुराग के कारण कालेज के सभी अध्यापकों के स्नेह-पात्र बने हुए थे। बाबू कान्तिचन्द्र मुखर्जी की कृपा का हाथ उनके सिर पर विशेष रूप से था। उन्होंने सब तरह से पं० गोपीनाथजी को योग्य समझ कर महाराजाधिराज के अनुमोदन से खेतड़ी के राजा अजीतसिंहजी साहब के शिक्षक-पद पर [१] नियुक्त किया।

---

१ नवाब फ़ैज़ अली खाँ साहब ने राजाजी बहादुर को यथारीति अभिवादन करते हुए शिक्षक की नियुक्ति के सम्बन्ध में जो शब्द कहे थे, वे इस प्रकार हैं:—

"बन्दगान आली श्रीजी दाम इक़बालहू आप पर खास नज़र मेहरबानी फरमाते हैं और इल्मी तालीम इन्सान के लिये बेबहाजेवर है, यह आप से पोशीदा नहीं है। बलिहाज इसके इन पं० गोपीनाथजी तालिबे-इल्म को कि, जिन्होंने अभी हाल में इण्ट्रेन्स का सर्टिफ़िकेट हासिल किया है, और मदरसे में चाल चलन क़ाबिलेक़द्र रहा है, आपकी तालीम के लिये तजवीज़ फ़रमायी है। बरवक्त तशरीफ मर्जिये मुबारिक से आगाही और इनके मिला देने का हुक्म फ़रमाया गया था। चुनांचे इसी इत्तवा में

संवत् १९२७ वि० फाल्गुन शुक्ला २ को जयपुरस्थ खेतड़ी-भवन में राजा साहब को विद्यारम्भ कराया गया। उस समय श्री० बाबू कान्तिचन्द्र मुखर्जी महाशय भी उपस्थित थे।

कुछ दिनों के बाद ही होली के अवसर पर राजा अजीत सिंह जी अपनी राजधानी—खेतड़ी को लौटे। उनके अध्यापक भी साथ आये। उन दिनों श्रीमान् किले के महलों में निवास करते थे। अदूरदर्शी स्वार्थी पार्श्ववर्तियों ने देखा कि यदि राजा साहब पढ़-लिख कर विद्वान् बन जायँगे तो हमारा जादू न चल सकेगा। उनकी इच्छा थी कि वे पढ़ने न पावें। इस इच्छा को हृदय में पोषित करने पर भी वे पढ़ाई रोक देने की शक्ति नहीं रखते थे। इसलिये उन्होंने राजाजी को उल्टी पट्टी पढ़ानी शुरू की। पढ़ने की बुराई और न पढ़ने के स्वकल्पित लाभ समझाये। उन्होंने बतलाया कि अधिक पढ़ने से बुद्धि नष्ट हो जाती है, आदमी बुज़दिल और कायर बन जाता है, अपना धर्म छोड़ देता है। एक बालक सदा समीप रहनेवाले अपने आदमियों के मुँह से समझायी हुई इन बुराइयों को बुराई न समझे, यह हो नहीं सकता। परिणाम यह हुआ

आपको इस वक्त तकलीफ दी गयी। आपकी जहानत और इनके तरीकए तालीम से उम्मीद कवी है कि आप बहुत जल्द इल्मी लियाकत हासिल कर सकेंगे।

—पं० गोपीनाथजी का जीवन चरित्र पृष्ठ ३२।

कि, राजा अजीतसिंहजी ने पं० गोपीनाथजी से स्पष्ट कह दिया कि हम पढ़ना नहीं चाहते। पण्डित गोपीनाथजी किले पर बड़े उत्साह से गये थे और वहाँ से हतोत्साहित होकर लौट आये। वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने परिस्थिति की सूचना बा० कान्तिचन्द्र मुखर्जी के पास भेज दी। बाबू कान्तिचन्द्रजी ने उत्तर में आश्वासन दिया और लिखा कि "महाराजा कल यहाँ पहुँचे हैं और पहला मौका मिलते ही मैं तुम्हारे पत्र के अभिप्राय से उन्हें परिचित कर दूँगा। मैं तुम्हें फिर कहता हूँ कि निराश मत होना, जो विघ्न तुम्हारे मार्ग में आ गये हैं, वे क्षण भर में दूर हो जायँगे। तुम्हें राजाजी के पास प्रतिदिन एक बार उपस्थित होने में न चूकना चाहिये। वे पढ़ें या न पढ़ें, इस बात की परवा न करना।*

यह पत्र पाने के बाद अध्यापकजी के हृदय में पुनः आशा का संचार हुआ। वे नियमित रूप से राजाजी के समीप उपस्थित होने लगे। इतने में स्टेट-कौन्सिल जयपुर का पत्र श्रीमान् के पास पहुँच गया, जिसमें पण्डित गोपीनाथजी से पढ़ने

---

* ......The Maharajah has reached this yesterday and I shall make the contents of your letter known to His Highness at the first available opportunity. Don't be discouraged, I tell you once more. The obstacles that now stand in your way will be removed in a trice. You should not fail to wait on the Rao (?) Raja once every day. Never mind whether he would read or not......

—From a letter of Babu Kanti Chandra Mukerji to Pandit Gopinath.

और उन्हें एक सौ रुपये मासिक देते रहने का आदेश था। राजाजी के "हुजूरियों" के लिये अब इन्कार करने का तो कोई उपाय न था। उन्होंने सलाह-मशविरे के बाद यह निश्चय किया कि "देवनागरी राजाजी पढ़ सकते हैं, लेकिन अंग्रेजी बिल्कुल नहीं।" यह निश्चय पं० गोपीनाथजी को सुना दिया गया। इसके बाद की स्थिति का परिचय देने के लिये हम यहाँ "पं० गोपीनाथजी के जीवन चरित्र" से राजा साहब के शिक्षा-अध्याय से सम्बन्ध रखने वाले कुछ अवतरण उद्धृत करते हैं:—

"शिक्षा पुनः आरम्भ हुई, किन्तु विचित्र लीला सहित! अर्थात् नियमित समय, दूसरे दिवस जब पं० गोपीनाथजी किले पर पहुँचे, तो देखा कि श्रीमान् (राजाजी बहादुर) एक सुविशाल प्रासाद में अनुमान डेढ़ सौ-दो सौ शस्त्रधारियों के बीच विराज रहे हैं और सब की आकृति से एक दूसरा ही भाव झलक रहा है। पण्डित गोपीनाथजी क्षण भर सन्देह में आये, किन्तु साहस कर आशीर्वाद निवेदन के पश्चात् अपने स्थान पर बैठ उन्होंने विद्या-विषयक चर्चा उठायी। चर्चा उठाते ही उपस्थित जन-समाज ने एक स्वर से कहा—"श्रीमान् अंग्रेजी पढ़ना नहीं चाहते। देवनागरी थोड़ी-बहुत पढ़ाओ तो पढ़ सकते हैं।"

× × × ×

"पं० गोपीनाथजी ने सभा का रंग-ढंग देख समयोचित भाव धारण कर कहा—"यदि अंग्रेजी पर श्रीमान् की अरुचि

है, न पढ़ें और जब सर्व-समाज की ऐसी सम्मति है, तब मैं पढ़ाना भी नहीं चाहता। देवनागरी पर श्रीमान् का प्रेम है, आप यही पढ़ें। मैं आपका शुभचिन्तक हूँ, किसी भाषा विशेष के लिये मेरा आग्रह नहीं है। मेरा निवेदन तो केवल यह है कि पढ़ें श्रीमान् जो रुचि हो, किन्तु पढ़ें नित्य और नियम पूर्वक; जिससे कि मेरा आना निष्फल न हो"। इस पर श्रीमान् मान्यवर खेतड़ी नरेश ने फरमाया—"हाँ, या ठीक" (हां, यह ठीक है)।

"पं० गोपीनाथजी ने पहुँचने के साथ ही देख लिया था, कि आलमारियों में बहुत सी पुस्तकें भरी हुई हैं। इसलिये अवसर देख कर कहा कि "देवनागरी की पुस्तक में भी यदि किसी प्रकार का सन्देह हो, तो अपने पास को न पढ़ाऊँ। आज्ञा हो तो यहाँ की आलमारियों से ही कोई पुस्तक निकाल लाऊँ।" इस पर बालक नराधिप ने बहुत प्रसन्नता प्रकट की। पण्डित गोपीनाथजी ने आलमारी खोल ज्यों ही पुस्तक उठायी कि संयोगवश हितोपदेश की पुस्तक प्राप्त हुई और वे समयानुकूल पुस्तक पा प्रसन्न हो श्रीमान् के समीप लाये।"

"देवनागरी वर्णमाला का थोड़ा अभ्यास श्रीमान् को था। इस कारण उसके पढ़ने में विशेष कष्ट न हुआ। प्रसन्नता-पूर्वक पढ़ने लगे। पं० गोपीनाथजी इतने को ही धन्यवाद-योग्य जान अपने स्थान पर चले गये। शिक्षा एक प्रकार नित्य होने लगी, पर उसी प्रकार शस्त्रधारियों की मण्डली में।"

× × × ×

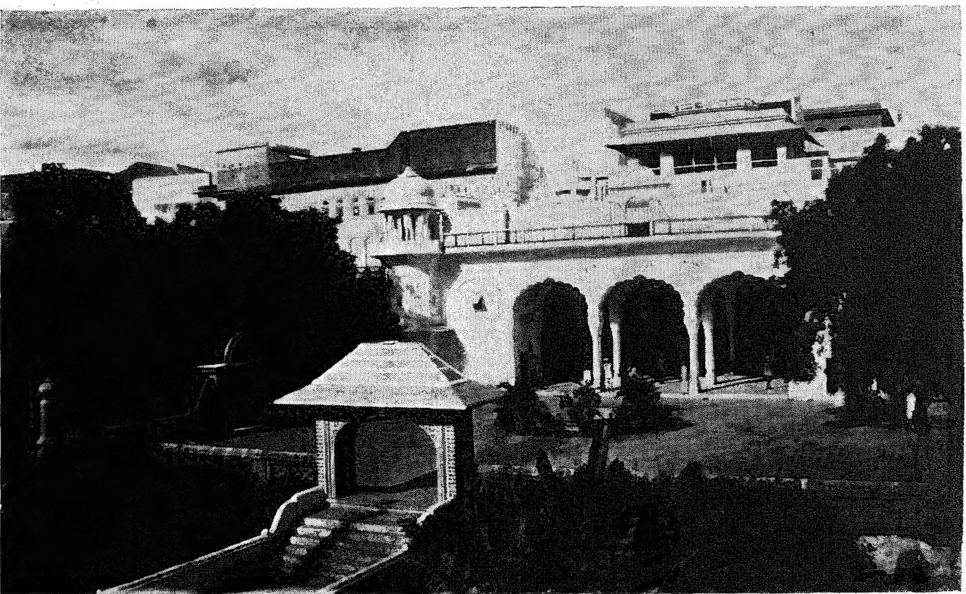
"अनुमान एक मास पर्यन्त यही व्यवस्था चलती रही, किन्तु ज्यों-ज्यों दिवस पर दिवस व्यतीत होने लगे, वे व्यक्ति भी (जो आसन जमा कर बैठते थे) वहाँ बैठने में अनिच्छुक होने लगे। उन्होंने जान लिया कि पशु-पक्षियों की साधारण कहानियों के सिवाय पुस्तक में और कुछ है नहीं। धीरे-धीरे जन-समूह घटने लगा और थोड़े ही काल में गिनती के दो-चार मनुष्य रहने लगे। अध्ययन के समय उन दो-चार व्यक्तियों का उपस्थित रहना स्वयं बालक नराधिप को अनावश्यक ही नहीं, अनुचित प्रतीत होने लगा। अन्त में एक दिन स्वयं श्रीमान् ने आज्ञा दी कि "तुम लोगों की यहां कोई आवश्यकता नहीं, केवल एक ही अनुचर, स्योजीराम खवास[१] रहा करे।" मनोरंजक सदुपदेशों द्वारा जैसे-जैसे श्रीमान् की विद्या की ओर रुचि बढ़ने लगी, वैसे वैसे पं० गोपीनाथजी के प्रति उनका आदर-भाव भी बढ़ने लगा।"

× × × ×

उक्त अवतरणों से यह सहज में ही जाना जा सकता है कि राजाजी को कैसी विरुद्ध परिस्थिति से पार होना पड़ा था। उस स्थिति से पार पाते ही तो राजाजी पढ़ने में इतने तल्लीन हुए कि चारों ओर से अपना ध्यान खींच कर विद्या-प्राप्ति को

---

१ स्योजीराम खवास बड़े विश्वासी और स्वामिभक्त थे। संवत् १९४० वि० आषाढ़ बदी ४ को ४० वर्ष की अवस्था में उनकी मृत्यु हुई।



दीवानखाना, खेतड़ी

ही उन्होंने अपना पहला ध्येय बना लिया। इससे अध्यापक का उत्साह और भी बढ़ा। इसके अनन्तर राजाजी बहादुर जयपुर पधारे। उनके साथ उनके अध्यापक भी गये। वहाँ भी पढ़ने का क्रम चलता रहा। जयपुर जाने पर श्रीमान् राजाजी की मति-गति में कुछ परिवर्तन दिखलाई देने लगा। सुयोग्य अध्यापक ने अंग्रेजी भाषा का महत्व भी उनके हृदय-पटल पर अङ्कित कर दिया। यह देख कर उनके पार्श्ववर्ती चकित हुए और वे साव-धानी से अपना स्वार्थ सिद्ध करने का नया उपाय ढूँढ़ने लगे। खेतड़ी लौटने का अवसर उपस्थित हुआ। उस समय रेल तो थी नहीं, खुश्की-रास्ते से ही आना-जाना पड़ता था। साथ के सब लोगों के लिये उनके पद के अनुसार रथ, बहल, घोड़ा और ऊँट—आदि सवारियों का प्रबन्ध किया गया। राजाजी बहादुर के अध्यापक भी चलने को तैयार हुए। इसी समय स्वार्थियों ने एक काण्ड रचा। एक व्यक्ति को जयपुर दरबार का बनावटी दूत (ढलेत) बनाया गया और उसके मुँह से खेतड़ी को प्रस्थान करने के ठीक समय कहलाया गया कि "जयपुर दरबार का हुक्म है, राजाजी बहादुर उर्दू पढ़ें।" उर्दू पढ़ाने के लिये एक मौलवी साहब तैयार किये गये। पण्डित गोपीनाथजी को भी कह दिया गया कि जयपुर दरबार का हुक्म है, राजाजी बहादुर उर्दू पढ़ेंगे। आप अब यहीं रहें। खेतड़ी पहुँच कर आपको फिर लिखा जायगा। पण्डित गोपी-नाथजी की समझ में कोई बात न आयी। वे जयपुर में ही

ठहर गये। कई महीने बीत गये। राजा साहब के खेतड़ी पहुँच जाने के बाद पण्डितजी को कोई पत्र न मिला।

इस घटना का उल्लेख हमने इसलिये करना उचित समझा कि स्वार्थलोलुप लोगों ने अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिये राजा अजीत-सिंहजी के सन्मार्गावलम्बी बनने में कितनी बाधाएँ उपस्थित की थीं, इसका परिचय पाठकों को मिल जाय। जयपुर-दरबार के नाम से हुक्म सुनाया गया, किन्तु वहाँ इसकी कोई चर्चा न थी। जब पण्डित गोपीनाथजी ने बाबू कान्तिचन्द्र मुखर्जी को पत्र लिख कर पूछा कि "अब मुझे क्या आज्ञा है।" तब इस काण्ड का भेद खुला। मालूम हुआ कि जयपुर-दरबार को इसकी खबर तक नहीं। पं० गोपीनाथजी को खेतड़ी जाने की पुनः आज्ञा हुई और उन्होंने वहाँ पहुँच कर अपना कार्य पहले की तरह आरम्भ कर दिया। वे लोग बड़े झेंपे, जिन्होंने उनको जयपुर में ही छोड़ देने की माया रची थी और राजाजी ने भी इस घटना से परिचित होने के बाद खेद प्रकट किया।

यह स्वाभाविक है कि जब स्वार्थी की कोई चाल असफल हो जाती है, तब वह क्रुद्ध हो जाता है और आवेश में आकर करने न करने योग्य सभी कार्य कर डालता है। श्रीमान् राजाजी के कुछ अन्तरङ्ग कर्मचारियों की भी यही दशा हुई। वे अध्यापक के कार्य में तरह-तरह की अड़चनें डालने लगे। यह अनौचित्य खेतड़ी के हितैषी सरदारों को अखरता था। वे इसे अधःपतन अथवा कुसंग समझते थे। ये सब बातें श्री० महा-

राजाधिराज सवाई सर रामसिंहजी साहब जयपुराधीश के कानों में पहुँचीं। उन्हें बालक खेतड़ी नरेश को शिक्षित बनाने की चिंता हुई। सोच विचार के बाद महाराजाधिराज ने राजाजी को जयपुर बुला लिया और उन्हें नोबल्स स्कूल में भरती करा दिया। यहीं से राजाजी बहादुर की पढ़ाई का क्रम ठीक चला। बहुत कुछ बाधा और विघ्न टल गये। सुयोग्य शिष्य और योग्य गुरु के सम्पर्क से जो सुफल होता है, वह होने लगा। राजाजी ने पढ़ने में आशातीत उन्नति की।

संवत् १९३३ वि० में राजा अजीतसिंहजी की परीक्षा हुई। परीक्षा का सुफल देख कर महाराजाधिराज तथा रेजिडेण्ट साहब ने अपनी आन्तरिक प्रसन्नता प्रकट की। अध्यापक ने इनाम पाया और राजाजी का उत्साह बढ़ाया गया। राजाजी बहादुर का पढ़ने में मन लग गया था। वे इतने दत्तचित्त हुए कि सब बातों की ओर से अपना ध्यान खींच कर पढ़ने को ही ध्येय बना लिया।

राजा अजीतसिंहजी की शिक्षा प्राप्ति में जो वाधा उपस्थित की जाती थी वह अन्तरंग वाधा—बड़ी विकट वाधा थी। उसके उपस्थित करनेवाले सदा सेवा में रहनेवाले कर्मचारी थे। इसलिये वह साधारण न थी। राजाजी कोई अनुभवी न थे, वे एक बालक थे। उस समय तक संसार के स्वरूप का उन्हें कुछ ज्ञान न था। हित के रूप में अहित—या यों कहिये कि मित्र के रूप में शत्रु और शत्रु के रूप में मित्र को उन्होंने

पहचाना न था। ऐसी दशा में कोई बाहरी आदमी जाकर सफलता प्राप्त कर ले, यह बात साधारण कठिन न थी। फिर भी पण्डित गोपीनाथजी को सफलता मिली। इस सफलता का मुख्य कारण था, पण्डित गोपीनाथजी की योग्यता और विद्यानुरागी महाराजाधिराज श्री रामसिंहजी साहब बहादुर की राजाजी पर अनन्य कृपा। इसे खेतड़ी का सौभाग्य ही समझना चाहिये।

श्री० महाराजाधिराज एक उत्कृष्ट शासक के रूप में प्रसिद्ध थे। वे विद्या-प्रेमी, दयालु, उदार और गुणी-गण के पारखी थे। साथ ही सब से प्रधान बात यह थी कि, राजाजी की प्रखर बुद्धि, परिश्रम और दक्षता को देख कर वे अत्यधिक प्रसन्न थे। राजाजी योग्य राजा बनें—यह उनकी इच्छा थी। इसलिये वे केवल अध्यापक नियुक्त करके ही निश्चिन्त न हुए। उन्होंने राजाजी को अपने पास रक्खा और व्यावहारिक शिक्षा के गुरु स्वयं बने। इसका परिणाम यह हुआ कि राजाजी एक चतुर, गुण-ग्राही, विद्या-विनय-सम्पन्न सहृदय शासक तैयार हुए। राजाजी की योग्यता उनका आधार बनी। हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत के साथ साथ उर्दू आदि भाषाओं का भी उन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और वह ज्ञान उनके स्वाध्याय के द्वारा दिनो-दिन बढ़ता ही गया। पण्डित नारायणदासजी और पण्डित रामचन्द्रजी ब्रह्मचारी से उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया था। भोपसिंहजी नामक एक सज्जन

श्री० महाराजाधिराज सवाई रामसिंहजी के आश्रित गुणियों में से थे। वे बरसाने (व्रज-मण्डल) के रहनेवाले मस्त आदमी थे। बड़े अच्छे संगीतज्ञ थे। उनके स्वर में इतनी मधुरता थी कि सुननेवाले मुग्ध हो जाते थे। परन्तु वे सुननेवालों के आग्रह की वाहवाहियों पर चढ़ कर गानेवाले न थे, जब मौज आती थी, तब गाते थे। वीणा बजाने में बड़े निपुण थे। राजाजी ने इन्हीं भोपसिंहजी से वीणा बजाना सीखा था और उनके सितार के उस्ताद मुशरफ़खाँजी [1] कलावत थे। गुण-संचय में—नयी-नयी बातों को जानने और सीखने में राजाजी की स्वाभाविक रुचि थी और इस अभिरुचि ने उनकी जानकारी को बहुत बढ़ा दिया था। बहुश्रुतत्व के वे उदाहरण थे।

:: :: ::

१ मुशरफखाँजी खेतड़ी के राजा साहब के स्वर्गवास के बाद स्वर्गीय अलवर-नरेश हिज हाईनेस सवाई महाराज श्री जयसिंहजी साहब बहादुर के आश्रय में जा रहे थे। अलवरेन्द्र ने उनके गुण की अच्छी कद्र की थी। अखिल भारतीय सङ्गीत-सम्मेलनों में कई बार सम्मिलित होकर उन्होंने प्रशंसा प्राप्त की थी। अब उनकी मृत्यु हो चुकी है।

अध्याय तीसरा

जयपुरेन्द्र की कृपा, विवाह, शासनाधिकार की प्राप्ति और सुव्यवस्था



मनुष्य को देव कोटि में पहुँचा देने का मुख्य साधन ज्ञान है। ज्ञान भी ईश्वर-प्रदत्त और यत्नोपार्जित—दो प्रकार का होता है। राजा अजीतसिंहजी दोनों ही प्रकार की ज्ञान-विभूति से विभूतिवान् थे। उनकी भाव-ग्रहण की प्रवृत्ति विलक्षण थी। यही प्रवृत्ति उनकी योग्यता-वृद्धि एवं प्रतिभा के विकास का कारण बनी। महाराजाधिराज सवाई सर रामसिंहजी बहादुर राजाजी की असाधारण बुद्धिमत्ता देख कर अतिशय प्रसन्न हुए। जयपुर और खेतड़ी के बीच वैमनस्य की जो ग्रन्थियाँ राजा फतहसिंहजी के समय में लग गयी थीं, वे खुल गयीं। वैमनस्य का स्थान पारस्परिक प्रेम ने ग्रहण कर लिया। राजाजी की योग्यता पर मुग्ध होकर महाराजाधिराज ने उन्हें अपनी कौन्सिल (राज-सभा) का सदस्य-पद देना चाहा था, किन्तु

जयपुर के किसी वैतनिक राजकीय पद का भार लेकर कार्य करने को वे तैयार न हुए और कौन्सिल की सदस्यता स्वीकार करने का सधन्यवाद प्रत्याख्यान कर दिया।

महाराजाधिराज के हृदय में राजाजी ने इतना स्थान प्राप्त कर लिया था कि वे बड़े-बड़े दौरों में उन्हें केवल अपने साथ ही नहीं रखते थे,—राजकीय कामों में भी उनसे राय लेते थे। राजाजी साहित्य, सङ्गीतादि कलाओं के न केवल अनुरागी,—बल्कि उनमें अधिकार रखनेवाले थे। गणित और वेदान्त पर उनकी विशेष अभिरुचि थी। महाराजाधिराज की सेवा में रहते-रहते ही वे गणित और वेदान्त के भक्त बने थे। वस्तुतः जयपुरेश उस समय गुण-सञ्चय के केन्द्र हो रहे थे और राजा अजीतसिंहजी उनके कृपा-पात्रों में मुख्य थे, अतएव विशेषज्ञों का कहना है कि बहुत से गुण राजाजी बहादुर में महाराजाधिराज सवाई सर रामसिंहजी साहब बहादुर का अनुसरण करने के फल से आये थे।

संवत् १९३२ वि० में राजाजी बहादुर का उपनयन-संस्कार हुआ। राजाजी की सेवा में रहनेवाले भी साथ ही संस्कृत हुए। उपनयन-संस्कार यथाविधि महाराजाधिराज की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ और महाराजाधिराज के गुरु श्री० सम्राट्जी ही राजाजी बहादुर के गुरु बने।

इधर खेतड़ी में दलबन्दी का बाजार स्वर्गीय राजा फतहसिंह जी की नाबालिगी की तरह ही फिर गर्म हो गया। राजा

साहब के शिक्षा पाने के दिनों में राजकाज चलाने के लिये जो तीन सदस्यों का महकमा मुख्तियारी बनाया गया था, उसके सदस्य ठाकुर शोभागसिंहजी लाडखानी, लाला हरिबक्शजी मुन्शी और धाभाई शिवबख्शजी थे। दलबन्दी के भाव से उक्त सदस्यों का परस्पर में सद्भाव नहीं—मतभेद रहने लगा, जिसका फल यह हुआ कि प्रबन्ध में गड़बड़ मची और कितनी ही शिकायतें पैदा हो गयीं। "लाडखानी और कायस्थ" विरोध की आग सुलग उठी। फलतः खबर पाकर जयपुर दरबार ने हस्तक्षेप किया और सुव्यवस्था के लिये नया प्रबन्ध हुआ। ठाकुर शोभागसिंहजी को अलग होना पड़ा और जयपुर की स्टेट-कौन्सिल के ६ जनवरी सन् १८७५ ई० के रोबकार [१] (आज्ञा-पत्र) के अनुसार मुन्शी कन्हैयालालजी भार्गव मुनसरिम नियुक्त हुए। अन्यान्य बातों के साथ यह आज्ञा भी हुई कि खेतड़ी की मुख्तियारी के मेम्बरों और मुनसरिम का जिन विषयों के सम्बन्ध में मतभेद हो—ऐकमत्य न हो, वे जयपुर-कौन्सिल के पास भेज दिये जाने चाहिये। नाबालिगी में

१ The Rubkar of the 6th January 1875 of the Honourable State Council of Jaipur, appointed Munshi Kanhaiyalal as Raj Munsarim at Khetri with a direction (among others) that matters regarding which the views of the Munsarim and the Mukhtiyars differred should be referred to the Jaipur Council.

—*A Book on Khetri by Pandit Kanhaiyalalji Sahib of Bareilly, Late Private Secretary to Raja Ajitsinghji Bahadur.*

खेतड़ी के मुकद्दमे जयपुर कौन्सिल को भेजे जाने का सिलसिला यहीं से शुरू हुआ समझना चाहिये।

संवत् १९३३ वि० (सन् १८७६ ई०) में महाराजाधिराज के साथ राजा साहब दिल्ली दरबार में सम्मिलित हुए थे।

दिल्ली से लौटने के बाद उसी संवत् १९३३ वि० फाल्गुन शुक्ला २ को राजा साहब ने विवाह के लिये आउवे [1] पधार कर वहाँ के

---

१ "आउवा"—जोधपुर राज्यान्तर्गत राठौड़ वंशोद्भव चांपावतों का एक प्रतिष्ठित ताजीमी ठिकाना है। वहाँ के ठाकुर देवीसिंहजी साहब के दो पुत्र और दो ही पुत्रियाँ थीं। पुत्र बड़े श्री० शंभूसिंहजी और छोटे श्री० शिवदानसिंहजी। इनमें छोटे श्री० शिवदानसिंहजी लामियां गोद चले गये, जिनके कोई सन्तति नहीं हुई और बड़े श्री० शंभूसिंहजी आउवे की गद्दी के मालिक रहे। उनके पुत्र श्री० प्रतापसिंहजी एवं श्री० दलपतसिंहजी हुए। श्री० दलपतसिंहजी ने "गोद" जाकर ठिकाना 'रोहेट' का अधिकार पाया। इस समय आप ही 'रायबहादुर'—पद विभूषित वहां के सरदार हैं। श्री० प्रतापसिंहजी का केवल २५ वर्ष की अवस्था में असामयिक देहान्त हो गया था। उनके एकमात्र पुत्र श्री० नाहरसिंहजी आउवा के वर्तमान ठाकुर साहब हैं। आपने मेयो कालेज, अजमेर में शिक्षा प्राप्त की है।

स्वर्गीय ठाकुर साहब देवीसिंहजी की बड़ी पुत्री खेतड़ी राजा साहब अजीतसिंहजी को विवाही थीं और छोटी पुत्री शेखावाटी में ही बिसाऊ के चीफ राज श्री० ठा० जगतसिंहजी को। दोनों बहिनों का परस्पर में

चांपावत सरदार श्री ठा० देवीसिंहजी साहब की बड़ी पुत्री का पाणिग्रहण किया। बारात धूमधाम के साथ जयपुर से गयी थी। आउवेवालों ने खूब स्वागत-सत्कार किया था। कृपा-वश श्रीमान् जयपुरेन्द्र ने अपनी उपस्थिति से सभी विवाह सम्बन्धी जलसों की शोभा बढ़ायी थी। उन्हीं की इच्छा और आदेश से खेतड़ी की जगह जयपुर से विवाह किया गया था। राजाजी बहादुर के विवाह की खबर पाकर चारण तथा राव बड़ी संख्या में जमा हो गये थे। उस समय की प्रथा के अनु-सार उन सब को 'त्याग' (दान) मुक्त-हस्त होकर दिया गया, किसी को भी निराश नहीं किया गया। वे लोग विवाह की बड़ाई करते हुए आउवे से अपने घर लौटे थे। संवत् १६३५ वि० मार्गशीर्ष कृष्ण ५ को श्री जयपुरेन्द्र ने राजाजी बहादुर को "मोरछल मुरतब" का सम्मान प्रदान कर अपनी कृपा प्रद-र्शित की।

संवत् १६३६ वि० में राजा साहब का श्री महाराजाधिराज जयपुर के साथ जोधपुर जाना हुआ। हिन्दू-कुल सूर्य स्वर्गवासी

गहरा प्रेम था। श्रीमती बड़ी चांपावतजी—खेतड़ी की रानी साहबा के इच्छानुसार उनकी छोटी बहिन बिसाऊ विवाही गयी थीं। जिस समय राजा साहब का विवाह हुआ, उनके श्वसुर आउवा के श्री० ठाकुर साहब देवीसिंहजी का स्वर्गवास हो चुका था और उनके ज्येष्ठ पुत्र शंभूसिंहजी की उम्र ९ वर्ष की थी।



श्रीमान् राजा अजीतसिंहजी बहादुर, खेतड़ी

महाराणा सज्जनसिंहजी साहब बहादुर (उदयपुर-मेवाड़ाधिपति) भी उन दिनों जोधपुर पधारे थे। उस अवसर पर तत्सामयिक जोधपुर-नरेश महाराजाधिराज श्री जशवंतसिंहजी साहब बहादुर और मेजर जनरल महाराजा सर प्रतापसिंहजी साहब राजा अजीतसिंहजी की योग्यता पर इतने मुग्ध हुए कि जयपुरेन्द्र से विशेष अनुरोध करके उन्हें जोधपुर ठहरा लिया और प्रायः डेढ़ महीने तक स-सम्मान रख कर बिदा किया। इसके बाद पारस्परिक प्रीति बढ़ती गयी—आना-जाना, मिलना-जुलना बना ही रहा। महाराणा साहब सज्जनसिंहजी ने भी राजाजी से संलाप कर अपना कृपा-भाव प्रकट किया था। सच तो यह है कि जिन से राजाजी का एक बार मिलना हो जाता था, वे उनके प्रेम की डोरी में बँध जाते थे!

जयपुर-नरेश महाराजाधिराज सवाई सर रामसिंहजी साहब राजाजी पर कितनी कृपा रखते थे, इसका अनुमान इसी से किया जा सकता है कि महाराजाधिराज ने यह आज्ञा दे दी थी कि अपने अभाव-अभियोगों के सम्बन्ध में शेखावाटी के सरदार जयपुर-दरबार से जो कुछ प्रार्थना (मालूम) करनी चाहें, राजाजी साहब के द्वारा करें। तदनुसार राजाजी बहादुर के द्वारा कई एक शेखावत सरदारों के कितने ही बिगड़े हुए काम बने और उलझे हुए मुकद्दमे सुलझे। यहां एक-दो घटनाओं का उल्लेख कर देना भी अप्रासंगिक न होगा। संवत् १९३४ वि० में जयपुरेश की स्वीकृति से बिसाऊ के राजा श्री ठा० साहब

चन्द्रसिंहजी ने अपने कुँवर जगतसिंहजी को सूरजगढ़ के ठाकुर साहब हरिसिंहजी की गोद दे दिया था। संवत् १९३५ वि० में ठाकुर साहब चन्द्रसिंहजी का परलोक-वास हो गया। उनके एक मात्र पुत्र जगतसिंहजी ही थे। अतएव उन्हें सूरजगढ़ से बुलाकर बिसाऊ की गद्दी पर बिठा दिया गया। इस पर जयपुर-दरबार की ओर से यह आपत्ति उठायी गयी कि कुँवर जगतसिंहजी को सूरजगढ़ हमारी स्वीकृति से गोद दिया गया था और अब बिसाऊ की गद्दी पर हमें बिना इत्तिला दिये उन्हें कैसे बिठा दिया गया? वे तो सूरजगढ़ रहेंगे और बिसाऊ के लिये विचार किया जायगा। बिसाऊवाले जयपुर-दरबार की इस सम्मति से सम्मत न हुए। उन्होंने गवर्नर जनरल के राजपूताना स्थित एजेण्ट (बड़े साहब) के पास अपना वकील पैरवी के लिये भेज दिया। इससे जयपुर-दरबार और जयपुर के पोलिटिकल एजेण्ट बिसाऊवालों पर बहुत नाराज़ हो गये। उस नाराजगी को मिटाने की बिसाऊवालों को चिंता हुई और उन्होंने राजा अजीतसिंहजी को ही अपना द्वार बनाया। राजाजी बहादुर ने आजकल के विष-कुम्भ पयोमुख-मित्रों की तरह "बळती में पूला" (आहुति में घृत) नहीं डाला, बल्कि हिताकांक्षी सच्चे मित्र की भाँति बिसाऊ का पक्ष ग्रहण कर महाराजाधिराज की अप्रसन्नता का भाव बिल्कुल दूर हटा कर सद्भाव स्थापन करा दिया। इसी तरह ठाकुर साहब जोरावरसिंहजी के वंशज—ठिकाने चौकड़ी और डूमरावालों से

झगड़ा हो गया था। ठाकुर साहब मङ्गलसिंहजी, शिवदान-सिंहजी और रूड़सिंहजी से तनाज़ा बढ़ कर चार सरदार (झुझारसिंहजी के) ठाकुर मंगलसिंहजी[1] के आदमियों के हाथ से मारे गये। मामला संगीन था। इसके लिये जयपुर की ओर से चौकड़ी पर घोड़ों की तलब बैठ गयी थी। उस समय मध्यस्थ बन, अपनी तौर पर बात की पूरी छान-बीन करके मामले को उचित रीति से निबटा देना सुदक्ष और राजनीतिज्ञ राजा अजीतसिंहजी का ही काम था।

संवत् १९३७ वि० में राजा अजीतसिंहजी को खेतड़ी के शासन का पूर्ण अधिकार प्राप्त हुआ। खेतड़ी की प्रजा के भाग्य

---

१ चौकड़ी के ठा० मङ्गलसिंहजी बड़े आत्माभिमानी सरदार थे। जयपुर दरबार से चौकड़ी सरदार को ताज़ीम का सम्मान प्राप्त है। जयपुर के भूत-पूर्व प्रधानामात्य बा० कान्तिचन्द्र मुखर्जी महाशय से एक दिन ठा० मङ्गलसिंहजी मिलने गये। बाबूजी उस समय तेल की मालिश करवा रहे थे। शरीर से स्थूल थे, बैठे-बैठे ही ज़रा हिल कर कह दिया कि ठाकुर साहब माफ कीजियेगा और उठे नहीं। ठाकुर साहब से रहा नहीं गया और बाबू साहब को हाथ पकड़ कर यह कहते हुए खड़े कर लिया कि "हमारे लिये तो यही (सम्मान-प्रदर्शन) बच गया है और इसे भी आप दबाना चाहते हैं, परन्तु हम अपना अधिकार नहीं छोड़ सकते, अच्छी तरह खड़े हो जाइये।" इसके बाद जब कभी ठाकुर मङ्गलसिंहजी जाते थे, तो देखते ही बाबूजी खड़े हो जाते थे।

के दिन फिरे। प्रजा ने कई प्रकार से अपनी आंतरिक प्रसन्नता प्रकट करते हुए राजाजी की मङ्गल-कामना की और ईश्वर का उपकार माना।

शासन का पूर्णाधिकार पा जाने के बाद भी महाराजाधिराज सवाई सर रामसिंहजी साहब बहादुर के कृपा-पूर्ण आग्रह से राजा साहब को अधिकतर जयपुर ही रहना पड़ा। राजाजी पर ज़यपुरेश की अधिक कृपा देख कर लोग यह अनुमान लगाने में भी नहीं चूके थे कि आश्चर्य नहीं, इस बार शायद राजावत गद्दी की शोभा शेखावत ही बढ़ावें। यद्यपि यह केवल कल्पना-प्रसूत बात थी, तथापि इसके मूल में कारणीभूत महाराजाधिराज का राजाजी के प्रति अनन्य स्नेह ही था।

यह ऐतिहासिक सत्य है कि, चाहे जिस कारण से भी हो, जयपुर दरबार के साथ स्वर्गवासी राजा फतहसिंहजी बहादुर खेतड़ी-नरेश की अनबन रही। उन्होंने अपनी अधिकार सीमा में जयपुर का कर्त्तृत्व नहीं रहने दिया और न जयपुर का नियत वार्षिक "कर" (मामला) ही अदा किया। जयपुर उस "कर" की बकाया छांटता रहा। बहुत बड़ी रकम खेतड़ी के नाम चढ़ गयी थी। श्री० महाराजाधिराज सवाई सर रामसिंहजी साहब ने राजा अजीतसिंहजी के शासन-काल के आरम्भ में गत १९ वर्षों—(संवत् १९१८ से १९३७ वि० तक) के बकाये का पुराना हिसाब १५४९९६) रु० में तय कराया।

महाराजाधिराज को राजा साहब का बड़ा ध्यान था और

वे अपनी कृपा का कुछ विशेष लाभ स्थायी रूप से उन्हें पहुँचाने की बात पर विचार कर ही रहे थे कि उसी संवत् १९३७ वि० (सन् १८८० ई०) में अस्वस्थ हो गये। उनकी अस्वस्थता बढ़ती ही गयी। अंत में भाद्रपद शुक्ला १५ संवत् १९३७ वि० की रात्रि को उनका स्वर्गवास हो गया।

जयपुर के राज-सिंहासन पर ठिकाना ईसरदा से गोद आकर श्री० महाराजाधिराज सवाई माधवसिंहजी बहादुर विराजमान हुए। महाराजाधिराज सवाई सर रामसिंहजी बहादुर के लोकान्तरित होने का राजा अजीतसिंहजी को मार्मिक शोक हुआ। अब जयपुर में उनके लिये वह आकर्षण न रहा, जिसके द्वारा आकर्षित होकर उन्हें अपने संस्थान खेतड़ी से दूर रहना पड़ता था।

जयपुर से राजाजी बहादुर ने खेतड़ी पहुँच कर अपने कार्य-भार को विशेष संलग्नता के साथ ग्रहण किया। कई एक गुणी लोग भी, जो गुण-ग्राहक स्वर्गीय महाराजाधिराज श्री० रामसिंहजी की सेवा में रहते थे, राजाजी के समीप खेतड़ी में उपस्थित हुए और उन्होंने सादर उन्हें अपने पास रक्खा।

उस समय खेतड़ी की अवस्था अत्यन्त चिन्तनीय थी। नाबालिगी में कर्मचारियों की स्वार्थ-प्रधान अन्धाधुन्धी में जितने दोषों का आना सम्भव है, वे पूर्ण रूप से मौजूद थे। राजाजी के शिक्षा-सम्पन्न होकर काम संभालने के समय खेतड़ी पर ११ लाख रुपये का ऋण था। इसमें ५ लाख रुपये तो

स्वर्गीय राजा फतहसिंहजी बहादुर के समय के थे और अवशिष्ट ६ लाख उनकी खुद की नाबालिगी के जमाने के। न कर्मचारियों के वेतन का ठिकाना था और न चिट्ठी और पेटिये का। जिसके परिणाम में बिना किसी प्रतिरोध के प्रजा की लूट मची हुई थी। घोड़े भी दाने और घास के बिना प्रायः व्रत करते थे। चलती गाड़ी को चलाना साधारण बात है, परन्तु अटके हुए शकट को दुर्गम मार्ग से निकाल कर ले जाना सहज नहीं। दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि बिगड़ी दशा को सुधार कर उन्नतावस्था में परिणित कर देना बहुत टेढ़ी खीर है। परन्तु कर्मी के लिये कोई भी बात असंभव नहीं।

खेतड़ी की दशा चिंता से विचलित कर देनेवाली थी, किन्तु राजाजी बहादुर अविचलित हृदय से कर्तव्य-क्षेत्र में डट गये। सभी विभागों पर वे अपनी नियामक दृष्टि रखने लगे। "राज्ञां नीति बलम्"—नीति के इस वचन को उन्होंने अपना सिद्धान्त वाक्य (मोटो) बना लिया। चुन-चुन कर योग्य व्यक्तियों को नियुक्त किया। सबसे पहले यही आवश्यक था, क्योंकि शासन-यंत्र की उत्तमता बिना, शासन-कार्य सुचारु रूप से चल नहीं सकता। खजाने और सेना विभाग का कार्य-भार राजा साहब ने अपने विद्या-गुरु पण्डित गोपीनाथजी को सौंपा था। श्रीमान् की आज्ञा से यह नियम-व्यवस्था हुई:—

(१) कोष में द्रव्याभाव होने के कारण व्यय-सम्बन्धी आज्ञाएँ निज़ामत (कोटपूतली) और तहसीलों पर बाला-

बाला भेजी जाती थी, जिससे न वर्ष भर के आय-व्यय का निश्चय ही हो सकता था और न यह ज्ञात हो सकता था कि किस कार्य के लिये वा किस व्यक्ति को देने के लिये जितने व्यय की आज्ञा भेजी गयी थी, तदनुसार ही व्यय हुआ वा दिया गया अथवा न्यूनाधिक। क्योंकि बहुधा यह पुकार सुनने में आती थी कि आज्ञा इतने की थी, किन्तु व्यय इतना किया गया और इतना कम किया गया। इसके अतिरिक्त मनुष्यों को मार्ग-कष्ट विशेष उठाना पड़ता था। इसके लिये यह नियम किया गया कि समस्त आय पहले कोष (खज़ाने) में आवे और आवश्यकता के अनुसार व्यय-सम्बन्धी आज्ञाएँ खज़ाने के नाम ही हुआ करें।

(२) आटा-दाल, घृत आदि कच्चे सामान की आज्ञाएँ मोदी पर होती थीं, जिससे वस्तु न तो उत्तम और न उचित मूल्य पर ही मिलती थी और न समय पर, क्योंकि निकम्मी और अधिक मूल्य पर देने से ही मोदी को लाभ होता था और जब कभी उसके रुपये विशेष चढ़ जाते, तब दो-दो तीन-तीन दिवस तक वह कुछ देता ही नहीं था। इसके अतिरिक्त उसके हिसाब में बड़े झगड़े और झमेले होते थे, जिससे कर्म-चारियों को स्वार्थ-सिद्धि का अच्छा अवसर मिला हुआ था और राज्य की हानि होती थी। इसके स्थानापन्न सरकारी कोठ्यार की स्थापना की गयी कि जिसमें समय-समय पर सब वस्तुएँ उत्तम और उचित मूल्य पर क्रय करके रक्खी जायँ और

आवश्यकता के अनुसार कोठ्यार (भण्डार) से ही चीजें दी जायँ।

(३) कर्मचारियों के वेतन का यह हाल था कि किसी को छैः-छैः मास किसी को वर्ष-वर्ष भर और किसी को दो-दो वर्ष तक नहीं मिलता था और इसी प्रकार कोई अग्रिम ले बैठता था। इसके प्रतिकार के लिये नियम हुआ कि दुमाहे के दुमाहे सब सेवकों का वेतन दे दिया जाय।

(४) कौन कर्मचारी कहाँ रहा और किसने कितना काम किया, इसके जानने की कोई व्यवस्था न थी। इसके लिये हाज़िरी और गैर-हाज़िरी का रजिस्टर रखने का नियम प्रचलित किया गया।[१]

आगे चल कर पं० गोपीनाथजी की विश्वस्तता, सर्वप्रियता और कार्यनिपुणता से कारखाने-जात का विभाग भी उन्हीं के अधीन कर दिया गया और अनन्तर वे मुख्तारी (खेतड़ी-राज-सभा)[२] के मेम्बर (सदस्य) और अन्त में चीफ मेम्बर

---

१ पण्डित गोपीनाथजी का जीवन-चरित्र।

२ राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने महकमा मुख्तियारी के तीन विभाग निर्दिष्ट किये थे:—(१) इलाका-गैर और अदालतैन (२) रेवेन्यू अथवा कलक्टरी (३) खजाना और फौज। प्रत्येक विभाग का मेम्बर उस विभाग का अफसर समझा जाता था।

(प्रधानामात्य) बनाये गये। इलाका-गैर का काम आरम्भ में कुछ समय तक ठाकुर हरिसिंहजी लाडखानी (निराधनू) तथा कुछ समय तक नवाब ईसेखांजी के जिम्मे रहा और अदालतैन (जुडिशियल) के हाकिम लखनऊ के पण्डित भैंरूँनाथजी (कश्मीरी) नियुक्त किये गये। पश्चात इलाके-गैर और—अदालतैन (जुडिशियल) का काम बहुत वर्षों तक सम्मिलित रूप से चलता रहा और इनके हाकिम ठाकुर रामबख्शसिंहजी लाडखानी और मुंशी जगमोहनलालजी रहे। सीगा माल—रेवेन्यू अथवा कलक्टरी विभाग क्रमशः शाह अर्जुनदासजी, शाह ब्रजलालजी और लाला शोभालालजी श्रीमाल के अधीन रहा। बीच में एक दो बार थोड़े-थोड़े दिनों बहादुरपुर निवासी मीर महम्मद शफीजी ने भी उक्त विभाग का कार्य किया। बरेली-निवासी पं० कन्हैयालालजी राजाजी बहादुर के प्राइवेट सेक्रेटरी तथा इंजीनियरिंग विभाग के प्रधान का कार्य योग्यता पूर्वक सम्पादन करते थे। पं० शंकरलालजी शर्मा, मास्टर रामलालजी और मुहम्मद ईसाकजी ने भी समय समय पर राजाजी के प्राइवेट सेक्रेटरी का काम किया। खैराबाद निवासी मुंशी जमीरअलीजी फौज़दार (मजिस्ट्रेट) के पद पर प्रतिष्ठित रहे और कर्नल रघुबीरसिंहजी, खेतसिंहजी प्रभृति सेना-नायक।

श्रीमान् के पर्सनल स्टाफ—वैयक्तिक सहचर—सेवक-समूह के राजपूत सरदारों में—सीओड़ के रावजी, हरिसिंहजी

लाडखानी (निराधनू), बलजी सलहदीजी का (नगली), दानसिंहजी (गूढ़ा), हरनाथसिंहजी (चिराना), जोरजी (नगली), सुलतानजी (बड़ाऊ) बखूसीरामजी (चिराना), रिधसिंहजी (परसरामजी का), चन्द्रसिंहजी (ठोठी), शिवबख्शसिंहजी (गोपाल का) मोहनसिंहजी (नगली) हरनाथसिंहजी मुलकपुरिया, भैरूँसिंहजी रावजी का, नरसजी मेड़तिया, सेढूसिंहजी (परसरामजी का) खमजी निर्वाण (ल्योंदा) बालजी (चिराणा), जोधजी (बड़ाऊ) सांवतसिंहजी (बड़ाऊ), रावतजी, बलवन्तजी टकणेत, भूरजी मुलकपुरिया, करणजी (बुगाला), भूरजी मेड़तिया प्रभृति थे।

हुजूरियों में मि० पिस्तनजी पारसी, धाभाई उदयरामजी, पुरोहित रामचन्द्रजी अलसीसर के, उस्ताद तकी जमालजी, हकीम अब्दुल अलीजी (टोंक), पं० जगन्नाथजी जोशी अलसीसर के, जोशी हरभगतजी अलसीसर के, हरदत्तरायजी वैद्य सिंघाना के, आनन्दीलालजी वैद्य सिंघाना के, हुसेनअली खाँ पठान, सरदारअली खाँ पठान, अन्नू खाँ कायमखानी, चन्द्रजी श्रीमाल, रावजी शिवशक्ति, उमरमीद, मीर भर मारी, और मिरजा अयूब बेग बिनोटी वगैरह के नाम उल्लेखनीय हैं।

राजाजी बहादुर की खास पेशी में मीर मुंशी का काम करनेवालों में लाला बसन्तीलालजी कायस्थ (जयपुर), नारायणदासजी चौधरी (खेतड़ी), मुन्शी जगमोहनलालजी (जयपुर),

पण्डित लक्ष्मीनारायणजी शर्मा (जयपुर) और हाथ-खर्च के अहलकारों में पन्नालालजी चौधरी, विश्वेश्वरलालजी शाह, गंगासहायजी मोदी एवं बसन्तीलालजी श्रीमाल थे। उक्त सज्जनों में मुन्शी जगमोहनलालजी और पं० लक्ष्मीनारायणजी को राजाजी ने स्वयं शिक्षा दिला कर अपने निज के कार्यों के उपयुक्त बनाया था और उनसे वे अन्तरंग और बहिरंग काम लेते थे। मुन्शी जगमोहनलालजी राजाजी बहादुर के स्वर्गीय पिता के अन्यतम मंत्री और खुद की नाबालिगी के समय के कामदार मुन्शी हरिबक्शजी के पुत्र थे और पण्डित लक्ष्मीनारायणजी श्रीमान् के विद्यागुरु पण्डित गोपीनाथजी के।

इस प्रकार राजाजी बहादुर ने सभी विभागों में योग्य पुरुष नियुक्त कर खेतड़ी के शासन-संचालन की सुव्यवस्था की। नियमितता के कारण राज की आमदनी बढ़ने का मार्ग प्रशस्त हो गया। नीचे की तालिका से मालूम होगा कि न्यायालयों को वास्तविक न्यायालय बनाने के लिये राजाजी ने कार्य-विभाग करके भी अपने साथ सभी विभागों को इस प्रकार सम्बद्ध रक्खा कि जिसमें किसी भी विषय का विचार उनसे अज्ञात न रहे—वादी-प्रतिवादी को अपने अभाव अभियोग सुनाने में कष्ट न हो। राजाजी ने अपने इजलास में होनेवाली अपीलों की स्टाम्प-फीस प्रजा को माफ कर देने के अतिरिक्त अपील करने की अवधि भी ४० से बढ़ा कर ६० दिनों की कर दी थी।

न्यायालयों का जो विभाग किया था, उसकी तालिका इस प्रकार है—

सीगा फौजदारी	सीगा अदालतैन	सीगा फौज
कोतवाली थानेजात	तहसील	अफसर बेड़ेजात
तहसील	निजामत	रिसालदार
फौजदारी	अदालत	पेशी कर्नल
सीगा जुडिशियल	सीगा अदालतैन	बख्शीखाना
इजलास जुमले मेम्बरान्	इजलास जुमले मेम्बरान्	इजलास जुमले मेम्बरान्
इजलास खास श्रीमान्	इजलास खास श्रीमान्	इजलास खास श्रीमान्

खेतड़ी की अधिकार-सीमा सीकर, अलवर, पटियाला और लुहारू की सरहद से मिली हुई है। जब कभी किसी दूसरे इलाके का मनुष्य किसी अपराध में खेतड़ी की सीमा में, अथवा खेतड़ी का प्रजा-जन दूसरे राज्य की सीमा में पकड़ा जाता तो बड़े राज्य जयपुर की निजामत द्वारा इधर से उधर और उधर से इधर भेजा जाता था, जिससे दोनों ओर की प्रजा को बड़ा कष्ट होता था। इस कष्ट की निवृत्ति के लिये राजाजी ने बड़े विचार के साथ उक्त सभी सीमावर्ती राज्यों से

पत्राचार (लिखा-पढ़ी) करके यह सन्धि की कि अपराधी को सीधा भेज दिया जाय, जिससे निज़ामत का चक्कर न लगाना पड़े। यह संधि व्यवस्था राजनीतिज्ञता पूर्ण एवं उभय पक्ष के लिये सुविधाजनक सिद्ध हुई।

नीति-निपुण राजाजी के प्रजा-प्रेम, प्रबन्ध-पटुत्व, लोक-संग्रह और मैत्री-विस्तार आदि कार्यों के कारण शासन की सुख्याति होने में देर न लगी, और उन्नतिशील नरेशों की गणना में उनका नाम सगौरव लिया जाने लगा। संवत् १९४५ में गवर्नर जनरल के राजपूताना-स्थित तत्सामयिक एजेण्ट कर्नल के० सी० एम० वाल्टर के प्रशंसनीय प्रयत्न से राजपूत जाति की हित-कामना से सामाजिक सुधार के लिये अजमेर में एक सभा हुई थी, जिसका नाम "वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा" स्थिर हुआ था। सभा के स्वीकृत प्रस्तावों का प्रचार करने का प्रयत्न उस समय सभी रजवाड़ों में किया गया था। सभा में राजस्थान के कई एक नरेश तथा प्रतिष्ठित सरदार एवं चारण उपस्थित हुए थे। गहरे विचार के बाद सुधार-सम्बन्धी २२ नियम सर्वसम्मति से स्वीकृत किये जाकर उपस्थित प्रतिनिधियों से हस्ताक्षर कराये गये थे। राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने चोमू के तत्सामयिक सरदार ठाकुर गोविन्दसिंहजी साहब सहित जयपुर के प्रतिनिधि की हैसियत से उस स्मरणीय सभा में योग दिया था। राजाजी की विचार-शीलता की उस सभा में बड़ी प्रशंसा हुई थी। उसी अवसर पर आर्य-समाज के प्रसिद्ध

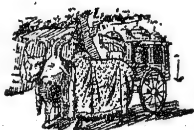
स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी और स्वामी नित्यानन्दजी आर्य समाज के अन्य सभासदों सहित राजाजी के निवास-स्थान पर उपस्थित हुए थे। वहीं अजमेर की श्रीसद्धर्मामृतवर्षिणी सभा में आये हुए साधु उपदेशक श्री विशुद्धानन्दजी का उक्त सभा के सब सभासदों सहित आह्वान किया गया था। उभय पक्ष के शास्त्रार्थ में राजाजी बहादुर ने मध्यस्थता की थी। इस घटना का उल्लेख बम्बई प्रदेश की आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीयुक्त सेठ रणछोड़ दास भवान द्वारा प्रकाशित स्वामी नित्यानन्दजी के जीवन चरित्र पृष्ठ ३५-३६ में किया गया है।

खेतड़ी-शासन की सुव्यवस्था के कारण राजाजी बहादुर विशेष रूप से लोगों के प्रशंसा-भाजन बने थे।

:: :: ::

अध्याय चौथा

प्रजा-हित और कीर्तिकर कार्य



"राजा प्रकृति रञ्जनात्"—यह नीति-वचन प्रसिद्ध है। इसके अनुसार राजा अजीतसिंहजी बहादुर प्रजा-रञ्जन में सदा तत्पर रहे। छोटे-बड़े सभी आपसे मिलकर अपनी प्रार्थना सुना सकते थे। आपने सप्ताह में एक दिन खास कर सर्व-साधारण प्रजा-जनों की प्रार्थना सुनने के निमित्त नियत कर रक्खा था। किसी के लिये कोई रोकटोक न थी। अंग्रेजी शिक्षा और सभ्यता से पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर लेने पर भी आप साधारण लोगों से सप्रेम मिलते थे। उनके दुःखदर्द की बातें सुनते थे और शाब्दिक सहानुभूति पर निर्भर कर देने के बजाय उन गरीबों की क्रियात्मक सहायता करने को सदा प्रस्तुत रहते थे।

अतिथि सत्कार के ऐसे नियम आपने निश्चित कर रक्खे थे कि, खेतड़ी में आनेवाले निःसहाय भिक्षुक भी आपकी सहायता पाने से वञ्चित न होते। शाह पन्नालालजी के तालाब के आगे वृक्षों की छाया में सायंकाल बाहर से आये जितने भिखारी

एकत्र होते थे, उनकी गणना करके प्रति मनुष्य तीन पाव आटा देने की राज्य से व्यवस्था थी। यह काम राजाजी के प्रधान मन्त्री पण्डित गोपीनाथजी के जिम्मे था। ब्राह्मण अतिथि को तीन पाव आटा, छटांक भर घृत, छटांक भर दाल और एक पैसा नक़द दया जाता था। योग्य विद्वान्, गुणी, साधु-सन्यासी के आगमन और अवस्थिति की सूचना खबर-नवीशों द्वारा प्राप्त होने पर पुण्य-विभाग के अध्यक्ष का यह काम होता था कि वह तत्क्षण उन व्यक्तियों का स्वरूप जान कर उनके यथोचित आतिथ्य-सत्कार का प्रबन्ध कर दे। स्वयंपाकी को सरकारी कोठी से आमान्न देने की और भगवान् का प्रसाद पानेवालों के लिये राजकीय मंदिरों में प्रसाद ग्रहण करने की सुविधा देने की पुण्य-विभाग के अध्यक्ष को आज्ञा थी। किसी के सम्बन्ध में यदि विशेष कर्तव्य होता, तो यह विषय राजाजी के समक्ष उपस्थित किया जाता। शीतकाल में कम्बल और लिहाफ गरीबों को देने का कार्य भी पुण्य-विभाग के अध्यक्ष के तत्त्वावधान में होता था। पुण्य-विभाग और अनाथालय के तत्सामयिक अध्यक्ष पं० अम्बादत्तजी राज्य-मिश्र थे।

संवत् १९५६ के दुर्भिक्ष की भयानकता भूलने योग्य नहीं है। उस समय की दुःस्थिति का स्मरण करके रोमाञ्च हो आता है। दुर्दैव-दलित अकाल पीड़ितों की रक्षा और सहायता के लिये राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने अपनी शक्ति भर कोई उपाय उठा न रखा। केवल राज के खजाने से ही गरीबों

का दुर्भिक्ष—कष्ट निवारण के लिये उन्होंने व्यय स्वीकार नहीं किया, बल्कि अपने निज के हाथ-खर्च से रुपये बचा कर भी उन्होंने दान की उदारता दिखलायी थी। इसका यह प्रभाव पड़ा कि उनके उच्च पदाधिकारी कर्मचारियों ने भी अपने वेतन का एक बड़ा अंश देकर पीड़ित देशभाइयों के दुःख दूर करने के पुण्यप्रद कार्य में भाग लिया। नियमित रूप से अन्न-वस्त्र की व्यवस्था हुई। चबेना (भुना अन्न) बांटने के लिये अलग रुपये स्वीकार किये गये। जुबिली रोड (Jubilee Road) नामक प्रायः १० मील लम्बी सड़क खेतड़ी से बबाई तक तथा राजकीय अस्तबल की इमारत बनवाने के रूप में कई सौ मजदूरी-पेशा लोगों को रोजी दी गयी। कठिन परिश्रम करने में अशक्त पुरुषों, स्त्रियों और लड़कों को सड़क पर पड़े हुए छोटे छोटे कङ्कड़-पत्थर मिट्टी के ढेले इत्यादि चुनने का काम दिया गया। कोटपूतली परगने के बेरी गांव के पास बाँध बनाने का काम गरीबों की सहायता के लिये ही आरम्भ किया गया। खानों (Mines) में पत्थर आदि भर गये थे। अतएव खानों में काम करनेवालों को पत्थर निकालने का काम सौंपा गया। अन्धों, अपाहिजों और काम करने में सर्वथा अशक्त निस्सहाय जनों के रहने के लिये इस दुर्भिक्ष-काल में वास-स्थान (कुटीर आदि) बनवा देने की भी राजाजी बहादुर ने दया दिखलायी थी। उन्होंने एक बड़ी रकम तकावी के लिये मंजूर की। इसी प्रकार किसानों को कम सूद पर रुपये उधार देने के लिये महा-

जनों को कोर्ट-फीस माफ कर दी गयी। पहले बाहर से अन्न लानेवाले ऊँटों पर "खूंटा बन्दी" नामक चूंगी (कर) ली जाती थी। वह भी उठा दी गयी और मालगुजारी का बकाया वसूल करते समय मुकद्दमा खर्च (Process Fee) न लेने का नियम भी प्रचलित किया गया। पंद्रह रुपये से कम मासिक वेतन पानेवाले कर्मचारियों को दो-दो मास का वेतन अग्रिम लेने की आज्ञा हुई। इसके अतिरिक्त कम वेतन पानेवाले कर्मचारियों को बिना व्याज, आगामी वर्ष रकम चुका देने की शर्त पर रुपये दिये गये। एक कमिटी राजाजी बहादुर ने इसलिये बनायी थी कि वह उन प्रतिष्ठित मनुष्यों को गुप्त रूप से सहायता पहुँचाने का प्रयत्न करे, जो अन्य लोगों की भाँति अकाल पीड़ित होने पर भी प्रकाश्य रूप में दूसरे की सहायता स्वीकार नहीं करते।

इस छप्पन के भयङ्कर अकाल में राजाजी बहादुर ने मनुष्यों के कष्ट-निवारण का यत्न तो किया ही; साथ ही पशुओं की भी उन्होंने उपेक्षा नहीं की। जिन गाय-भैंसों आदि के मालिकों ने भरण-पोषण की असमर्थता के कारण उन्हें भगवान के भरोसे छोड़ दिया, उनके लिये करबी, घास और चारे का प्रबन्ध करने में राजाजी ने मुक्तहस्त व्यय किया। ऐसी व्यवस्था की कि जंगल के पशु-पक्षी, लंगूर, मोर, कबूतर इत्यादि भी उनके दान से लाभ उठाने में वंचित न रहे। इस प्रकार राजाजी ने सर्व-प्राणियों के हित में रत रहने का अपना राजधर्म निबाहा।

नयी-नयी बातें सोचने में राजाजी का दिमाग खूब काम करता था। पहाड़ी नालों का वर्षाती पानी रोक रखने के लिए एक झील बनाने का विचार उनके मन में उठा। स्वयं घूम फिर कर मौका पसन्द किया और अपने प्राइवेट सेक्रेटरी पं० कन्हैयालालजी को—जो इञ्जिनियरिंग विभाग के भी प्रधान थे, पैमाइश कराने की आज्ञा दी। तदनुसार पैमाइश करायी जाने के बाद शिलारोपण के उत्सव का आयोजन किया गया। १६ जनवरी सन् १८८६ ई० को गवर्नर जनरल के राजपूताना स्थित एजेण्ट कर्नल वाल्टर, सी० एस० आई० ने उसकी नींव रक्खी और सन् १८६१ ई० की ५ जनवरी को जयपुर के रेजि-डेण्ट कर्नल एच० पी० पिकाक के द्वारा उद्घाटन कार्य सम्पन्न हुआ। खेतड़ी से प्रायः छै कोस "डाढ़ा" नामक गांव के निकट-वर्ती इस विशाल तालाब का नाम बन्ध अजीत-सागर है। पण्डित कन्हैयालालजी[1] के तत्त्वावधान में ३० सितम्बर सन्

---

१ पण्डित कन्हैयालालजी का जन्म बरेली (युक्त-प्रान्त) के गङ्गापुर मोहल्ले में २४ अगस्त सन् १८५२ ई० को हुआ था। आपके पिता का नाम पण्डित तोतारामजी त्रिवेदी था। पं० कन्हैयालालजी ने शिक्षा बरेली-कालेज में प्राप्त की और सन् १८७२ ई० में कलकत्ता विश्वविद्यालय की एफ० ए० परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। इसके बाद उन्होंने इञ्जिनियरिङ्ग की शिक्षा लाभ कर जयपुर के पब्लिक-वर्क्स डिपार्टमेंट में नौकरी की। पीछे जयपुर के पोलिटिकल एजेंट कर्नल डबल्यू० एच० बेनन की सिफारिश से

१८९१ ई० को यह बन्ध बन कर तैयार हुआ था और इसमें ८६३६४) रुपये व्यय हुए थे। जहां पानी का अवरोध किया गया है, उस जमीन का रकबा ८·७१ वर्ग मील है। बन्ध की ऊँचाई ६० और पक्की दीवार की ऊँचाई ५६ तथा ऊपर से लम्बाई ५८४ फीट है। श्रीमती महारानी विक्टोरिया के राज्य की ५० वीं वर्ष गांठ की यादगार के कारण वहां महारानी का एक बस्ट (धातु-मूर्ति) स्थापित है। बन्ध के ऊपर एक सुन्दर शिवालय बनवाया गया है और उसके निम्न-भाग में एक श्लोक संगमरमर के पत्थर पर इस रूप में अङ्कित है:—

राजन् दुधुक्षसि यदि क्षिति धेनुमेतां।
तेनाद्यवत्समिव लोकममुं पुषाण ॥

सन् १८८० की २८ वीं जुलाई को आप खेतड़ी-नरेश राजा अजीतसिंहजी बहादुर की सेवा में तैनात हुए। राजाजी बहादुर के प्राइवेट सेक्रेटरी और प्रधान इञ्जिनियर के पद का भार ग्रहण कर पण्डितजी ने योग्यतापूर्वक कार्य किया। राजाजी ने भी आपकी सेवा की बड़ी कद्र की। राजाजी की मृत्यु के बाद १३ जून सन् १९०७ ई० तक आपने खेतड़ी की नौकरी करके अवकाश ग्रहण किया। उस समय से ७५) मासिक आपको खेतड़ी से पेन्शन स्वरूप मिलते रहे। सन् १९१९ के एप्रिल महीने में पण्डितजी जयपुर दरबार के अनुमोदन से फिर खेतड़ी के कामदार और जुडिशियल आफिसर होकर आये थे किन्तु कुछ दिनों बाद ही लौट गये। कई वर्ष हुए, आपका देहान्त हो गया।



बन्ध अजीत-सागर (खेतड़ी)

तस्मिंश्च सम्यग्निशं परिपोष्यमाणे।
नाना फलैः फलति कल्पलतेव भूमिः॥

TRANSLATION

Oh, Raja, if you wish to milk the Cow Earth bring up and cherish, like her calf; your people by loving and caring for whom, the earth will yield like Kalpa Briksha (in heaven) whatever be your desired fruits."

उक्त बन्ध अजीत-सागर का काम समाप्त होने से पहले ही वर्षा की कमी के कारण खेतड़ी के कुओं में पानी की कमी हो गयी थी, जिससे खेतड़ी निवासियों को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। राजाजी बहादुर ने कष्ट दूर करने के लिये सन् १८९२ ई० की ३१ वीं जनवरी को खेतड़ी में बन्ध अजीत-समंद की नींव लगवायी। बहुसंख्यक लोगों की उपस्थिति में भित्ति-स्थापन का समारोह हुआ जिसमें राजाजी बहादुर को सम्बोधन कर सामयिक शिष्टाचार-प्रदर्शन पूर्वक राजपूताना स्थित गवर्नर जनरल के एजेण्ट (ए० जी० जी०) कर्नल ट्रेवर ने भाषण देते हुए कहा था:—

......You have told me how for four years the stream you now propose to draw has ceased for some mysterious reasons to flow after October,

and that it always disappears within your own territory a few miles from Khetri, so that no complaints need be apprehended from villagers deprived of an accustomed water supply by the construction of this tank, which to the town of Khetri can hardly fail to be a boon, for ever if your hopes of storage above ground are not realised, a considerable body of water must be held up for a time of the rainy season and slowly percolate below, to the advantage of all the neighbouring wells instead of being carried past and waste as at present. As we have heard from the address of Pandit Kanhaiyalal, your Engineer and Private Secretary, the project of the Ajit-Samand is still incomplete, but there seems to be little doubt as to its being carried out within the next two years and therefore we may lay the foundation stone of the Bandh without fear of the super structure being relegated to a distant period. The money is ready, which is a great thing and this reminds me that when you Raja Sahib, succeeded to the manage-

ment of your Estates, they were considerably in debt. By prudence and economy the debt has been paid off. Your annual revenue now shows a moderate surplus over expenditure, and yon can set aside funds for public improvements. I find that so long age as 1866 the administration of the Chief of Khetri, your father was highly commended by the Viceroy and Governer General and it is a great satisfaction to me that now when you are no longer a child but a man in the life and vigour, the education you have received is bearing good fruits in your relations to your people. Proficiency in the English language and lawn-tennis, and what we call civilized taste, have not, as they sometimes do, placed you out of touch and sympathy with those over whom you rule and among you reside. I understand that you set apart one day in the week to receive applications from all classes of your people and hear their grievances, and that on that day all have free access to you, no distinction of any kind being made. I congratulate you most

heartily on such recognition of your responsibilities, and trust you may long be known as a just and human land-lord and as a speciman of Rajput nobility whom English Government are proud to regard as personal friend. [I]

अर्थात् "आप मुझे बतला चुके हैं कि जिस नाले के पानी को आप रोकना चाहते हैं, उसका प्रवाह चार वर्ष से अक्टूबर के बाद किसी अज्ञात कारण से बन्द हो जाता है और खेतड़ी में ही कुछ दूर जाकर यह नाला एक दम लुप्त हो जाता है। इस कारण बांध के बंध जाने से गांववालों को—जो प्रवाह बन्द हो जाने के कारण पानी से वञ्चित हो गये थे, किसी प्रकार आपत्ति होने की आशंका नहीं की जा सकती। विशेषतः खेतड़ी-वालों के लिये तो यह एक वरदान होगा। क्योंकि इस बांध से सदा यथेष्ट पानी संग्रह करने की उन लोगों की आशा यदि सफल न भी हो, तो बरसात भर तो पानी यथेष्ट रहेगा और यदि यह पानी पृथ्वी सोख लेगी तो आसपास के कुओं को उससे खूब लाभ पहुँचेगा और इस समय बह जाने से जो उसकी (पानी की) बरबादी होती है, वह न होगी। आपके इञ्जिनियर और प्राइवेट सेक्रेटरी पं० कन्हैयालाल के कथनानुसार अजीत-समन्द बांध की योजना अभी अपूर्ण है; परन्तु आगामी

I The Pioneer, 31st January 1892.

दो वर्षों में इसके बँध कर तैयार हो जाने में सन्देह नहीं है। अतएव, इस बाँध के शिलारोपण के समय हमें इस बात की तनिक भी आशंका नहीं होती कि इस कार्य के शीघ्र सम्पादन करने में किसी प्रकार की ढिलाई होगी। धन तैयार है और यह एक महत्त्वपूर्ण बात है। मुझे याद है कि राजा साहब ने जब इस राज्य का प्रबन्ध अपने हाथों में लिया था, तब राज्य का बहुत सा ऋृण अदा करना था। आपने दक्षता पूर्वक मित-व्ययिता से वह ऋृण चुका दिया। इस समय आपकी वार्षिक आय व्यय से कुछ ही अधिक है और सार्वजनिक सुधार के लिये थोड़ा ही धन बचा कर रक्खा जा सकता है। मैं जानता हूँ कि सन् १८६६ ई० में वायसराय और गवर्नर जनरल ने आपके पिता—खेतड़ी-नरेश के शासन-प्रबन्ध की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की थी और मुझे इस समय बड़ा संतोष इस बात का है कि अब जब आप बालक नहीं—युवा हैं आप और आपकी प्रजा के पारस्परिक सम्बन्ध पर आपकी शिक्षा का अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। जिन पर आप शासन करते हैं और जिनके बीच रहते हैं, उनके साथ सम्पर्क और सहानुभूति रखने से अंग्रेजी भाषा, लान टेनिस और सभ्यतानुमोदित अन्यान्य बातों की प्रवीणता ने, जैसा कि कभी-कभी होता है, आपको पृथक् नहीं कर दिया है। मैं जानता हूँ कि आपने सप्ताह का एक दिन सब श्रेणियों के प्रजाजनों के प्रार्थना-पत्र लेने और उनके कष्ट सुनने के लिये नियत कर दिया है। उस दिन सभी बेरोक

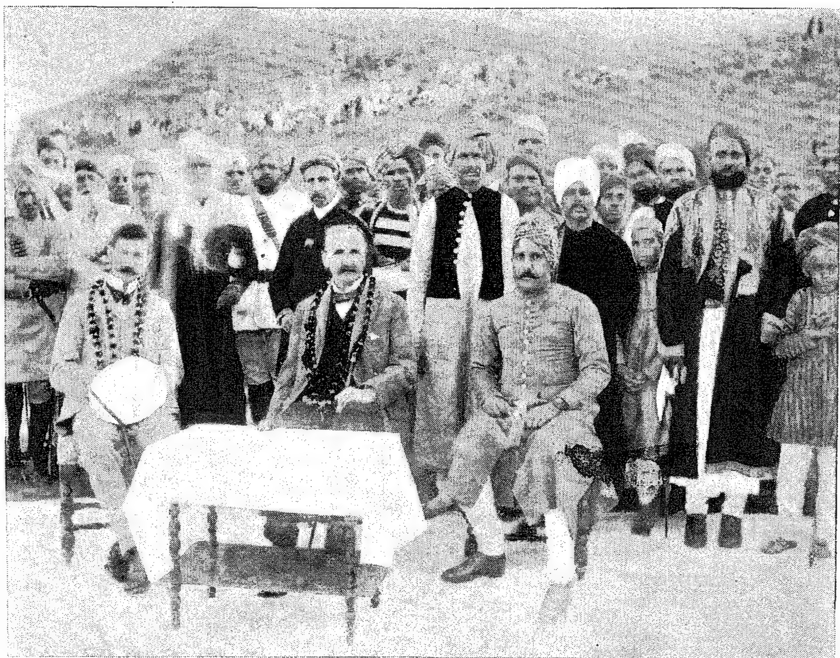
टोक अपने कष्ट निवारणार्थ आपसे मिल सकते हैं। उसमें किसी के लिये कोई भेदभाव नहीं रखा जाता। अपना दायित्व इस प्रकार पूरा करने के लिये मैं हृदय से आपको बधाई देता हूँ और विश्वास करता हूँ कि जिन राजपूत सरदारों को बृटिश सरकार अपना खास मित्र कहने में गौरव समझती है, आप चिरकाल तक उसकी श्रेष्ठता के आदर्श, न्यायी और दयाशील गिने जायंगे।"

\+ + + +

इस बन्ध अजीत-समन्द का काम जनवरी सन् १८६२ से आरम्भ होकर ३१ मार्च सन् १८६४ में समाप्त हुआ और उसमें ३८०००) रुपये व्यय हुए। इस बन्ध के बन जाने से जैसी कि आशा की गयी थी, खेतड़ी निवासियों का जल कष्ट दूर हो गया। कूएँ स्वतः जलपूर्ण हो गये। जिस स्थान का जलावरोध किया गया है, उसका रकबा १.८३ वर्ग मील है। ऊँचाई ३१, अधिक से अधिक पानी के भराव की सतह २६ फीट और ऊपर से लंबाई ४०० फीट है। दो पत्थरों पर खेतड़ी निवासियों के हितार्थ बन्ध राजा अजीतसिंहजी बहादुर द्वारा बनाया जाने के साथ शिलारोपण करनेवाले का नाम तारीख सहित तथा कुल व्यय और कार्य की समाप्ति का दिन—इत्यादि विवरण हिन्दी और अंग्रेजी में अङ्कित है। एक तीसरे पत्थर पर निम्नलिखित श्लोक अंग्रेजी अर्थ सहित खुदा हुआ है:—

पद्माकरं दिन करोपि कचो करोति।
चन्द्रो विकाशयति कैरव चक्रवालम्॥

बन्ध अजीतसमंद की नींव का जलसा



श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर, कर्नल ट्रेवर (ए० जी० जी०) और अपने राजकर्मचारियों सहित

नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति।
सन्तः स्वयं परहिते सुकृताभियोगाः॥

TRANSLATION

As the sun naturally makes a bunch of lotus flowers to blossom, the moon without being asked, makes the water lilies expand their petals and clouds without being solicited give water to the Universe, so it is the nature of the virtuous to exist for the good (benefit and interest) of others.

× × × ×

बन्ध रह्लां और बन्ध बेरी बनवा कर भी राजाजी बहादुर ने अपनी प्रजा के लिये भूमि को सजल बनाने का सुयोग उपस्थित्त कर दिया। रह्लां गांव सिमला से पश्चिम है। बन्ध रह्लां में मानूता, रोभड़ा, बिसा वगैरह गांवों की जमीन के और जुझारपुर आदि के पहाड़ी नालों से वर्षा में प्रवाहित होनेवाले जल का अवरोध किया गया है। बन्ध रह्लां के बनाने में ६२२६) रुपये लगे। बन्ध बेरी के सम्बन्ध में पहले लिखा जा चुका है कि संवत् १९५६ के भीषण अकाल में कोटपूतली परगने के गरीबों की सहायता के लिये उसका बनाना आरम्भ किया गया था।

उक्त बन्धों के अतिरिक्त खेतड़ी का अजीत-निवास बाग भी राजाजी बहादुर का अमिट कीर्ति-स्तम्भ है। संवत् १६४१ वि० में यह परम रमणीय और दर्शनीय उद्यान तैयार हुआ था। राज-प्रासाद से यह प्रायः ११ फर्लाङ्ग की दूरी पर है।

राजाजी बहादुर का प्रायः आगरे आना जाना और रहना बना रहता था। आगरे में सिकन्दरे से आगे यमुनाजी के तट पर कैलास नामक विशाल देवालय है, जहाँ भगवान शंकर के दर्शन करने के लिये जानेवाले यात्रियों को सड़क के बिना खुश्की रास्ते में कष्ट होता था।

संवत् १६४६ वि० में आगरे में राजकुमार जयसिंहजी का जन्म हुआ और इस शुभोपलक्ष में आपने सिकन्दरे के पास वाली मथुरा सड़क से कैलास तक प्रायः दो मील लम्बी सड़क बनवा कर कैलास के दर्शनार्थियों का कष्ट दूर किया और आगरे की म्युनिसिपैलिटी से उस सड़क की मरम्मत कराते रहने का इक़-रार कराने की बुद्धिमानी भी आपने की। यह सड़क भी राजाजी बहादुर के यश की एक ध्वजा है।

संवत् १६५१ वि० में अस्वस्थता के कारण चिकित्सकों की सम्मति से राजाजी बहादुर प्रवास में रहे थे। उस यात्रा में फ़ैजाबाद से श्रद्धापूर्वक अयोध्या जाकर मंदिरों में आपने देव-दर्शन किये। भगवान् रामचन्द्रजी के जन्म-मन्दिर की सोच-नीय अवस्था देख कर राजाजी को दुःख हुआ और तत्काल आपने श्रीमान् अयोध्या नरेश के पास ५०००) रुपये का चेक



श्री० राजकुमार जयसिंहजी (खेतड़ी)

भेजकर यह इच्छा प्रकट की कि, इस रकम से मंदिर का छोटा सा स्थान मकराने के पत्थर का सुन्दर बनवा दिया जाय। खेद का विषय है कि श्रीमान् अयोध्या-नरेश के यहाँ रुपये पहुँच जाने पर भी मंदिर का जीर्णोद्धार अब तक न हुआ।

राजा साहब शास्त्र में निष्ठा और धर्म में पूरा विश्वास रखते थे। राजपूताने में यह प्रायः देखने और सुनने में आता है कि होली, दशहरा, दीपावली आदि त्यौहारों और उत्सवों में देव-पूजनादि क्रिया राजा लोग प्रतिनिधित्वेन पुरोहित द्वारा सम्पन्न कराते हैं। किन्तु राजा अजीतसिंहजी बहादुर स्वयं अपने हाथ से शास्त्र-विधि के अनुसार धर्म-कर्म करते थे, चाहे उसमें कितनी ही देर क्यों न लगे?

स्वर्गवासी राजा फतहसिंहजी की धर्मपत्नी राजमाता श्रीमती जोधीजी साहिबा का देहावसान होने पर उनकी अस्थि गङ्गा प्रवाह के लिये लेकर स्वयं हरद्वार पधारे थे। यह शास्त्रनिष्ठा और मातृभक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। केवल यही नहीं महालया में खेतड़ी और अलसीसर—उभय कुल के स्वर्गीय पुरुषाओं के निमित्त आप सपात्रक श्राद्ध किया करते थे। पितरों की परितृप्ति के लिये आपने गयाजी की यात्रा कर यथाविधि श्राद्ध किया था।

प्रति दिन भोजन से पहले भगवान के चरणामृत लेने का जैसा नियम था, वैसा ही गायों को रोटियाँ, कबूतरों को अन्न, लंगूरों को भुने हुए चने डलवाना भी राजाजी का नित्य का

साधारण काम था। प्रति व्यतिपात को ब्राह्मणों को आदर और श्रद्धा के साथ भोजन कराना वे अपना आवश्यक पालनीय कर्तव्य समझते थे। व्यतिपात का ब्राह्मण-भोजन खेतड़ी में 'पर्वी' के नाम से विख्यात था।

साधारण प्रजा और विशेषतया छोटी तनख्वाह पानेवाले कर्मचारियों की सुविधा के लिये राजाजी बहादुर ने सरकारी कोठी से उचित व्याज की दर पर ऋण देने की व्यवस्था कर दी थी; जिससे महाजनों के कड़े व्याज की व्याधि से बहुतेरे गरीब बच जाते थे और यह रकम निश्चित नियमानुसार किश्त या तनख्वाह से अदा कर ली जाती थी।

राजाजी बहादुर ने अपने समय में बहुत सी भूमि जागीर में दी। इसके अतिरिक्त खेतड़ी की शोभा वृद्धि के लिये मौके की जमीन विभिन्न सज्जनों को बाग बनाने के लिये प्रदान की। संवत् १९४३-४४ वि० में राजाजी की आज्ञा के अनुसार बाग तैयार हुए। बागों के सुप्रबन्ध के लिये भी उपयुक्त जागीर-जमीन और कोठी कूएँ बाग बनानेवालों को देकर उनका उत्साह बढ़ाया गया। गोशाला, पाठशाला आदि सार्वजनिक हित की संस्थाओं के लिये बिना मूल्य भूमि देने में तो आपने कभी आनाकानी ही नहीं की।

प्रायः ६६८००) रुपये राजाजी ने पुराने कुओं की मरम्मत और नये कुओं के निर्माण में व्यय करके अपनी प्रजा-हितैषिता का परिचय दिया था। स्थान-निर्माण और सार्वजनिक कामों

में राजाजी ने अपने जीवन-काल में प्रायः पाँच लाख रुपये का विनियोग किया। जिस समय वे शिक्षा प्राप्त कर बालिग़ हुए, खेतड़ी पर ११ लाख रुपये का ऋण था। अपनी सुव्यवस्थित शासन-प्रणाली द्वारा ऋण परिशोध-पूर्वक पाँच लाख रुपये प्रजा-हित एवम् कीर्तिकर कार्यों में व्यय करना उस दशा में जब कि खेतड़ी की आमदनी खर्च से कुछ ही अधिक थी, राजाजी बहादुर के लिये कम प्रशंसा की बात नहीं है। वे फज़ूलखर्ची के विरोधी थे और अपने बजट के अनुसार ही खर्च करते थे। वर्ष के आरम्भ में ही अपने मन्त्रियों की सलाह से प्रति वर्ष बजट बना लेते थे।

अपने नाम पर उन्होंने कितने ही गाँव और ढानियां आबाद करायीं और उन ग्रामों में अच्छे-अच्छे लोगों को बसने के लिये सब तरह की सुविधाएँ देकर उत्साहित किया। जसरापुर संवत् १९३९ तक एक शामिलाती कस्बा था। उसमें चतुर्थांश जखोड़ा के ठाकुर मोहनसिंहजी (ठा० नवलसिंहजी के वंशज) का था। राजाजी बहादुर ने ही उनके हिस्से के बदले में अजीतगढ़ तहसील का दलोई गाँव तथा सिंघाना तहसील के बुहाना गाँव में आठवाँ हिस्सा देकर जसरापुर सर्वांश में खेतड़ी के अधिकार में कर लिया। जखोड़ावाले इस नये प्रबन्ध के अनुसार १००) रु० भी वार्षिक खेतड़ी को देते हैं।

राजाजी बहादुर ने धर्मसभा का सुसङ्गठन करके धर्म-चर्चा का पथ भी प्रशस्त किया था। वे विद्वानों से शास्त्र-विषयक

संलाप कर बड़े प्रसन्न होते थे। धर्मसभा की बैठक श्रीमती चूंडावतजी के बड़े मंदिर में प्रति सप्ताह (आवश्यकतानुसार पहले पीछे भी) होती थी। इस सभा के मुख्य सदस्य थे—पण्डित लक्ष्मीनारायणजी शास्त्री टोंक निवासी, पं० नारायण-दासजी व्याकरण-केशरी, पं० अम्बादत्तजी मिश्र, पं० सुन्दर-लालजी वैदिक, पं० रूड़मलजी ज्योतिर्विद्, पं० रामचन्द्रजी साहित्य-शास्त्री, पं० सीतारामजी खाण्डल, पं० गौरीशङ्करजी, पं० राधाकृष्णजी पुजारी, पं० हरनन्दनजी और पं० हरलालजी प्रभृति। शास्त्रीय विषयों का निर्णय, धर्म सम्मत सुधार—इत्यादि धर्म-सभा के प्रधान कार्य थे। इसके सिवाय बाहर से आनेवाले विद्वानों से शास्त्र सम्बन्धी विचार और वार्तालाप करके उनके स्वरूपानुरूप सत्कार की राज्य से व्यवस्था कराना भी धर्मसभा का ही काम था। राजाजी बहादुर का मह-दुद्देश्य यह था कि खेतड़ी की प्रजा में द्विजाति का कोई पुरुष यज्ञोपवीत बिना न रहे और त्रिकाल समय पर सन्ध्यावन्दनादि पूर्वक अपने आचार का पालन करे। सन्ध्या करके दिखलाने वालों को आप भाँति-भांति से प्रोत्साहित करते थे। आपके आदेशानुसार बहुसंख्यक क्षत्रियों और वैश्यों ने वेदमाता गायत्री का उपदेश ग्रहण कर अपने को कृतार्थ किया था। इस अभि-नन्दनीय प्रयत्न के सम्बन्ध में अस्तङ्गत प्रसिद्ध 'धर्मदिवाकर' (मासिक पत्र) की संवत् १९४३ के श्रावण मास की संख्या

में उसके विद्वान् सम्पादक पं० देवीसहायजी [1] ने लिखा था—
……"यद्यपि खेतड़ी राज्य राजस्थान (जयपुर) के अन्तर्गत एक छोटा सा राज्य है, तथापि वहां के महाराज श्री अजीतसिंहजी की धर्मिष्टता, सच्चरित्रता और प्रजावत्सलता ऐसी है कि जिससे अन्यान्य बड़े-बड़े महाराजों की अपेक्षा भी उनका यशः प्रकाश सारे देश में छा रहा है। उन्होंने अपने राज्य का जैसा उत्तम प्रबन्ध किया है, उससे सभी प्रजा के लोग उन पर अति-संतुष्ट हो, देश-देशान्तर में सभी जगह उनका गुणगान करते हैं। राज्य के आर्थिक नीति सम्बन्धी प्रबन्ध के सिवाय एक

---

१ पण्डित देवीसहायजी, पाटन (तोरावाटी—जयपुर) निवासी थे। वे बड़े तेजस्वी विद्वान् थे। कलकत्ते के मारवाड़ी समाज में सर्व प्रथम पं० देवीसहायजी के उद्योग से ही विद्या और धर्म की चर्चा का विस्तार हुआ। धर्म-सभा की स्थापना उन्होंने ही की थी। कलकत्ते की पिञ्जरापोल को भी उनके ही उपदेश का फल कहने में कोई अत्युक्ति न होगी। शास्त्र सम्मत सुधार के पण्डित देवीसहायजी प्रबल पक्षपाती थे। संवत् १९३९ वि० में उन्होंने 'धर्मदिवाकर' नामक मासिक पत्र प्रकाशित किया था। शास्त्रीय विषयों का तत्त्व समझानेवाला हिन्दी में वही पहला मासिक-पत्र था। 'भारत धर्म महामण्डल' की स्थापना में पं० देवीसहायजी व्याख्यानवाचस्पति पं० दीनदयालुजी के साथ थे। उनका जन्म संवत् १९१३ वि० में हुआ था और संवत् १९६० वि० में वे परलोकवासी हुए। कलकत्ते के श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय में उनके नाम पर देवीसहाय-पुस्तकालय स्थापित है।

धर्म-रक्षा का उत्तम प्रबन्ध भी उन्होंने किया। वह प्रबन्ध यह है कि क्षत्रियों और वैश्यों का यथाकाल उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार कराया जाय ।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य—इन तीनों वर्णों की द्विज संज्ञा है और ये तीनों ही वर्ण यज्ञोपवीत-संस्कार तथा वेदोक्त समस्त कर्मों के अधिकारी हैं। ब्राह्मण की तरह क्षत्रिय और वैश्य का भी यज्ञोपवीत संस्कार विवाह के पहले ही कर्त्तव्य लिखा है; किन्तु इधर बीच-बीच में अत्याचारी मुसलमानों ने जब यह अत्याचार प्रारम्भ किया कि यज्ञोपवीतवालों के यज्ञोपवीत तोड़ने लगे और तिलकवालों के तिलक चाटने लगे तथा अन्यान्य भी बड़ी खराबियाँ करने लगे, तब अगत्या ब्राह्मणों को तो अपने धर्म-कर्म अथवा आजीविका की लाज से यज्ञोपवीत रखना ही पड़ा, किन्तु क्षत्रिय और वैश्यों में उस अत्याचारी राजकुल के डर से उपवीत-तिलक का विसर्जन सा हो गया। उस समय से यज्ञोपवीत का बहुतों ने आज भी त्याग ही कर रक्खा है। यद्यपि उपनीत और अनुपनीत सब लोगों का विवाहादि सम्बन्ध परस्पर अपनी ही जाति में वैसा ही होता चला आता है, जैसा पहले होता था। इसलिये उनका वंश दूषित नहीं है। तथापि कोई उपनीत और कोई अनुपनीत—यथा काल उपनीत न होने से सभी भ्रष्ट हो रहे हैं, इसमें संदेह नहीं।...........

······अत्यन्त ही हर्ष की बात है कि खेतड़ी नरेश ने उक्त बात पर ध्यान दिया। आज तीन बर्ष से वह इस बात की पूर्ति में लग रहे हैं और समयानुसार अपने राज्य के हजारों क्षत्रिय और वैश्यों का उपनयन संस्कार कराते हैं। हमारे एक मित्र खेतड़ी से लिखते हैं कि इस वर्ष में भी यहाँ की धर्म-सभा के उद्योग और नरेश के शासन से त्रैवर्णिक जो अनुपनीत थे, उपनीत किये गये। यथा—परगने कोटपूतली में कुछ न्यूनाधिक ५०० क्षत्रिय और वैश्य, शहर चिड़ावे में अन्दाज २५० वैश्य। बबाई आदि छोटे-छोटे गाँवों में भी इसी प्रकार लोग संस्कृत किये गये और आगे के लिये पंच—महाजनों की सही करायी गयी कि बिना यज्ञोपवीत हुए आगे को कोई क्षत्रिय अथवा वैश्य विवाह न करने पावे और जोशी पुरोहितों को आज्ञा दी गयी कि वे बिना यज्ञोपवीत हुए किसी का विवाह न करावें। इस बात को सभी ने स्वीकार किया है। धर्म-सभा के सभ्य पं० लक्ष्मीनारायणजी जहाँ-तहाँ भेजे गये और इस प्रकार इस सम्बन्ध में विशेष चेष्टा की जा रही है।·········

········हम ऐसी मर्यादा का पालन और प्रचार करने के लिये खेतड़ी नरेश को अन्तःकरण से धन्यवाद देते हैं। हमारी महाराज से यह भी प्रार्थना है कि 'बाल्य-विवाह' प्रथा का भी सुधार करें कि जिसने देश को नष्ट कर रक्खा है।·····

·········लड़के की अवस्था न्यून से न्यून १६ वर्ष से कम न रक्खी जाय। इस निश्चित अवधि से कम उमर के लड़के

का विवाह न होने पावे। इस बात का (प्रतिरोधक) विशेष आन्दोलन होना चाहिये। बाल्य-विवाह धर्म-शास्त्र की रीति से घोर पाप है। अब हम खेतड़ी धर्म-सभा तथा वहाँ के पण्डितों से पुनः प्रार्थना करते हैं कि वे इस बात की तरफ भी अपने महाराज का ध्यान दिलावें, जिससे उनका यश, देश का उद्धार और धर्म की रक्षा हो जाय।"[१]

श्री वेंकटेश्वर-समाचार ने राजाजी बहादुर के श्रीमान् शाहपुराधीश सहित बम्बई पधारने और चिड़ावा निवासी विख्यात डालमियाँ सेठ मामराज रामभगत की दुकान पर उन्हें खेतड़ी के प्रजा-जनों तथा मारवाड़ी शराफे के अन्य प्रधान सेठों द्वारा ससम्मान एवम् ससमारोह नजर दी जाने आदि का विवरण प्रकाश करने के अतिरिक्त अपनी ८ मई सन् १८९६ ई० की संख्या में लिखा था:—

.........."श्रीमान् खेतड़ी-नरेश बड़े न्यायवान और विचार-शील पुरुष हैं। अपने राज्य में सत्ययुग सा वर्तमान कर रक्खा है। शिक्षा के निमित्त पाठशालाएँ खोल रक्खी हैं। ५० वर्ष के ऊपरवालों का विवाह मना कर रक्खा है। बड़ी कन्याओं का छोटे बालकों के साथ विवाह नहीं हो सकता। कोई मनुष्य कन्या का (बिक्री करके) धन नहीं ले सकता। ऐसी ही उपयोगी बातें श्रीमान् ने प्रचलित कर रक्खी हैं कि जिससे उनकी

१ धर्मदिवाकर भाग ५ मयूख ४ पृष्ठ ५४-५८

प्रजा प्रसन्न और प्रफुल्लित है। प्रत्येक विषय का न्याय श्रीमान् स्वयं करते हैं। कर्मचारियों का कोई हस्तक्षेप नहीं है। श्रीमान् का पुण्य भी परम प्रसिद्ध हो रहा है। गरीब मनुष्यों को कन्या-विवाह के लिये राज-कोष से द्रव्य मिलता है। श्रीमान् पुत्र-वत्प्रजा का पालन करते हैं ··· ··हमें आशा है कि राजपूताना के सभी महाराजे खेतड़ी नगराधीश का अनुकरण करेंगे।"

धर्मदिवाकर और श्री वेंकटेश्वर-समाचार के उक्त अवतरणों से राजाजी बहादुर के प्रति लोगों के हृदय में कैसे भाव थे, इसका परिचय मिलने के साथ ही यह भी ज्ञात हो जाता है कि वे वृद्ध और बाल-विवाह की कुरीतियों से अपनी प्रजा को बचाने में कितने तत्पर थे। यहां तक था कि ज्ञात होने पर कन्या विक्रय करनेवाला राजाजी के शासन में दण्डित किये बिना नहीं छोड़ा जाता था। खबरनवीसों का यह काम था कि कहाँ क्या हो रहा है, इसकी नियमित रिपोर्ट श्रीमान् की सेवा में भेजते रहें। उन रिपोर्टों को स्वयं ध्यान से देख कर हर समय अपना कर्तव्य पालन करने के लिये वे सतर्क रहते थे।

श्री स्वामी ज्ञानानन्दजी 'भारतधर्म महामण्डल' में सम्मिलित होने से पूर्व निगमागम मण्डली के नाम से धार्मिक सङ्गठन के लिये यत्नवान् थे। प्रायः सभी देशी नरेशों, धर्माचार्यों और विद्वानों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये उन्होंने उद्देश्य और नियम अनुष्ठान-पत्र के रूप में छपा कर लोगों के पास भेजे थे। राजाजी बहादुर के नाम भी अनुष्ठान-पत्र के साथ एक ज्योतिष

यन्त्रालय स्थापित करने की अपनी स्कीम भेज कर स्वामीजी ने उनकी सम्मति और सहायता चाही थी। उत्तर में राजाजी ने उन्हें जो पत्र [1] लिखा, उससे उनकी विचारशीलता और

---

१ श्री स्वामी ज्ञानानन्दजी के उत्तर में राजाजी बहादुर ने जो पत्र लिखा था, उसका मुख्य अंश इस प्रकार है:—

......"मेरी राय यह है कि वे सब सभाएँ जो अलग-अलग होकर भारतवर्ष में जगह-जगह काम कर रही हैं, एक कर दी जायँ और प्रबन्ध के लिये एक मजबूत कमिटी बनाई जाय। ज्योतिष यंत्रालय खोलने का जो विचार है, उससे मेरी खास सहानुभूति है। पुराने यंत्र तथा नवीन आविष्कृत यूरोप के यंत्र—सब इकट्ठे करके भारतवर्ष के किसी एक बड़े स्थान पर एक बड़ा ज्योतिष यंत्रालय खोला जाय तथा यहां के बड़े-बड़े पण्डित और यूरोप का एक अच्छा विद्वान् रख कर गणित का संस्कार किया जाय, विद्यार्थी सिखाये जायं, एक पत्र निकाला जाय, और एक सिद्धान्त ग्रन्थ बना दिया जाय, जिससे गणित में सहायता पहुँचे। यदि निगमागम मण्डली यत्न द्वारा श्रीमान् महाराजा साहब जयपुर के यंत्रालय का संस्कार करा सके तो भी बहुत उपकार हो सकेगा। जहाँ कहीं मेरी इच्छा के अनुसार बड़ा यन्त्रालय खोला जायगा, उसके प्रबन्ध के लिये मैं स्वयं मेहनत करने को तैयार हूँ और मेरी रियासत छोटी है तो भी इस धर्म-कार्य के लिये मैं अपने पास से शनैः शनैः पचास हजार रुपये लगा देने को तैयार हूं।......मातृ-भाषा की उन्नति अवश्य होनी चाहिये। जब भारतवर्ष का कल्याण होगा, तो मातृ-भाषा की उन्नति एवं विस्तार द्वारा ही हो सकेगा।"

उदारता प्रकट होती है। एक सर्वाङ्ग पूर्ण ज्योतिष-यन्त्रालय की स्थापना के लिये राजाजी बहादुर के पत्र में पचास हजार रुपये देने का उल्लेख है, परन्तु श्री स्वामी ज्ञानानन्दजी ने लेखक को कहा है कि राजाजी ने पचास हजार से बढ़ा कर एक लाख रुपये तक ज्योतिष-यन्त्रालय के लिये प्रदान करने का उदार भाव व्यक्त किया था।

खेतड़ी के न्यायालयों में राजाजी ने उर्दू की जगह हिन्दी उस समय प्रचलित की थी जिस समय समस्त देशी रजवाड़ों में उर्दू की तूती बोल रही थी। सर्व प्रथम योग्यता प्राप्त खेतड़ी के प्रजाजनों को राजकीय विभागों में यथोचित स्थान देने की उनकी नीति को आज भी खेतड़ीवाले कृतज्ञ हृदय से स्मरण करते हैं। सन् १८८५ ई० में मिस्र में अंग्रेजों से जब लड़ाई छिड़ी तब ५०० सैनिक खेतड़ी की ओर से भेज कर राजाजी बहादुर ने सहायता पहुँचायी थी और ट्रांसवाल की लड़ाई में भी अपनी सैनिक-शक्ति द्वारा सहायता पहुँचाने के निश्चय की सूचना अंग्रेज सरकार को देकर उसका धन्यवाद प्राप्त किया था।

राजा अजीतसिंहजी बहादुर अपनी विपरीत परिस्थिति में जो कुछ कर गये, वह अनुकूल परिस्थिति में रहनेवाले उनके सम सामयिक अन्य बड़े-बड़े नरेशों की तुलना में कम नहीं—बहुत अधिक है।

अध्याय पाँचवाँ

शिक्षानुराग और कविता-प्रेम



यद्यपि खेतड़ी में स्वर्गीय राजा फतहसिंहजी बहादुर के समय से ही साधारण रूप से राजकीय पाठशालाएँ चल रही थीं, तथापि विधि-वद्ध शिक्षा-प्रचार करने का श्रेय हमारे चरित्र-नायक राजा अजीतसिंहजी बहादुर को ही प्राप्त है। राजाजी सामयिक शिक्षा से विभूषित एक योग्य विद्वान् की तलाश में थे कि संवत् १९४५ वि० में जयपुर में पण्डित शंकर-लालजी शर्मा [1] से भेंट हुई। राजाजी बहादुर पण्डितजी का

---

१ पण्डित शंकरलालजी शर्मा का जन्म श्रावण शुक्ला ५ रविवार संवत् १९२१ वि० को मेरठ में हुआ था। उनके पूर्वज जयपुर राज्यान्तर्गत 'विहार' नामक ग्राम के निवासी थे। पण्डित शङ्करलालजी के पितामह विहार से मेरठ-छावनी, सदर बाजार में जा बसे थे। पण्डितजी के पिता पण्डित हजारीलालजी शर्मा पंजाब के जालंधर जिले में स्कूल इन्सपेक्टर थे। पं० शंकरलालजी के जन्म से ४ मास पूर्व ही उनका परलोकवास हो गया था। पं० शंकरलालजी का पालन-पोषण और शिक्षण उनके पितृव्य

परिचय पाकर बड़े प्रसन्न हुए और सब तरह से उपयुक्त समझ कर उन्हें नियुक्त किया।

ता० ३१ अगस्त सन् १८८६ ई० में राजाजी बहादुर की आज्ञा से पण्डित शंकरलालजी ने खेतड़ी स्कूल का कार्य-भार ग्रहण किया। उस समय राजकीय पाठशाला में संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी और हिसाब की पढ़ाई होती थी। प्रत्येक विषय का एक-एक अध्यापक नियुक्त था। पढ़ाई का कोई क्रम न था। विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार पृथक्-पृथक् विषय पढ़ते थे। हां, संस्कृत के जो अध्यापक थे, उनमें व्याकरण, वेद और काव्य के तीनों ही अध्यापक अपने-अपने विषय के पूर्ण पारङ्गत पण्डित थे। उदाहरणार्थ—पण्डित नारायण-दासजी व्याकरण के और पं० सुन्दरलालजी झा वेद के मर्मज्ञ विद्वान् थे। पं० नारायणदासजी को अष्टाध्यायी और सिद्धान्त-कौमुदी कण्ठाग्र थी और पं० सुन्दरलालजी को शुक्ल यजु-र्वेद-संहिता के चालीसों अध्याय स्वर और अर्थ सहित कण्ठस्थ

पं० चिरंजीलालजी के तत्त्वावधान में हुआ। पं० शंकरलालजी ने मेरठ हाई-स्कूल में एण्ट्रेन्स तक पढ़ कर प्रयाग के म्योर सेण्ट्रल कालेज में शिक्षा पायी। पश्चात् कार्य-क्षेत्र में प्रविष्ट हुए। राजा अजीतसिंहजी बहादुर के स्वर्गवास के कुछ दिनों बाद ही पं० शंकरलालजी ने खेतड़ी से पृथक् हो अलवर राज्य का आश्रय ग्रहण किया। बहुत वर्षों तक अलवर की ओर से मेयो कालेज में मोतमिद रहने के बाद आपने अवकाश ले लिया है।

थे। इसी प्रकार पं० रामचन्द्रजी ब्रह्मचारी साहित्य-शास्त्र-निष्णात थे और शेष सब अध्यापक लोग साधारण थे। राजाजी बहादुर ने उक्त पण्डितप्रवरों की नियुक्ति भी बड़ी विवेचना के साथ की थी।

पण्डित शंकरलालजी के कार्य-भार ग्रहण करने के बाद ही खेतड़ी के शिक्षा-विभाग का नियमित रूप से सङ्गठन हुआ। पण्डितजी को राजाजी बहादुर ने आज्ञा दी और उन्होंने तद-नुरूप व्यवस्था बड़ी तत्परता से की। राजकीय पाठशाला के दो विभाग किये गये। यथा खेतड़ी हाईस्कूल और संस्कृत पाठशाला। अंग्रेज़ी, हिन्दी और उर्दू के जो अध्यापक थे, वे सब हाई स्कूल विभाग में सन्निविष्ट हो गये। पढ़ाई प्रयाग विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के अनुकूल होने लगी। नियमित शिक्षा का फल यह हुआ कि ५ वें वर्ष में विद्यार्थी मिडल-परीक्षा में उत्तीर्ण होने लगे। सन् १८६४ ई० में सबसे प्रथम खेतड़ी हाईस्कूल के छात्रों में श्रीयुक्त बहादुरमल चौधरी ने मिडल परीक्षा पास की। इसके दो वर्ष बाद ही एण्ट्रेंस परीक्षा में विद्यार्थियों के उत्तीर्ण होने का क्रम आरम्भ हुआ। खेतड़ी हाई स्कूल से सर्व प्रथम एण्ट्रेंस पास करनेवाले श्रीयुक्त बाबू श्रीगोपाल चौधरी हैं। इसी तरह मुन्शी अहमदअली खां बी० ए० सबसे पहले ग्रेजुएट। अंग्रेजी की तरह संस्कृत पाठशाला के छात्रों की भी परीक्षाएँ होने लगीं और सुयोग्य अध्यापकों के परिश्रम के परिणाम स्वरूप काशी

की प्रथमा और मध्यमा परीक्षाओं के लिये विद्यार्थी भेजे जाने लगे।

उत्तीर्ण विद्यार्थियों और उनके अध्यापकों को उत्साहित करते रहना श्रीमान् राजाजी बहादुर का एक नियम था। शिक्षा-विभाग के द्वारा अपना उद्देश्य सफल होते देख उन्होंने उसकी उन्नति में विशेष ध्यान दिया। पण्डित शंकरलालजी को खेतड़ी शिक्षा-विभाग के सुपरिंटेंडेंट का पद देकर हाई स्कूल में अध्यापकों की संख्या बढ़ायी गयी और खास खेतड़ी में एक और हिन्दी मिडल स्कूल तथा कोटपूतली में अंग्रेजी-हिन्दी दोनों भाषाओं के मिडल स्कूल खोले गये। इनके अतिरिक्त सब तहसीलों और कई ग्रामों में प्रारम्भिक हिन्दी शिक्षा के लिये पाठशालाएँ स्थापित हुईं। सब में निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी। शिक्षा-विभाग के आधीन जितनी पाठ-शालाएँ थीं, उनके निरीक्षण के लिये एक इन्सपेक्टर का पद नियत हुआ। खेतड़ी को अपना केन्द्र कार्यालय बना कर प्रति दूसरे महीने सभी स्कूलों का निरीक्षण करना इन्सपेक्टर का कर्त्तव्य था। इन्सपेक्टर के पद पर पहले श्रीयुक्त रामलालजी (मास्टर) थे, किन्तु जब राजाजी बहादुर श्रीमती महारानी विक्टोरिया की डायमण्ड जुबिली के समय उन्हें सेक्रेटरी बना कर अपने साथ इङ्गलैण्ड ले गये, तब उनके स्थान पर पं० राम-

स्वरूप शर्मा[1] नियुक्त हुए। वे भी योग्यता-पूर्वक अपना कर्त्तव्य पालन करते रहे। संस्कृत पाठशाला में एक अच्छे ज्योतिषाध्यापक की कमी थी, इसकी पूर्त्ति पं० ठाकुर झा को नियुक्त करके की गयी। पं० ठाकुर झा गणित और ज्योतिष-शास्त्र के अच्छे विद्वान् थे। हाईस्कूल के हेडमास्टर का पद-भार श्रीयुक्त पं० रामचन्द्र जी[2] दूबे को दिया गया। श्रीयुक्त दूबेजी ने खेतड़ी की शिक्षोन्नति में प्रशंसनीय भाग लिया था। सुपरिंटेंडेंट की हैसियत से स्वयं पं० शङ्करलालजी सभी स्कूलों की अवस्था देखने, छात्रों की परीक्षा लेने और छात्रों को उनकी योग्यता के अनुसार कक्षाओं में चढ़ाने प्रति वर्ष जाते थे। शिक्षा-विभाग की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये राजाजी बहादुर सदा प्रस्तुत रहते थे।

---

१ पं० रामस्वरूपजी शर्मा ने खेतड़ी शिक्षा-विभाग के सुपरिण्टेण्डेण्ट पं० शंकरलालजी की आज्ञा के अनुसार "भूगोल खेतड़ी" नामक पुस्तक बनाई थी। उसका प्रथम संस्करण सन् १८९९ ई० में श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई में छप कर प्रकाशित हुआ था।

२ पण्डित रामचन्द्रजी दूबे (बिजनोर निबासी) एक सुदक्ष विद्वान् थे। राजा अजीतसिंहजी बहादुर के स्वर्गवास के पीछे खेतड़ी से अलग होने के बाद दूबेजी डूंगरपुर नरेश के सेक्रेटरी रहे और कई वर्षों तक उन्होंने झाबुआ राज्य की नौकरी की।

विद्यार्थियों की शिक्षा की ओर जितना ध्यान दिया जाता था, उतना ही उनके स्वास्थ्य पर भी। विद्यार्थी स्वस्थ रहें और उनका शारीरिक गठन सुदृढ़ हो—इसके लिये हाई स्कूल में नियमित व्यायाम का प्रबन्ध किया गया। जिमनास्टिक और क्रिकेट आदि खेलों के लिये उपयुक्त सामग्री मँगाई गयी। कसरती खेलों के समय राजाजी स्वयं उपस्थित होकर खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देते थे। टेनिस, पोलो आदि के श्रीमान् स्वयं भी पक्के खिलाड़ी थे। संस्कृत के उन विद्यार्थियों के लिये, जो खेतड़ी से बाहर के रहनेवाले थे, राजकीय मन्दिरों में भोजन की व्यवस्था थी। हाई स्कूल, मिडल स्कूल और संस्कृत पाठशाला माजी राणावतजी के मन्दिर में थीं। राजकीय पुस्तकालय[१] (पब्लिक लाइब्रेरी) भी वहीं था।

---

१ खेतड़ी में राजकीय पुस्तकालय राजा फतहसिंहजी बहादुर के समय से स्थापित है। अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों का राजा फतहसिंहजी ने बहुत अच्छा संग्रह किया था जिनकी संख्या ५००० के लगभग होगी। राजा अजीतसिंहजी के समय में सभी विषयों की कितनी ही पुस्तकें नयी मंगायी गयीं। संस्कृत ग्रन्थों में वेद, पुराण, इतिहास, काव्य, कोष, व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र आदि के अतिरिक्त एक अलभ्य पुस्तक हस्तलिखित रेखा-गणित की है। इसमें १६ अध्याय हैं। रेखागणित के अंग्रेजी में भी केवल १२ अध्याय ही मिलते हैं।

संस्कृत के विद्यार्थियों को भोजन तो राजकीय मन्दिरों में मिल जाता था, परन्तु उन्हें पुस्तकों और वस्त्रों के लिये कष्ट भोगना पड़ता था। उसकी निवृत्ति का उपाय श्री० स्वामी विवेकानन्दजी के गुरु भाई स्वामी अखण्डानन्दजी ने—जो उन दिनों खेतड़ी पधारे हुए थे, एक सहायक कोष—(Philanthrophic Fund) खोल कर किया। इस कोष में खेतड़ी के उच्च पदाधिकारियों तथा अन्य विशिष्ट प्रजाजनों से मासिक चन्दा लिया जाता था। कोषाध्यक्ष पं० शङ्करलालजी ही बनाये गये थे। यद्यपि रुपये डाकखाने में जमा रक्खे जाते थे, तथापि उनकी रक्षा और व्यय का भार पं० शङ्करलालजी पर ही था। स्वामी अखण्डानन्दजी ने खेतड़ी के उन लोगों को जो अपने लड़कों को पढ़ाने में उदासीन थे, शिक्षा का महत्व समझाने में बड़ा परिश्रम किया था। दरोगा जाति के लोगों को उत्साहित कर उनके लड़कों के लिये राजाजी बहादुर से बिशेष सुविधा करवा दी थी। स्वामीजी के प्रयत्न से लड़कों की संख्या बहुत बढ़ गयी थी। राजाजी बहादुर ने स्वामीजी को सब सुविधाएँ दे रक्खी थीं। छात्रों की सभा में कभी-कभी राजा साहब स्वयं पधार कर अपना अनुराग प्रकट करते थे। छात्रों की भी उनमें पूरी भक्ति थी। इङ्गलैण्ड से आनन्द-पूर्वक लौटने पर छात्रों ने सभा करके श्रीमान् का अभिनन्दन किया था। उस स्मरणीय सभा में स्वामी विवेकानन्दजी भी उपस्थित थे।

श्रीमान् राजाजी बहादुर अपनी प्रजा को सुखी और शिक्षित देखने के परम आकांक्षी थे। उनका संस्थापित खेतड़ी हाई स्कूल शेखावाटी में ही नहीं, जयपुर-मण्डल भर में पहला है। उसे कालेज बनाने के उनके मनोरथ को कुटिल काल ने पूर्ण नहीं होने दिया।

राजाजी अनन्य विद्या-रसिक और गुण-ग्राहक पुरुषरत्न थे। यह उनका विद्यानुराग ही था कि आधी रात तक कभी दूर्बीन से आकाशमण्डल में तारे देखते, कभी वेदान्त तथा अन्य शास्त्रों के विषय में शास्त्रार्थ सुनते, कभी ललित-कलाओं पर विचार दौड़ाते। सभी शास्त्रों—सभी विद्याओं से उन्हें प्रेम था। यही कारण था कि उनके पास सब विषयों के विद्वान् एवं गुणी आते थे और अपनी अपनी योग्यता के अनुसार सत्कार पाते थे। उन्हे शिक्षा-प्रचार की हृदय से लगन थी। इस सम्बन्ध में किया हुआ उनका प्रयत्न उनकी कीर्ति को स्थिर बना देने के लिये पर्याप्त है। यदि शेखावाटी के अन्य सरदार भी उनका उदाहरण समक्ष रखकर शिक्षा का महत्व समझें और अपनी प्रजा में शिक्षा-प्रचार के लिये यत्न करें, सहयोग और सहायता दें तो निस्सन्देह वे प्रजा के विशेष रूप से श्रद्धाभाजन बन जायँ।

× × × ×

यह तो हुई शिक्षा-प्रचार प्रेम की बात—इसके साथ ही राजाजी बहादुर का कवितानुराग भी बहुत बढ़ा-चढ़ा था।

गुणियों एवम् कवियों के गुण-प्रदर्शन के आप केन्द्र थे। वीणा-वादन-पटु भोपसिंहजी, नन्दरामजी (बरसाना), मुसरफखांजी (जयपुर), हुसेनखांजी (खेतड़ी), महताबखांजी (खेतड़ी) जैसे सङ्गीत विशारद और रणजीतजी, चन्द्रजी, बलदेवजी, ईशरजी, भानजी, जैसे कवि आपके आश्रित थे। महामहोपाध्याय कविराजा मुरारीदानजी, श्यामलदासजी गणेशपुरीजी, कृष्णसिंहजी, बालवख़्शजी, समर्थदानजी, रामनाथजी रत्नू प्रभृति राजस्थान के प्रख्यात विद्वानों से आपका गहरा प्रेम-सम्बन्ध था। जयपुर के दाधीच वंशोद्भव पं० गोपीनाथजी के तो आप आश्रय-स्थल थे। बारहठ बलदेवजी [१] आपके मुख्य दरबारी कवि थे। उन्हें दरबार करके "कविराजा" की उपाधि से आपने विभूषित किया था। कोरी उपाधि ही नहीं, स्वर्ण-कटक संयुक्त ताज़ीम के साथ 'लाख-पसाव' देकर आपने अपनी उदारता दिखलायी थी। खेतड़ी जैसे छोटे से संस्थान के

---

१ कविराजा बलदेवजी का जन्म अलवर राज्य के 'सीहाली' नामक ग्राम में संवत् १९०१ विक्रमाब्द पौष शुक्ला २ को हुआ था। संवत् १९३७ में वे जयपुर गये थे। वहीं राजाजी से पहले पहल भेंट हुई और गुण-ग्राहक राजाजी ने उन्हें आश्रय देकर अपनी सेवा में रख लिया। कविराजा बलदेवजी डिङ्गल के अच्छे कवि थे। राजाजी ने उनका बड़ा सम्मान किया था। संवत् १९५३ वि० में उनकी खेतड़ी में मृत्यु हुई। राजा साहब ने उनको 'शिवनाथपुरा' नामक ग्राम इनाम में दिया था।

अधीश्वर का 'लाख-पसाव' उदारता की पराकाष्ठा का परिचायक है। जोधपुर के तत्सामयिक श्रीमान् महाराजाधिराज जशवंतसिंहजी ने कविराजा मुरारीदानजी को 'लाख-पसाव' देकर सम्मानित किया था।

'लाख पसाव' देकर विदा करने के समय राजाजी बहादुर ने कविराजा बलदेवजी को अपने कन्धे पर पाँव रखा के हाथी पर चढ़ाना चाहा। कविराजाजी ने नरेश के कन्धे पर पाँव रखने में सङ्कोच किया। इस पर ठा० हरिसिंहजी लाडखानी ने मुसाहब की हैसियत से अपना कंधा देकर कविराजाजी को गयन्दारूढ़ किया। कविराजाजी ने श्रीमान् राजाजी बहादुर की प्रशंसा में कहा था:—

"करण जो कहूँ तो सूत पुत्र श्रुति भाष्यो जाय,
विक्रम कहूँ तो बंस गन्ध्रब बिचार्यो मैं।
बलि जो कहूँ तो दैत्य कुल मध्य दोष दीखै,
नल जो कहूँ तो नेक निरधन निहार्यो मैं॥
इन्द्र जो कहूँ तो अंग रन्ध्र हैं अनेक वाके,
सिन्धु जो कहूँ तो नीर कटु निरधार्यो मैं।
कौन की समान दे बखानूं अब तेरी कीर्ति,
उपमा अजीत भूप हेर हेर हार्यो मैं॥

एक बार राजाजी ने कविराजाजी को अपनी पीढ़ी सुनाने के लिये कहा तो आपने यह छप्पय कहा था:—

सुदत फतो, सिवनाथ, बखत, अभमाल, बाघवर,
भूप किसन, सादूल यला जगराम उजागर।
झिलत मल्लर जूझार भोज माणिक टोडरमल;
राज भोज राजानराज राजान रायसल।
सुजाण रायमालह सिखर, कारण धारण कित्तरा
सुदतार पैठ पीढ्यां सरब, उज्जल भूप अजीतरा।"

कवि रणजीत स्वर्गीय राजा फतहसिंहजी के जमाने के थे। उनकी रचना बड़ी सुन्दर होती थी। राजाजी के सम्बन्ध में उनका कहा हुआ एक सवैया है :—

"सांच औ झूठ करे निरनै पुनि नीति औ न्याव् की बात प्रमानै,
आपनु भेद न देत किसै बदमास कि बात कुं खूब पिछानै।
सीधै सों सीध रहें रणजीतजु टेढ़ की टेढ़ निकारबो ठानै
श्री महाराज अजीत के फन्द में आन फसै जब ही जिय जानै॥"

जयपुर के पं० गोपीनाथजी दाधीच वेदान्त के मार्मिक विद्वान् थे। श्रीमान् के अनुरोध से उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता का गायन रूप में भाषानुवाद किया था जो गीतामृत-घटी के नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित है। उसके कई पद्य राजाजी बहादुर की रचना हैं।

"राम सौभाग्य शतक" इन्हीं पण्डित गोपीनाथजी की कृति है। पण्डितजी ने अपनी निर्मित एक वंश-वर्णना-युक्त सुन्दर प्रशस्ति श्रीमान् को भेंट की थी।

श्रीमान् राजाजी बहादुर के रचित पद्य देख कर कहा जा सकता है कि वे स्वयं भी एक मार्मिक कवि थे।

यद्यपि आप अद्वैत वेदान्त के मार्मिक भक्त थे, तथापि साहित्य, सङ्गीत, चित्रादि ललितकलाओं के विशेषज्ञ होने के कारण आपका सरस हृदय वैज्ञानिक शुष्कता के सम्पर्क से सर्वथा रहित था। आप सहृदयता की मानो मूर्ति थे।

सङ्गीत कला पर अच्छा अधिकार होने के कारण आपके रचित गीत और पद बड़े ही सुन्दर और सरस हैं। श्रीमान् का एक पद है:—

समुझो त्रिगुणहि जग उपजावै।
प्रकृति पुरुष दो गुण संगति बिन तनक न वस्तु उपावै। समुझो० ॥
आतम एक अखण्ड एक रस, गुण तैं भिन्न लखावै।
अजित ताहि लख ले जो कोई ब्रह्म रूप ह्वै जावै। समुझो० ॥

इस पद में सांख्य मतानुसार त्रिगुणात्मिका प्रकृति की महिमा का वर्णन है—इस श्रुति की सुन्दर व्याख्या है—

अजामेकां लोहित शुक्ल कृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां स्वरूपाः।
अजोह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोन्यः॥"

अर्थात् सत्व, रज, तम (शुक्ल, लोहित, कृष्ण) गुणवाली त्रिगुणात्मिका प्रकृति जो बहुत सी समान रूपवाली सृष्टि (प्रज़ा) उत्पन्न करती है, उसके संसर्ग से बद्ध संसारी जीव सुख-दुख भोगता है और दूसरा विवेकी जीव उससे निर्लिप्त

रहता है। दृश्य (प्रकृति) द्रष्टा (आत्मा) का विवेक ही मुक्ति का कारण है—

"अजित ताहि लख ले जो कोई ब्रह्म रूप ह्वै जावै।"

एक और पद्य है—

वासुदेव के ईशपने में तनिक न मन संदेह रह्यो,
धन्य-धन्य अरजुन बड़भागी जाने नैंनन दरस लह्यो।
जापे करुणा करि करुणानिधि, गीता को उपदेश कह्यो,
मोह समँद में डूबत लखि कै अरजुन को कर माँहि गह्यो।
अजित ताहि उपदेश सुनत ही भेद भरम को सिखर ढह्यो,
वासुदेव के ईशपने में तनिक न मन संदेह रह्यो॥

इसमें भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवादरूप गीता का सार भरा है। गीता का उपदेश सुन कर और भगवान् के विराट् रूप का दर्शन करके अर्जुन ने कहा था—

"नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।"

इसी भाव को क्या अच्छे ढंग से कहा है :—

'अजित ताहि उपदेश सुनत ही भेद भरम को सिखर ढह्यो।'

भगवान् के उपदेश रूप वज्र से भेद-भ्रम पर्वत का शिखर चकनाचूर हो गया। मोह-समुद्र में डूबते हुए अर्जुन को भगवान् ने हाथ पकड़ कर उबार लिया। यही संक्षेप में गीता का सार है।

श्रीमान् की रचित इस ठुमरी में पाठक रचना-कौशल देखें :—

"विन बिन मोहि कूं कछु न सुहावै,
तरफत चित अति ही अकुलावै।
ए री! सखी हमरे पीतम को,
जाय कोई यह बात सुनावै।
यह जोबन छीजत है छन छन,
बीत गये पर फिर नहीं आवै! विन बिन०॥
बहुत कोल बीते आवन के,
गिनत-गिनत जियरा घबरावै।
हाय, दई अखियां तरसत हैं,
विरह विपत नित मोहि जरावै। विन बिन०॥
मरन न देत आस मिलबे की,
जीवन छिन विन बिन नहि भावै।
सुध बुध सब ही भूल गयी री!
यह दुख तो अब सह्यो न जावै। विन बिन०॥
मतलब को गरजी जग सारो,
अरजी मोरी कौन सुनावै।
तन मन जीति रीति सब करिकै,
भजिहौं राम काम बनि आवै। विन बिन०॥
हे जगदीश ईश विश्वम्भर,
तुम बिन यह दुख कौन मिटावै।

करी कृपा करुणानिधि मो पै,
मिले पिया जिय हरष न मावै । विन बिन०॥
ज्ञानी याहि ज्ञान करि देखै,
रसिक याहि रस पच्छ लगावै ।
जोग भोग गति दोय एक करि,
सुमति अजित पद सहज बतावै । विन बिन०॥

इसमें "विन (उन) बिन मोहि कूं कछु न सुहावै"—विरह व्याकुल भक्त की करुणाजनक दशा और मर्मस्पर्शी भावों का विरह-विधुरा गोपी की उक्ति के रूप में बड़ा ही सुन्दर शब्द-चित्र खींचा है। यह कोमलकान्त पदावली और अर्थ-गाम्भीर्य के संमिश्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

"मरन न देत आस मिलबे की
जीवन छिन विन बिन नहिं भावै"—

इस उक्ति में कितना चमत्कार है, कितनी पते की कही है, भुक्तभोगी वियोगी ही इसका मर्म समझेंगे। आशा और निराशा का एक दर्शनीय दृश्य है, न मरते ही बनता है, न जीते ही।

"आशा बन्धः कुसुम सदृशं प्रायशोह्यङ्गनानां
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्र योगे रुणद्धि ।"

इसमें कविकुल-गुरु कालिदास ने भी कुछ ऐसी ही बात कही है, पर श्रीमान् राजाजी की उक्ति निराली ही है। निस्सन्देह

यह कविता विरही जन की विरह वेदना और मुमुक्षु योगी की आत्मदर्शनाभिलाषा को समान रूप से व्यक्त करनेवाली है। इसी ओर लक्ष्य करके कहा गया है—

"ज्ञानी याहि ज्ञान करि देखै, रसिक याहि रस पच्छ लगावै।"

और भी सुनिये—

धन्य हमारो भाग जग में धन्य हमारो भाग।
ये ते दिवस नींद में बीते अब आयो हूं जाग॥ जग में०॥
उतपति नास जगत को लखि कै गयी विषय की लाग।
चाह तजी मन सारी या तें रह्यो न तनकौ राग॥ जग में०॥
ज्ञानामृत बरस्यो है ता सों बुझी भेद की आग।
धन्य ईश गुरुदेव लखे मैं मेट्यो मन कौ दाग॥ जग में०॥
गीता को उपदेश सुनत ही जुप गयो ज्ञान चिराग।
मोह तिमिर को नास भयो है, दरस्यो आनँद बाग॥ जग में ०॥
ज्ञान लहे नर देव देव है नातर है छर-छाग।
'अजित' ज्ञान की नाव बनावै लखि भव-सिन्धु अथाग॥ जग में०॥

इस गीति में मोह निद्रा दूर होने पर कवि की हर्षोक्ति है और "उतपति नास जगत को लखि कै, गयी विषय की लाग" कह कर मोह निद्रा के दूर होने का कारण बतलाया गया है। संसार की नश्वरता का ज्ञान विवेकोदय का कारण है, यही ज्ञान मोह-निद्रा दूर करता है।

जब मनुष्य विवेक-दृष्टि से संसार की क्षण-भंगुरता पर विचार करता है, तो समझता है कि—

पृथिवी दह्यते यत्र मेरुश्चापि विशीर्यते।
सुशोषं सागर जलं शरीरे तत्र का कथा ?॥

जब पृथिवी भस्म हो जाती है, मेरु आदि बड़े-बड़े पहाड़ नष्ट हो जाते हैं और अथाह समुद्र सूख जाता है, फिर इस जरा से शरीर की तो बात ही क्या है ?

'स्वस्य मस्तकमारूढ़ं मृत्युं पश्येज्जनो यदि।
आहारोपि न रोचेत किमुतान्या विभूतयः॥'

यदि मनुष्य को यह ज्ञान हो जाय कि प्रति क्षण मौत सिर पर नाच रही है, तो उसे खाना-पीना भी अच्छा न लगे, सुख भोग की दूसरी सामग्रियों की ओर ध्यान जाना तो दूर की बात है।

'ज्ञान लहे नर देव देव है, नातर है सुर-छाग'

ज्ञान रहित मनुष्य सचमुच "सुर छाग"—वलि का बकरा है। जिसे अपनी मौत की खबर नहीं, जो वलि के समय सिर पर रक्खी हुई दूब और चावल आदि पूजा-सामग्री मजे में बेखटके खा रहा है :—

'न्यस्तं यथा मूर्ध्निमुदात्रिमेषो दूर्वाक्षताद्यं वलि कल्पितः सन्
मृत्युं समीपस्थितमप्यजानन् भुनक्ति मर्त्यो विषयांस्तथैव।'

:: :: ::

योगीराज भर्तृहरि का श्लोक है :—

क्वचिद् भूमौ शायी क्वचिदपि च पर्यङ्क शयनं ।
क्वचित्कंथाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बर धरः ॥
क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदन रुचिः ।
महात्मा योगज्ञो (मनस्वी कार्यार्थी) न गणयति दुःखं न च सुखम् ॥

इस श्लोक का राजाजी बहादुर ने कैसा अनुवाद किया है:—

"रहे भूमि पर सोय तहाँ कछु खेद न माने,
कोमल सेज बिछाय सुखहि मन रती न जाने।
कन्द मूल फल खाय रहे चित परसन वा को,
अलभ मिले परसाद बढ़त नहिं आनँद जा को।
गुदड़ी और दुसाल सम अपने चित एको धरै।
हरष सोक नहिं देह हित योगी लच्छन यह करै॥"

× × ×

श्रीमान् का एक कवित्त है:—

कहत नसीत आन राजों को 'अजीत' एक
सुकृत करोगे जस लोगे सो ही ताको है।
कौन के हैं पुत्र, त्रिया, बन्धु, धन कौन को है
कौन के हैं राज-साज कौन को इलाको है ?
कौन के हैं सुभट गजराज हय कौन के हैं,
दिष्ट देर देखो जब बीज को झपाको है।

एक न फाको दिन एक है नफा को
दिन एक है वफा को एक सफम सफा को है ॥

इस कवित्त में राजाजी ने राजाओं को जो "नसीहत" दी है वह वास्तव में बहुमूल्य है। इसका ध्यान रख कर आचरण करने से दोनों लोक सुधर सकते हैं। सांसारिक सुख भोग में फँसे हुए धनमदान्ध लोगों की दृष्टि तत्त्व की ओर नहीं पहुँचती। वे नहीं देखते कि 'एक सफम सफा' का दिन भी आ सकता है और आता है। उनकी पहुँच आसपास के पदार्थों तक ही होती है।

मनोहारिणी युवतियाँ, हाँ में हाँ मिलाने वाले मुसाहब, "त्वमर्कस्त्वं सोमः" का पाठ करनेवाले वन्दी-गण और भृत्य-जन, प्रपंची सचिब, झूमते हुए हाथी और चञ्चल तुरंग—उसके सामने इन्हीं सब बातों का नक्शा जमा रहता है। यह नहीं सूझता कि आंखें बन्द होने पर यह सब कुछ भी नहीं—

"चेतोहरा युवतयः सुहृदोऽनुकूलाः।
सद बान्धवाः प्रणय गर्भ गिरश्च भृत्याः॥
वल्गन्ति दन्ति निवहास्तरलास्तुरङ्गाः।
संमीलने नयन योर्नहिकिंचिदस्ति ॥"

परलोक-बन्धु धर्म और तज्जन्य सुयश ही जीवन का सार है, यही उपादेय है और सब निस्सार है। इसी को लक्ष्य करके राजाजी ने कहा है:—

"सुकृत करोगे जस लोगे सोहि ताको है।"

× × ×

"जेते मतवारे तेते सारे मतवारे हैं" इस समस्या की पूर्ति श्रीमान् ने इस प्रकार की थीः—

"नीकी रीति जाने औ पिछाने परपञ्च सब,
जाग्रत अरु स्वप्न औ सुषुप्ति भेद डारे हैं॥
गीता में विचार देह इन्द्री मन बुद्धि या तें,
होवे पर रूप सो स्वरूप तत्त्व न्यारे हैं॥
ऐसे मति पार होके मग्न ब्रह्म आनन्द में,
जुक्ति नैक नीकी करि क्लेश दोष जारे हैं॥
वे ही हैं महात्म मतवारे औ असंग यह,
जेते मतवारे तेते सारे मतवारे हैं॥

इसमें 'मतवारे' शब्द में श्लेष का चमत्कार है। यदि राजाजी की शिक्षा पर मतवाले ध्यान दें, तो संसार का कल्याण हो सकता है। मतवालों की करतूतों से संसार का इतिहास कलंकित है। मतवालों को कैसा होना चाहिये, इस पूर्ति में श्रीमान् राजाजी ने यह दिखलाया है। गीतादि शास्त्रों में वर्णित तत्त्वज्ञान ही धार्मिक मतवालों का ध्येय होना चाहिये। इसी में उनका और दूसरों का श्रेय है। यदि यह नहीं है तो फिर मतवालों के मतवाला होने में सन्देह ही क्या है?

राजाजी द्वारा रचित एक कूट का नमूना भी देख लीजियेः—

मदन पिता बड़ भ्रात, तृतिय प्रथम मिल द्वितिय जुध।
इन्द्र ध्वनी के तात, ता अरि द्वय तुम बंचियो॥

यह सोरठा श्रीमान् ने अपने कृपापात्र कविराजा बलदेवजी को उनके अलवर जाने पर लिख भेजा था। इसमें प्रथम चरण के पूर्वार्द्ध में उनका नाम बलदेवजी आ गया। क्योंकि मदन (प्रद्युम्न) के पिता श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलदेवजी थे। उत्तरार्द्ध में चारण बन गया। क्योंकि तीसरे वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) का प्रथम अक्षर 'च' उसमें दूसरी मात्रा 'ा' मिली तो हुआ 'चा' इसके आगे 'जुध' शब्द का पर्याय 'रण' जोड़ने पर 'चारण' बन गया। शेषांश में इन्द्र (मेघ) की ध्वनि (नाद) का मतलब मेघनाद उसके तात रावण के अरि (शत्रु) राम—सो दो बार अर्थात् राम राम बाँचना।

बस, श्रीमान् राजा साहब की कविता का इतना ही अंश मिल सका है। यह उनकी कविता-राशि में से मुट्ठी भर भी नहीं है। कविता-स्रोतस्विनी की दो चार बूंदें हैं। इन्हीं से संतोष करना होगा [१]।

---

१ राजा अजीतसिंहजी बहादुर के रचित पद्य लेखक ने अपने मित्र स्वर्गीय साहित्याचार्य पण्डित पद्मसिंह शर्माजी के, जो उन दिनों उसके पास 'कलकत्ता-समाचार' कार्यालय में पण्डित गोपीवल्लभ उपाध्याय सहित

पाँचवाँ अध्याय

ठहरे हुए थे, सामने रख कर उनका अभिमत जानना चाहा, जिस पर सहृदय शर्माजी ने निम्नलिखित पंक्तियों में अपना अभिमत प्रकट किया था:—

"इन पद्यों से मालूम होता है कि खेतड़ी-नरेश एक प्रतिभाशाली कवि भी थे। इस रचना में दार्शनिकता और भक्ति के भावों का ऐसा हृदयहारी चमत्कार है कि जिससे उनके हृदय की तल्लीनता और विशालता का पूर्ण परिचय मिलता है। यद्यपि कविता का यह बहुत थोड़ा अंश है तथापि 'स्थाली पुलाक' न्याय से उनकी कवित्व शक्ति को प्रमाणित करने के लिये यही पर्याप्त है। महाकाव्य से ही नहीं, एक पद से भी कवित्व का परिचय मिल सकता है।

—त्यागी का पद्मसिंह-अङ्क (अक्टूबर १९३२) पृष्ठ ८१।

अध्याय छठा

श्री स्वामी विवेकानन्द से भेंट, घनिष्ठता, सर्व-धर्म-परिषद् में प्रेषण, पत्राचार और सम्भाषणादि [1]



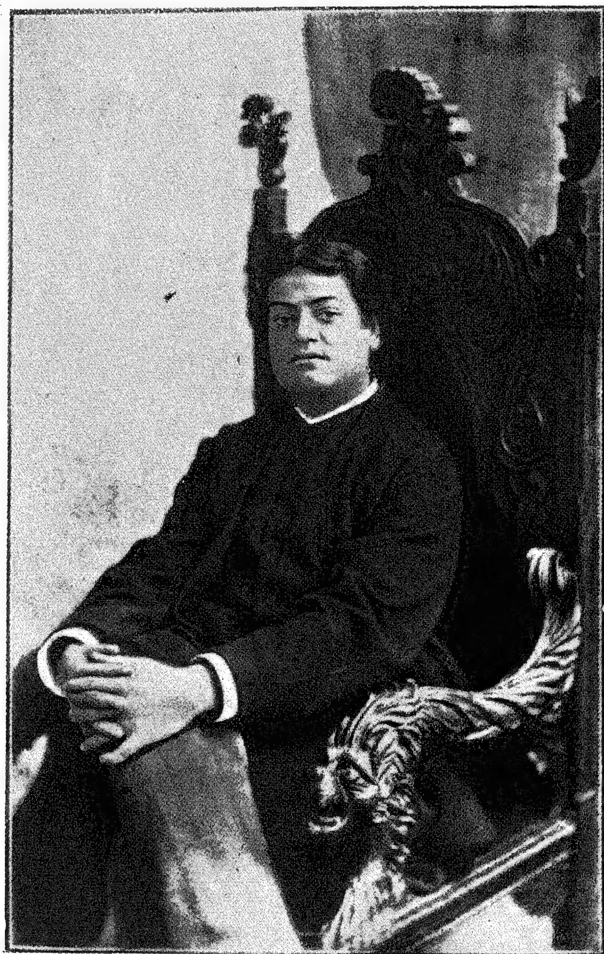
राजपूताना के प्रसिद्ध रमणीय शीतल और स्वास्थ्य-प्रद स्थान आबू पहाड़ (Mount Abu) पर राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने एक कोठी खरीद ली थी, जो 'खेतड़ी-हाउस' के नाम से प्रसिद्ध है। जिस समय का हम वर्णन लिख रहे हैं, उन दिनों राजा साहब आबू में अवस्थान कर रहे थे। सन् १८६१ ई० का एप्रिल महीना था। इसी सन् की १४ वीं एप्रिल को स्वामी विवेकानन्द भी वहाँ पहुँचे। उस समय तक उनकी प्रसिद्धि का डंका विशेष नहीं बजा था।

एक दिन राजाजी के प्राइवेट सेक्रेटरी मुन्शी जगमोहनलालजी अपने एक मित्र के साथ स्वामीजी के पास पहुँचे।

---

१ लेखक की 'खेतड़ी नरेश और विवेकानन्द' नामक पुस्तक से सङ्कलित।

आदर्श नरेश



जगत्प्रसिद्ध

श्री स्वामी विवेकानन्दजी

मध्याह्नकाल था। स्वामीजी आराम कर रहे थे। लेटे-लेटे उनकी आँखें लग गयी थीं। अतएव थोड़ी देर उन लोगों को प्रतीक्षा करनी पड़ी। इतने में स्वामीजी उठे और बातें हुईं। स्वामीजी के ज्ञान-गर्भ कथनोपकथन से मुन्शीजी मुग्ध हो गये और अपने स्थान पर लौट कर उन्होंने राजाजी बहादुर को स्वामीजी की भेंट और वार्तालाप का वृत्तान्त कह सुनाया। गुण-ग्राही राजाजी ने स्वामीजी से मिलने की इच्छा प्रकट की। तदनुसार स्वामीजी का सादर आह्वान किया गया और उन्होंने खेतड़ी-हाउस में पधार कर दर्शन देने की कृपा की। शिष्टाचार के प्रश्नोत्तरों के पश्चात् राजाजी और स्वामीजी में इस प्रकार वार्तालाप हुआ:—

राजाजी ने पूछा—महाराज, जीवन क्या है ?

स्वामीजी ने कहा—प्रतिकूल अवस्था-चक्र में जीव के आत्म-स्वरूप दिखलाने का नाम जीवन है।

राजाजी ने फिर प्रश्न किया—अच्छा महाराज, शिक्षा क्या है ?

स्वामीजी ने उत्तर दिया—विचारों का स्नायु से घनिष्ठ सम्बन्ध करने का नाम शिक्षा है। जब तक कोई भाव मन में ऐसे दृढ़ संस्कार के रूप में स्थापित न हो जाय कि जिससे प्रत्येक शिरा और स्नायु में उसका कार्य विकसित हो तब तक वह भाव वास्तव में मन की अपनी सम्पत्ति नहीं कहा जा सकता।

उदाहरण के रूप में हम परमहंसदेव[1] के जीवन की घटनाओं को ले सकते हैं। किसी धातु के एक टुकड़े के स्पर्श से ही परमहंसदेव का शरीर निद्रावस्था में भी काँप जाता था। यह उनके काञ्चन-त्याग की सिद्धि थी। उनका सम्पूर्ण जीवन मानो पवित्रता का विकास और मानव-मन के लिये सर्वोत्कृष्ट शिक्षा के आदर्श का दृष्टान्त था।

पहले दिन की मुलाकात में ही स्वामीजी से वार्तालाप कर राजाजी बहुत प्रसन्न हुए। विशेषकर उनके प्रश्नोत्तर के ढंग, धर्मज्ञान और स्वदेश-भक्ति आदि का राजाजी पर विशेष प्रभाव पड़ा। इसके बाद जब तक वे आबू में रहे, तब तक स्वामीजी से बराबर मिलना-जुलना होता रहा।

---

१ प्रातः स्मरणीय रामकृष्ण परमहंसदेव, स्वामी विवेकानन्द के गुरु थे। रामकृष्ण का जन्म हुगली जिले में खुदीराम चट्टोपाध्याय के गृह में हुआ था। उनका मन पढ़ने लिखने में नहीं लगता था, परन्तु उनकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। रामायण, महाभारतादि की कथा पण्डितों से सुन कर ही उन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया था। कलकत्ते से प्रायः तीन कोस उत्तर दक्षिणेश्वर नामक स्थान में अपने ज्येष्ठ भ्राता की मृत्यु के बाद रामकृष्ण कालीजी के पुजारी-पद-पर नियत हुए थे। श्रद्धा-समन्वित भाव से पूजा करते करते ही उन्होंने योगाभ्यास आरम्भ किया। उन्हें एक संन्यासी गुरु मिल गये थे। उनसे संन्यास ग्रहण करने के बाद रामकृष्ण परमहंस ने कामिनी-काञ्चन का सर्वथा त्याग कर दिया। उनको लोगों ने कई प्रकार

स्वामीजी को पढ़ने का अभ्यास विलक्षण था। पुस्तक पढ़ते समय १०।१२ सेकेण्ड में एक पृष्ठ उलट देते थे और इसी प्रकार दूसरा, तीसरा — जहां तक पढ़ते उलटते जाते थे। उनके पढ़ने का यही क्रम था। एक दिन राजाजी ने पूछा—स्वामीजी, आप इतनी जल्दी पृष्ठ कैसे उलट देते हैं, क्या इतनी देर में समूचा पृष्ठ पढ़ डालते हैं? स्वामीजी ने कहा—राजन्, आपने देखा होगा कि जब कोई बालक पहले-पहल पढ़ना सीखने लगता है, तब वह एक एक अक्षर को ध्यान से देख कर कई बार उच्चारण करता है। इस प्रकार शब्द तक पहुँचता है। फिर एक एक शब्द को कई बार कहता हुआ पूरा वाक्य पढ़ पाता है। पुनः धीरे धीरे जब उसका अभ्यास बढ़ने लगता है, तब शब्द, शब्द के पश्चात् पूरे वाक्य पर उसकी दृष्टि पड़ती है। इसी प्रकार जिस मनुष्य में भाव ग्रहण करने की शक्ति हो जाती है, वह पूरा पृष्ठ एक साथ ही पढ़ सकता है और उसे पृष्ठ की सभी बातें एक साथ ही मालूम हो जा सकती हैं। इसमें कोई विचित्रता या असंभवता नहीं है, यह केवल अभ्यास, ब्रह्मचर्य

से परीक्षा ली। बंगाल में उनके त्याग और महात्मापन की धूम मच गयी। बड़े बड़े शिक्षित उनके शिष्य हुए। रामकृष्ण-मिशन उन्हीं परमहंस देव के नाम पर उनके शिष्य सम्प्रदाय द्वारा प्रतिष्ठित हुआ। भारत-वर्ष में यह सेवा-संस्था अपने ढङ्ग की एक ही है। ५२ वर्ष की अवस्था में परमहंस देव ने इहलीला संवरण की। वे एक महापुरुष थे।

और एकाग्रता का फल है। इन तीनों की सहायता से कोई भी ऐसा अभ्यास कर सकता है। यदि आप चाहें तो आप भी कोशिश करें, शीघ्र ही आपको भी ऐसा अभ्यास हो जायगा।

एक अवसर पर राजाजी ने प्रश्न किया—स्वामीजी महाराज, विधान या नियम क्या है ?

स्वामीजी ने उत्तर दिया—मन जिस प्रणाली से कतिपय वस्तुओं को धारण करता है, वही विधान है, वही नियम है। वाह्य-जगत् में नियम की कोई सत्ता नहीं है। घटनाओं का ज्ञान हम लोगों के मन में जिस प्रकार होता है, उसी ज्ञान को नियम कहते हैं। मन अपने संस्कारों को विभिन्न, किन्तु सजातीय श्रेणी में विभाग करता है। प्रत्येक श्रेणी के अन्तर्गत विषयों के साधारण लक्षण एक एक नियम के आकार में प्रकाशित होते हैं। इस प्रकार वाह्य वस्तु के संस्कारों पर बुद्धि की प्रतिक्रिया से प्रत्येक नियम की उत्पत्ति होती है।

+ + + +

आबू से चलते समय अपने साथ ही आग्रह-पूर्वक राजाजी बहादुर स्वामीजी को खेतड़ी लिवा लाये। खेतड़ी में उनका बड़ा समादर किया। स्वामीजी के साथ प्रति दिन धर्म-चर्चा होती रहती थीं। एक दिन राजाजी ने स्वामीजी से प्रश्न किया—स्वामीजी, सत्य क्या है ? उत्तर में स्वामीजी ने कहा—पूर्ण सत्य एक और अद्वितीय है। परन्तु साधारणतः जिसको हम लोग सत्य समझते हैं, वह आपेक्षिक रूप से सत्य है। ज्यों-

ज्यों मनुष्य में ज्ञान की वृद्धि होती जाती है, त्यों-त्यों वह एक सत्य को छोड़ कर दूसरे सत्य का ग्रहण करता जाता है। मनुष्य जिसको त्याग करता है, वह मिथ्या नहीं है, किन्तु जिस को ग्रहण करता है, वह और श्रेष्ठतर सत्य है। इस अवस्था में चरम सत्य की प्राप्ति नहीं होती। चरम सत्य की प्राप्ति हो जाने पर आपेक्षिक सत्य—ज्ञान का लोप हो जाता है।

स्वामीजी का उत्तर मार्मिक होता था। राजाजी की श्रद्धा उन पर दिनोंदिन बढ़ती गयी। राजाजी ने स्वामीजी से पदार्थ-विज्ञान का अध्ययन करना आरम्भ किया। स्वामीजी की सम्मति से एक लेबोरेटरी (Laboratory) भी स्थापित की गयी थी। लेबोरेटरी थी तो छोटी, परन्तु उसमें सभी आवश्यक, उत्तमोत्तम यन्त्रों का संग्रह किया गया था। राजाजी के महल की छत पर एक टेलिस्कोप भी लगाया गया था।

खेतड़ी में आने से स्वामी विवेकानन्दजी को भी एक सु-अवसर प्राप्त हुआ। खेतड़ी के राज-पण्डित नारायणदासजी[1]

---

१ पण्डित नारायणदासजी का जन्म विक्रम संवत् १९०२ मार्गशीर्ष कृष्ण ८ को अलवर राज्य के 'गाजी का थाना' नामक गांव में हुआ था और काशी में उन्होंने पहले पण्डित गोविन्द शास्त्रीजी से और पीछे महा-महोपाध्याय पं० शिवकुमार शास्त्रीजी से शिक्षा पायी। संवत् १९४० वि० में राजा अजीतसिंहजी बहादुर की गुण-ग्राहकता से पण्डितजी का खेतड़ी में आगमन हुआ। व्याकरण पर आपका असाधारण अधिकार था। खेतड़ी

को पूर्ण वैयाकरण देख कर उनसे स्वामीजी ने अष्टाध्यायी, महाभाष्य का अध्ययन किया। स्वामीजी पण्डितजी का गुरुवत् आदर करते थे और सुदूरवर्ती अमेरिका तक से पत्र लिखते समय "मेरे अध्यापक" कह कर उनका स्मरण करते थे।

स्वामीजी के जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली एक महत्त्वपूर्ण घटना खेतड़ी में हुई थी। गर्मी का मौसिम था। एक दिन संध्या के समय राजाजी बाग में अपने सहचरों के साथ बैठे हुए थे। राजाजी ने स्वामीजी को भी वहां बुलाने की इच्छा प्रकट की। आज्ञा पाते ही एक सेवक स्वामीजी को बुलाने के लिये दौड़ गया। स्वामीजी के आने पर थोड़ी देर धर्म-सम्बन्धी बातें हुई। इतने में एक वेश्या—गायिका सलाम मालूम करने आयी। वह गाना सुनाना चाहती थी। गाना शुरु होने को था कि स्वामीजी अपने स्थान पर जाने के लिये उठे। किन्तु राजाजी ने उन्हे आग्रह-पूर्वक रोक लिया। कहा—"इसका गाना सुन कर सभी प्रसन्न होते हैं, आप भी सुनने की कृपा

की राजकीय संस्कृत पाठशाला में विद्यार्थियों को आप व्याकरण की शिक्षा देते थे। अपने जीवन के अंतिम भाग में कई वर्षों तक पण्डितजी फतहपुर में रायबहादुर सेठ रामप्रतापजी चमड़िया के संस्थापित 'शेखावाटी संस्कृत महाविद्यालय' में अध्यापन करते रहे। प्रथम राजस्थान-ब्राह्मण-सम्मेलन के आप सभापति बनाये गये थे। संवत् १९९८ वि० में आपका देहावसान हुआ।

कीजिये। यह भजन सुनावेगी।" स्वामीजी राजाजी के अनुरोध पर अन्यमनस्क से होकर बैठ गये। गाना आरम्भ हुआ। रात के समय गाना खूब जमता है। ताल-स्वर के साथ गायिका ने सूरदासजी का पद—"हमारे प्रभु औगुन चित न धरो" [1] गाया। स्तब्धता छा गयी। गाना समाप्त हुआ। स्वामीजी गद्गद् हो गये। उन्होंने सोचा इस पतिता स्त्री ने एक भक्त का पद गाकर 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'—इस तत्त्व को हृदयङ्गम करा दिया है। स्वामीजी ने स्वयं लिखा है—"वह गाना सुन कर मैंने समझा कि क्या यही मेरा संन्यास है? मैं संन्यासी हूँ और यह एक पतिता नारी है—यह ऊँच नीच की भावना—यह भेद-बुद्धि आज भी दूर नहीं हुई? सब प्राणियों में ब्रह्मानुभूति बड़ा ही कठिन कार्य है। चाण्डाल की

---

१ सूरदासजी का वह पूरा पद यों है :—

हमारे प्रभु औगुन चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो, अब मोहि पार करो॥
इक नदिया इक नार कहावत मैलो हि नीर भरो।
जब दोऊ मिलि एक बरन भये, सुरसरि नाम परो॥
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो।
पारस गुन औगुन नहिं चितवै, कंचन करत खरो॥
यह माया-भ्रम-जाल निवारो, सूरदास सगरो।
अब की बेर मोहि पार उतारो नहिं प्रन जात टरो॥

बातें सुन कर भगवान् शङ्कराचार्य के मन से भेद-बुद्धि लुप्त हो गयी थी। ऐसी तुच्छ तुच्छ घटनाओं से कितने महान् फल उत्पन्न होते हैं, इसकी गणना कौन कर सकता है?" उस वेश्या को सम्बोधन कर स्वामीजी ने कहा—"माता, मैंने अपराध किया है। क्षमा करो। मैं तुम्हें घृणा की दृष्टि से देख कर यहाँ से उठा जाता था। परन्तु तुम्हारा ज्ञान-गर्भ गाना सुन कर मेरी आँखें खुल गयी हैं।" इस घटना के पश्चात् स्वामीजी उस गायिका को माता कह कर सम्बोधित किया करते थे।

× × × ×

राजाजी साहब ने स्वामीजी से पदार्थ-विज्ञान के साथ साथ कानून का अध्ययन भी किया था। स्वामीजी के पढ़ाने की उत्तम शैली और अपनी बुद्धि की विचक्षणता से उन्होंने थोड़े समय में ही अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली थी। इसी प्रकार जब तक स्वामीजी खेतड़ी में रहे, तब तक प्रति दिन ज्ञान-वर्द्धक आलोचना प्रत्यालोचना होती रही। राजाजी अपनी ज्ञान-पिपासा शांत करने का प्रयत्न करते ही रहे।

यह बात शायद बहुत कम लोग जानते होंगे कि स्वामीजी का सर्वजनविदित विवेकानन्द नाम रखनेवाले राजा श्री० अजीतसिंहजी बहादुर ही थे। पहले स्वामीजी अपना नाम "विविदिषानन्द" लिखा करते थे, यह बात उनके पुराने पत्रों से भी प्रमाणित है। खेतड़ी की प्रथम यात्रा में एक दिन स्वामीजी के पास राजाजी बैठे हुए थे। उन्होंने हँसते हँसते

कहा महाराज, आपका नाम बड़ा कठिन है। बिना टीका-कार की सहायता के साधारण लोगों की समझ में इसका मत-लब नहीं आ सकता। उच्चारण करना भी सहज नहीं। इसके अतिरिक्त अब तो आपका विविदिषा-काल (विविदिषा का अर्थ है जानने की इच्छा) भी समाप्त हो चुका। स्वामीजी ने राजाजी के युक्ति युक्त परामर्श को सुन कर पूछा—आप किस नाम को पसन्द करते हैं? राजाजी ने कहा—मेरी समझ में आपके योग्य नाम "विवेकानन्द" है। स्वामीजी ने अपने पर-मानुरक्त राजाजी की इच्छा के अनुसार उसी दिन से अपना नाम विवेकानन्द मान कर उसका व्यवहार आरम्भ कर दिया। यह नाम कितना प्रसिद्ध हुआ, भारतवासियों को कितना प्रिय हुआ—यह लिख कर बतलाने की आवश्यकता नहीं है। हमारा यह कथन नहीं है कि स्वामीजी की कीर्ति का कारण उनका यह नया नाम ही था। इस घटना के लिखने से हमारा तात्पर्य केवल इतना ही है कि इससे यह जानने में सुगमता होगी कि स्वामीजी का राजाजी पर कितना प्रेम था, और राजाजी भी उनका कितना प्रेम-पूर्ण आदर करते थे।

यों ही कई महीने बीत गये। राजाजी चाहते थे कि स्वामीजी कुछ दिनों और ठहरें किन्तु स्वामीजी ने जाना ही निश्चित कर लिया। खेतड़ी से विदा होकर जयपुर होते हुए स्वामीजी गुजरात की ओर चले गये। प्रवास-काल में उन्होंने अपने स्थान की कोई सूचना नहीं दी थी, इसलिये उनके साथी बड़े

चिन्तित थे। उनके अन्यतम गुरुभाई स्वामी अखण्डानन्दजी तलाश करते-करते जयपुर पहुँचे। जयपुर-स्थित खेतड़ी-भवन से उन्हें कुशल-संवाद के साथ स्वामीजी के चले जाने की सूचना मिली। उन्होंने फिर पीछा किया और गुजरात के 'मांडवी' स्थान में उन्हें पाया। कुछ दिनों दोनों गुरुभाई साथ रहे। पश्चात् अखण्डानन्दजी लौट आये। उन्हें उदर-रोग हो गया था। अपने साथियों की सलाह से रोग की निवृत्ति के लिये स्वामी अखण्डानन्दजी खेतड़ी पहुँचे और प्रायः डेढ़ महीने रहे। राजाजी ने उनके लिये आवश्यक प्रबन्ध कर दिया था। शेखा-वाटी के जलवायु ने स्वामीजी के स्वास्थ्य को सुधार दिया। नीरोग होकर स्वामी अखण्डानन्दजी खेतड़ी से स्वस्थान बङ्गाल को चले गये।

संवत् १९४९ वि० में राजा साहब अपनी राज-महिषी श्रीमती चाँपावतजी साहबा सहित आगरे पधारे हुए थे। वहीं माघ शुक्ला ९ को उनके पूर्वजों के पुण्य, शुभचिन्तकों की कामना और प्रजा के भाग्य से राजकुमार श्री जयसिंहजी का जन्म हुआ। इससे पहले दो राजकुमारियों का जन्म हो चुका था। पुत्र-जन्म साधारणतया सभी के लिये सुखद होता है, परन्तु जहाँ पुत्र होने में विलम्ब हो गया हो, सन्तान हों नहीं, अथवा कन्या ही कन्या की सन्तान हों, वहाँ पुत्र-जन्म विशेष आनन्द-दायक होता है। सभी शुभचिन्तक यह मनाते थे कि राजाजी को पुत्र-मुख-दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो। स्वामीजी ने भी यह मंगल-कामना

की थी। सब की प्रार्थना पूरी हुई—आशीर्वाद सफल हुआ। राजाजी ने इस शुभ उपलक्ष में बड़ा उत्सव मनाने का प्रबन्ध किया। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्दजी को वे कैसे भूल सकते थे ? उन्हें पता लगा कि स्वामीजी मद्रास में हैं और विदेश जाने की चिन्ता में हैं, उनके अनुरक्त भक्त यात्रा के लिये अर्थ-संग्रह करने के प्रबन्ध में लगे हुए हैं। यह समाचार पाते ही राजाजी ने अपने सेवक मुन्शी जगमोहनलालजी को मद्रास भेजा। मुन्शीजी शीघ्रता-पूर्वक वहां पहुँचे और बड़े प्रयत्न से उन्होंने बाबू मन्मथनाथ भट्टाचार्य एसिस्टेण्ट एकाउण्टेण्ट जनरल का मकान ढूँढ़ निकाला, जहां स्वामीजी ठहरे हुए थे। मुन्शीजी ने भट्टाचार्य महाशय के एक नौकर से पूछा कि स्वामीजी कहाँ हैं ? उसने स्वाभाविक रूप से उत्तर दिया—समुद्र पर गये। प्रेम सदा विपरीत आशङ्का किया करता है। यह प्रेम का स्वभाव है। मुन्शीजी को नौकर से जो उत्तर मिला, उसका अर्थ यही था कि स्वामीजी समुद्रतट पर घूमने गये हैं। परन्तु उन्होंने उसका अर्थ यह समझ लिया कि स्वामीजी विदेश जाने के लिये समुद्र पर गये। अपनी इस समझ के कारण वे घबड़ा उठे परन्तु उसी समय उनकी दृष्टि पासवाली कोठरी में पड़ी। वहाँ उन्होंने देखा कि स्वामीजी के वस्त्र खूंटी पर टंगे हुए हैं। वस्त्रों को देख कर मुन्शीजी ने समझा कि स्वामीजी अभी गये नहीं—मद्रास में ही हैं। यों सोच विचार कर ही रहे थे कि मकान के सामने एक गाड़ी आकर खड़ी हुई और जब उसमें से

स्वामीजी को उतरते देखा तब उन्हें सन्तोष हुआ। मुन्शीजी ने आगे बढ़ कर अभिवादन किया और स्वामीजी ने राजा साहब के कुशल समाचार पूछे। स्वामीजी के प्रश्न का यथोचित उत्तर देकर मुन्शीजी ने अपने आने का अभिप्राय निवेदन किया। पूरी बात ध्यान से सुन कर स्वामीजी ने कहा—"३१ मई को अमेरिका जाने का मैंने निश्चय किया है, उसी के लिये प्रबन्ध करने में लगा हुआ हूँ। ऐसी दशा में खेतड़ी कैसे चल सकता हूँ ? अब समय कहाँ है ?" मुन्शीजी ने कहा—'अधिक नहीं तो एक दिन के लिये ही पधारिये। आपका चलना बड़ा आवश्यक है। राजाजी बहादुर का आग्रहपूर्ण अनुरोध है। इस अवसर पर आपके न पहुँचने से उनको बड़ा मानसिक कष्ट होगा। आप विदेश जाने के लिये जो प्रबन्ध कर रहे हैं उसके लिये चिन्ता नहीं, राजा साहब उसका सब प्रबन्ध कर देंगे। आप कृपा कर मेरे साथ ही खेतड़ी पधारिये।' स्वामीजी इस आग्रह को टाल न सके और मद्रास से मुन्शीजी के साथ प्रस्थानित होकर खेतड़ी पहुँचे। खेतड़ी में उस समय राजकुमार का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था। कई दिनों ठहरने के बाद स्वामीजी ने बम्बई जाने की इच्छा प्रकट करते हुए कहा कि अब अमेरिका जाने के लिये प्रबन्ध करना आवश्यक है। अमेरिका के चिकागो में 'सर्व-धर्म-परिषद्' की बैठक होनेवाली थी, उसमें भारतवर्ष की ओर से सम्मिलित होने के लिये स्वामीजी जा रहे थे। राजाजी ने स्वामीजी की विदेश-यात्रा के उद्देश्य की महत्ता

राजकुमार श्री० जयसिंहजी के साथ



श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर

समझ ली थी और इसलिये उन्हें अधिक ठहराना उचित नहीं समझा। जयपुर तक राजाजी स्वयं स्वामीजी को पहुँचाने के लिये गये। वहाँ से उन्होंने मुन्शी जगमोहनलालजी को स्वामीजी की अमेरिका यात्रा के लिये उचित प्रबन्ध कर देने का आदेश देकर बम्बई भेजा। स्वामीजी राजासाहब की उदारता से अपनी यात्रा के व्यय-भार की चिन्ता से मुक्त हुए।

मुंशीजी ने राजा साहब की आज्ञा के अनुसार स्वामीजी के लिये आवश्यक सामग्री एकत्र की, उपयोगी कपड़े बनवाये और जहाज की प्रथम श्रेणी (फर्स्ट क्लास) का टिकट खरीद दिया। ३१ मई सन् १८९३ ई० को बम्बई से स्वामीजी अमेरिका के लिये रवाना हुए।

\+ + + +

यथा समय अमेरिका पहुँच कर स्वामीजी ने भारतवर्ष और हिन्दू-धर्म का वहाँ झण्डा फहरा दिया। स्वामीजी की चिकागो की धर्म-परिषद् में दी हुई वक्तृताएँ संसार प्रसिद्ध हुईं। सुनने और पढ़नेवालों ने उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की। स्वामीजी की इस सफलता का संवाद पाकर राजाजी बहादुर को वर्णनातीत आनन्द हुआ और इसके लिये खास तौर से उन्होंने अपने दरबार (राजसभा) की विशेष बैठक करके निम्नलिखित आशय का पत्र स्वामीजी का अभिनन्दन करने के लिये अमेरिका भेजा :—

मान्यवर स्वामीजी,

अमेरिका के चिकागो शहर की भिन्न-भिन्न धर्मानुयायियों की विराट् सभा में आपने हिन्दू-धर्म का महत्व वर्णन कर भारतवर्ष का मुखोज्ज्वल किया है। अतएव आपके प्रति सम्मान प्रदर्शित करने एवं धन्यवाद देने के उद्देश्य से यह दरबार किया गया है। इस दरबार के सभापति के अधिकार से अपनी एवं अपनी प्रजा की ओर से आपको अमेरिका में हिन्दू-धर्म का गौरव बढ़ाने के लिये आन्तरिक धन्यवाद देने में मैं आज असीम आनन्दानुभव कर रहा हूँ।

हिन्दू-धर्म के साधारण सिद्धान्तों का अंग्रेजी भाषा में जिस खूबी से आपने वर्णन किया है, मैं नहीं समझ सकता कि, उससे बढ़ कर स्पष्टता से कोई भी व्यक्ति भाषा के स्वाभाविक अभावों एवं बन्धनों के होते हुए भी प्रकट कर सकता है। विदेश में आपके ऐसे भाषण हुए हैं और विदेशियों के साथ आपने ऐसा व्यवहार किया है कि उसके प्रभाव से भिन्न-भिन्न देशों तथा भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के (अनुयायी) मनुष्यों में आपके प्रति आदर एवं प्रशंसा के भाव आ गये हैं। केवल यही नहीं, बल्कि आप उनके साथ इस प्रकार हिल-मिल गये हैं कि आपको अपने निःस्वार्थ उद्देश्य की पूर्ति में पूरी सहायता मिलेगी। इसके लिये हम आपकी जितनी प्रशंसा करें, थोड़ी है। आपने अनेक कष्ट सहन कर अमेरिका जाकर वहाँ, 'सर्व-धर्म-परिषद्' में, जिस प्राचीन धर्म को हम अपना प्राण समझते

हैं, उसके सिद्धान्तों की व्याख्या की है; उसके लिये इन टूटे फूटे शब्दों द्वारा यदि अपनी कृतज्ञता प्रकट न करें तो हम लोग कर्त्तव्य-च्युत समझे जायँगे। भारतवर्ष को इस बात का गर्व है कि उसने आप जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया है। जिन महत्पुरुषों ने सर्व धर्मों की महासभा का सङ्गठन करने में सफलता प्राप्त की है और जिन्होंने उत्सुकतापूर्वक आपका स्वागत किया है, उन्हें भी धन्यवाद देना हमारा कर्त्तव्य है।

आप सात समुद्रों पार उस महादेश में एक अपरिचित व्यक्ति थे, परन्तु आपका उन्होंने कैसे उत्साह के साथ स्वागत किया है? किस सहृदयता से आपके साथ व्यवहार किया है? उन्होंने आपके अनुपम गुणों को पहिचाना है—उन पर वे मुग्ध हो गये हैं। यह भाव उनके उत्कृष्ट स्वभाव का है। ठीक है, जौहरी ही जवाहिर की कद्र करता है।

इस पत्र की २० प्रतिलिपियाँ मैं इस पत्र के साथ भेजता हूँ और सविनय निवेदन करता हूँ कि आप इस पत्र को तो अपने पास रक्खें और प्रतिलिपियाँ अपने मित्रों में बाँट दें।

ता० ४ मार्च सन् १८९५ ई० }

भवदीय अभिन्न हृदय,
अजीतसिंह, खेतड़ी

× × × ×

उक्त पत्र के उत्तर में श्री० स्वामी विवेकानन्द ने जो सार गर्भित उपदेश-पूर्ण पत्र भेजा था, वह इस प्रकार है:—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

महाराज,

यह भगवान् की उक्ति है। वह अनन्त पुरुष उक्त वाक्य की घोषणा करके पाप का नाश करता है और उसी ने पुण्य कर्मों के प्रति इस विश्व में आग्रह उत्पन्न किया है।

यद्यपि यह सच है कि भगवान् की प्रत्यक्ष लीला का वर्णन कई बार अनोखे काव्य के रूप में हमारी आँखों के सामने आया है और उसने हमारे श्रुति-गह्वरों (कानों) में अमृत की वर्षा की है, परन्तु उक्त महावाक्य का प्रत्येक अक्षर भगवान् की शक्ति के प्रभाव से उपयुक्त क्रिया-साधन में कुछ भी अन्तर उपस्थित नहीं करता। इस विश्व की पहली अवस्था गुण-शक्ति का (Qualitative Force) एकत्व (Sameness) है। जब तक मनुष्य उस प्राथमिक पूर्ण एकत्व को प्राप्त नहीं करता तब तक उस एकत्व की प्राप्ति के लिये वह युद्ध और बार बार (इस संसार में) आत्म-प्रकाश करता है। इस संसार में जो कुछ भेद-भाव है, वह सब उसी एकत्व-समरसत्व (Homo-

geneity) पाने के लिये है। जितने मनुष्य, जितने धर्म और उनकी शाखा-प्रशाखाएँ हैं, उन सबकी गति एक है—लक्ष्य एक है।

इस संसार में—इस सर्व विधायक साम्यमय राज्य में इस अवस्था की प्राप्ति के लिये ही प्रत्येक जाति आश्चर्य-जनक आग्रह-पूर्वक उसके साधन-निमित्त सभी कार्यों का अनुष्ठान करती है। वे विशिष्ट आग्रह ही उस जाति की विशेषता के परिचायक हैं। उसी विशेषता के द्वारा जातियाँ सर्व-साधारण का पार्थक्य (अलगाव) निश्चय करती हैं। यही विशेषताएँ हैं—इन्हीं सब विशेषताओं का सन्निवेश हिन्दू धर्म में है, क्योंकि भारतवर्ष धर्म-भूमि है।

धन, ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा या अन्य कोई सुख-सम्भोग ही जिनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य है और उसी की प्राप्ति के लिये जिन की सब चेष्टाएँ होती हैं, अदम्य विक्रम और व्यर्थ का रक्तपात करना ही जिनकी शक्ति का कर्तव्य है,—जिनकी यह धारणा है, जिनका यह विश्वास है कि इस जीवन में ऐहिक इन्द्रिय-जात सुख ही परम सुख है; उन लोगों के लिये यह भारतवर्ष मरु भूमि है, क्योंकि यहाँ की प्रत्येक क्रिया धन, मान और नामवरी में अन्तर पहुँचाने के लिये—प्रवृत्ति हटाने के लिये सदा तत्पर रहती है। भारतवर्ष धर्म-भूमि है, विलासियों का विलास-कुञ्ज नहीं।

जिनकी आत्माएँ उस सुदूर समागत और इन्द्रियों के परे की पवित्र अमृतधारा का पान कर चुकी हैं, साँप के केंचुली त्याग करने की भाँति जिन मनुष्यों ने इस संसार में कामिनी, काञ्चन और कीर्ति—इन समस्त बन्धनों का परित्याग कर दिया है, जिन्होंने शांति के शिखर पर आरूढ़ होकर तुच्छ असारवस्तु—कलह, और हिंसा-द्वेष के स्थान में असीम प्रेम और अपार आनन्द की स्थापना की है, जिनके अतीत संचित सुकर्मों ने अज्ञान का पर्दा हटा दिया है एवं नाम और शान के गर्व की निस्सारता उनके नेत्रों के सामने उपस्थित कर दी है, वे असाधारण शक्ति-सम्पन्न मनुष्य ही इस संसार के तत्त्व जिज्ञासुओं के गुरु हैं क्योंकि जननी भारती का धर्म-भण्डार भगवान् के जानने पहचानने के लिये सदा खुला रहता है। वहाँ किसी के प्रवेश निषेध की आज्ञा नहीं है। इस माया-मरीचिका-मय संसार में जिनका एक मात्र अस्तित्व है, उन्हें पहचानना हो तो उसी माता के कृपा-भण्डार में आश्रय लो, इसके सिवाय उन्हें पहचानने के लिये कोई दूसरा उपाय नहीं है—कोई दूसरी गति नहीं है।

इस मनुष्य-समाज में सब की बुद्धि एक दूसरे से भिन्न है। जो जिस प्रकार समझ सकता है, जिसकी जैसी धारणा जमी हुई है, उसी बुद्धि और धारणा के अनुकूल कोई बात सम-झायी जाय तभी वह समझता है। यदि सर्वसाधारण को सामर्थ्य का प्रभाव समझाना हो तो जैसे वे समझ सकते हैं,

ठीक वैसे ही उन्हें समझाना उचित है और उसी तरह समझाया जाता है। किन्तु भारतवर्ष अपनी शक्ति-सामर्थ्य का प्रभाव न दिखला कर भी आज विद्यमान है और अनन्त काल तक रहेगा भी। शताब्दियों से भारतवर्ष, दूसरी जातियों के पाँवों तले दबा हुआ है, एक दिन भी इसने प्रतिरोध करने की इच्छा नहीं की। पर-पदाक्रान्त रह कर भारतवर्ष ने एक दिन के लिये भी बल-प्रयोग नहीं किया, राजनीति से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रक्खा, तथापि यह वह अस्थिचर्मावशेष भारतवर्ष आज भी वर्तमान है।

कहा जाता है कि "जो योग्य होता है, वही जीवित रहता है।" यदि यह बात सच है तो यह सर्वथा अयोग्य जाति इस समय क्यों कर जीवित है? सब देख रहे हैं कि भारतवर्ष प्राण-रहित एक कङ्काल है। कङ्काल सार भारत-सन्तान आज भी ध्वंस प्रायः क्यों न हो गयी?

सुदृढ़ और बुद्धिशाली अन्य जातियों की अपहरण-शक्ति द्वारा दिनों दिन क्षय होने पर भी अनैतिक हिन्दुओं ने अपनी असीम वृद्धि का परिचय दिया—यह क्यों? जो अपने कटाक्ष मात्र से पृथ्वी को रुधिर-धारा से प्लावित कर सकते हैं, निस्सन्देह उन्हीं की प्रशंसा होती है; जो थोड़े लोगों को भरपेट खिलाने के लिये, करोड़ों स्त्री-पुरुषों को उपवास करने के लिये वाध्य करते हैं, वे भी प्रशंसा के अधिकारी हैं। परन्तु जो करोड़ों मनुष्यों

को दूसरों के आगे से भोजन की थाली बिना खींचे ही शांति और सुख में रखते हैं, उनका कुछ भी यश नहीं—यह क्यों ?

सभी जातियों के प्राचीन पुराण अगणित वीरों के इतिहास से परिपूर्ण हैं। वे सभी वीर विजयी थे। फलतः जब तक भारत-सन्तान अपने पूर्वजों को विस्मृत नहीं करेगी, जब तक अपने पूर्वजों की धमनियों में दौड़नेवाले रक्त की पवित्रता धारण करेगी, तब तक इस पृथ्वी की कोई भी शक्ति उनका नाश नहीं कर सकेगी।

जो लोग अपने अतीत जीवन की ओर फिर कर देखते हैं, आज-कल सभी उनकी निन्दा करते हैं। कहा जाता है, भारत के केवल अतीत का विचार करने से ही यहाँ की दशा अत्यन्त शोचनीय है। परन्तु मैं कहता हूँ कि यह बिल्कुल असत्य और उल्टी बात है। जिस दिन भारत-संतान अपने अतीत की कीर्ति-कथा को भूल जायगी उसी दिन उसकी उन्नति का मार्ग बन्द हो जायगा। पूर्वजों के अतीत पवित्र कर्म आनेवाली संतान को सुकर्म्म की शिक्षा देने के लिये अत्यन्त सुन्दर उदाहरण हैं। अतीत की नींव पर ही भविष्य की स्थापना होती है। जो चला गया वही भविष्य में आगे आवेगा। हिन्दुओं के अतीत का इतिहास उनके गौरव की पराकाष्ठा है। उस अतीत गौरव की स्मृति से उनके भविष्य के भी वैसे ही गौरवमय होने की संभावना है। अब तक जिन्होंने अतीत

का उज्ज्वल इतिहास उनके समक्ष रक्खा है, वे ही हिन्दू जाति के सच्चे हितैषी हैं।

प्राचीन काल का आचार-व्यवहार अमुक प्रकार का था इसी कारण भारतवर्ष का अधःपतन है—यह कुछ बात नहीं, बल्कि मेरी राय में तो उन सब आचार व्यवहारों की चरम सीमा में लोग पहुँच नहीं सके, इसीलिये भारतवर्ष का यह अधःपतन हुआ है। प्रत्येक समालोचक यह जानता है कि भारतवर्ष के सामाजिक नियमों में परिवर्तन होता आया है। परिवर्तन के योग्य जो रीति-नीति हैं, काल और धर्म के वशवर्ती हो, वे आपसे आप परिवर्तित हो जायँगी, इसके लिये कोई प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं—यह कहना अनुचित नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि भारतवर्ष के हिन्दू जाति के उन महाप्राज्ञ मनीषियों द्वारा प्रवर्तित विधि-व्यवस्था सब का मर्म है। उन मनीषियों के वंशज अपनी धारणा में उन विधि-व्यवस्थाओं को नहीं ला सकते हैं। इसी कारण भारतवर्ष का यह अधःपतन हुआ है।

प्राचीन भारतवर्ष के ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने अपनी विजय वासना को पूर्ण करने के लिये सैकड़ों वर्ष केवल युद्ध-क्षेत्र में ही व्यतीत किये हैं और उसी समय के उद्धत राजा युद्ध को ही अपना जीवन-व्रत समझते थे। एक ओर तो निरक्षर जनता थी और दूसरी ओर विजयाभिलाषी राजा लोग। इन दोनों समूहों को उस समय बाँधने के लिये धर्म-बंधन था। यही

कारण है कि धर्म-सम्बन्धी आचार व्यवहार, रीति-नीति कठोर हो गयी। उद्धत और निरक्षर लोगों को धर्म-बन्धन में बांध रखने के लिये ही उस समय धर्म के विधान को कुछ कठोर बनाने की आवश्यकता हुई। इन दोनों प्रकार के झगड़ों को दूर करने के लिये भगवान् श्रीकृष्ण का आविर्भाव हुआ। क्षात्र-तेज और ज्ञान की महिमा की रक्षा करने के लिये ही भगवान् इस धराधाम पर अवतीर्ण हुए थे। जो दर्शन-शास्त्र का सार है, स्वाधीनता का सार है और धर्म का सार है, उसी सब के सार की शिक्षा का उपदेश भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन को दिया है। इस समय भी सब लोगों ने गीता-शास्त्र के मूल तत्त्व को हृदयङ्गम नहीं किया है। वह अवश्य ही एक दिन हिन्दुओं के ज्ञान-गोचर होगा।

दरिद्रों के ऊपर प्रभुत्व और अज्ञ लोगों के शिक्षक होने के लिये क्षत्रिय और ब्राह्मणों का आग्रह धीरे-धीरे असह्य हो गया था। क्या ब्राह्मण क्या क्षत्रिय—सबने अपने अधीनस्थों को अनेक बन्धनों से आबद्ध करने के लिये अनेक प्रयत्न किये थे। अंत में क्षत्रियों के अदम्य तेज और ब्राह्मणों के असीम ज्ञान का परस्पर सामञ्जस्य करने के लिये गीता शास्त्र की उत्पत्ति हुई थी।

इस बात पर विशेष रूप से लक्ष्य रखना चाहिये कि प्राचीन भारतवर्ष में सामञ्जस्य का विधान करने के लिये जिन दो महापुरुषों ने जन्म धारण किया था, वे दोनों क्षत्रिय थे। श्रीकृष्ण और बुद्ध ने भगवान् के अवतार रूप से लोगों के द्वार पर जाति

और धर्म का कुछ भी विचार न कर ज्ञान का प्रचार किया था।

बौद्ध धर्म में साधारण नैतिकता के रहने पर भी उसके कुछ प्रयत्न व्यर्थ हुए। इसका कारण यह है कि अन्त में वह धर्म अनेक प्रकार के कुसंस्कारों से आच्छन्न हो गया और बहुत से मन्दिर और देव-देवियों की प्रतिमाएँ स्थापित हुईं।

एक समय इस भारतवर्ष में दुराचार बहुत बढ़ गया था। उस दुराचार के घृणित और अनुचित काम श्री शङ्कराचार्य और उनके संन्यासियों द्वारा ही बन्द हुए थे। जितने दिनों तक इस शुभ सुयोग का उदय नहीं हुआ था, उतने दिनों तक भारतवर्ष चुपचाप उन दुराचारियों के अत्याचारों को सहने के लिये वाध्य था। शुभ दिन आया। श्री शङ्कराचार्य आविर्भूत हुए। उनके पश्चात् श्री रामानुजाचार्य और श्री माध्वाचार्य का आविर्भाव हुआ। भारतवर्ष से दुराचार की कठिन—कठोर और समाज-विद्वेषी क्रियाएँ न मालूम कहाँ लुप्त हो गयीं? भारतवर्ष ने फिर उसी ज्ञान और भक्ति के प्रवाह में अपनी पाप राशि को धोकर निर्मलता पायी।

इसके बाद भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास में फिर एक नया अभिनय हुआ। प्राचीन भारत के तत्कालीन ब्राह्मण और क्षत्रिय धीरे-धीरे बलहीन हो गये। हिमालय और विन्ध्याचल के मध्यवर्ती आर्यों का निवास-स्थान, आर्यावर्त—जहाँ श्री कृष्ण और बुद्ध ने अवतार धारण किया था, वही आर्यों की वास-भूमि धीरे-धीरे नीरव हो गयी। आर्यावर्त के ब्राह्मणों और

क्षत्रियों की ऐसी अवस्था क्यों हुई ? वेद-विद्या के असीम ज्ञान से ज्ञानवान् ब्राह्मण और वह अदम्य क्षत्रिय तेज क्यों इस प्रकार शिथिल पड़ गये ? भिन्न भिन्न मतान्तरों की वृद्धि ही उस अवनति का कारण है। किन्तु वह अवनति केवल सामयिक थी।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

मनु के इस वाक्य से सब को शिक्षा लेनी चाहिये। अवनत ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने फिर दक्षिण प्रदेश के बड़े बड़े मनस्वियों के चरणों में बैठ कर वेद-विद्या की शिक्षा ली। वेदान्त शास्त्र का पुनः अभ्युत्थान हुआ। इस बार वेद-विद्या जिस दिव्य प्रभा के साथ भारतवर्ष में अवतीर्ण हुई, इसके पहले ऐसी प्रभा किसी ने नहीं देखी थी। इस समय अत्यन्त दीन-हीन गृहस्थ भी अपनी छोटी सी कुटीर में बैठ कर वेद के अत्यन्त कठिन 'आरण्यक' भाग का बड़ी सरलता से पाठ करने लगे।

क्षत्रिय ही बौद्ध-धर्म के नेता थे। यही कारण है कि सर्वसाधारण ने बौद्ध धर्म का अवलम्बन किया था। संस्कार और धर्मान्तर के प्रभाव से संस्कृत के धर्मशास्त्र बौद्ध-धर्म के सामने धीरे-धीरे दब गये, जिसका फल यह हुआ कि बौद्धों के बीच से संस्कृत की शिक्षा विलुप्त-सी हो गयी। बौद्धों के संस्कृत भूल जाने के कारण वे क्रमशः वैदिक धर्म और वेद-विद्या से भी वंचित हो गये थे। ऐसी अवस्था में दक्षिण प्रदेश से जो

संस्कार का स्रोत आया उससे एक मात्र पुरोहितों का ही उपकार हुआ। परन्तु सर्वसाधारण का बौद्ध सम्प्रदाय से भी कुछ उपकार नहीं हुआ, बल्कि वे और भी अज्ञान की साँकल में मजबूत बँध गये।

क्षत्रिय ही सदैव भारतवर्ष के स्तम्भ रूप रहे हैं। क्षत्रिय ही स्वाधीनता का पालन और रक्षण करनेवाले हैं। उन्होंने भारत के बुरे संस्कारों को दूर करने के लिये बार बार प्रयत्न किये थे और उन्हीं लोगों की कृपा से पुरोहितों की अनुचित कठोरता दूर हुई थी।

जब उन लोगों में अधिकांश अज्ञता के अन्धकार में डूबे हुए थे, तब उन लोगों में मध्य एशिया की असभ्य-जातियों के रुधिर का स्पर्श हो गया था। जिस समय उन लोगों ने तलवार की सहायता से ब्राह्मणों की प्रभुता दबाने के लिये प्रयत्न किया था उसी समय भारतवर्ष का पूर्ण अधःपतन हुआ। उसी अधःपतन से भारत फिर इस जन्म में अपना उत्थान नहीं कर सका। क्षत्रिय ही भारतवर्ष की अस्थि मज्जा हैं। भारतवर्ष के पतन से ही क्षत्रियों का भी पतन हुआ। क्षत्रिय भी अपने पूर्व गौरव को फिर न पा सके। क्षत्रियों के पतन से ब्राह्मणों का पतन हुआ। उसी धारावाहिक पतन से फिर उत्थान नहीं हुआ। दो सहोदरों में एक उन्नत और एक अधःपतित रहे—यह कैसे हो सकता है?

राजाजी, आप जान लें कि आपके ही पूर्व पुरुषों ने सत्य का जो सार सत्य है, उसका आविष्कार किया था। वह सत्य यह है कि विश्व एक है, इसलिये जब तक कोई आपको क्षति-ग्रस्त नहीं करेगा तब तक वह कदापि विश्व को क्षति-ग्रस्त नहीं कर सकता। ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने जो अत्याचार किये थे, अपनी अमित शक्ति को बनाये रखने के लिये अन्यान्य जातियों की जो हानियाँ की थी, चक्रबृद्धि व्याज के साथ उन्हें उसका फल भुगतना पड़ा है, उन्हीं की हानि अधिक हुई है। उस स्वकृत कर्म के फल से आज भी वे अधःपतित अबस्था में हैं और न मालूम कितने वर्षों तक वे पराधीनता की बेड़ी पहने रहेंगे।

आप ही के एक पूर्व पुरुष ने—जो ईश्वर के अवतार माने गये हैं, कहा था—"जिसका अन्तःकरण एकता में सम्बद्ध है, वह मनुष्य इसी जन्म में स्वर्ग पाने का अधिकारी है।" हम लोग भी इस बात पर बिश्वास रखते हैं। तब क्या उनकी उक्ति मिथ्या है? अर्थ-शून्य प्रलाप है? जब यह बात नहीं है तब सर्वत्र समदर्शी होकर इसी जीवन में यदि स्वर्गलाभ हो जाय तो भगवान् से साक्षात्कार हो सकता है। अस्तु। एकता के प्रति जब तक मनुष्य अपने चित्त को दृढ़ नहीं कर सकता—जब तक एकत्व (Sameness) में तन्मय नहीं हो सकता, तब तक उसके लिये यह संसार अन्धकार-पूर्ण है। अतएव सदाशय राजाओं को उचित है कि इसी पथ का अनुसरण करें। वेदान्त जिस पथ का पथिक है, उसी पथ के वे भी पथिक बनें।

मैं भाष्यकारों की बातें नहीं कहता, भिन्न भिन्न मतावलम्बी भाष्यकारों में से दो या एक किसी विशेष भाष्यकार का अनुकरण करने के लिये नहीं कहता। महाराज, जो आपके हृदय में विराज रहा है, परमात्मा रूप से जो इस राज-शरीर में निवास करता है, वह जैसा समझता है, मैं भी उसी प्रकार से वेदान्त-शास्त्र समझने के लिये कहता हूँ। सर्वोपरि, सर्वत्र-समदर्शन—इसी महोपदेश का अनुसरण करने को कहता हूँ। सर्वत्र समदर्शन, सभी जीवों में समभाव, सर्वत्र सभी जीवों में ईश्वर-दर्शन करने के लिये महाराज, आपसे अनुरोध करता हूँ।

भगवान् ने कहा है :—

सर्व भूतस्थमात्मानं सर्व भूतानि चात्मनि।
ईक्षते योग युक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥

गीता अ० ४ श्लोक २९।

अपने को सर्व भूतस्थ जान कर और अपने में सर्व भूतों को मान कर योगयुक्तात्मा पुरुष सर्वत्र समदर्शन की इच्छा करते हैं। यही मुक्ति का—स्वाधीनता का मार्ग है। विषमता ही बन्धन का कारण है। शारीरिक एकता के बिना आज तक इस संसार में कोई भी मनुष्य, कोई भी जाति शारीरिक स्वाधीनता नहीं पा सकी। अथवा मानसिक एकता के बिना आज तक कोई मानसिक स्वाधीनता पाने में समर्थ नहीं हुआ।

मूढ़ता, असमदर्शन और बासना—यही तीनों बातें मनुष्यों के दुःखों की कारणीभूत हैं। इन तीनों में एक दूसरे के अनुकरण की प्रवृत्ति है। मनुष्य अपने को किसी मनुष्य से बड़ा क्यों समझेगा? मनुष्य पशु से श्रेष्ठ है, यह विचार भी उसके मन में क्यों स्थान पावेगा? इस संसार में सर्वत्र ही उसी सर्वव्यापी का निवास है, सर्वत्र यही तो है कि—

'त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी'—

तुम स्त्री, तुम पुरुष, तुम कुमार और तुम्हीं कुमारी हो।

बहुतों का यह कहना है कि "यह सब संन्यासियों को ही शोभा देता है, गृहस्थों के लिये यह सब नहीं है।" यह सच है, किन्तु क्या गृहस्थों के लिये कोई कर्तव्य नहीं है? गृहस्थों के सैकड़ों कर्तव्य हैं, क्या वे उनका पालन करने के लिये वाध्य नहीं हैं? समदृष्टि गृहस्थों के लिये भी आवश्यक है। समदृष्टि रखना गृहस्थ का कर्तव्य है, और इसी से गृहस्थ के यथार्थ गार्हस्थ्य धर्म का पालन होता है। सैकड़ों लोगों के साथ गृहस्थों को व्यवहार रखना पड़ता है, सैकड़ों आत्मीय स्वजन और परिजनों से वे घिरे रहते हैं, इसीलिये उन सब के प्रति समदृष्टि रखना ही गार्हस्थ्य धर्म का यथार्थ उद्यापन है। गृहस्थ सबको समान भाव से देखेंगे तभी वे वास्तविक गृहस्थ हो सकेंगे। प्रत्येक समाज, मनुष्य, जाति और जीव को इस समदर्शन की शिक्षा देनी चाहिये—यही सब का लक्ष्य होना चाहिये। परन्तु शोक

है कि लोग समदर्शन के मार्ग में कठिन वैषम्य ही देख रहे हैं। अच्छे के नाम पर बुरे की सेवा कर रहे हैं। यही मनुष्य के सर्वनाश का मूल है। इसी विषमता से मनुष्य-समाज में विषमता की धारा प्रवाहित हो रही है। यह असमदर्शन, यही अनैक्य भाव शारीरिक, मानसिक और पारमार्थिक बन्धन का एक मात्र कारण है।

गीता में भगवान् ने कहा है:—

सम पश्यन् हि सर्वत्र समवास्थितमीश्वरम्।
न हितस्त्यात्मनात्मानम् ततो याति परां गतिम्।

गीता १३। २८

सर्वत्र परमात्मा रूपी ईश्वर अधिष्ठान करता है, यह जान कर जो दूसरों से हिंसा नहीं करता वही परम गति (मोक्ष) पाता है।

आप लोग राजपूत हैं। आप लोग ही प्राचीन भारत के गौरव हैं। आप लोगों के अधःपतन से जातीय अधःपतन हुआ है और आप लोग जब उन्नत होंगे, तभी भारत की उन्नति होगी। क्षत्रिय के वंशज फिर ब्राह्मण-संतानों के साथ एकत्र होकर अज्ञानियों की ज्ञानवृद्धि और दीनों की सहायता करते हुए सर्वत्र समदर्शन का परिचय दें तभी भारत के गत-गौरव की प्राप्ति और पितृ पुरुषों की अतुल कीर्ति की रक्षा होगी।

वह सुसमय नहीं आया है, उस शुभ-मुहूर्त का सुन्दर संयोग अभी नहीं हुआ है—यह बात कौन कह सकता है? एक समय एक ध्वनि उठी थी, उस ध्वनि का कम्पन घूम घूम कर प्रति दिन बल-सञ्चय कर रहा है। एक दिन सरस्वती नदी के तट पर खड़े होकर एक ब्राह्मण ने जिस ध्वनि का उच्चारण किया था, वह ध्वनि पर्वतराज हिमालय के प्रत्येक शिखर पर प्रतिध्वनित हुई थी और उसी ध्वनि की गूँज श्रीकृष्ण, बुद्ध और श्री चैतन्य के अन्तःकरण से उठी थी। फिर वही ध्वनि भारतवासियों के श्रुतिपथ का स्पर्श करेगी। फिर भारत भण्डार का द्वार उन्मुक्त होगा। फिर वही उज्ज्वल आलोक—दिव्य प्रकाश—जिस प्रकाश से यह ब्रह्माण्ड प्रकाशित है, आँखों के सामने आवेगा, फिर द्वार खुलेगा।

और आप, मेरे प्रीति-पात्र राजा हैं। जो जाति सनातन धर्म के लिये स्तम्भ रूप है, आप उसी जाति के शीर्ष स्थानीय हैं। आप उन्हीं राम और कृष्ण के वंशज हैं। क्या आप चुप-चाप बैठे रहेंगे? यह निश्चय है कि धर्म की रक्षा के लिये आप ही सब से आगे बढ़ेंगे।

रामकृष्ण का आशीर्वाद आपके ऊपर अनन्त धारा से बरसे। उनके आशीर्वाद से दीर्घ जीवन लाभ कर आप सनातन सत्य की सेवा में निरन्तर रत रहें—यही विवेकानन्द की आन्तरिक कामना है।

छठा अध्याय

अमेरिका से राजा साहब के पास स्वामीजी के पत्र बराबर आते रहते थे। उन पत्रों में से तीन पत्रों का सारांश यहाँ दिया जाता है। इन को पढ़ कर पाठक यह अनुमान सहज में कर सकेंगे कि स्वामी विवेकानन्दजी के हृदय में राजाजी के प्रति प्रेम और आदर का कितना भाव था और वे उन्हें किस दृष्टि से देखते थे।

- १ -

चिकागो,

२३ जून, १८९४

श्रीमन्

श्रीनारायण आपका तथा आपके सम्बन्धियों का कल्याण करे। श्रीमान् की कृपापूर्ण सहायता से मैं इस देश में आ सका। जब से मैं यहाँ आया हूँ सभी मुझे अच्छी तरह से जान गये हैं तथा यहाँ के अतिथि-सत्कार-परायण निवासियों ने मेरी आवश्यकता के सभी सामान एकत्र कर दिये हैं। यह एक विचित्र देश है तथा यहाँ की जाति बहुत अंशों में एक अपूर्व जाति है। इस देश के लोग अपने दैनिक कार्यों में कल-पुर्जों का जितना व्यवहार करते हैं, दूसरी किसी जाति के मनुष्य उतना व्यवहार नहीं करते। यहाँ जहाँ देखिये मशीन से ही काम लिया जाता है। यहाँ की मनुष्य-संख्या सारे संसार की मनुष्य-संख्या का केवल बीसवाँ हिस्सा है, परन्तु तो भी संसार

भर के धन का छठा भाग यहाँ के लोगों के हाथ में है। इनके धन और विलासिता की सीमा नहीं है। यहाँ की सभी वस्तुएँ बड़ी महँगी हैं। यहाँ के मजदूरों की मजदूरी संसार भर के मजदूरों से अधिक है। इतना होने पर भी मजदूरों और मालिकों में सदा झगड़ा ही रहता है। संसार के और किसी भी भाग में स्त्रियों को उनके स्वत्व प्राप्त नहीं हैं, जितने कि अमेरिका की स्त्रियों को हैं। धीरे-धीरे वे सभी कुछ अपने हाथों में लेती जा रही हैं और आश्चर्य की बात तो यह है कि यहाँ के पढ़े लिखे मनुष्यों की संख्या पढ़ी लिखी स्त्रियों से कम है। हाँ, इतना जरूर है कि जितने बड़े-बड़े प्रतिभाशाली लोग हैं, सब पुरुष-वर्ग में ही हैं। यद्यपि पाश्चात्य लोग हमारे जाति-बन्धनों की बड़ी कड़ी आलोचना करते हैं तथापि उनके यहाँ इससे भी एक गयी बीती संस्था है जिसका आधार धन है। अमेरिकन कहा करते हैं कि द्रव्य ही यहाँ सब कुछ कर सकता है। संसार के और किसी भी देश में न तो इतने नियम हैं और न कहीं उन नियमों की इतनी उपेक्षा ही की जाती है। वास्तव में बिचारे हिन्दू इन पाश्चात्यों से कहीं अधिक धर्म-परायण हैं।

धर्म-प्रचार के बहाने पाश्चात्य देशवाले कपट और उन्मत्तता का प्रचार करते हैं। गम्भीर-विचारवाले पुरुष इनके अन्ध-भक्ति-पूर्ण-धर्म से विरक्त हो गये हैं और भारत की ओर किसी नये प्रकाश के लिये देख रहे हैं। श्रीमान् स्वयं देखे बिना इस बात का अनुभव नहीं कर सकेंगे कि ये पुरुष वेद के महान्

विचारों के छोटे-छोटे अंशों को भी—जो आधुनिक विज्ञान के आघातों का सामना करते तथा विज्ञान जिनको कुछ क्षति नहीं पहुँचा सकता—किस उत्साह के साथ ग्रहण करते हैं। शून्य से संसार की उत्पत्ति, आत्मा की सृष्टि और स्वर्ग नामक स्थान में सिंहासन पर एक स्वेच्छाचारी ईश्वर का आसीन होना, अनन्त नरकाग्नि आदि सिद्धान्तों से यहाँ के शिक्षित लोग ऊब गये हैं। सृष्टि, आत्मा की अनन्तता, मनुष्य की आत्मा में ही ईश्वर का वर्तमान होना आदि वेद के उच्च विचारों को वे एक या दूसरे रूप में बड़ी शीघ्रता से ग्रहण कर रहे हैं। पचास वर्ष के भीतर ही संसार भर के शिक्षित लोग आत्मा तथा सृष्टि के अमरत्व तथा पूर्ण प्रकृति ईश्वर का रूप है इत्यादि वेदों के पवित्र उपदेशों में विश्वास करने लगेंगे। अभी भी उनके पुरोहित (पादरी) बाइबिल की अपने मतानुसार व्याख्या कर रहे हैं। उपसंहार में मुझे यही कहना है कि उन्हें अभी अधिक आध्यात्मिक सभ्यता की और हमें अधिक भौतिक सभ्यता की आवश्यकता है।

भारत के दरिद्रों की दुर्दशा ही यहाँ की सभी बुराइयों की जड़ है। पश्चिम के दरिद्र लोग नरक के दूत हैं और इनके साथ यदि भारत के गरीबों की तुलना की जाय तो वे स्वर्ग के फरिश्तों के समान दिखलायी देंगे। इसी से भारत के दरिद्रों का उद्धार करना इतना सहज है। यदि हमारे देश की नीच जातियों का कुछ भी उपकार करना हो तो एक आवश्यकता

है—वह यह है कि उन्हें शिक्षित किया जाय। उनके नष्ट प्रायः व्यक्तित्व को पुनरपि विकास कर देने की आवश्यकता है। यह बहुत बड़ा काम हमारे देश के निवासियों और राजा महा-राजाओं पर निर्भर करता है। अभी तक तो इस ओर कुछ भी काम नहीं हुआ है। प्रबलों की शक्ति की प्रचण्डता और विदेशियों द्वारा विजित होने के कारण वे सदियों से कुचले जा रहे हैं और अन्ततः भारत के दरिद्र यह भूल गये हैं कि वे भी मनुष्य हैं। उन्हें उन्नत विचारों की आवश्यकता है। चारों ओर संसार में क्या हो रहा है, यह दिखलाने के लिये उनकी आँखें खोलने की आवश्यकता है। इसके उपरान्त अपनी मुक्ति का उपाय वे स्वयं सोच लेंगे। प्रत्येक जाति, प्रत्येक पुरुष और प्रत्येक स्त्री को अपनी मुक्ति का मार्ग स्वयं ही खोज लेना चाहिये। उन्हें केवल उच्च विचार प्रदान कीजिये, बस केवल इतनी ही सहायता की उन्हें आवश्यकता है। आगे सब कुछ स्वयं ही आ जायगा। हम लोग केवल रासायनिक पदार्थों को एकत्र कर देते हैं, प्रकृति के नियम के अनुसार स्फटिक तो स्वयं ही तैयार हो जाते हैं। उन्हें विचार-दान करना हमारा कर्तव्य है और सब कुछ तो वे स्वयं ही कर लेंगे।

भारत में केवल इसी की आवश्यकता है। बहुत दिन हुए मेरे मस्तिष्क में यह विचार उत्पन्न हुआ। भारत में इसे कार्य-रूप में परिणत नहीं कर सका और मेरे भारत से यहाँ आने का यही कारण है। दरिद्रों की शिक्षा का प्रबन्ध करने में सबसे

प्रधान कठिनाई यह है:—मान लें कि श्रीमान् ने प्रत्येक ग्राम में एक-एक निःशुल्क पाठशाला खोल दी परन्तु उनसे कुछ उपकार न होगा, क्योंकि भारतवर्ष में इतनी दरिद्रता है कि वहां के दरिद्र बालक पाठशालाओं में न जाकर अपने पिता के साथ खेतों में काम करेंगे या अपने जीवन निर्वाह का और कोई उपाय सोचेंगे। तब "यदि पर्वत महम्मद के निकट नहीं जा सकता तो महम्मद को ही पर्वत के निकट जाना पड़ेगा।"

दरिद्र बालक यदि शिक्षा के समीप नहीं आ सकते तो शिक्षा को ही बालकों के पास जाना चाहिये। हमारे देश में सहस्रों स्वतंत्र विचारवाले बड़े त्यागी संन्यासी रहते हैं, जो गाँव गाँव जाकर धार्मिक शिक्षा दे सकते हैं। यदि इनमें से कुछ लोग सांसारिक शिक्षा देने के लिये सङ्गठित किये जाँय तो वे स्थान-स्थान और द्वार-द्वार पर जाकर धर्म प्रचार करने के साथ-साथ शिक्षा भी दे सकेंगे। मान लीजिये कि इनमें से दो संन्यासी सन्ध्या समय केमरा, ग्लोब, मानचित्र इत्यादि लेकर किसी गाँव में चले जाँय तो वे वहाँ के अशिक्षितों को गणित, ज्योतिष और भूगोल इत्यादि की बहुत सी बातें बतला सकते हैं। भिन्न-भिन्न जातियों की कथा कह कर वे उन बेचारों को कानों द्वारा ही इतनी अधिक शिक्षा दे सकते हैं, जितनी कि वे आजन्म पुस्तकें पढ़ कर नहीं प्राप्त कर सकते। इसके लिये संगठन की आवश्यकता है और इसके लिये द्रव्य की आव-

श्यकता है।[1] इस मार्ग का अवलम्बन कर कार्य करने के लिये भारतवर्ष में बहुत मनुष्य हैं, पर दुःख इस बात का है कि उनके पास धन नहीं है। किसी पहिये को चलाने में बड़ी कठिनता होती है, पर एक बार चला देने से ही वह अधिकाधिक तीव्र गति से घूमने लगता है। अपने देश में मैंने इसके लिये सहायता की याचना की पर जब वहाँ के धनवानों की ओर से कोई सहानुभूति न हुई तो मैं श्रीमान् की सहायता से इस देश में चला आया। अमेरिकन इस बात की कुछ भी परवाह नहीं करते कि भारत के धनहीन मरेंगे वा जियेंगे। जब हमारे देश के ही आदमी अपने स्वार्थ के साधन की चिंता को छोड़ दूसरे किसी की परवाह नहीं करते तो ये लोग क्यों करने लगे ?

उदार राजन्, यह जीवन बहुत अल्प समय का है तथा संसार के आडम्बर क्षण-स्थायी हैं, यहाँ वास्तव में उन्हीं का जीवन जीवन है जो दूसरों के लिये जीते हैं, शेष तो जीवित रहने पर भी मृतक के समान हैं।

श्रीमन्, आपके समान उन्नत विचारवाले एक ही राज-वंशी भारत को अपने पाँवों के बल फिर खड़ा होने के लिये

---

१ अपने इसी विचार को कार्य रूप में परिणत करने के लिये श्री० स्वामीजी ने 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की थी और उसमें राजा साहब की सहायता प्रधान थी।

बहुत कुछ सहायता कर सकते हैं, और ऐसा नाम छोड़ जा सकते हैं जिसकी पूजा भविष्य की सन्तान करेगी।

मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह आपके उदार हृदय को अज्ञानान्धकार में पड़े हुए करोड़ों दुःखी दरिद्र भारतीयों की वेदना का अनुभव करावे।

आपका,

विवेकानन्द।

- २ -

१८९४

संस्कृत के एक कवि ने कहा है "न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।" अर्थात् केवल घर घर नहीं है, वास्तव में गृहिणी का नाम ही घर है। जो घर आपको ताप, शीत और वर्षा में आश्रय देता है, उसकी परख उन स्तम्भों से नहीं हो सकती जिन पर वह अवलम्बित है। चाहे वे स्तम्भ बहुत ही सुन्दर और मूल्यवान क्यों न हो? उसकी परख गृहिणी से हो सकती है, जो उस घर की प्रधान स्तम्भ और आधार है। इस आदर्श के अनुसार अमेरिका निवासियों का परिवार तुलना में संसार की किसी जाति के परिवार से निम्न-श्रेणी का सिद्ध नहीं हो सकता। मैंने अमेरिका निवासियों के परिवारों की बहुत-सी कथाएँ सुनी हैं, जिनमें स्वतन्त्रता स्वेच्छाचारिता के रूप में परिणत हुई दिखलायी पड़ती है, जिनमें स्त्रियोचित गुण-

विहीना स्त्रियां स्वातन्त्र्य—नृत्य तथा उस प्रकार की दूसरी बेकार हरकतों के द्वारा परिवार की शांति और सुख को पैरों से कुचलती हुई पायी जाती हैं। परन्तु अब अमेरिका के परिवार तथा अमेरिका की स्त्रियों के विषय में एक वर्ष तक अनुभव प्राप्त करने के बाद मुझे उनके विषय की ये बातें एकदम मिथ्या और भ्रममूलक प्रतीत होती हैं। अमेरिका की महिलाओ, तुम्हारी कृतज्ञता के ॠण से उद्धार पाने के लिये यदि मैं सैकड़ों पंक्तियाँ लिख डालूँ तो भी वे यथेष्ट न होंगी। तुम्हारी कृतज्ञता प्रकाश करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं।
प्राच्य देशों में यह अतिशयोक्ति प्रचलित है—

असिति गिरि समंस्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे।
सुर तरुवर शाखा लेखिनी पत्र मुर्वी॥
लिखति यदि गृहीत्वा सारदा सर्व कालं।

यदि समुद्र रूपी दावात में नील गिरि के समान स्याही हो, कल्पतरु की शाखा की कलम हो, पृथ्वी लिखने का कागज हो, लिखने वाली स्वयं सारदा हो और वह बराबर लिखती रहे तो भी आपके प्रति कृतज्ञता नहीं प्रकाशित हो सकती। प्राच्य की इसी अतिशयोक्ति से प्राच्य देशवासियों की कृतज्ञता प्रकट होती है, एक सुदूर देश से धर्म-प्रचारक के रूप में गत वर्ष मैं यहाँ आया। न मुझे कोई जानता था और न मेरे पास धन ही था और न विद्या ही थी जिससे मुझे कोई अपनाता। मेरा

कोई न तो मित्र था और न कोई सहायक ही। मैं प्रायः असहायावस्था में था और ऐसी अवस्था में अमेरिका की महिलाओं ने मेरी सहायता की, मुझे आश्रय और भोजन दिया। वे मुझे अपने घर ले गयीं और अपने पुत्र तथा भाई के समान मेरे साथ बर्ताव किया। उन्होंने उस समय भी मेरा साथ नहीं छोड़ा, जब उनके अपने पुरोहित मेरे समान भयावह अधार्मिक (Heathen) को छोड़ देने के लिये उत्तेजित कर रहे थे। उनके श्रेष्ठतम मित्र उन्हें यह कहा करते थे कि "इस अनजान विदेशी को त्याग दो, संभव है इसका चरित्र भयंकर हो।" परन्तु वे किसी के चरित्र और आत्मा का निर्णय दूसरे की अपेक्षा स्वयं अच्छी तरह कर सकती हैं—क्योंकि साफ आइने में ही किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब आता है। मैंने कितने सुन्दर परिवार देखे हैं, कितनी ऐसी माताएँ देखी हैं, कि जिनके चरित्र की पवित्रता और जिनका अपनी सन्तान के प्रति निस्स्वार्थ प्रेम व्यक्त नहीं किया जा सकता। कितनी कन्याएँ, कितनी पवित्र कुमारियाँ देखीं जो "डायना (Diana) के मन्दिर की तुषार-राशि के समान पवित्र हैं।"

इतना होने पर भी उनमें बड़ी विद्वत्ता, शिक्षा और आध्यात्मिकता है।

तो क्या अमेरिका में ऐसी ही रमणियाँ हैं जो पंख रहित स्वर्गीय अप्सराएँ हैं। भला और बुरा सभी जगह पाया जाता है, यह सच है पर किसी जाति के चरित्र का पता उसके निर्बल

और पुष्ट व्यक्तियों से नहीं लगता, क्योंकि ये तो घास की भाँति पीछे ही पड़े रह जाते हैं। उसका पता ऐसे भले, उदार और पवित्र व्यक्तियों से चलता है जिनसे यह प्रकट होता है कि जाति के जीवन का स्रोत कैसी स्वच्छता और दृढ़ता के साथ प्रवाहित होता है।

क्या आप अनन्नास के वृक्ष और उसके फल के स्वाद की जाँच उन कच्चे और छोटे, कीड़ों के खाये हुए फलों से कर सकते हैं जो भूमि पर पड़े रहते हैं, चाहे उनकी संख्या कभी बहुत अधिक क्यों न हो ? यदि एक ही पका और बड़ा फल मिल जाय तो उसी से अनन्नास के वृक्ष की शक्ति-सम्भावना और उद्देश्य का पता लग सकता है। वह पता ऐसे सैकड़ों फलों से भी नहीं लग सकता जिनका विकास नहीं हो सकता है।

पुनः मैं अमेरिका की आजकल की महिलाओं के उच्च और उदार हृदय की प्रशंसा करता हूँ। मैंने इस देश में बहुत से उदार और विशाल-हृदय पुरुष भी देखे हैं जिनमें कोई कोई तो यहाँ के छोटे छोटे गिर्जा-घरों में रहते हैं। पर यहाँ स्त्रियों और पुरुषों में एक अन्तर है। यहाँ के पुरुषों के लिये उदार होना भयावह है क्योंकि वे धर्म तथा अध्यात्म को तिलाञ्जलि देकर उदार बनते हैं, परन्तु यहाँ की स्त्रियाँ सभी अच्छी वस्तुओं के साथ सहानुभूति रखती हुई तथा अपने धर्म का बिना त्याग किये उदार बनती हैं। वे स्वभावतः ही जानती हैं कि यह उदारता प्रत्यक्षवाद का प्रश्न है, अप्रत्यक्षवाद का नहीं।

इसमें संयोग की आवश्यकता है न कि वियोग की। प्रति दिन वे इस बात से अभिज्ञ होती जाती हैं कि प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व और निश्चयात्मक पक्ष ही संघटित रहेंगे तथा अस्ति और निश्चयात्मक विचारों के संग्रह-कार्य वा यह कहिये कि प्रकृति की आत्म-निर्माण की शक्ति ही संसार के नास्ति और संहार-तत्वों का विनाश करती है। चिकागो का विश्व-मेला (World's Fair) कितना आश्चर्यजनक और सफल हुआ है। वह धार्मिक महासम्मेलन (Parliament of Religions) भी कितना मनोहर हुआ है, जहाँ संसार के कोने कोने से आयी हुई ध्वनि भिन्न-भिन्न धार्मिक विचारों को व्यक्त कर रही थी। मुझे भी डाक्टर बैरोज (Dr. Barrows) तथा मि० बौने (Bonney) की कृपा से अपने विचार प्रकट करने की अनुभूति मिली थी। मि० बौने कितने विचित्र मनुष्य हैं। यह महान् कार्य जो सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, उन्हीं के मस्तिष्क से निकला था तथा उन्हीं ने इसे सम्पादित किया। वे स्वयं पादरी नहीं हैं, पर गिरजों के उच्च पदाधिकारियों के सभापति हैं।

धीर, मधुर और गंभीर विद्वान् मि० बौने के उज्ज्वल नेत्रों से उनकी अन्तरात्मा का परिचय मिलता है।

भवदीय,

विवेकानन्द

आदर्श नरेश

- ३ -

संयुक्त राज्य, अमेरिका

९ जुलाई, १८९५

..........मेरे भारतवर्ष आने के सम्बन्ध में बात यह है कि, श्रीमान् जानते हैं मैं बड़ा अध्यवसायी हूँ।

मैंने इस देश में एक बीज बोया है जो एक छोटे पौधे के रूप में प्रकट हो आया है और मुझे आशा है कि यह शीघ्र ही एक वृक्ष का आकार धारण करेगा। यहाँ कई सौ लोग मेरे शिष्य हो गये हैं। मैं यहाँ कई संन्यासी बनाऊँगा और उनके ऊपर काम का भार छोड़ कर भारत को लौटूँगा। ईसाई पुरोहित (पादरी) ज्यों-ज्यों मेरा विरोध करते हैं, त्यों-त्यों मैं इस बात के लिये दृढ़-संकल्प होता जाता हूँ कि इनके देश में कोई स्थायी चिह्न छोड़ जाऊँ। लन्दन में मेरे कई मित्र पहले से ही विद्यमान हैं। मैं अगस्त के अन्त तक वहाँ जाऊँगा। इस वर्ष शरत् काल का कुछ अंश तो लन्दन में और कुछ न्यूयार्क में बिताऊँगा और तब भारतवर्ष को आऊँगा। यदि ईश्वर की कृपा हुई तो शरत् ऋतु के बाद काम करने के लिये बहुत से लोग मिल जायँगे। मेरे प्रत्येक कार्य का क्रम होगा—पहले हँसी, अनन्तर विरोध और अन्त में स्वीकृति।

जो मनुष्य अपने समय से बहुत आगे की बातें सोचता है, उसे समझने में लोगों से भूल हो जाती है। जो हो, विरोध

और उत्पीड़न का मैं स्वागत करता हूँ। मुझे केवल दृढ़ और पवित्र होना चाहिये। ईश्वर में पूर्ण विश्वास होना चाहिये और तब ये सब रुकावटें दूर हो जायँगी।............

विवेकानन्द

+ + + +

स्वामी विवेकानन्दजी ने राजाजी साहब को अमेरिका से एक फोनोग्राफ भेजा था। उसके एक रेकार्ड में उनके नाम स्वामीजी का हिन्दी भाषा में एक सन्देश था। उसे एक छोटा सा व्याख्यान ही समझना चाहिये। सन्देश का सारांश यह था कि अपनी प्रजा में बिना भेदभाव के विद्या-प्रचार कीजिये, गाँव-गाँव में पाठशाला खोलिये, रोगियों की चिकित्सा के लिये औषधालय की व्यवस्था कीजिये। प्रजा की उन्नति ही आपकी उन्नति है। इसलिये प्रजाजनों को अपनी सन्तानवत समझ कर पालन कीजिये।

राजा साहब ने १००) रु० मासिक सहायता स्वामी विवेकानन्दजी की माता को देने की स्थायी व्यवस्था कर दी थी। राजाजी का स्वर्गवास हो जाने के अनन्तर भी खेतड़ी के खजाने से जब तक वे जीवित रहीं, नियमित रूप से यह रकम भेजी जाती थी।

स्वामी विवेकानन्दजी अमेरिका में थे उसी अवधि में उनके गुरुभाई स्वामी अखण्डानन्दजी का खेतड़ी में शुभागमन हुआ। पहले भी वे खेतड़ी पधार चुके थे। राजाजी ने उनके आतिथ्य

का यथोचित प्रबन्ध कर दिया। स्वामी अखण्डानन्दजी ने शेखावाटी की स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लिया। राजाजी के विनम्र व्यवहार और शिष्टाचार से स्वामीजी मुग्ध हो गये। स्वामीजी का कथन है कि "प्रायः डेढ़ महीने तक मैं मेहमान की तरह खेतड़ी में रहा और लाइब्रेरी से पुस्तकें मँगाकर—विशेष कर 'थियोडोर पारकर' की ग्रंथावली पढ़ता रहा।" अनन्तर स्वामीजी मलसीसर के ठाकुर श्री भूरसिंहजी साहब और उनके कनिष्ठ भाई ठा० श्री० चतुरसिंहजी के आमन्त्रण से प्रायः छः महीने मलसीसर में रहे। मलसीसर से पुनः खेतड़ी आये। शेखावाटी के जनसाधारण से मिलने पर उन्हें उनके सुख-दुःख का हाल मालूम हुआ। वहाँ के गरीबों के कष्ट से स्वामीजी का हृदय एक विशेष प्रकार के कष्ट का अनुभव कर रहा था। उन्होंने अपने हृदय की व्यथा स्वामी विवेकानन्दजी को लिखी और शेखावाटी में कार्य करने की आवश्यकता दिखलाते हुए उनकी अनुमति चाही। स्वामी अखण्डानन्दजी का उत्साह देख कर राजाजी ने भी उनके उद्देश्य के प्रति सहानुभूति प्रकट की और कहा कि आप कार्य कीजिये, जिस प्रकार की सहायता की आवश्यकता होगी, वह आपको राज्य से दी जायगी। उधर अमेरिका से स्वामी विवेकानन्दजी का पत्र [1] पहुँच गया, जिसमें

---

१ स्वामी अखण्डानन्दजी को स्वा० विवेकानन्दजी का खेतड़ी में जो उत्साह-वर्द्धक पत्र मिला था, उसके कुछ अवतरण इस प्रकार हैं:—

उन्हें राजपूताने में काम करने के लिये उत्साहित किया गया था। अपने मन के उत्साह, स्वामी विवेकानन्द के आदेश और राजाजी की सहायता से स्वामी अखण्डानन्दजी जन-हित में लग गये। इसी समय प्रसिद्ध लोक-सेवा-परायण संस्था रामकृष्ण मिशन के कार्य की नींव खेतड़ी में डाली गयी। उसके उद्देश्य के अनुसार कार्य प्रारम्भ किया गया। अन्यान्य कार्यों के अतिरिक्त शिक्षा-प्रचार का काम भी स्वामी अखण्डानन्दजी ने हाथ में लिया। राजाजी की उदारता से खेतड़ी हाईस्कूल की स्थापना हो चुकी थी। उसमें अच्छे-अच्छे अध्यापक नियुक्त थे, परन्तु विद्यार्थियों की संख्या अधिक न थी। इसका कारण यह था कि लोगों ने उस समय तक विद्याध्ययन का महत्व विशेष नहीं समझा

……राजपूताने के भिन्न भिन्न स्थानों के ठाकुरों में आध्यात्मिक भाव और लोक-हितैषिता को प्रचारित करने की चेष्टा कीजिये। हमें कार्य करना उचित है और आलसी बनकर बैठे रहने से यह हो नहीं सकता। कभी कभी मलसीसर, अलसीसर तथा अन्यान्य "सरों" की यात्रा किया कीजिये।……

……खेतड़ी के निर्धन और नीची जाति के लोगों के घर जाकर उन्हें धार्मिक-शिक्षा दीजिये। उन्हें भूगोल तथा अन्य तरह के विषयों के मौखिक पाठ दिया कीजिये। आलसी बन कर बैठे रहने, राजसी भोजन करने तथा केवल 'हे प्रभो रामकृष्ण!' कहने से कोई लाभ नहीं। समय समय पर दूसरे गाँवों में भी जाया कीजिये और लोगों को जीवन तथा धर्म

था। स्वामी अखण्डानन्दजी घर-घर जाकर लोगों को विद्या के लाभ समझाने लगे। उन्हें मालूम हुआ कि खेतड़ी में दरोगा जाति के सैकड़ों घर हैं और पढ़ने योग्य लड़कों की संख्या भी कम नहीं है। स्वामीजी ने उन लोगों में अपने बालकों को पढ़ाने की अभिरुचि उत्पन्न की, परन्तु कठिनता यह थी कि राज की नौकरी में लगे रहने के कारण दरोगों के लड़के पढ़ने का अवसर नहीं पाते थे और उच्च कर्मचारी उनकी शिक्षा के विरोधी भी थे। स्वामीजी ने राजाजी को पूरी परिस्थिति सुनायी। दयालु राजाजी ने दरोगों के बालकों को पढ़ाने की आज्ञा तुरन्त दे दी। पढ़नेवाले लड़कों के भोजन (पेटिये) की भी व्यवस्था कर दी गयी। यद्यपि राजकर्मचारियों को

के तत्त्वों की शिक्षा दीजिये। कर्म, पूजा और ज्ञान—यही सब शिक्षा के प्रधान विषय हैं। इनका सम्पादन करने से मन पवित्र हो जायगा अन्यथा अग्नि के बदले भस्म के ढेर में आहुति देने के समान सब कुछ निष्फल होगा।……

……गेरुआ वस्त्र विलासिता के लिये नहीं है। यह श्रेष्ठ कर्मों की ध्वजा है। लोक-हित के लिये आपको तन, मन और वचन से प्रस्तुत रहना चाहिये। आपने पढ़ा होगा—मातृ देवो भव, पितृ देवो भव—किन्तु मैं कहता हूँ—दरिद्र देवो भव, मूर्ख देवो भव—यह जान लेना कि इनकी सेवा करना परम धर्म है।……

—विवेकानन्द।

यह व्यवस्था अच्छी नहीं लगी, उन लोगों ने विरोध किया और राजाजी से कहा कि दरोगों के लड़के राज में नौकरी करते हैं, उन्हें स्कूल में भेजने से काम में हानि पहुँचेगी। परन्तु राजाजी अपने विचार पर दृढ़ रहे। स्वामी अखण्डानन्दजी के प्रयत्न से स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ कर तिगुनी हो गयी। स्वामीजी ने असमर्थ विद्यार्थियों को पुस्तक आदि की सहायता देने के लिये एक फण्ड खोला और चन्दे के रूप में राजकर्मचारियों से भी उसमें सहायता प्राप्त की। राजा साहब और उनकी रानी साहबा की सहायता मुख्य थी ही।

× × × ×

राजाजी बहादुर का हृदय उपदेश को कितना ग्रहण करता था, इसका एक उदाहरण भी लीजिये:—

राजाजी प्रातःकाल ८ बजे से पहले नहीं जागते थे, सोते ही रहते थे। स्वामी अखण्डानन्दजी को महल में ही रहने का स्थान दिया गया था। जिधर राजाजी सोते थे, उसके दूसरी ओर बरामदे में स्वामीजी का आसन था। गरमी के दिन थे। स्वामीजी प्रातःकाल ही उठ जाते थे, परन्तु राजाजी के उठने में प्रति दिन देर हुआ करती थी। एक दिन स्वामी अखण्डानन्दजी ने राजाजी से पूछा—आप शय्या-त्याग किस समय करते हैं? आपको विलम्ब से उठने की आदत कब से है? यह आदत स्वास्थ्य के लिये अच्छी नहीं है। विशेषतः एक राजा के लिये तो बहुत बुरी है। आप पर इतने लोगों की रक्षा का भार है

और आप निश्चिन्त होकर ९ बजे तक सोते रहें—यह बात क्या राजधर्म के अनुकूल है ?

राजाजी ने सरलता के साथ विनम्र शब्दों में उत्तर दिया--"यह आदत मुझे बहुत समय से है। जब मैं जयपुर रहता था, तभी से यह आदत है। जयपुर दरबार स्वर्गवासी महाराज सवाई रामसिंहजी की मुझ पर बड़ी कृपा थी। मेरी देखभाल भी वे स्वयं करते थे। मैं प्रायः उनके पास ही रहा करता था। रात को ३ बजे तक महाराज बिलियर्ड खेला करते थे। मैं भी उनके साथ रहता था, खेलता भी था। बाद में सोता था। ऐसी दशा में देर से उठने की आदत पड़ जाना स्वाभाविक है। महाराज १० बजे तक उठते थे और ८।९ बजे मैं, उसी समय की यह आदत है।"

स्वामीजी ने कहा—अब आपके लिये यह उचित नहीं है। नीतिकारों ने असमय सोने की बड़ी निन्दा की है। स्वामीजी ने यह श्लोक भी कहा:—

'कुचेलिनं दन्तमलाप धारिणम्।
बह्वाशिनं निष्टुर वाक्य भाषिणम्॥
सूर्योदये चास्तमये च शायिनम्।
विमुञ्चति श्रीरपि चक्रपाणिनम्॥'

मैला कुचैला कपड़ा पहननेवाला, दाँतों को साफ न रखने वाला, बहुत खानेवाला, कड़ी बातें बोलनेवाला, सूर्यास्त

और सूर्योदय के समय सोनेवाला यदि चक्रपाणि—विष्णु भी हो तो लक्ष्मी उसे छोड़ देती है। दूसरे की तो बात ही क्या ?

इस वार्तालाप के दूसरे दिन से ही राजाजी ने प्रातःकाल उठना आरम्भ कर दिया। इतने दिनों की आदत उन्होंने बात की बात में छोड़ दी। कैसी सरलता है। अच्छी बातों के ग्रहण करने का कितना अनुराग है।

यह किसी से अज्ञात नहीं है कि प्रति वर्ष भारतवर्ष से हड्डियाँ बटोर कर विदेश भेजी जाती हैं। स्वामी अखण्डानन्दजी ने किसी संवाद-पत्र में पढ़ा कि गत वर्ष ४४ लाख रुपये की हड्डियाँ भारत से विदेश को भेजी गयी। इस संवाद की चर्चा करते हुए स्वामीजी ने राजाजी से कहा—हड्डियों की खाद बड़ी अच्छी होती है, इससे जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है। परन्तु स्वार्थी विदेशी व्यापारियों और कमीशन या दलाली के भूखे लोभी ठेकेदारों के कारण अब हड्डियाँ भी बचने नहीं पातीं। हड्डियों से जमीन को जो स्वाभाविक खाद मिलती थी, वह मिलने नहीं पाती। इसी से उपजाऊ शक्ति दिनोंदिन घटती जाती है। स्वामीजी ने राजाजी से यह अनुरोध भी किया कि यदि आप अपनी अधिकार-सीमा में ऐसी व्यवस्था कर दें कि जिससे हड्डियाँ बाहर न जाने पावें तो बड़ा उपकार हो, राजाजी ने स्वामीजी का प्रस्ताव स्वीकार कर उस समय एक आज्ञा-पत्र द्वारा हड्डियों के बाहर जाने देने का निषेध कर दिया था।

स्वामी श्री० अखण्डानन्दजी ने दो पत्र (मूल) हमें भेजने की कृपा की थी, जो राजाजी बहादुर ने उनके नाम स्वयं लिखे थे। पत्र अंग्रेजी में हैं और उनका हिन्दी-रूपान्तर निम्न-लिखित है :—

- १ -

आगरा,

२६ दिसम्बर, १८९४

प्रिय स्वामीजी महाराज,

मुझे आपके बहुत से पत्र प्राप्त हुए हैं, किन्तु खेद है कि मैं उत्तर नहीं दे सका। मैंने पण्डित लक्ष्मीनारायण को एक बार उत्तर देने के लिये आज्ञा भी दी थी। इसका कारण राजकीय कार्यों में व्यग्र रहना तथा आगरे से खेतड़ी और खेतड़ी से आगरे आना जाना है। मैं फिर कल सायंकाल की गाड़ी से यहां से खेतड़ी जाऊँगा। आप शायद जानते होंगे, कर्नल ट्रेवर, ए० जी० जी० ४ और ५ जनवरी को खेतड़ी का परि-दर्शन करेंगे। इसके बाद फिर मुझे अपनी ज्येष्ठा लड़की के विवाह की तैयारी के लिये बहुत कुछ करना पड़ेगा, जो कि जनवरी की समाप्ति में होने वाला है।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रों का उत्तर न दे सकने के लिये आप मुझे क्षमा करेंगे और पत्र देते रहेंगे। आप जानते हैं कि स्वामी श्री० विवेकानन्दजी के सभी गुरुभाइयों का मैं कितना

महत्व मानता हूँ। इसलिये आप मेरी त्रुटियों पर ध्यान न देंगे। मुझे श्री० स्वामीजी के २-३ पत्र मिले हैं, किन्तु किसी में भी उन्होंने अपने लौटने के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा है। उन्होंने मुझे एक फोनोग्राफ उपहार के रूप में भेजा है, जिसे शायद आप भी जानते हैं।

आपने अपने बहुत से पत्रों में और विशेष कर अन्तिम पत्र में जो कई एक गंभीर निर्देश किये हैं उनके लिये धन्यवाद।

आपका बहुत सच्चा—
अजीतसिंह

- २ -

माउण्ट आबू,
२६ जून, १८९५

प्रिय स्वामीजी महाराज,

मुन्शी जगमोहनलाल से यह सुन कर मैं परमानन्दित हुआ हूँ कि आप जयपुर ठहरे हुए हैं और मेरी प्रसन्नता पूछते हैं।

शायद आप जानते होंगे, एक स्वामी ज्ञानानन्दजी यहाँ कई दिनों से ठहरे हुए थे, किन्तु वे कल चले गये। वे अच्छे आदमी हैं और जब मिलने के लिये आते थे तब मुझे प्रसन्नता होती थी। सम्भवतः वे आप से भी जयपुर में मिलें।

कई दिनों से यहाँ बराबर वर्षा हो रही है, इसलिये यहाँ अधिक ठहरना पसन्द नहीं है, परन्तु मैं ठीक नहीं कह सकता कि यहाँ से कब चलूँगा, क्योंकि मेरे देश के भाग में वर्षा होने का संवाद नहीं मिला है। मैं अनुमान करता हूँ कि अब तक निस्सन्देह गर्म हवा का चलना बन्द हो गया होगा, परन्तु अब भी समतल भूमि में झुलसन-सी या गर्मी होगी। आपको जयपुर में इसका कैसा अनुभव होता है और आज कल वहाँ गर्मी कितनी डिग्री है ?

आपने मुन्शी जगमोहनलाल से सुना होगा कि मुझे श्री० स्वामी विवेकानन्दजी का पत्र कुछ समय पहले मिला था। उसमें लिखा है कि भारतवर्ष कब तक लौटना होगा, इस सम्बन्ध में कोई निश्चय नहीं है।

आशा है, जब यह पत्र आपको मिलेगा, आप पूर्ण रूप से स्वस्थ होंगे।

आपका,

अजीतसिंह।

× × × ×

स्वामी विवेकानन्दजी के अमेरिका से लौटने पर मद्रास वालों ने उनके स्वागत का सर्व प्रथम आयोजन कर अपना उत्साह प्रकट किया था। सहस्रों की संख्या में एकत्र हो, मद्रासियों ने स्वामीजी को अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया था। राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने अपनी ओर से अभिनन्दन

करने के लिये मुन्शी जगमोहनलालजी को मद्रास भेजा। मुन्शीजी ने खेतड़ी का अभिनन्दन-पत्र स्वामीजी की भेंट किया। उपस्थित जन-समूह के बीच सभी अभिनन्दन-पत्रों के उत्तर में स्वामीजी ने बड़ा प्रभाव-शाली भाषण दिया था। मुन्शीजी स्वामीजी को खेतड़ी पधारने के लिये निमंत्रित भी कर आये थे।

स्वामीजी मद्रास से चल कर घूमते हुए दिल्ली पहुँचे और दिल्ली से राजपूताने की ओर चले। ट्रेन के रेवाड़ी स्टेशन पर पहुँचते ही स्वामीजी ने देखा कि उनके लिये खेतड़ी-नरेश के आदमी सवारी के साथ तैयार खड़े हैं। उस समय शेखावाटी में जानेवालों को रेवाड़ी स्टेशन पर उतरना पड़ता था। रेवाड़ी-फुलेरा कार्ड लाइन तब तक बनी नहीं थी। स्वामीजी को पहले अलवर जाना था, क्योंकि अपने भक्तों से वे प्रतिज्ञा बद्ध हो चुके थे। इसलिये राजाजी के कर्मचारियों को उन्होंने कह दिया कि आप लोग जाँय, हम जयपुर होकर खेतड़ी पहुँचेंगे।

अलवर में पांच छै दिन ठहर कर अपने पूर्व निश्चय के अनुसार स्वामीजी जयपुर पहुँचे और वहाँ खेतड़ी-भवन (Khetri House) में अवस्थान किया। जयपुर से खेतड़ी पहुँचने के लिये सवारी का प्रबन्ध हो गया। जयपुर से खेतड़ी का ४५ कोस का अन्तर है। लम्बा सफर होने के कारण दो तीन जगह ठहरना पड़ता था। स्वामीजी के एक प्रामाणिक जीवनी-लेखक ने लिखा है कि उस बार जयपुर से खेतड़ी जाते हुए

रास्ते में एक जगह स्वामीजी को भूत दिखलायी दिया था। जो हो, स्वामीजी की अगवानी के लिये राजाजी प्रायः ६ कोस स्वयं आये और छै घोड़ों की गाड़ी में अपने साथ बिठा कर उन्हें ससम्मान खेतड़ी लिवा ले गये। खेतड़ी की प्रजा में उस समय विशेष उल्लास छाया हुआ था। कारण राजाजी भी विलायत-यात्रा निर्विघ्न और सकुशल समाप्त कर लौटे ही थे, इसलिये प्रजा में उमङ्ग थी। स्वामीजी के पहुँचने से हर्ष बढ़ गया। अपने नरेश और स्वामीजी के स्वागत में खेतड़ी-निवासियों ने विभिन्न प्रकार से भाग लेकर प्रेम, भक्ति और उत्साह प्रकट किया।

उस अवसर की स्मृति की उज्ज्वल रेखा आज भी उन लोगों के हृदय-पटल पर खिंची हुई है, जो अपने पाप या पुण्य के कारण इस समय तक जीते हैं। राजाजी और स्वामीजी के अभिनन्दन के लिये खेतड़ी हाई-स्कूल में एक महती सभा हुई थी। उसमें कई सभा-समितियों की ओर से अभिनन्दन-पत्र दिये गये थे। भारत-प्रसिद्ध रामकृष्ण मिशन की ओर से स्वयं स्वामी विवेकानन्दजी ने राजाजी बहादुर को अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया था। राजाजी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा था—"मेरे पहले मेरे पिता ने जिन भावों के साथ काम करने का प्रयत्न किया था, मैं उन भावों के विस्तार करने का यथाशक्य उद्योग करूँगा। जब से खेतड़ी के शासन का भार मेरे हाथ में आया है, तब से मैंने शिक्षा-विभाग की उन्नति की

ओर विशेष लक्ष्य रक्खा है। इसी वर्ष में तीन नये मदरसे खोले गये हैं और जो पुराने हैं, वे भी अच्छी दशा में चल रहे हैं। प्रजा के स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना भी मैंने अपना कर्तव्य समझ रक्खा है। औषधालय खोलने और आयुर्वेद की शिक्षा दिलाने आदि की व्यवस्था करने का मैं विचार कर रहा हूँ। राज के उद्योग में प्रजा का सहयोग सम्मिलित होने पर ही उद्देश्य की सिद्धि होगी। इत्यादि।" राजाजी का भाषण समाप्त होने पर स्वामी विवेकानन्दजी वक्तृता देने के लिये खड़े हुए। आपने धन्यवाद प्रदान-पूर्वक कहा—भारतवर्ष की उन्नति के लिये जो थोड़ा-बहुत मैंने किया है, वह कभी न होता, यदि राजाजी मुझे न मिलते। (What little I have done for the improvement of India, would not have done if Rajaji had not met me.) प्राच्य और पाश्चात्य आदर्शों की तुलना करते हुए स्वामीजी ने कहा कि पाश्चात्य देश का आदर्श है भोग और प्राच्य देश का आदर्श है त्याग। स्वामीजी ने खेतड़ी के नवयुवकों को पाश्चात्य आदर्श के मोह में न पड़ कर दृढ़ता के साथ प्राच्य आदर्श को ग्रहण करने के लिये प्रोत्साहित किया। आपने कहा—शिक्षा का अर्थ है अपने हृदय में पहले से वर्तमान ईश्वरत्व को प्रकाशित करना। अतएव बालकों को शिक्षा देने के लिये उनके प्रति अगाध विश्वास स्थापित करने की आवश्यकता है। प्रत्येक बालक अनन्त ईश्वरीय शक्ति का आधार है, इस बात पर दृढ़ विश्वास स्थापित

करना होगा। अध्यापकों को समझना चाहिये कि उन बालकों के हृदय में जो ईश्वरत्व सुप्तावस्था में है, उसे जागृत करने का हमें प्रयत्न करना है। बालकों को शिक्षा देने के समय हमें एक और बात का स्मरण रखना चाहिये और वह यह कि बालक स्वयं कुछ सोचना सीखें। इसके लिये उन्हें उत्साहित करना चाहिये। इस मौलिक चिंता का अभाव ही भारत की वर्तमान दुरवस्था का कारण है। इस प्रकार यदि उन्हें शिक्षा दी जाय तो वे मनुष्य बन सकेंगे और अपने जीवन की अनेक कठिनाइयों को हल करने में स्वयं समर्थ होंगे।

स्वामीजी ने इसी यात्रा में एक महत्वपूर्ण भाषण 'वेदान्त' विषय पर भी दिया था। उस सभा में सभापति का आसन राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने ही ग्रहण किया था।

+ + + +

अधिक ठहरने का स्वामीजी को अवकाश न था, इसलिये खेतड़ी से विदा होकर वे पुनः जयपुर गये। राजाजी भी उन्हें पहुँचाने के लिये साथ साथ गये। जयपुर में लोगों के आग्रह से एक मन्दिर में सभा हुई। इस सभा के अध्यक्ष का आसन भी राजाजी बहादुर ने ही सुशोभित किया। स्वामीजी का एक हृदय-ग्राही भाषण हुआ। पश्चात् स्वामीजी जोधपुर आदि की ओर प्रस्थान कर गये।

राजा अजीतसिंहजी बहादुर और स्वामी विवेकानन्दजी के साक्षात्कार, पारस्परिक प्रेम आदि का यह संक्षिप्त विवरण

है। इससे पाठकों को ज्ञात होगा कि राजपूताने के एक छोटे से संस्थान के अधिपति ने भारत के नये भावों का कितना स्वागत किया था, कितनी सहानुभूति दिखलायी थी और कितनी सहायता पहुँचायी थी। स्वामी विवेकानन्दजी[1] ने राजाजी बहादुर के पास एक उत्साह-वर्द्धक ओजपूर्ण स्वरचित

---

[1] स्वामी विवेकानन्द का पूर्वाश्रम का नाम नरेन्द्र था। उनका जन्म कायस्थ कुल में हुआ था। उनके पिता बाबू विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाई-कोर्ट के एटर्नी थे। नरेन्द्र अपने पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे। बालकपन में ही उनकी अद्भुत स्मरण-शक्ति और प्रत्युत्पन्नमतित्व का परिचय पाकर लोग आश्चर्य करते थे। २० वर्ष की अवस्था में एफ० ए० पास करके वे बी० ए० पढ़ने लगे। उसी समय से उन्हें धर्म-चर्चा का चस्का लगा। पादरी हेस्टी साहब के पास, जो उन दिनों जनरल एसेम्बली कालेज के अध्यापक थे, नरेन्द्र दत्त घण्टों बैठ कर धर्म-विषय में वार्तालाप करते थे, परन्तु अपनी शंकाओं के समाधान के बिना संशयात्मा बने हुए थे। वे साधारण ब्रह्म-समाज के सदस्य भी बन गये थे। इसी समय एक मित्र के साथ परमहंस रामकृष्णदेव की सेवा में पहुँचे। धीरे धीरे परमहंसदेव की कृपा से उनकी समस्त शंकाओं का समाधान हो गया और परमहंसदेव के वे श्रद्धालु भक्त और शिष्य बन गये। आगे चलकर उन्होंने विवेकानन्द नाम धारण पूर्वक दुनिया में हिन्दू-धर्म की महिमा का डंका बजा दिया। सन् १९०२ में कलकत्ते के पास बेलूड़ मठ में स्वामी विवेकानन्द का परलोकवास हुआ।

पद्यमाला भी भेजी थी। उसे हम मूल रूप में यहां उद्धृत कर इस प्रकरण को समाप्त करते हैं :—

HOLD ON YET A WHILE, BRAVE HEART.

(WRITTEN TO THE RAJA SAHIB BAHADUR OF KHETRI)

If the sun by the cloud is hidden a bit,
If the welkin shows but gloom,
Still hold on yet a while, brave heart,
The victory is sure to come.

No winter was but summer came behind,
Each hollow crests the wave,
They push each other in light and shade,
Be steady then and brave.

The duties of life are sore indeed,
And its pleasures fleeting vain,
The goal so shadowy seems and dim
Yet plod on through the dark, brave heart,
With all thy might and main.

Not a work will be lost, no struggle vain,
Though hopes be blighted, powers gone,

Of thy loins shall come the heirs to all,
Then hold on yet a while, brave soul,
No good is e'ver undone.

Though the good and wise in life are few,
Yet theirs are the reins to lead;
The masses know but late the worth,
Heed none and gently guide.

With thee are those who see afar,
With thee is the Lord of might,
See blessings hover on thee great soul,
To thee may all come right. [१]

अंग्रेजी से अनभिज्ञ पाठक इस कविता के हिन्दी रूप निम्न-लिखित तुकबन्दी को पढ़ कर मूल का भावार्थ समझ लें—

वीर हृदय ! दृढ़ रहो कभी मत विचलित होना।

मेघों से यदि सूर्य कभी क्षण भर छिप जावे,
गगन-प्रान्त में पूर्ण अंधेरा यदि छा जावे।

१ खेतड़ी नरेश और बिवेकानन्द—पृ० १०७।

आदर्श नरेश

वीर हृदय ! दृढ़ बने रहो, मत विचलित होना,
निश्चय होगी विजय तुम्हारी धैर्य न खोना ॥

(यदि) शिशिर न आवे तो बसन्त का कहाँ पता है ?
प्रति तरङ्ग के पूर्व पुनः गह्वर रहता है ।
करते हैं साहाय्य-दान वे सदा निरन्तर,
एक एक को अस्तु, रहो दृढ़ नित्य वीरवर ॥

जीवन के कर्त्तव्य कभी भी सुखद न होते,
पर विलास भी यहाँ सभी क्षणभङ्गुर होते ।
छाया-सम अस्पष्ट लक्ष्य भी दीख रहा हो
अंधकार में वीर ! बढ़ो सब शक्ति लगा दो ॥

नष्ट न होगा यत्न समर यह व्यर्थ न होगा,
आशाएँ मिट जायँ भले ही बल न रहेगा ।
रहो बद्ध-कटि वीर ! सफल निश्चय ही होगे,
विफल न होगे कर्मवीर ! यदि अटल रहोगे ॥

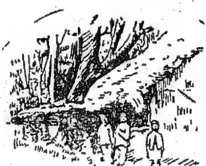
धीरज औ धीमान धरा में यद्यपि कम हैं,
पर वे ही वर-वीर विश्व के नायक सम हैं ।
बहुत काल उपरान्त जानती जनता उनको
ध्यान न लाना इसे मार्ग बतलाना इनको ॥

साथ तुम्हारे सौम्य दूर-दर्शी सब ही हैं,
तथा तुम्हारे संग शक्ति के स्वामी भी हैं।
तुम्हें सहस्रों बार यही हूँ आशिष देता,
रहो बुद्धि-सम्पन्न वीरवर! पुण्य-प्रणेता ॥

अध्याय सातवाँ

देश के विभिन्न भागों में भ्रमण



देश विदेश-भ्रमण अनुभव बढ़ाने का एक सबल साधन तो है ही, साथ ही जलवायु का परिवर्तन होते रहने के कारण उससे स्वास्थ्य-सम्पादन में भी सहायता पहुँचती है। इसी सिद्धान्त से राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने देश के विभिन्न भागों में भ्रमण किया था। भ्रमण के फल से उपलब्ध अनुभव ने ही खेतड़ी-संस्थान को उन्नति के शिखर पर चढ़ाने की आकांक्षा उनके हृदय में उत्पन्न की और उन्होंने शक्ति भर इसके लिये प्रयत्न किया। विभिन्न स्थानों के विशिष्ट सज्जनों से प्रेम-सम्बन्ध स्थापन कर अपने परिचय का क्षेत्र बढ़ाया जिसका फल यह हुआ कि, खेतड़ी का नाम सर्वत्र गौरव के साथ लिया जाने लगा। जगत्प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्द जैसे पुरुषों से घनिष्ठता होना राजा साहब की पर्यटन-प्रियता का ही परिणाम कहा जा सकता है। नैनी-ताल, आगरा और बरेली इत्यादि स्थान तो राजाजी के घर बने हुए थे। इन स्थानों में अधिक रहने का कारण यह था



खेतड़ी के राज-परिवार की चिकित्सिका

लेडी डाक्टर क्लारा स्वेन

कि, उनके राजकुमार श्री जयसिंहजी का स्वास्थ्य बचपन में प्रायः ठीक नहीं रहता था, जिससे अपनी गृह-चिकित्सिका लेडी डाक्टर स्वेन [1] की राय से उन्हें सपरिवार गर्मी की मौसम में प्रति वर्ष ठंढे स्थान—पहाड़ पर जाना पड़ता था। वर्षा और ठंढ होने पर वे खेतड़ी को लौटते थे। नैनीताल में अधिक वर्षा होती तो बरेली या आगरे ठहर जाते थे। प्रति वर्ष का यही क्रम था।

---

१ डाक्टर स्वेन (Dr. Clara Swain M. D.) पहली लेडी डाक्टर थी, जो युनाइटेड स्टेट्स (अमेरिका) से भारतवर्ष में आयी थी। वह वहां की फारेन मिशनरी सोसाइटी की एक सदस्या थी। ता० ८ नवम्बर सन् १८६९ ई० को न्यूयार्क से रवाना होकर ता० २ जनवरी सन् १८७० ई० को वह बरेली पहुँची थी। थोड़े समय तक काम करने के बाद वहां उसने एक अस्पताल और डिस्पेंसरी की आवश्यकता का अनुभव किया और इस काम के लिये रामपुर के उस समय के नवाब साहब से सहायता मांगी। नवाब साहब की उदारता से सन् १८७४ ई० में एक अस्पताल और डिस्पेंसरी की स्थापना हुई। डाक्टर स्वेन सन् १८८५ ई० तक इस अस्पताल की इञ्चार्ज रही। इसी समय खेतड़ी नरेश ने अपनी रानी साहबा श्रीमती चांपावतजी की, जिनका ज्येष्ठा राजकुमारी के जन्म के बाद स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया था, चिकित्सा के लिये १०००) रु० मासिक पर, रहने के लिये उपयुक्त सरकारी मकान देकर अपने यहां उसकी नियुक्ति की। भारतवर्ष में उस समय वही मुख्य लेडी डाक्टर थी। उसकी चिकित्सा से रानी

कलकत्ते की यात्रा राजा साहब ने दो बार की थी। प्रथम संवत् १९४७ में [1] और दूसरी बार संवत् १९५३ में। कलकत्ते में श्रीमान् का जैसा स्वागत हुआ, देखनेवालों का कहना है कि, वैसा आज तक किसी बड़े नरेश का भी नहीं हुआ। इस कथन में अणुमात्र भी अत्युक्ति नहीं है। स्टेशन से सवारी का बड़ा शानदार जुलूस बना था। मोटर गाड़ियाँ तो उस समय भारतवर्ष में प्रचलित नहीं थीं—घोड़ा गाड़ियों का ताँता बँध गया था। स्वागतकारियों में केवल खेतड़ी के ही प्रजाजन नहीं—बल्कि, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और सीकर आदि के प्रायः सभी साधारण और असाधारण—गरीब और धनी लोग

साहबा ने कठिन व्याधि से छुटकारा पाया था। डाक्टर स्वेन, जो खेतड़ी में मिस साहबा के नाम से प्रसिद्ध थी, राजपरिवार की चिकित्सा के अतिरिक्त अपना मिशनरी का काम—गरीब स्त्रियों और बच्चों का इलाज राजा-साहब की आज्ञानुसार करती रहती थी। वह साधु-स्वभाव महिला राजा साहब और उनकी रानी साहबा की पूर्ण विश्वासपात्र बनी रही। प्रायः १२ वर्ष खेतड़ी रहने के बाद वह अमेरिका को चली गयी। यद्यपि राजा साहब और रानी साहबा उसको रखना चाहते थे, किन्तु अपने वार्धक्य के कारण उसने अधिक ठहरना नहीं चाहा।

१ इस यात्रा में जनानी सवारी भी साथ पधारी थी। उस अवसर पर बड़ी राजकुमारी श्रीमती सूर्यकुमारीजी का चौल-संस्कार कराने की धार्मिक क्रिया श्री कालीजी के मन्दिर में बड़ा उत्सव मना कर सम्पन्न की गयी थी।

सम्मिलित थे। राजा साहब के समीप हर समय गण्यमान्य सज्जनों, विशिष्ट विद्वानों और संगीतज्ञ गुणीजनों का जमाव रहता था। विद्वानों के सम्मानार्थ राजाजी ने पण्डित-सभा करायी थी और साधारण ब्राह्मणों को ब्रह्मपुरी द्वारा भोजन एवं दक्षिणा देकर सत्कृत किया था। कलकत्ते के मारवाड़ी समाज में उस समय तक सार्वजनिक जीवन का आरंभ नहीं हुआ था। अपनी प्रथम यात्रा—संवत् १९४७ वि० में ही ब्रह्मपुरी के अवसर पर समुपस्थित प्रमुख ब्राह्मणों और वैश्यों को समाज-सुधार करने का श्रीमान् ने प्रभावोत्पादक परामर्श दिया था। उसी समय सर्व प्रथम कलकत्ते के मारवाड़ी समाज में कुरीति-संशोधन की भावना का संस्कार जमा था। कलकत्ते का प्रायः कोई भी प्रसिद्ध पण्डित और सङ्गीत-निपुण सुगायक राजाजी द्वारा पुरस्कृत होने से न बचा होगा। उनके उस संस्मरणीय स्वागत और आतिथ्य के आयोजनकर्ता खेतड़ी के प्रमुख प्रजाजन प्रसिद्ध स्वर्गीय रायबहादुर सेठ सूर्यमलजी झुंझुनू-वाला और सेठ दुलीचंदजी ककरानियां प्रभृति सज्जन थे, जिनका व्यापारिक क्षेत्र में बड़ा प्रभाव था। सभी लोगों ने श्रीमान् से भेंट कर अपने को कृतार्थ माना था। उनके प्रति भक्ति पूर्वक आकर्षित होने का कारण एक ही था और वह था उनका प्रजावात्सल्य। [1]

---

१ दूसरी बार सन् १८९७ (संवत् १९५३) की कलकत्ता यात्रा में

संवत् १९५२ में अस्वस्थ रहने के कारण अपने चिकित्सक आगरे के तत्सामयिक सिविल सर्जन डाक्टर ल्युकिस (जो बाद में डाइरेक्टर जनरल हो गये थे) की सम्मति के अनुसार जलवायु परिवर्तन करने के लिये राजाजी बहादुर को अयोध्या,

---

श्रीमान् राजा साहब के साथ राज श्री ठा० चन्द्रसिंहजी साहब (अलसीसर) राज श्री ठा० शिवदानसिंहजी साहब (लाम्यां) आदि सरदार और चौधरी नारायणदासजी एवं पण्डित लक्ष्मीनारायणजी प्रभृति कार्यकर्ता थे। खेतड़ी राज के पुराने वाकआत में लिखा है :—"१८ मार्च को श्रीमान् की सवारी कलकत्ते पधारी। स्टेशन पर स्वागतार्थ राजा शिवबक्षजी बागला, सेठ शिवप्रसादजी तुलसान, सेठ दुलीचंदजी ककरानियां प्रभृति एवम् स्वामी विवेकानन्दजी के भेजे हुए स्वामी त्रिगुणानन्दजी, स्वामी सेवानन्दजी आदि तथा लोहारू के नवाब साहब उपस्थित थे। दूसरे दिन बड़े लाट साहब की गार्डन पार्टी में शामिल हुए। लाट साहब से मुलाकात हुई। फारेन सेक्रेटरी मि० कनिंघम ने खूब बातें की। महाराज सर जितेन्द्रमोहन ठाकुर से मिलना हुआ। ता० २१ मार्च को दार्जिलिंग से स्वामी विवेकानन्दजी सियालदह स्टेशन पहुँचे। उनके स्वागत के लिये लोहारू के नवाब साहब और अपनी प्रजा के सेठ साहूकारों के साथ श्रीमान् राजासाहब स्टेशन पर उपस्थित हुए। स्वामीजी की स्वागत-सभा में राजाजी बहादुर ने स्वयं एक एड्रेस पढ़ा। ता० २२ मार्च को राजा साहब से मिलने के लिये आने वालों में श्री० सौरिन्द्र मोहन ठाकुर महाशय का नाम विशेष उल्लेखनीय है। २६ मार्च को श्रीमान् अपनी पार्टी के साथ जयपुर के लिये रवाना हुए।"

लखनऊ, मथुरा, वृन्दाबन, बड़ौदा, बम्बई, हैदराबाद और महाबालेश्वर पहाड़—आदि स्थानों की यात्रा करनी पड़ी थी। शाहपुरा[1] के श्रीमान् राजाधिराज सर नाहरसिंहजी साहब ने उस स्थिति में उनकी बड़ी सँभाल रक्खी थी। वे स्वयं या उनके दोनों राजकुमार श्री उमेदसिंहजी (वर्तमान राजाधिराज) एवं श्री सरदारसिंहजी-इन तीनों साहबान में से कोई एक साहब

---

१ शाहपुरा राज्य के संस्थापक महाराणा अमरसिंह (उदयपुर) के द्वितीय कुमार सूरजमल के पुत्र सुजानसिंह थे। सुजानसिंह ने सन् १६२९ ई० में दिल्ली के बादशाह शाहजहां से दो हजारी मनसब पाया। उनके पुत्र दौलतसिंह सन् १६६४ ई० में गद्दी बैठे और सन् १६८५ ई० में दौलतसिंह के पुत्र भरतसिंह। भरतसिंह को बादशाह से राजा के खिताब के साथ साढ़े तीन हजार की मनसबदारी का पद मिला। उनकी मृत्यु होने पर सन् १७२९ ई० में उमेदसिंह गद्दी बैठे। उन्होंने उदयपुर के महाराणा अरसीजी के पक्ष में माधवराव सिंधिया की लड़ाई में लड़कर उज्जैन में वीर गति प्राप्त की। उनके पश्चात् क्रमानुसार रणसिंह, भीमसिंह, अमर सिंह, माधोसिंह, जगतसिंह, लछमनसिंह राज्यासनासीन हुए। इनमें अमर सिंह ने सन् १७२५ ई० (संवत् १८८२) में "राजाधिराज" की पदवी प्राप्त की। राजाधिराज लछमनसिंह की मृत्यु होने पर सन् १८७० ई० में राजाधिराज सर नाहरसिंह बहादुर, के० सी० आई० ई० शाहपुरा की गद्दीपर विराजमान हुए। उनका सन् १९३२ ई० तदनुसार संवत् १९८९ में परलोकवास हुआ।

साथ बने ही रहते थे, जिससे कि सँभाल के साथ साथ तबियत लगी रहे और शीघ्र आरोग्य होने में सहायता पहुँचे। अस्वस्थ रहते हुए भी अपनी गुण सञ्चय की स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण राजा साहब जहाँ जाते वहाँ की सभी बातों और विशेषताओं को बड़े ध्यान से देखते थे। परिस्थिति का अध्ययन गहरे विचार से करते थे। विशेषतया विशिष्ट लोगों से मिलने का उनको बड़ा शौक था।

अध्याय आठवाँ

विलायत-यात्रा और स्वदेश प्रत्यागमन



राजाजी बहादुर का हृदय ज्ञान-विज्ञान की नयी-नयी बातों की जानकारी और अनुभव प्राप्त करने के लिये सदा समुत्सुक रहता था। अस्व-स्थता ने भी उनके उत्साह को मन्द नहीं पड़ने दिया। संवत् १९५२ का वर्ष उनका स्वास्थ्य-लाभ के प्रयत्न में खेतड़ी से बाहर यात्रा में ही व्यतीत हुआ। दूसरे वर्ष डाक्टरों ने पश्चिमी दुनियाँ—विलायत के जलवायु को उनके लिये अधिक हितकारक बतलाया। संयोगवश उसी समय श्रीमती महारानी विक्टोरिया की डायमंड जुबली का महोत्सव मनाये जाने का विलायत में आयोजन हो रहा था। अतएव उसी अवसर को अपनी विलायत-यात्रा के लिये राजा साहब ने सर्वोत्तम सुयोग समझा। तदनुसार आवश्यक अनुमति प्राप्त करने के लिये उन्होंने भारत सरकार और जयपुर दरबार को पत्र भेजने में विलम्ब नहीं किया। भारत सरकार से अनुमति मिल गयी। किन्तु जयपुर के प्राइम-मिनिस्टर श्री बा० कान्ति-

चन्द्र मुखर्जी महाशय ने श्रीमान् महाराजाधिराज की आज्ञा से अपने ता० २७ एप्रिल सन् १८९७ ई० के पत्र में राजा साहब को लिखा कि, "आप विलायत जायेंगे और वहाँ से जब लौट कर आयेंगे तब सरदारों तथा स्वजातीय सम्बन्धियों के द्वारा सामाजिक झगड़ा खड़ा हो जायगा। इसलिये पहले आप इन सब बातों पर अच्छी तरह विचार कर लीजियेगा। यदि आप हिज् हाईनेस की आज्ञा चाहते हैं तो उन्हें आपकी विलायत-यात्रा में कुछ आपत्ति नहीं है।[१]"

इस आशय का पत्र पाने के दूसरे ही दिन राजाजी को बा० कान्तिचन्द्र मुखर्जी साहब का दूसरा पत्र मिला, जिसकी नकल इस प्रकार है—

Jaipur, 28th April, 1897

My dear Sir,

In continuation of my letter to you of yesterday's date, I write to assure you, lest that letter should have given rise to any misconception, that His Highness the Maharaja's personal feelings are not against your proposed visit to England.

---

१ मूल पत्र (अंग्रेजी भाषा) की प्रति का भावानुवाद।

The letter I wrote to you yesterday, by order of His Highness, was meant in all kindness to point out to you the grave consequences most likely to result to yourself by your taking such a step. While His Highness has not, in the very least, changed his opinion as to the grave results of your contemplated action, he leaves you to judge for yourself.

I remain,

yours very sincerely,

S/d. **Kantee Chunder Mookerjee.**

To

Raja Ajitsinghji

Bahadur of Khetri

उक्त पत्र का भावानुवाद यह है :—

जयपुर, २८ एप्रिल, १८९७

प्रिय महाशय,

कल मैंने आपके पास एक पत्र भेजा था। उसी पत्र से सम्बन्धित यह पत्र लिख कर मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हिज़ हाइनेस महाराज को आपकी प्रस्तावित विलायत-यात्रा के लिये कोई वैयक्तिक विरुद्ध भाव नहीं है। पहले पत्र

से आपके मनमें कुछ सन्देह न हो जाय—अतः यह पत्र लिखना पड़ता है। हिज हाइनेस की आज्ञा से मैंने कल आपको एक पत्र लिखा था। उसका अभिप्राय आपकी इस यात्रा के गंभीर परिणाम को आपके सन्मुख उपस्थित कर देना था। आपके इस कार्य से जो बुरा फल निकलने की आशंका है, उसको ध्यान में रखते हुए हिज हाइनेस आपको स्वयं बिचार करने की अनुमति देते हैं। उनके विचार में इस समय भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

आपका—

राजा अजीतसिंहजी बहादुर, कान्तिचन्द्र मुखर्जी

खेतड़ी

उक्त पत्रों का कोई भी विचारशील सज्जन इसके सिवाय और कुछ अर्थ नहीं निकाल सकता कि श्रीमान् जयपुरेन्द्र को राजाजी बहादुर की विलायत-यात्रा के विरुद्ध व्यक्तिगत रूप से तो कोई आपत्ति नहीं थी, परन्तु वे बाहरी—दूसरे लोगों की आपत्तियों की आशंका करते थे। किन्तु राजा अजीतसिंहजी बहादुर इससे पहले ही जयपुर-राज्य के गण्यमान्य सरदारों तथा अपने शेखावत भाइयों के विचारों का पता लगा कर उनकी सहानुभूति प्राप्त कर चुके थे। आपके सम्बन्धी शाहपुराधीश श्री० राजाधिराज सर नाहरसिंहजी बहादुर ने न केवल प्रोत्साहन ही दिया, बल्कि अपने युवराज राजकुमार श्री० उम्मेद-

सिंहजी (राजासाहब के बड़े जामाता) साहब को साथ लिवा ले जाने की सहर्ष अनुमति देकर आपका उत्साह बढ़ाया था। राजा साहब के दूसरे सम्बन्धी देवलिया—प्रतापगढ़[१] नरेश हिज हाइनेस श्री० महारावत सर रघुनाथसिंहजी साहब बहादुर ने भी जिनके सुयोग्य युवराज महाराजकुमार श्री० मान-सिंहजी साहब के साथ आप अपनी कनिष्ठा राजकुमारी का सम्बन्ध कर चुके थे, अपना हार्दिक समर्थन देकर प्रेमभाव दर्शाया था।

---

१ देवलिया—प्रतापगढ़ राज्य, मेवाड़ के दक्षिणी पूर्वी कोण में स्थित है। इसका क्षेत्र-फल (रकबा) ८८६ वर्गमील और जन-संख्या ७६००० के लगभग है। प्रतापगढ़ के गहलोत—सीसोदिया राजवंश की उपाधि 'महारावत' है। मेवाड़ के महाराणा मोकल संवत् १४९० सन् १४३४ ई० में मारे गये। उनके दो पुत्र थे :—(१) कुम्भा और (२) खेमसिंह। कुम्भा मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठा और खेमसिंह ने यथा योग्य जागीर पायी। परन्तु उसका महाराणा से विरोध रहा और वे दोनों काल कवलित हो गये। खेमसिंह के पुत्र सूरजमल के अधिकार में मेवाड़ में बड़ी सादड़ी और धरियावद का इलाका रहा। सन् १५३४ ई० में गुजरात के बहादुर शाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। उस समय सूरजमल के बड़े पुत्र बाघसिंह ने चित्तौड़ की रक्षा के लिये अपने जीवन को बलि-वेदी पर चढ़ा दिया। बाघसिंह के बाद उनके पुत्र रामसिंह सादड़ी के अधिपति बने। रामसिंह के पुत्र बीकाजी सन् १५५२ ई० में मेवाड़ से चल कर कुछ वर्षों

यों सब के उत्साह से उत्साहित होकर अपने दृढ़ निश्चयानुसार राजा साहब अपनी अनुपस्थिति में खेतड़ी के शासन की उचित व्यवस्था करके इङ्गलेण्ड की यात्रा के लिये बम्बई जा पहुँचे। आपकी पार्टी में शाहपुरा के ज्येष्ठ राजकुमार (इस समय राजाधिराज) श्री० उम्मेदसिंहजी साहब और उनके स्टाफ के अतिरिक्त ठाकुर विजयसिंहजी रिसालदार चिराणावाले, गणेश दरोगा भिनायवाला, चुन्नीलाल खवास और रामलालजी मास्टर थे। आपको बम्बई तक पहुँचाने के लिये आपके कई एक स्वजातीय बन्धु शेखावत सरदार, सेवक कर्मचारी और

देवलिया के पास ग्यासपुर में रहे और वहां के निवासी भीलों को दबा कर उन्होंने सन् १५६१ ई० में देवगढ़ या देवलिया में अपनी राजधानी स्थापित की। यही बीकाजी प्रतापगढ़ राज्य के मूल संस्थापक हैं। उनके अनन्तर तेजसिंह, भानुसिंह, सिहाजी, जशवंतसिंह, हरिसिंह, प्रतापसिंह, पृथ्वीसिंह, संग्रामसिंह, उम्मेदसिंह, गोपालसिंह, सालिमसिंह, सांवतसिंह, दलपतसिंह और उदयसिंह क्रमशः प्रतापगढ़ राज्य के अधीश्वर हुए। उदयसिंह की मृत्यु के पीछे अरणोद से गोद आकर सन् १८९० ई० में हिज हाइनेस महारावत सर रघुनाथसिंह बहादुर, के० सी० आई० ई० राज्य सिंहासन पर बैठे। आपका जन्म सन् १८५९ ई० में हुआ था। अपने युवराज महाराजकुमार श्रीमान् मानसिंहजी का असामयिक स्वर्गवास सन् १९१८ ई० में इनफ्लुयञ्जा से हो जाने के कारण आपको मर्मान्तक शोकाघात सहन करना पड़ा। संवत् १९८५ तदनुसार १९२९ ई० में आपका परलोकवास हुआ।

स्वयं शाहपुरा के राजाधिराज सर नाहरसिंहजी साहब पधारे थे।

बम्बई में जहाज में सवार होने से पहले आपने अपने इजलास खास से एक रोबकार (आज्ञा-पत्र) निकाला था। उसकी प्रतिलिपि यहाँ दी जाती है:—

Robkar Ijlas Khass.

D/-Bombay the 1st May 1897.

(S/d) AJIT SINGH,

It is already a well known fact, how very much I felt unwell, during the last year, how the doctors advised that I should make a tour and spend the hot weather in some cold climate, and how satisfactorily was the work of the administration carried on during my absence from Khetri. Here I should mention my great indebtedness to Col. Law—the late Resident who every now and then very kindly helped the administration a good deal by his advice to the Khetri. I very carefully looked into all the departments of my chiefship at the capital as well as in the districts where I made the tour and not only checked

the proper workings of the administrative machinery but also introduced in most of the different branches certain reforms calculated to ensure much more facility than ever. Now the hot season is again approaching and according to the advice of doctors I must pass it in cold climate as there is so much anxiety about my health, so I have proposed to go to England in view of these three fold interests—(1) that the cold climate and the sea voyage will, I hope, do much good to my health; (2) that I, the well wisher of the British Government may be present in London on the occasion of the Diamond Jubilee, the sixteenth aniversary of Her Most Gracious Majesty's prosperous reign; and (3) that experience beyond India is sure to impress upon me an idea of good many things of different improvements, a comparative knowledge where if may, in its executive line, be very useful in my own chiefship. With these points in view I have obtained the necessary permission and am to sail by the steamer "Britania" to-day. At this stage it is my first

duty to see every provision made in order that the administrative machinery which has been and is satisfactorily at work under my arrangements in the chiefship, may, during my absence continue to work as well, and though I have done all I could do in this line, yet I think, I should, when about to sail, observe the follwing in a Robkar to-day:—

(1) The Khetri Council, which is a well organised body, will carry on the work according to the instructions issued from my Ijlas Khass from time to time and Pandit Gopinathji, the chief member of the Council is primarily responsible.

In many instances the Council has been in the habit of consulting me privately though under written directions the matters called for no reference to me. In such matters, however, the Council may, after deliberate consideration, pass orders themselves and see them duly executed in the interest of the chiefship. The chief member may sign for me in ordinary correspondence.

(2) Munshi Jugmohanlal, the Foreign Member of the Khetri Council will stay at Jaypore during my absence, or if there be anything urgent, requiring his at Khetri or elsewhere, he can go there. He is to look after whole business connected with the Residency and consider himself responsible. He may continue to carry on correspondence with the Resident. His second business will be that of the English Mail i.e., carrying on correspondence with me, or in other words he is to be the medium of communication. Letters addressed to me on State Business may be opened and replied by him. Private letters of friends etc. should come to me where ever I may be. The work of the Residency Vakil as well as others is to go on as usual.

(3) Most important matters where-in delay may not be harmful may be postponed till my return if their nature does not admit of any settlement by referring to me by mail, as correspondence is to be carried on with me every week

and in most urgent matters telegrams can be sent.

(4) As for income and expenditure, I have prepared a budget and signed it. My officials are to see that my wishes pointed out to them are duly carried out.

(5) The Mir Munshi of my Ijlas Khass is authorized to take, within prescribed period, all appeals made to me against the decision of the Khetri Council. He may put there-on dates of receipt and should put the papers before me for decision on my return. No appealants will thus suffer from the expiry of term reasonably.

(6) Khetri has always received the countenance and support of the British authorities, and so, I hope, the favour of the Resident's kind advice to my Council in the interest of my chiefship will be spared when needed.

(7) For the celebration of the approaching Jubilee Festival I have announced certain proposals, but as I shall be in England on that occasion, the Khetri Council should act according to the

Resident's advice if he thinks of any change consequent on my leaving India.

(8) In the course of my talks I have spoken to the Sikar Chief to advise my Council on points where-in the advice may be necessary and I am thankful for his ready acceptance. More-over there is every hope that the attitude of Jaypore shall be one of kindness and friendliness.

(9) Copies of this Robkar may be forwarded each to the Khetri Council, the Resident and Rao Raja Saheb Bahadur of Sikar.

इसका भाषान्तर :—

रोबकार इजलास खास
बम्बई १ मई १८९७ ई०

(हस्ताक्षर) अजीतसिंह

यह बात सबको विदित है कि गत वर्ष मैं किस प्रकार बीमार रहा, किस प्रकार डाक्टरों ने भ्रमण करने तथा किसी ठंढे जलवायु में गर्मी का मौसिम बिताने की सलाह दी थी, और मेरी अनुपस्थिति में खेतड़ी का शासन-कार्य कैसी सुचारुता से चलता था। यहाँ मैं भूतपूर्व रेजिडेण्ट कर्नल ला के प्रति अपनी

कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने हर समय कृपापूर्वक खेतड़ी को अपनी सलाह देकर शासन में सहायता पहुँचायी। मैं राजधानी में तथा जिलों में जहाँ मैं जाया करता, राज के प्रत्येक विभाग को बहुत ही सावधानी से देखता था और मैं केवल शासन-यंत्र की जाँच पड़ताल ही नहीं करता था, प्रत्युत् भिन्न-भिन्न शाखाओं में कुछ सुधार भी करता था, जिनसे सदा से कहीं अधिक सुविधा होने की संभावना रहती थी। अब गर्मी का मौसिम फिर आ रहा है और डाक्टरों की राय के मुताबिक मुझे इसे किसी ठंढी आबोहवा में बिताना चाहिये क्योंकि मेरे स्वास्थ्य के लिये बहुत चिंता है। इसलिये मैंने तीन उद्देश्यों से इङ्गलेण्ड जाने का विचार किया है—(१) मुझे आशा है कि ठंढे जलवायु और समुद्र-यात्रा से मेरे स्वास्थ्य को बहुत लाभ पहुँचेगा; (२) मैं बृटिश गवर्नमेंट का शुभचिन्तक हूँ, इसलिये महारानी विक्टोरिया के सुखमय राज्य काल की १६ वीं वर्ष-गाँठ के उपलक्ष में डायमण्ड जुबिली के अवसर पर मुझे लंदन में उपस्थित रहना चाहिये; (३) हिन्दुस्थान के बाहर जो अनुभव प्राप्त होगा उससे मुझे बहुत से सुधारों के सम्बन्ध में नवीन विचार प्राप्त होंगे, जिनके तुलनात्मक ज्ञान से मेरे राज-कार्य में बड़ा लाभ पहुँचेगा। इन उद्देश्यों से मैंने इङ्गलेण्ड जाने के लिये आवश्यक आज्ञा प्राप्त करली है और आज 'बृटेनिया' (Britania) जहाज से मैं समुद्र-यात्रा करूँगा। इस समय मेरा सर्व प्रथम कर्तव्य यह है कि मैं इस बात का प्रबन्ध कर

जाऊँ कि जिस भाँति मेरे प्रबन्ध से शासन-कार्य सन्तोषजनक रूप से चल रहा है, उसी भाँति वह मेरी अनुपस्थिति में भी चले और यद्यपि मुझे इसके लिये जो कुछ करना चाहिये था उसे मैं कर चुका हूँ, तथापि मेरा विचार है कि समुद्र-यात्रा करने के समय मैं एक रोबकार में निम्नलिखित बातों का निर्देश कर जाऊँ :—

(१) खेतड़ी कौंसिल जो एक सुसंगठित संस्था है, उन आदेशों के अनुसार कार्य करेगी जो समय समय पर खास इजलास की ओर से दिये जायँगे और कौंसिल के चीफ मेम्बर पण्डित गोपीनाथजी इसके लिये उत्तरदायी होंगे। बहुत सी बातों में कौंसिल निजी तौर पर मुझ से सलाह लेती थी, यद्यपि लिखित आज्ञाओं के अनुसार उन बातों का मेरे यहाँ आना आवश्यक नहीं था। ऐसी बातों में कौंसिल को स्वयं पूर्ण विचार करने के बाद आज्ञा देनी चाहिये और इस बात का उसे ध्यान रखना चाहिये कि राज के लाभ की दृष्टि से उसका पालन हुआ अथवा नहीं? साधारण पत्र-व्यवहार में चीफ मेम्बर को मेरे लिये हस्ताक्षर करना चाहिये।

(२) खेतड़ी-कौंसिल के फॉरेन मेम्बर (वैदेशिक सदस्य) मुन्शी जगमोहनलाल मेरी अनुपस्थिति में जयपुर में रहेंगे और यदि खेतड़ी में या अन्यत्र कहीं उनकी आवश्यकता होगी तो वे वहाँ जायँगे। रेजिडेन्सी से सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों की वे देखभाल करेंगे और उसके लिये अपने को उत्तरदायी समझेंगे। वे रजिडेंट के साथ पत्र-व्यवहार का काम जारी

रक्खेंगे। उनका दूसरा काम विलायती डाक देखना होगा अर्थात् वे मेरे साथ पत्र-व्यवहार करेंगे। राज-कार्य के सम्बन्ध में मेरे नाम से जो पत्र आयेंगे उन्हें वे खोलेंगे और उनका उत्तर देंगे। मेरे मित्रों के जितने पत्र होंगे उन्हें, चाहे मैं जहाँ कहीं हूँ, वहीं मेरे पास भेजना होगा। रेजिडेन्सी वकील का काम तथा अन्य कार्य सदा की भाँति चलने चाहिये।

(३) मुझ से प्रति सप्ताह पत्र-व्यवहार होना चाहिये और आवश्यकीय कार्यों में मेरे पास तार भेजा जाना चाहिये। जो बहुत जरूरी काम न हों और जिनमें देर करने से हानि न हो और जिनके सम्बन्ध में मेरे साथ पत्र द्वारा निबटारा न हो सके वे मेरे लौटने तक स्थगित किये जा सकते हैं।

(४) आय-व्यय के सम्बन्ध में मैंने एक बजट बना दिया है और उस पर मेरे हस्ताक्षर हैं। मेरे अफसर इस बात का ध्यान रक्खेंगे कि उसमें मैंने जो इच्छाएँ प्रकट की हैं, उनके अनुसार काम होना चाहिये।

(५) मेरे इजलास खास के मुन्शी को यह अधिकार दिया जाता है कि खेतड़ी कौंसिल के निर्णय के विरुद्ध जितनी अपीलें हों, उन्हें वह लिया करें। उन पर उसे पेश होने की तारीख लिख देनी चाहिये और मेरे लौटने पर मेरे सामने पेश करनी चाहिये। इस प्रकार अपीलांट्स को अवधि बीत जाने पर किसी प्रकार की क्षति नहीं होगी।

(६) बृटिश अधिकारियों ने सदा खेतड़ी की सहायता तथा समर्थन किया है। मुझे आशा है कि मेरे राज की भलाई के लिये जब कभी आवश्यकता पड़ेगी तो रेजिडेण्ट साहब कृपया मेरी कौंसिल को अपनी सलाह दिया करेंगे।

(७) आगामी जुबिली के उत्सव को मनाने के लिये मैंने कई प्रस्ताव किये हैं, पर उस समय मैं इङ्गलेण्ड में रहूँगा। मेरे जाने पर यदि रेजिडेण्ट साहब कोई परिवर्तन करना चाहें तो खेतड़ी कौंसिल को उनकी राय के मुताबिक काम करना चाहिये।

(८) वार्तालाप में मैंने सीकर-नरेश से अनुरोध किया है कि जिस विषय में मेरी कौंसिल को उनकी सलाह की आवश्यकता हो, वे अपनी सलाह देंगे और मैं बड़ा अनुगृहीत हूँ कि उन्होंने तुरन्त इसे स्वीकार कर लिया। इसके अतिरिक्त मुझे पूर्ण आशा है कि जयपुर सदा कृपा और मित्रता का भाव रक्खेगा।

(९) इस रोबकार की एक-एक प्रति खेतड़ी-कौंसिल, रेजिडेण्ट साहब और सीकर के रावराजा साहब बहादुर के पास भेजी जानी चाहिये।

× × × ×

कहने की आवश्यकता नहीं कि, यह रोबकार श्रीमान् राजाजी बहादुर की विचारशीलता, दूरदर्शिता और प्रबन्ध-पटुता का परिचायक है और इस बात का स्पष्ट निदर्शक है, कि

उनकी नियामक दृष्टि खेतड़ी के सब विभागों पर किस प्रकार रहती थी।

राजा साहब दो पुत्रियों और एक पुत्र के पिता थे। पुत्र के सम्बन्ध में चिन्ता करने का उनके लिये कोई कारण न था, किन्तु पुत्रियों के सम्बन्ध में उस समय की प्रगति के अनुसार विलायत-यात्रा के बहाने उनके हित विरोधी-लोग बखेड़ा खड़ा न कर दें यह खटका जरूर था। परन्तु इसके प्रतिकार के लिये ही उन्होंने अपने सम्बन्धी शाहपुरा एवं प्रतापगढ़ के नरेशों की अनुमति प्राप्त कर लेने की बुद्धिमानी की थी, केवल इतना ही नहीं, अपने बड़े जामाता शाहपुरा के युवराज राजकुमार साहब को भी साथ ले लिया था। उनकी यह नीति दूरदर्शिता को प्रकट करनेवाली थी, इसमें सन्देह नहीं।

ता० १ मई सन १८९७ ई० को बम्बई से इङ्गलेण्ड के लिये राजा साहब 'बृटेनिया' जहाज द्वारा अपनी पार्टी के साथ रवाना हुए थे। उसी जहाज से उनके परम मित्र महाराजाधिराज कर्नल सर प्रतापसिंहजी साहब (जोधपुर) जा रहे थे। राजपूताने के नरेशों में ये ही पहले नरेश थे, जिन्होंने सर्व प्रथम विलायत-यात्रा करने का साहस किया था।

राजाजी बहादुर की विलायत-यात्रा का दिलचस्प वर्णन तारीखवार उनके सेक्रेटरी श्री० रामलालजी मास्टर [1] की उस

---

१ श्री० रामलालजी मास्टर खेतड़ी-संस्थान के ही एक प्रजाजन और

समय की हस्तलिखित डायरी के पृष्ठों से यहाँ सङ्कलित किया जाता है :—

ता० १ मई से ६ तक सन् १८९७ ई०, मु० चलता जहाज।

(बैशाख बदि १४ से सुदि ४ संवत् १९५३ वि०)

ता० १ मई शनिवार को ७।। बजे बम्बई पहुँच कर ६ बजे जहाज में सवार हुए। जहाज शाम को ३ बजे रवाना हुआ। इसी जहाज में सब देशी रियासतों के भेजे हुए हिन्दुस्थानी अफसर हैं, जिनकी संख्या उनके नौकरों सहित अनुमान १०० होगी। करीब ३०० मिलिटरी और सिविल ऑफिसर्स और ३०० करीब ही जहाज के चलानेवाले नौकर लोग—इस तरह

परगने कोटपूतली के "बणेटी" नामक गांव के निवासी थे। जाति के सुनार थे। आरम्भ में उनकी नियुक्ति खेतड़ी के शिक्षा-विभाग में हुई थी। अनन्तर वे शिक्षा-विभाग की अधीनता में चलनेवाली पाठशालाओं के इन्स-पेक्टर बना दिये गये थे। पश्चात् राजाजी बहादुर उन्हें अपना सेक्रेटरी बनाकर सन् १८९७ ई० में विलायत ले गये। वहां से लौटने के बाद श्री राजकुमार जयसिंहजी के समवयस्क सहचारी बालकों को पढ़ाने का कार्य भी उनके सुपुर्द रहा। राजा साहब के असामयिक स्वर्गवास के बाद कितने ही वर्षों तक मास्टरजी नवलगढ़ के स्वर्गीय श्री० ठा० रूपसिंहजी साहब के सेक्रेटरी रहे। अन्त में फुलेरा जङ्कशन पर रेलवे लाइन से कट जाने की दुर्घ-टना के कारण उनकी मृत्यु हुई।

कुल आदमी इस जहाज में करीब ६०० के ऊपर और ७०० से नीचे हैं।

हमारी पार्टी में सरकार [१] (श्री० खेतड़ी-नरेश) महाराज कुमार साहब शाहपुरा, रिसालदार विजयसिंह, रामलाल मास्टर, चुन्नीलाल खवास, गणेश दरोगा और मास्टर ज्वाला-प्रसाद (महाराज कुमार साहब शाहपुरा के साथ)—ये सात साहबान हैं।

महाराज कर्नल सर प्रतापसिंहजी, हरजीसिंहजी, धोंकल-सिंहजी और बाबू रघुवंशनारायणजी कायस्थ (महाराज सर प्रतापसिंहजी के ट्यूटर) ये चार जोधपुर की पार्टी में।

जहाज का नाम 'बृटेनिया' है। यह रात और दिन में ३६० मील चलता है और चलता ही रहता है। अदन (Aden) में आज छै घंटे ठहरेगा। फिर स्वेज (Suez), पोर्ट सैयद (Port Said), ब्रिंडिसी (Brindisi), माल्टा (Malta), जिब्राल्टर (Gibralter) और प्लाइमाउथ (Plymouth) इतनी जगह कहीं दो घंटे, कहीं ४ घंटे ठहरेगा। इसी तरह चलते चलते शायद २१ या २२ मई तक लन्दन (London) पहुँचेंगे। अब अरब का समुद्र कहीं पांच मील, कहीं छै मील गहरा बतलाया। बम्बई से चलने के बाद रास्ते में नीचे जल

---

१ 'सरकार' शब्द इस डायरी में सब जगह श्रीराजाजी बहादुर के लिये प्रयुक्त हुआ है।

और ऊपर आकाश के सिवाय और कुछ नजर नहीं आता है। जमीन, वृक्ष, पशु-पक्षी इत्यादि का नामनिशान भी नहीं। आज (ता० ६) शायद दिखलाई दे। गाँव का गाँव जहाज में साथ चल रहा है।

ता० ७ मई से ९ तक।

चलती जहाज। अदन से चल कर रेड-सी (Red Sea) पहुँचे तो पहले एक टापू "आइलेण्ड आफ् पेरिम" (Island of Perim) कुछ फासले पर बायें हाथ की तरफ दिखलाई दिया। ता० ७ को ऐसी गर्मी पड़ी कि, तबियत को चैन नहीं। उस दिन दोनों तरफ जमीन, पहाड़, टीबे वगैरह—एक तरफ तो अरब (Arab) के और दूसरी तरफ अफ्रिका (Africa) के नजर आते रहे। उड़नी मछली और एक मछली डबल रोटी की किस्म की, जिसको यहाँ 'जेली फिस' (Jelly Fish) कहते हैं, देखी।

ता० ८ को जमीन देखने में नहीं आयी। गर्मी बहुत तेज रही। रात को पानी में (Phosphorus-फासफोरस) आग चमकती हुई देखी।

ता० ९ को अफ्रिका (Africa) के 'सुमाली और इजिप्शियन कोस्ट' (Somali and Egyptian Coast) खूब नजर आये।

समुद्र में लाइट-हाउस (Light-House) दिखलाई दिया। आज सबेरे से हवा जोरों पर है। समुद्र भी खूब मौज ले रहा है। लहरें झकोरे खा रही हैं। जहाज भी हिल रहा है। कभी कभी बहुत कम हाल मालूम देती है। ऊपर के डेक (Deck) पर हवा बहुत जोर से चलती है। सबेरे रामलाल की तबियत कुछ बिगड़ गयी। जी मिचलाने और चक्कर आने लगा। महाराज-कुमार शाहपुरा को भी बेचैनी हुई। मास्टर ज्वालाप्रसाद की भी यही दशा रही। यह हालत घंटे डेढ़ घंटे ही रही। तब तक ये लेटे रहे, फिर मजे में हो गये। सरकार और विजयसिंहजी, गणेश तथा चुन्नीलाल बिलकुल ठीक रहे। इस समय भी समुद्र वैसे ही झकोरे खा रहा है लेकिन सुबह से कम। कल सबेरे स्वेज पहुँचेंगे। अब रात के १० बजे हैं। बम्बई से स्वेज २९७२ मील है। आगे लन्दन ३६५७ मील और है।

हाँ, महाराज सर प्रतापसिंहजी के साथवालों में से भी कँवर धोंकलसिंह जी और वाबू रघुवंशनारायणजी, जी मिच-लाने के सबब से हम लोगों की तरह ही बेचैन रहे, लेकिन थोड़ी देर में सब ठीक हो गये।

ता० १० मई

मु० स्वेज। सबेरे यहाँ पहुँचे। तवियत सरकार और साथ वालों की बहुत प्रसन्न रही। अदन छोड़ने के बाद दो दिन तो

बहुत ही अधिक गर्मी पड़ी। कल से ठीक ठीक है। कुछ ठंढी हवा चलने लग गयी। अब तक तो समुद्र ठीक था, लेकिन आज कुछ खराब रहा। हवा तेज है। लहरें उठ रही हैं। परंतु सब तरह से आनन्द है। यहाँ एक घंटे ठहर कर १० बजे रवाना हुए।

ता० ११ मई

पोर्ट सैयद। कारन्टाइन (Quarantine) के सबब से कोई मुसाफिर किसी पोर्ट में उतर के नहीं जा सका। स्वेज में जहाज एक घंटा ठहरा। शहर और पोर्ट बायें हाथ आये। शहर दूरबीन से देखा गया तो इमारतें बहुत सुन्दर मालूम हुईं। दरख्त सिरस वगैरह तथा और कई तरह के बहुत नजर पड़े। दाहिने हाथ दूर तक अरब का रेगिस्तान दिखलाई दिया। बम्बई से चलने के बाद कल १० रोज में रेल और इंजन देखने को मिले। बड़ा ही आनन्द आया। कारन्टाइन के सबब से मजबूरी रही, नहीं तो स्वेज से उतर के, रेल में सवार हो मुकाम इस्माइलिया (Ismailia)—जहां तक रेल गयी है, पहुँच जाते और फिर इसी स्टीमर 'बृटेनिया' में सवार हो जाते। खैर, दाहिनी तरफ अरब की लाद की भरती के थोड़े से ऊँट भी देखे।

स्वेज से जहाज की चाल फी घंटा ५ मील के हिसाब से हो गयी। अरबियन सी (Arabian Sea) और रेड सी

(Red Sea) में १५ मील फी घंटा चाल थी। यह स्वेज केनाल पहले स्थल डमरू मध्य (Isthmus) था। अब जमीन को काट कर नहर कर दी गयी है। यह नहर करीब ८० या ६० फीट चौड़ी और ३५ या ३६ फीट गहरी है। कहीं कहीं अधिक है। रास्ते में जमीन दोनों तरफ बराबर दिखती रही। बायें हाथ एक-एक दो-दो मील के अन्तर पर जहाज के स्टेशन बहुत अच्छे बने हुए हैं। स्टेशन सिर्फ इसलिये हैं कि, वहाँ छोटे छोटे बोट और नौका मौजूद रहें। यह जहाज तो बड़ा और केनाल (नहर) तंग है। अगर कहीं किसी तरह का जहाज में हर्ज-मर्ज हो जाय तो उसकी सहायता के लिये उन स्टेशनों से फौरन बोट वगैरह पहुँच जायँ। हर एक स्टेशन से तार लगा हुआ है। जैसे अपने यहाँ लट्ठों पर है वैसे ही। बराबर देखते आ रहे हैं।

सुबह १० बजे के चले हुए शाम को ४ बजे इस्माइलिया पहुँचे। वहाँ जहाज ने लङ्गर डाल दिया। जहाज को कोयला वगैरह लेना है। इसलिये रात से दिन निकले तक ठहरना पड़ता है। रात को ६ बजे इस्माइलिया से जहाज रवाना हुआ और आज (११ मई) सबेरे ५ बजे पोर्ट सैयद पहुँचा। तबियत सरकार की बहुत खुश है। कल ता० १० की करीब आधी रात को जब जहाज का पिछला हिस्सा नहर में जो बहुत तंग थी, कीचड़ और रेत में टिक गया, तब जहाज के मल्लाहों (Crews) में बड़ी भाग-दौड़ मची। लेकिन उनकी फुर्ती और

कोशिश से १०-१५ मिनट में ही ठीक होकर जहाज फिर चलने लगा और रातभर चल कर यहाँ पहुँच गया।

यहां से पोर्ट बायें हाथ को है। यह बहुत बड़ा कोलिंग स्टेशन (Coaling Station—कोयला लेने की जगह) है। यहाँ सब स्टीमर (जहाज) आते और जाते कोयला लेते हैं। शहर की इमारतें बड़ी खूबसूरत पांच-छै मँजिला, बाजार बहुत साफ और चौड़ा है। क्वारन्टाइन के कारण कोई भी मुसाफिर उतर कर जा नहीं सकता था, परन्तु जहाज किनारे के बिलकुल नजदीक खड़ा हुआ था और बाजार व इमारतें साफ दिखलाई देतीं थीं। पांच सात और स्टीमरों ने भी यहां कोयला लिया। हमारे स्टीमर ने ९५० टन यानी २५००० मन कोयला लिया। लेकिन शाबास हिकमत और फुर्ती उन कोयला डालनेवाले आदमियों की कि, जिन्होंने दो अढ़ाई घंटों में इतना कोयला उठा कर जहाज में डाल दिया। अपने यहाँ तो इतने आदमियों से शायद दो दिन में भी इतना कोयला न डाला जाता।

पोर्ट-सैयद में ३ घंटे ठहरे। वहाँ से चलते ही भूमध्य-सागर (Mediteranian Sea) में घुसने के साथ स्टीमर की रफ्तार वही १५ मील फी घंटा कर दी गयी, बल्कि शायद इससे भी कुछ ज्यादा। अब गर्म कपड़े पहनने पड़े और ठंढे कपड़े नैनसुख वगैरह को रुखसत दे दी गयी। ठंढ खूब पड़ती है। इतना ओढ़े और पहने हुए हैं तो भी हाथ और मुँह गर्म नहीं होते। डेक के ऊपर तो हवा इतने जोरों की लगती है कि,

चलते हुए आदमी को हवा के धक्के से गिर पड़ने का डर मालूम होता है। केबिन (Cabin) में तो हाल कुछ कम लगती है। खड़े हुए आदमी को धक्का सा लगता है। चक्कर भी आते हैं। जी मिचला कर कई आदमियों के कै भी हुई। कितने ही अंग्रेजों की भी यही दशा हुई। महाराज सर प्रतापसिंहजी के साथ के लोगों को चक्कर भी आया और जी भी मिचलाया। मास्टर ज्वालाप्रसाद, रामलाल और चुन्नीलाल का भी यही हाल रहा। परन्तु सरकार की तबियत पर कुछ भी असर न हुआ। विजयसिंहजी और गणेश भी ठीक ठीक रहे। अब फिर वही कैफियत है कि नीचे जल और ऊपर आकाश। स्थल, वृक्ष-पक्षी मानों अर्न्तध्यान हो गये। इनके शायद ब्रिंडिसी में दर्शन होंगे।

आज (११ ता०) दिन को चुन्नीलाल के और रात को रामलाल के पेट के नीचे और पेडू के ऊपर दर्द होने लग गया था। लोगों ने कहा कि "यह दर्द बर्फ का पानी पीने से हो जाता है, जो बराबर पीने में आया है। अब या तो यह पानी पीना बंद करके सादा पानी अथवा गर्म पानी को ठंढा करके पीना चाहिये।" यही करना पड़ेगा। सरकार ने खेतड़ी अपने रिसाले के सवारों के लिये १०० बंदूकें दशहरे के बाद तक असमतुल्ला या जयपुर के कारीगरों से तैयार कराने की मंजूरी का हुक्म भिजवाया।

ता० १२ मई

अदन से मेडिटेरेनियन-सी में आनन्द से चले जा रहे हैं। स्टीमर की स्पीड (Speed-चाल) वही है। शाम को ४ बजे दाहिने हाथ क्रीट (Crete) के पहाड़ और टीबे देखने में आये। बरफ के पहाड़ खूब दिखलाई दिये।

ता० १३ मई

सब तरह से आनन्द है। कल जहाज के बोर्ड पर एक नोटिस लगाया गया था कि, ब्रिंडिसी में कस्टम ड्यूटी (Customs duty—जकात) के लिये बड़ी कड़ाई है। इसलिये मुसाफिरों को चाहिये कि सिगार, सिगरेट, तमाखू, दियासलाई आदि और जो भी कुछ महसूल की चीजें हों, सब की सब जहाज के स्टोर-रूम (Store-Room) में जमा करा दें। इस नोटिस के अनुसार चीजें जमा करा दी गयीं। ता० १४ मई को जहाज मुकाम ब्रिंडिसी पहुँचेगा। ब्रिंडिसी से कोई चाहे तो इङ्गलेण्ड को रेल के रास्ते भी जा सकता है। दो रात और दो दिन का रेल का रास्ता बतलाते हैं और तब फिर कुछ घंटे (शायद दो तीन) का जहाज का रास्ता चेनल (English Channel) में होगा। इस रास्ते होकर लोग ता० १७ को ही लन्दन पहुँचेंगे। और हम लोग २२ ता० को पहुँचेंगे। ब्रिंडिसी से जहाज के रवाना होने के बाद फिर मुसाफिरों को उनका जमा कराया हुआ तमाखू, सिगरेट आदि सामान

वापिस मिल जायगा। दाहिने हाथ आज (ता० १३) भी पहाड़ वगैरह दिखते रहे। बायें हाथ जल और आकाश के सिवाय कुछ नहीं था। ता० १३ मई सन् १८९७ ई०। इस समय यहाँ शाम के ७॥ बजे हैं और खेतड़ी में रात के १०॥ बजे होंगे।

ता० १५ और १६ मई

आज दिन को २ बजे माल्टा (Malta) पहुँचे। यह मेडिटेरेनिय सी में एक टापू २० मील लम्बा और १० मील चौड़ा बतलाया जाता है। इसमें किला भी है। यह जहाज ठहरने का बड़ा अच्छा मुकाम है। रास्ते में जितनी जगह जहाज ठहरा, कोई मुसाफिर हम लोगों में से नौका में बैठ कर नहीं जा सका और न कोई आ सका। सिवाय उन मुसाफिरों के, जिनको इस जहाज में सवार होकर लन्दन जाना था और जिन्होंने पहले से बन्दोबस्त कर रक्खा था। इस प्रतिबन्ध—मुमानियत का कारण बम्बई की बिमारी का हल्ला है। यहाँ माल्टा में पहुँचने पर यह सूचना मिली कि, अगर कोई किनारे पर जाना चाहे तो जा सकता है और वापस आ सकता है, लेकिन वह भी सामने घाट पर एक ही जगह कि, जिसका नाम "कारन्टाइन प्लेस" (Quarantine Place) है। यदि कोई जहाज के मुसाफिरों में से इस शहर में जाकर रहना चाहे तो पहले १५ दिन कारेन्टाइन प्लेस में रह कर शुद्ध हो जाय। हम

लोगों के भी १५ दिन बाद जमीन पर पाँव रखने की जी में आयी और सरकार, महाराजकुमार साहब और रामलाल,— दूसरे मुसाफिरों के साथ बोट में बैठ कर किनारे पर गये। वहाँ पाँच छै दुकानें छोटी मेज पर लगी हुई थीं। हम लोगों ने एक सिगरेट की पेटी और एक चांदी का सिगरेट-केस पसन्द किया। लेकिन दुकानदार ने बम्बई की बिमारी के डर से उनकी कीमत अपने हाथ में नहीं ली। एक पानी का ढोल भरा हुआ था। उसी में पैसे डाल देने को हम से कहा गया और हमने डाल दिये। दुकानदार ने एक दो-तीन हाथ लम्बे पीतल के चीमटे से पकड़ कर वे चीजें हमारे हवाले की। हम लोग—सभी मुसाफिर दूर खड़े रहे। मेम, साहब, सब के सब इस दृश्य को देख कर हँसते रहे। अच्छा तमाशा रहा। हम लोग बोट में बैठ कर वापिस जहाज में अपनी जगह आ गये। जहाज यहाँ ५ घंटे ठहरा। शाम को ७ बजे रवाना हुआ।

ता० १६—समुद्र ठीक है और तबियत भी सब की ठीक है। चैन से चले जा रहे हैं।

ता० १८ मई

जिब्राल्टर (Gibralter) शाम को ३ बजे पहुँचे। हम लोग समझते थे कि शायद माल्टा की तरह यहाँ भी किनारे पर जाने की इजाजत मिलेगी लेकिन इजाजत नहीं मिली। यहाँ एक और मजेदार दृश्य देखा—वह यह कि, एक बोट में चार

पाँच जिब्राल्टर के रहनेवाले युरोपियन, जिनको मेवा-फरोश कहना चाहिये, अपनी चीजें, जैसे नारंगी, आडू, अंगूर, विलायती मिठाई और सिगरेट वगैरह बेच रहे थे। इसमें खास बात यह थी कि न वे मेवा-फरोश हमारे जहाज में आये और न हम लोग उनके बोट में गये और जो चीज चाही वही मिल गयी। उनका बोट हमारे जहाज के चारों ओर चक्कर काटता रहा। उन्होंने एक बाँस की छोटी टोकरी के रस्सी बांध कर रख छोड़ी थी। जहाज के मुसाफिरों में से जिसने जो चीज लेनी चाही उसके लिये उस टोकरी में पैसे डाल दिये और बदले में उन्होंने उसमें वह चीज रख कर रस्सी ऊपर को फेंक दी। बस, कूएँ में से पानी की बालटी या डोल खींचने की तरह वह चीज मुसाफिर के पास पहुँच गयी। मुसाफिर को रस्सी खींचने का परिश्रम जरूर करना पड़ा। एक बजाज भी अपनी नौका में बजाजा (कपड़ा, टोपी, पंखी, रुमाल, टेबिल-क्लाथ वगैरह सामान) लिये हुए इसी तरह जहाज के चारों तरफ घूम कर बेच रहा था। यहाँ हमारा जहाज ३ घण्टे ठहरा। सूर्य अस्त होने के साथ रवाना हुआ। चला जा रहा है।

ता० १९ मई

पोर्चुगाल के बहुत से पहाड़ और चट्टान हमारे दाहिने हाथ को दिखलाई पड़े।

ता० २० मई

सुबह से धुंध होना शुरू हुआ। दिन भर करीब-करीब धुंधला (Foggy) रहा। स्टीमर पाँच-पाँच मिनट में इञ्जिन की तरह सीटी देता रहा, जिससे कि, सामने से कोई आता हुआ जहाज टकरा न जाय। सीटी की आवाज होशियार करने के लिये ही थी।

अब बिस्के की खाड़ी (Bay of Biscay) में स्टीमर घुसा परन्तु परमात्मा को धन्यवाद है कि, जिस खाड़ी का इतना अधिक डर था और लोग घबड़ा रहे थे, अब की बार ऐसी शांत रही कि, किसी तरह का कोई जरा भी खटका न हुआ, बल्कि और मुकामों के बनिस्बत यह जगह और भी अच्छी निकली। जहाज के साहब लोग कहते हैं कि, जब यह 'बृटेनिया' जहाज बम्बई को गया था, तब इस 'बे आफ बिस्के' में इतने जोर से पानी की लहरें उठती थीं कि, साहब लोगों के केबिन में पानी भर गया था और उनको तीन दिन तक नीचे रहने को मजबूर होना पड़ा था। वे ऊपर नहीं जा सके। किन्तु अबकी बार परमेश्वर की पूरी कृपा रही।

दोपहर को हमारे दाहिने हाथ पोर्चुगालवालों का लिस्बन (Lisbon) शहर दिखलाई दिया और एक केप भी।

ता० २१ मई

आज सबेरे भी कुछ धुंधला रहा और जितनी देर धुंधला रहा, स्टीमर कल की तरह ही पांच पांच मिनट के अंतर से

सीटी देता रहा। दिन भर चलने के बाद शाम को ६ बजे प्लाइमाउथ (Plymouth) पहुँचे। यहां करीब १०० मुसाफिर रेल द्वारा लंदन जाने के लिये उतर गये, यहां से रेल सीधी लंदन को जाती है। किराया शायद फर्स्ट क्लास का ३०, सेकेण्ड क्लास का १५ और थर्ड क्लास का १० शिलिंग ऐसा कुछ है। मेसर्स हेनरी एस० किंग (Messrs. Henry S. King) का एजेंट, जो सामने से लेने के लिये आया था, यहां सरकार से मिला। यह पोर्ट भी सुन्दर मालूम हुआ। खेतों में हरियाली की छटा सुहावनी जान पड़ती थी।

दो घंटे ठहर के जहाज प्लाइमाउथ से रात को ८ बजे चला। इंगलिश चेनल में लाइट-हाउसेज (Light-Houses) का दृश्य मनोहर था। रात को ९ या १० बजे के करीब भी ऐसा उजाला—प्रकाश रहा कि जैसे दिन हो।

ता० २२ मई। लंदन

आज हम लोगों के लंदन पहुँचने के दिन का सूर्य उदय हुआ। इंगलिश चेनल में पानी ने झकोरे तो बहुत मारे, लेकिन स्टीमर हिला नहीं। टेम्स नदी में पहुँचने पर मछली पकड़ने वालों के सैकड़ों बोट देखने में आये। दिन भर ठंढी हवा जोर से चलती रही। इतनी ठंढी रही कि डेक पर अधिक ठहरना कठिन मालूम हुआ। हम लोगों के उतरने की जगह से कुछ मील इधर करीब ६॥ बजे शाम को एक जगह जहाज

ठहरा। यहां पर अगुआनी के लिये आये हुए कर्नल ट्रेवर (Col. Trever) साहब सरकार से मिले। एक कँवर छेदा-सिंहजी (फर्रुखाबाद के रहनेवाले) श्री० राजाधिराज साहब शाहपुरा के सेक्रेटरी जो यहां बार-एट-ला की पढ़ाई करने के लिये तीन वर्ष से आये हुए थे, जिनका कुल खर्च शाहपुरा राज की ओर से दिया गया है और पास भी हो गये हैं, महाराज कुमार (शाहपुरा) के स्वागतार्थ आये। सैंकड़ों मेम और साहब लोग अपने अपने दोस्तों को रिसीव (Receive) करने—लिवाने आये थे। यहीं सेक्रेटरी आफ् स्टेट फॉर इंडिया (Secretary of State for India) के ए० डी० सी० सर सेमर ई० फिजर्ल्ड (Sir Seymour E, Fitzzerld) की—जो इम्पीरियल सर्विस ट्रूप्स के हिन्दुस्तानी अफसरों को रिसीव करने के लिये आये थे, सरकार से मुलाकात हुई। यहाँ कोई भी मुसाफिर उतरने नहीं पाया। जो लोग रिसीव करने आये थे, वे भी सवार हो गये। इसके बाद करीब २० मिनट जहाज चला और ७॥ बजे लंदन के एलबर्ट डक्स (Albert Docks) पर पहुँच गया। हमलोग उतरे। यहां से हमलोगों के ठह-रने की जगह ८ या ९ मील के करीब थी। यहीं से हमारी पार्टी रेल में सवार होकर लीवरपूल स्ट्रीट के स्टेशन के लिये रवाना हुई, जो ५ मील है। लीवरपूल स्ट्रीट से उतर कर सर-कार, महाराज कुमार (शाहपुरा), कर्नल ट्रेवर तथा कुँवर छेदासिंहजी सहित गाड़ी में बैठ कर विक्टोरिया होटल (Victo-

ria Hotel) पहुँचे। जिस समय सरकार गाड़ी में सवार हो रहे थे, उसी समय फिर सर फिजर्लेड साहब गाड़ी के पास आये, हाथ मिलाया और कहा कि मैं आप से कल फिर मिलूँगा।

सरकार की गाड़ी के पहुँचने के घंटा डेढ़ घंटा बाद रामलाल और चुन्नीलाल भी—जो सामान के साथ लिवरपूल स्टेशन पर पीछे ठहर गये थे, विक्टोरिया होटल पहुँच कर पार्टी के शामिल हो गये। विक्टोरिया होटल की इमारत, जहाँ सरकार की पार्टी ठहरी है राजमहल (Palacial Building) की तरह आलीशान दश मंजली है।

ता० २३ मई

विक्टोरिया होटल—नार्थम्बरलेण्ड एवेन्यू—लंदन। (Victoria Hotel—Northumberland Avenue, London) रविवार के कारण सब कारखाने बंद रहे। सरकार "थाल जीम" (भोजन) कर ११ बजे कर्नल ट्रेवर के साथ बग्घी में सैर करने पधारे। हाइड पार्क और महाराजा कर्नल सर प्रतापसिंहजी साहब के डेरे एलेक्जेंडरिया होटल (Alexandria Hotel) में जाकर उनसे मिले। पीछे से सर सेमर फिजर्लेड और कैप्टेन जी० एफ० चेनविक्स ट्रेंच (Captain G. F. Chenvix Trench) खेतड़ी के डेरे (विक्टोरिया होटल में) आये, लेकिन सरकार की अनुपस्थिति के कारण अपने मुला-

काती कार्ड (Visiting Cards) छोड़ कर चले गये। मि० ई० स्टर्डी (Hr. E. Sturdy) स्वामी विवेकानन्दजी के दोस्त भी मिलने आये थे। वे भी कार्ड छोड़ गये।

ता० २४ मई

हाजरी खाने के बाद कर्नल ट्रेवर साहब के साथ सरकार आर्मी एण्ड नेवी को-ऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड् (Army and Navy Co-operative Society Limited) की दुकान में पधारे। कर्नल वी० ई० ला (Col. V. E. Law) डेरे आये। इडिया आफिस सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया, के यहां से श्रीमती महारानी साहबा के जन्म दिन के उत्सव में ता० २६ बुधवार को रात के ८ बजे के डिनर का निमंत्रण आया। शाम को कुछ मोम के कारखाने मुलाहिजे किये।

ता० २५ मई

कलेवा करने के बाद ११ बजे सरकार कर्नल ट्रेवर सहित इण्डिया आफिस में पधारे। मि० ली वार्नर (Mr. Lee Warner) सीढ़ियों तक पेशवाई आये। बहुत बातें हुईं। वहां से चलकर सर अलफ्रेड लायल (Sir Alfred Lyall) और सर एडवर्ड ब्रेडफोर्ड (Sir Edward Bradford) से मिले। लंच के बाद कर्नल ला से मुलाकात की। अनन्तर इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट (Imperial Institute) गये। श्रीमती

महारानी के जन्म दिन के उत्सवोपलक्ष में मार्किस ऑफ सालिसबरी (Marquis of Salisbury) का ता० २६ मई की रात १० बजे का निमन्त्रण कार्ड आया।

ता० २६ मई

आज सवेरे से ही बादल होकर कभी-कभी बूंदा-बांदी होती रही। दिन के ६ बजे सरकार, महाराजकुमार और विजयसिंहजी परेड-ग्राउण्ड (Parade Ground) में ट्रूपिंग (Trooping) देखने के लिये पधारे। वहाँ सरकार की गाड़ी भीतर तक गयी। कैप्टेन ट्रेंच ने पेशवाई की।

दिन को १२ बजे सर्दी और बारिस की वजह से सरकार को बुखार हो गया। कर्नल जान बिडल्फ (Col. John Biddulph) जो राजपूताने में किसी जगह पोलिटिकल एजेण्ट रह चुके हैं और अब रिटायर हो गये हैं, सरकार से मिलने के लिये आये। लेकिन बुखार के कारण सरकार मिल न सके। महाराजकुमार साहब उनसे मिले। उनके परिचित थे।

अपने निश्चित प्रोग्राम के अनुसार बुखार रहने पर भी शाम को ७ बजे सरकार दरबारी पोशाक मय हीरे के जड़ाववाली तलवार और नया इक्का धारण कर महाराजकुमार सहित इण्डिया ऑफिस पधारे। वहाँ १० बजे रात तक डिनर में रहे और वहीं से लार्ड सालिसबरी के यहाँ भीतर के भीतर ही पधार गये। वहाँ प्रिंस और प्रिंसेस ऑफ वेल्स (Prince

and Princess of Wales) भी थे और लार्ड तथा लेडीज की तो गिनती ही नहीं। लार्ड नार्थब्रुक (Lord Northbrook) से सरकार का खास तौर से परिचय हुआ और बातें होती रहीं। ११। बजे रात को वापिस लौटे। बुखार बड़ा तेज था लेकिन सरकार ने कुछ परवा नहीं की। लार्ड सालिसबरी के यहीं ड्यूक आफ कनाट (Duke of Cannought) ने खुद कल ता०२७ के २ बजे दिन का लंच (Lunch) का निमन्त्रण (Invitation) दिया। रात भर बुखार रहा।

ता० २७ मई

सुबह कर्नल ट्रेवर के द्वारा एक डाक्टर, जिसको हिन्दुस्थान का अनुभव था, बुलाया गया। उसकी व्यवस्था के अनुसार दवा लाकर सरकार को दी गयी। आज मेजर हरबर्ड (Major Harbord) १२ बजे से २ बजे के बीच में आनेवाले थे और २ बजे का ड्यूक आफ कनाट का बुलावा था। दोनों ही जगह चिट्ठी लिख कर माफी मांगी गयी।

यहाँ लार्ड सालिसबरी का एक क्लब है। उसके सेक्रेटरी की चिट्ठी आयी कि इङ्गलेण्ड रहने के समय तक कमिटी आपको क्लब का ऑनरेरी मेम्बर मुकर्रर करती है। इसके जवाब में स्वीकृति और धन्यवाद का पत्र भेजा गया। शाम को फिर डाक्टर आकर दवा दे गया। रात को खूब पसीना आया।

ता० २८ मई

सबेरे डाक्टर आया। तबियत सरकार की बिलकुल ठीक है। श्रीमती महारानी (क्वीन) के यहाँ से इवनिंग पार्टी (Evening Party) का निमन्त्रण कार्ड आया।

यहाँ विलायत में—बेमतलब कोई बोलता चालता नहीं और न कोई एक मिनट फज़ूल खोता है। घर-घर में टेलीफोन लगे हुए हैं। गाड़ी हाँकनेवाले कोचवानों तक के पाकेट में अखबार रहते हैं। गाड़ी लेकर ठिकाने पहुँचे, सवारी को उतारा और अखबार पढ़ना शुरू किया। अपने यहां राजपूताने में जहाँ पाँच आदमी इकट्ठे हुए कि, हा-हू-होहल्ला शुरू हुआ, लेकिन यहाँ बड़े से बड़े बाजार में चले जाइये, वहीं मौन और खामोशी पावेंगे। लंदन शहर जमीन के पर्दे पर सफाई में, इमारतों में और तिजारत में एक ही है। लोगों की मेहनत में कमी नहीं। गाड़ीवाले तो शायद रात और दिन सोते ही नहीं। दिन और रात घोड़ों की टाप की आवाज सुनायी देती है। बग्घी और गाड़ी का घर्राटा नहीं—सब के चक्कों में रबड़ लगा हुआ है[1]।

---

१ उस समय तक विलायत में भी मोटरों का दौरदौरा शुरू नहीं हुआ था।

ता० २९ मई

सरकार की तबियत ठीक है। मेह बरसता रहा। बादल छाये हुये हैं। डाक्टर ने सर्दी की वजह से बाहर जाने का निषेध किया।

शाम को महाराजा कर्नल सर प्रतापसिंहजी, उनके कृपा पात्र हरजीसिंहजी और धोंकलसिंहजी डेरे आये। खूब बातें होती रहीं।

आज हिन्दुस्थान की डाक आयी। नैनीताल से राजकुमार साहब (जयसिंहजी) की खुशमिजाजी का तार भी पहुँचा, जिसके लिये बड़ी इन्तजारी की जा रही थी। अति प्रसन्नता हुई।

ता० ३० मई

कलेवा के बाद महाराजकुमार साहब, कर्नल ट्रेवर और विजयसिंहजी सहित सरकार बग्घी में विराज कर एलेक्जेंड्रिया होटल—जहाँ महाराजा कर्नल सर प्रतापसिंहजी साहब अपनी पार्टी के साथ ठहरे हुए थे, पधारे। वे वहाँ नहीं मिले। सामने ही हाइड पार्क (Hyde Park) है, वहाँ घोड़े पर चढ़े हुए मिले। ट्रेवर तो बग्घी में बैठ कर अपने घर चले गये और सब के सब जोधपुरवालों के डेरे में आ गये। वहाँ बातें होती रहीं। ट्रेवर साहब भो घूम फिर कर गाड़ी लिये हुए वहीं आ गये। अनन्तर सरकार अपनी पार्टीवालों के साथ रिजेंट्स

पार्क (Regents Park) देखने को गये और शाम को ६ बजे वापिस डेरे लौटे। बारिस का यहाँ कोई ठिकाना नहीं, चाहे जब छाँट छिड़का हो जाता है। मेह ज्यादा भी बरसने लगता है। इस लिये लोग छाता जरूर साथ रखते हैं।

ता० ३१ मई

आज दिन को २ बजे सेंट जेम्स पैलेस (St. James Palace) में प्रिंस आफ वेल्स (H. R. H. Prince of Wales) ने हर मेजेष्टी (Her Majesty) श्रीमती महारानी की ओर से (Levee) दरबार किया। उसमें शामिल होने के लिये ६ प्रेजेंटेशन कार्ड्स (Presentation Cards)—हर एक के लिये दो दो आये थे। अतएव सरकार, महाराज कुमार साहब और विजयसिंहजी पोशाक धारण कर बग्घी में सवार हो १-४० बजे रवाना हुए। सरकार की बग्घी पैलेस में एम्बेसेडर्स एण्ट्रेन्स (Ambassadors Entrance) में से गयी। यह एक बड़ी इज्जत की बात है। इधर से हर एक की गाड़ी नहीं जा सकती।

सीढ़ियों के पास बग्घी ठहरी और सरकार अपने साथी साहबान के साथ उतर कर आगे बढ़े। चोबदारों की लाइन 'आसा' लिये हुए खड़ी थी। वे लोग इशारे से रास्ता बता रहे थे। जब दो कमरों से गुजर चुके, तब एक एक कार्ड ले लिया गया। यहाँ पर इम्पीरियल सर्विस ट्रूप्स के नेटिव आफिसर्स

भी जो हिन्दुस्थान से आये थे, फुल ड्रेस में खड़े थे। यहीं पर इण्डिया आफिस वाले कैप्टेन ट्रेंच मिले। उन्होंने धीरे से सरकार को यह बात कही कि, यहाँ आगे पीछे का कुछ खयाल नहीं है, आराम से जाइये। तदनुसार आगे बढ़ते गये। सलाम होती जाती थी। श्रीमती महारानी के राजसिंहासन की सीढ़ियों के पास प्रिंस आफ वेल्स पाँच दूसरे साहबों के साथ खड़े हुए थे। यहाँ कार्ड लेकर लार्ड चेम्बरलेन (Lord Chamberlain) ने हर एक को क्रमानुसार पेश करते हुए उनका नाम पुकारा—जैसे राजा अजीतसिंह बहादुर खेतड़ी के हाजिर हैं (Represented Raja Ajit Singh Bahadur of Khetri)। नाम पुकारा जाने के साथ ही सरकार ने सिर झुका कर सलाम किया (हाथ से नहीं) जवाब में श्रीमान् प्रिंस आफ वेल्स ने भी सिर झुकाया। इसी तरह महाराज कुमार साहब और विजयसिंहजी ने किया। इस दरबार में शामिल होनेवालों के लिये यही नियम था। यों रिप्रेजेंट होकर सरकार आगे दरवाजे से निकल गये। जिस दरवाजे से अन्दर दाखिल हुए उससे वापिसी नहीं हुई। निकलने का सामने दूसरा दरवाजा था। २॥ बजे सरकार अपने साथी दोनों साहबान के साथ वापिस विक्टोरिया होटल आये।

शाम को ४ बजे कुँवर उदयवीरसिंह रघुवंशी (बुलंदशहर के) और पण्डित प्यारेलाल अटल (जयपुर के पं० मोतीलालजी अटल के पोते) जो यहां बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने के लिये

आये हुए हैं, सलाम करने को आये और मिले। इसके बाद सरकार, महाराजकुमार साहब और विजयसिंहजी के साथ ड्रामा (नाटक) देखने पधारे और रात को १ बजे वापिस आये।

ता० १ जून

१० बजे सरकार और महाराजकुमार साहब गणेश दरोगा को लेकर टर्किस-बाथ (Turkish Bath) में स्नान करने गये। यह स्थान विक्टोरिया होटल के सामने ही था। ग्यारह बजे नहा कर वापिस आये। कर्नल विडल्फ मिलने के लिये आये। १२ बजे सरकार विजयसिंहजी को साथ लेकर कर्नल ला से मिलने को गये। उसी मौके में ली वार्नर (Lee Warner) साहब मिलने के लिये आये थे। मिलना नहीं हो सका। वे अपना कार्ड छोड़ गये।

ता० २ जून

आज डर्बी रेस थी। इसलिये दिन को एक बजे सरकार और महाराजकुमार एवं विजयसिंहजी तथा कर्नल ट्रेवर विक्टोरिया स्टेशन पहुँचे। वहां से प्रिंस आफ वेल्स की स्पेशल द्वारा जाकर रेस (घुड़दौड़) देखी। चुन्नीलाल और गणेश भी दूसरी ट्रेन से पहुँच गये थे। ड्यूक आफ कनाट ने हाथ मिलाया और तबियत की खुशी पूछी।

ता० ३ जून

सरकार बृटिश म्यूजियम (अजबघर) देखने पधारे। पीछे से डाक्टर हेंडली (जयपुर वाले) मिलने आये। अपना कार्ड छोड़ गये।

ता० ४ जून

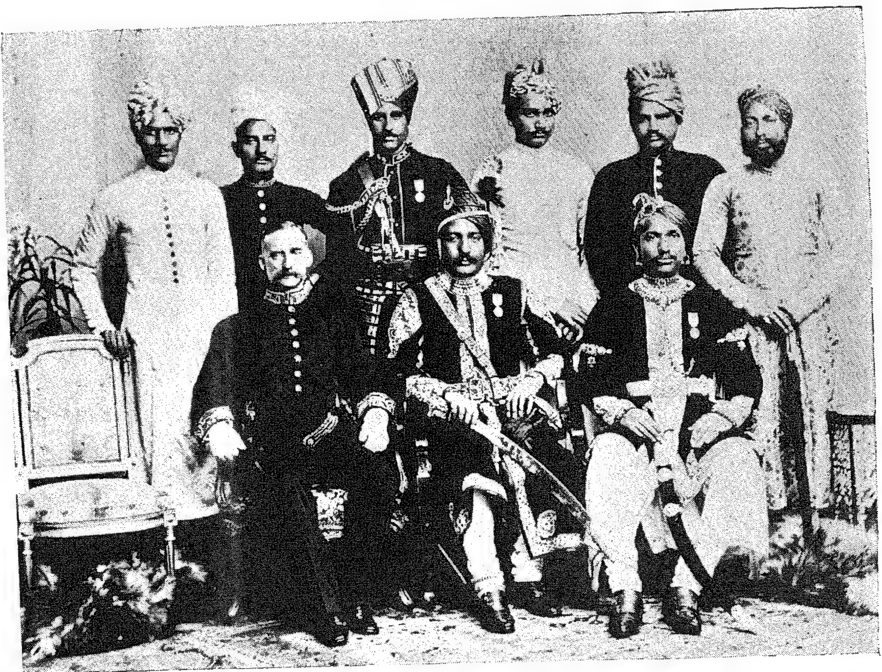
आज रात के १०॥ बजे के लिये श्रीमती महारानी के यहाँ से "स्टेट बाल" (State Ball) के दो निमन्त्रण कार्ड आये, एक सरकार के नाम का और दूसरा महाराजकुमार साहब के नाम का। शाहपुरा के सूरजनारायणजी और सुजानसिंहजी रात को १० बजे हमारे पास राजी खुशी पहुँच गये।

ता० ५ जून

११ बजे सरकार डाक्टर हेंडली से मिलने के लिये पधारे। इसके बाद ३ बजे शाम को कर्नल ट्रेवर के साथ कई साहबान से मुलाकात करने गये लेकिन किसी से समय निश्चित नहीं किया गया था, इसलिये जिनसे मिलना उनकी अनुपस्थिति के कारण नहीं हुआ, उनके स्थान पर कार्ड छोड़ दिया गया।

ता० ६ जून

१०॥ बजे जयपुर के स्वर्गीय महाराजाधिराज सर सवाई रामसिंहजी बहादुर के समय के सेटलमेंट आफिसर बाबू श्री



विलायत में खेतड़ी नरेश अपनी पार्टी के साथ

प्रसाद के छोटे भाई ए० एस० अग्रवाला (जो बैरिष्टरी पढ़ रहे हैं) सलाम करने के लिये हाजिर हुए और नजर पेश की । सरकार ने नजर के सिर्फ हाथ लगा दिया और बातें की। एक बङ्गाली बाबू अक्षयकुमार घोष और कुँवर छेदासिंहजी शाहपुरा वाले आये और मिले। १२ बजे सरकार क्यू-गार्डन्स (Kew-Gardens) पधारे। शाम को ६ बजे वापिसी हुई।

ता० ७ जून

आज यहाँ व्हिट-मण्डे (Whit Monday) के कारण कुल बैंक और दुकानें बन्द हैं। सरकार अपनी पार्टी के साथ अर्ल की कोर्ट इक्ज़िवीशन (प्रदर्शिनी) देखने के लिये रेल से पधारे। रात के १२ बजे सवारी वापिस लौटी।

ता० ८ जून

कर्नल ला को कल भोजन का निमन्त्रण भेजा गया था। तदनुसार कर्नल ला आये और कर्नल ट्रेवर भी अपने दोस्त डाक्टर जान ला (Dr. John Law) के साथ पहुँच गये। सबने खाना खाया। शाम को ६ बजे सरकार, महाराजकुमार और विजयसिंहजी सहित केरियर्स कम्पनी के द्वारा समागत हिन्दू और औपनिवेशिक मेहमानों को दिये हुए भोज (डिनर) में शामिल होने के लिये पधारे। वहां सरकार की बड़ी इज्जत हुई। सरकार ने स्पीच दी।

ता० ९ जून

कर्नल ला, डा० हेंडली, जनरल ट्रेवर (कर्नल ट्रेवर के चचेरे भाई जो बीस साल से पेन्शन पा रहे हैं) और क्रिकेट के प्रसिद्ध खिलाड़ी काठियावाड़ के महाराज प्रिंस रणजीतसिंहजी के भाई मिलने आये। डा० हेंडली ने एक पुस्तक Rulers of India बनायी है। उसको छपा रहे हैं। सरकार की और राजाधिराज शाहपुरा की भी डा० हेंडली तस्वीरें ले गये। उस किताब में सब रईसों की तस्वीरें छपेंगी। रात को १०॥ बजे सरकार महाराजकुमार सहित मिसेज एलेन गार्डनर के यहाँ पधारे। वहाँ ड्यूक आफ सेक्सकोबर्ग और गोथा (Duke of Saxcoburg and Gotha) से मुलाकात हुई। रात को २ बजे वापिस आये।

ता० १० जून

आज दिन के १२ बजे सरकार, महाराजकुमार, कर्नल ट्रेवर और विजयसिंहजी के साथ मिलिटरी टूर्नामेंट देखने के लिये गये। शाम को ६ बजे कर्नल ट्रेवर तो वापिस लौटे और सरकार ने अपनी पार्टी के और लोगों को भी बुला लिया। रात को १० बजे डचेज आफ कनाट (Duchess of Cannought) ने जीतनेवालों को इनाम बाँटा।

रात को ११ बजे सरकार की सवारी वापिस आयी। डेरे में हरजीसिंहजी जोधपुरवाले मौजूद मिले। उनसे बातें करने के

बाद जब १२॥ बजे वे चले गये, तब सरकार ने आराम फरमाया।

ता० १२ जून

ड्यूक आफ यार्क के मिलिटरी स्कूल में १२ बजे सरकार अपनी पार्टी के साथ झंडा दिये जाने (Presentation of Colours) के अवसर पर पधारे और वहाँ से लौटने के बाद मिस्टर और मिसेज् ली वार्नर के यहाँ गये। उनके यहाँ से वापिसी के समय मोरवी के ठाकुर साहब से भेंट हुई।

ता० १४ जून

शाम को ६ बजे अर्ल की कोर्ट इक्जिविशन देखी। इस प्रदर्शिनी में इसके उद्देश्यानुसार श्रीमती महारानी विक्टोरिया की गद्दी नशीनी के बाद इन साठ बर्षों में जो कुछ उन्नति या तरक्की हुई है, वह करीब करीब सब दिखलाई गयी है। ४ घंटे प्रदर्शिनी देख कर रात को १२ बजे सरकार और उनकी पार्टी वापिस डेरे आयी। अनुपस्थिति में मेजर जनरल बेनन (Major General Beynon) और कर्नल ई० एस० लडलो (Col. E. S. Ludlow) मिलने आये।

ता० १६ जून

आज सरकार ने रायल सोसायटी और सोसायटी आफ आर्ट्स देखीं। दोनों जगह से निमन्त्रण-पत्र आये थे।

ता० १७ जून

सरकार ने दिन के १२॥ बजे विजयसिंहजी को साथ लेकर कर्नल ला से मिलते हुए आनरेबल चार्ल्स हरबर्ड (Hon'ble Charles Harbord) के यहाँ पधार कर मुलाकात की। पीछे से डेरे पर लार्ड लैंसडाउन मिलने आये और अपना कार्ड छोड़ गये।

शाम को ४॥ बजे हाउस आफ कामन्स (House of Commons) देखा। वहाँ मि० भावनगरी मिले।

ता० १८ जून

तस्वीर खिंचवाई। रात को रायल कोलोनियल इन्स्टीट्यूट (Royal Colonial Institute) में पधारे। निमन्त्रण आया था।

ता० १९ जून

१ बजे सरकार निमंत्रण कार्ड पाकर लार्ड और लेडी मेयर्स के मकान मेनसन हाउस (Mansion House) गये। लार्ड और लेडी मेयर ने हार्दिक स्वागत किया। वहां और भी रईस आये थे। लार्ड मेयर ने सरकार को ऊपर ले जाकर मकान वगैरह दिखलाया। वहाँ से चल कर पार्टी ने शहर में जुबिली की सजावट (Jubilee Decorations) देखी। वापस ५ बजे शाम को लौटने पर कर्नल डबल्यू० जे० डबल्यू० मायर, कर्नल

विडलफ् और पं० प्यारेलाल अटल आये और मिले। रात को १० बजे कर्नल ट्रेवर के यहां 'एट होम' में शामिल हुए।

ता० २१ जून

विजयसिंहजी के साथ जाकर सरकार और महाराज कुमार साहब ने पौने बारह बजे एक जगह एक घोड़ों की जोड़ी बिकाऊ थी, उसको मुलाहिजे किया और वहां से एक्केरियम (Aquarium) में पधारे। वहां एक फ्रेंच औरत देखी जो आठ फीट लंबी है और जिसकी बोली (आवाज ?) मर्द जैसी है। कहा जाता है कि लंबाई में दुनियां भर में इसका जोड़ा नहीं है। रात के १० बजे का बुलावा महारानी साहिबा (क्वीन विक्टोरिया) के यहां का था। ठीक समय पर महाराज कुमार सहित सरकार बकिंघम पैलेस में पधारे और रात को १२ बजे वापिस आये।

ता० २२ जून

जुबिली महोत्सव का अभूतपूर्व समारोह देखा। सरकार और महाराजकुमार के नाम दो टिकट आये थे सेंट पाल्स कैथेड्रल (Saint Pauls Cathedral) की सीट्स के, कि जहां सम्राज्ञी (इम्प्रेस) जाकर २० मिनट ठहरी और धन्यवाद प्रदान (Thanks giving) की कार्रवाई हुई। सरकार और महाराजकुमार समारोह में शामिल हुए। सजावट एक से एक

बढ़ कर थी। जुलूस में हिन्दुस्थानी रइसों में से केवल महाराजा सर प्रतापसिंहजी थे, जो कि प्रिंस आफ वेल्स के ए-डी-सी० हैं और लेफ्टिनेंट कर्नल भी। और रईस (जैसे ठाकुर साहब गोंडाल, मोरवी और कपूरथला) सेंट पाल्स कैथेड्रल में जहां सरकार और महाराजकुमार थे, बैठे थे।

ता० २५ जून

१२ बजे ली वार्नर (LeeWarner) से मिलने के लिये सरकार इण्डिया आफिस गये और एक बजे वापिस आये। आज कर्नल डबल्यू० एफ० प्राइडेक्स (Col. W. F. Prideaux) ने आकर सरकार से मुलाकात की। देर तक बातें हुईं।

ता० २६ जून

स्पिट हेड (Spit Head) में कुल जहाजों की नुमायश (प्रदर्शिनी) देखने के लिये इण्डिया आफिस से टिकट आये थे। यहां से पोटस्माउथ (Portsmouth) तक तो रेल का रास्ता है, जो करीब ८० मील है; आते जाते छै घंटे लगते हैं। वहां से पांच छै मील जहाज में जाना पड़ता है। सरकार और महाराजकुमार साहब ने यथा समय पधार कर यह नुमायश देखी। जापान-चीन-श्याम आदि देशों के अच्छे अच्छे करीब अढ़ाई-तीन सौ जहाज थे। महारानी (इम्प्रेस) तो नहीं पधारी—युवराज गये थे।

ता० २८ और २९ जून

हर मेजेष्टी (Her Majesty) की आफ्टरनून (तीसरे पहर की) की पार्टी में सरकार और महाराजकुमार पधारे और ता० २९ जून को लेडी लैन्सडाउन की एट-होम पार्टी में शामिल हुए। जनरल जे० सी० ब्रुक और जनरल जे० जे० एच० गार्डन (General J. J. H. Gordon) मिलने आये और अपने कार्ड छोड़ गये।

ता० ३० जून

१२ बजे सरकार और महाराजकुमार, विजयसिंहजी को साथ लेकर क्लैंडन पार्क (Clandon Park) में लार्ड ऑन्सलो (Lord Onslow) के यहां गये और वहां से ६ बजे शाम को लौटने के बाद रात को ८ बजे अर्ल और काउन्टेस आफ मेक्सबर्ग के निमंत्रण में पधारे।

ता० १ जुलाई

आज अल्डरशाट (Aldershot) में (जो यहां से ४० मील है) गोरी पलटन, तोपखाना वा कोलोनियल ट्रूप्स की हाजिरी थी। वहां सरकार की पार्टी गयी और फौजी नजारा देख कर लौटी। वहां क्वीन और शाही खानदान (Royal Family) मौजूद था। लौट कर सरकार रात को १० बजे रायल एकेडेमी आफ आर्ट्स (Royal Academy of Arts) के बुलावे में गये।

ता० ३ जुलाई

१० बजे सरकार कर्नल ला को साथ लेकर इंडिया आफिस गये और मि० डबल्यू० ली वार्नर (Mr. W. Lee Warner) से बातें की। २। बजे वापस आने के बाद आप, महाराज कुमार साहब, बिजयसिंहजी और कर्नल ट्रेवर सहित रिचमंड (Richmond) पधारे। वहां एक ३०० वर्ष के पुराने मकान को दिलचस्पी के साथ देखा।

ता० ४ जुलाई

१२ बजे दिन को अपनी पार्टी सहित सरकार जोधपुर वालों के डेरे एलेक्जेंड्रिया होटल पधारे। चुन्नीलाल खवास ने खाना पका कर थाल भी वहीं लगाया। वहीं आराम फरमाया।

ता० ५ जुलाई

जोधपुर-पार्टी के साथ सरकार, महाराजकुमार और विजयसिंहजी घोड़े पर सवार होकर हवाखोरी के लिये गये। जोधपुर पार्टी के डेरे ही थाल लगा। बाद में ऑक्सफोर्ड (Oxford) और केम्ब्रिज (Cambridge) का क्रिकेट हुआ था, वह जाकर देखा। ६ बजे शाम को वापिस लौटे और रात को लंदन कारपोरेशन के निमन्त्रण में पधारे।

ता० ६ जुलाई

आज दिन में सर ई० ब्रेडफोर्ड (Sir E. Bradford), सर हेनरी सेमोर किंग (Sir Henry Seymour King) जिनके यहाँ खेतड़ी-राज का खाता है और जो पार्लियामेण्ट का मालदार मेम्बर है और मारक्विस आफ रिपन (Marquis of Ripon) के यहाँ मिलने के लिये सरकार क्रमानुसार गये और रात को एक गार्डन पार्टी में शामिल हुए। रामलाल मास्टर सरकार के हुक्म से श्रीमती महारानी साहिबा के हिन्दुस्थानी सेक्रेटरी मुन्शी हाफिज अब्दुल करीम साहब से विंडसर मिल कर आये।

ता० ७ जुलाई

१० बजे मिसेज क्लारेंस मॅाट वॅाली (Mrs. Clarence Matt Wolley)[१] जिसके यहां स्वामी विवेकानन्दजी १२ महीने तक ठहरे थे—जो स्वामीजी की बड़ी भक्त हैं—और उसका पति सरकार से मिलने आये। ये दोनों स्त्री-पुरुष सैर के लिये यहां आये थे और अब ता० ९ को वापिस चिकागो जाने वाले हैं।

---

१ Formerly Miss Hale, Native of 541, Dearborn Avenue Chicago—America.

दिन के १२ बजे ड्यूक आफ यार्क के स्कूल में सरकार पधारे। लार्ड वोल्सले (Lord Wolsley) कमांडर-इन-चीफ ने आपको रिसीव किया और स्कूल दिखलाया। शाम को छै बजे आप लेडी बेटरसी (Lady Battersea) और काउन्टेस आफ एल्समेयर (Countess of Ellesmere) की 'एट-होम' पार्टियों में शामिल हुए।

ता० ८ जुलाई

सुबह ६ बजे किंग कम्पनी के मैनेजर से खेतड़ी की खानों के सम्बन्ध में बातचीत हुई।

ता० ९ जुलाई

तीन बजे शाम को पार्लियामेंट के एक मेम्बर बर्डेटकॉल्ट्स (Burdett Coults) के यहाँ सरकार निमन्त्रण में गये। उनकी मेम साहिबा ने गार्डन पार्टी की थी। १०। बजे रात को बृटिश इम्पायर लीग के 'बाल' के बुलावे में पधारे। इस लीग का प्रेसिडेण्ट ड्यूक आफ डेविनशायर हैं।

ता० ११ जुलाई

१० बजे सरकार और महाराजकुमार, जोधपुरवालों के डेरे पधारे। घुड़सवार होकर हवा-खोरी की। वापिस लौट के पोशाक बदली और डेढ़ बजे एक बुलावे में गये। २ बजे जनरल जे० सी० ब्रुक के यहाँ जाकर उनसे मिले। यह साहब

पहले जयपुर में एजेण्ट रह चुके हैं और एक पुस्तक 'पोलिटिकल हिस्टरी आफ जयपुर स्टेट' लिखी है। इन्होंने खेतड़ी की खानों के सम्बन्ध में लिखे हुए अपने लेख की छपी हुई कापी (Copy) सरकार को दी। वहाँ से डा० हेंडली के घर गये। वहीं कर्नल बैनरमेन से (Col. Bannerman) जो देशी रियासतों में एजेण्ट रह चुके हैं, मिलना हुआ। ४।।। बजे महारानी साहिबा के हिन्दुस्थानी सेक्रटरी मुन्शी हाफिज अब्दुलकरीम साहब, सी० आई० ई० आगरेवाले से मिलने के लिये विंडसर पधारे। घंटे डेढ़ घंटे तक बातें हुई। मुन्शीजी अपने कबीले के साथ रहते हैं। उनके मकान से सटी हुई वह संगमरमर की छत्री है जो गदर के समय लखनऊ से लूट कर लार्ड केनिंग ने भेजी थी। वह पूर्ववत् तैयार करा दी गयी है। रात को १० बजे विंडसर से वापिस डेरे पहुँचे।

ता० १२ जुलाई

कल रात को दो खास निमन्त्रण-कार्ड डिनर (भोज) के श्रीमती क्वीन-इम्प्रेस (महारानी विक्टोरिया) की आज्ञा के अनुसार लार्ड स्टिवर्ड (Lord Steward) की तरफ से आज रात के लिये विंडसर कैसल (Windsor Castle) के आये थे। इसलिये और कहीं आने जाने के दूसरे इंगेजमेण्ट मुलतवी कर दिये गये।

आज दिन को १० बजे विंडसर से लार्ड एडवर्ड क्लिन्टन (Lord Edward Clinton) का तार आया, जिसमें विंडसर स्टेशन पहुँचने का समय पूछा गया था, जवाब में ५॥। बजे पहुँचने की इत्तिला का तार दे दिया गया। निमन्त्रण में यह भी लिखा गया कि रात को विंडसर कैसल में ही ठहरना होगा।

पेडिंगटन (Peddington) स्टेशन से जो विक्टोरिया होटल से करीब ३ मील है, रेल द्वारा सरकार और महाराजकुमार (साथ में पोशाक, जेवर आदि सामान का बक्स लिये हुए मास्टर रामलाल और गणेश दरोगा) रवाना होकर ठीक समय पर विंडसर स्टेशन पहुँच गये। वहाँ स्टेट कैरेज (State-Carriage—राजकीय घोड़ा गाड़ी) तैयार मिली। विंडसर स्टेशन पर पहुँचने पर सलाम होती गई। गाड़ी से उतरते ही मि० हार्निक (Mr. Harnick) जिनके पास दोनों साहबान के नाम का टाइप किया हुआ कागज था, मिले। उन्होंने मार्ग-दर्शक बन कर दोनों को अलग अलग नियत कमरों में पहुँचाया। गोंडाल के ठाकुर साहब और उनकी महारानी मकान के पहले खन (मंजिल) रूम नं० २५६ में ठहरायी गयी हैं। एक तरफ रूम नं० १७६ में बेरोनेस डी ग्रेसी (Beroness de Gracy—lady in waiting to the Grand Duchess of Hessee) ठहरी हुई थीं। दूसरी ओर ग्राउण्ड फ्लावर रूम नं० ३४३ में महाराजकुमार (शाहपुरा) का डेरा हुआ। इस साइड का नाम लैनकास्टर टावर (Lancaster Tower)

था। इसी साइड में फर्स्ट फ्लावर के रूम नं० २५० में लार्ड जार्ज हेमिल्टन (सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया) अपनी धर्मपत्नी के साथ ठहर रहे थे। सरकार के रूम का नंबर १७८ था और वह एडवर्ड थर्ड्स टावर में था। मकान के सदर दरवाजे पर इन मेहमानों के नाम क्रमानुसार उनके कमरों के नंबर के साथ लगे हुए थे। डिनर का समय ८।।। बजे का था। सरकार ने जरी की अपनी दरबारी पोशाक जेवर सहित धारण की और इसी तरह महाराजकुमार ने। आप समय पर वहीं उस कमरे में पहुँच गये जहां पहुँचने की सूचना दी गई थी। ऊपर जिनके नाम आये हैं वे खास खास गिनती के ही मेहमान थे। थोड़ी देर में कीन (इम्प्रेस) पधारीं। जिस मेहमान के पास से वे निकलीं, सेक्रेटरी आफ स्टेट उसका नाम बोलता गया। जिसका नाम बोला गया उसने सिर झुका कर सलाम की। वहां से कीन चलीं—उनके पीछे शाही खानदान की लड़कियां और तदनन्तर स्त्रियां—पुरुष क्रमानुसार सब एक नियत स्थान पर बैठे। बड़े और सजे हुए 'डाइङ्ग रूम' में पहुँचे। डिनर शुरू हुआ। डिनर में प्रिंसेज क्रिश्चियन और प्रिंसेज हेनरी आफ बैटिनबरी से जो कीन की बेटी हैं और सरकार के दाहिने और बायें बैठी थीं, बातें होती रहीं। डिनर खत्म होने के बाद सब वहीं खड़े होकर बातें करते रहे। थोड़ी देर में श्रीमती कीन एक सोफा पर बिराज गईं और लेडी लिटन ने जो लेडी इन-वेटिंग टू दी कीन (Lady in Waiting to the Queen)

हैं महारानी गोंडाल को क्वीन के सामने पेश किया। इसके बाद ठाकुर साहब गोंडाल बुलाये गये और अनन्तर सरकार (राजाजी बहादुर खेतड़ी) और महाराजकुमार शाहपुरा की क्रमशः मुलाकात करायी गयी। सरकार से क्वीन ने कुशल प्रश्न के बाद अकाल[1] और प्लेग का हाल पूछा और पीड़ित लोगों के कष्ट निवारण के प्रयत्नों पर बातें की। वहीं सामने मेज पर स्वर्ण पदक (गोल्ड मेडल) सुन्दर केस में रक्खे हुए थे। खड़ी होकर स्वयं क्वीन ने एक मेडल सरकार को प्रदान किया और एक महाराजकुमार साहब को।

कुछ समय के बाद क्वीन वहां से अपने कमरे में चली गयीं और लोग अपने कमरों में आ गये। डिनर में ही डचेज आफ हेसी (Duches of Hessee) ने सरकार से कहा कि अगर आप जर्मनी आवें तो मुझे पहले तार दे दें, मैं आप को जर्मन एम्परर (सम्राट्) से मिलाऊँगी। अगर आप पहली या दूसरी सितम्बर को आवेंगे तो पचास हजार फौज इकट्ठी देखने का मौका मिलेगा। उस समय बनावटी लड़ाई भी लड़ी जायगी। आप देख कर खुश होंगे। इस पर सरकार ने जर्मनी आने और तार द्वारा पहुँचने की सूचना देने का वादा किया। १॥ बजे अपने कमरे में पहुँच कर सरकार सोये।

---

१ संवत् १९५३ में अकाल था।

ता० १३ जुलाई

सरकार के सोकर उठने से पहले ही क्वीन के यहाँ से हुक्म आया कि, आप आज महल वगैरह देख कर लंच के बाद जायँ। तदनुसार ही किया गया। महलात के अलावा खास हुक्म की तामील में क्वीन के हिन्दुस्थानी सेक्रेटरी मुंशी अब्दुल करीम साहब, सी० आई० ई० ने क्वीन के खाविन्द प्रिंस कन्सर्ट (Prince Consort) की कब्र (Mosuleum) भी दिखलायी। इस कब्र की बगल में ही क्वीन ने अपने लिये आधी जगह रख छोड़ी है—ऐसा लोगों ने कहा।

ता० १४ जुलाई

इण्डिया आफिस वालों ने सरकार की मेहमानदारी पर कर्नल ट्रेवर की जगह कर्नल वी० ई० ला (Col. V. E. Law) को मुकर्रर कर दिया। इसलिये आज वे हमारे पास होटल में आ गये। उनके साथ सरकार ने महाराजकुमार सहित जाकर नौकाओं की दौड़ मुलाहिजे की। रात को ८ बजे वापिस लौटे।

ता० १५ जुलाई

१२ बजे सरकार ब्रूक फील्ड स्टड (Brooke Field Stud) में पधारे। वहां घोड़े नीलाम हो रहे थे। कुछ घोड़े खरीदे। शाम को ८ बजे अर्ल आफ नार्थब्रुक (Earl of Northbrook) के यहां निमंत्रण में गये और वहां से बकिंघम पैलेस के 'स्टेट-बाल' (State Ball) में।

ता० १६ जुलाई

१० बजे एक मिस्टर एजर टेलर (Mr. Edger Taylor) जो मैसूर की सोने की खान के ठेकेदार हैं, खेतड़ी की खानों के बारे में बातचीत करने के लिये आये। उनसे बातें हुईं। सरकार ने ३ बजे इण्डिया आफिस पधार कर सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया से दरबारी मुलाकात की। सीढ़ियों तक सेक्रेटरी साहब लेने और वापिसी पहुँचाने आये।

ता० १९ जुलाई

सरकार ने बैंक आफ इङ्गलेण्ड और टावर आफ लदन का मुलाहिजा किया। ३॥ बजे वापिस लौटे। महाराजकुमार शाहपुरा की तरफ से आज एक डिनर दिया गया था जिसमें बहुत से अंग्रेज (मेम और साहब लोग) निमंत्रित होकर आये थे। डिनर के बाद सर सेमर फिजर्ल्ड ने खेतड़ी पार्टी के रिसालदार ठा० विजयसिंहजी को सब की मौजूदगी में चांदी का एक जुबिली मेडल देने की इनायत की।

ता० २० जुलाई

महाराज कर्नल सर प्रतापसिंहजी मिलने पधारे। मेजर टर्नर और डा० हेंडली भी आये।

ता० २१ जुलाई

ग्रीनविच और वुलविच (Greenwich and Woolwich) का मुलाहिज़ा किया। शाम को ६॥ बजे डचेज आफ बुकलेंच (Duches of Buclench) के 'एट-होम' में शरीक हुए। वहां लार्ड जार्ज हेमिल्टन सेक्रेटरी आफ स्टेट से बातें हुईं। खास करके रिवाड़ी फुलेरा लाइन निकालने के लिये। सरकार ने कहा कि, यह लाइन निकलने से मेरी खेतड़ी को बड़ा फायदा पहुँचेगा।

ता० २३ जुलाई

सरकार, ठाकुर साहब मोरवी से मिलने गये और बदले में मिलने के लिये ठाकुर साहब आये। जनरल बेनन (General Beynon) ने, जो स्वर्गीय महाराजाधिराज सर सवाई रामसिंहजी साहब जयपुर के जमाने में रेजिडेण्ट रह चुके हैं, आकर बड़ी देर तक बातें कीं।

ता० २६-२७ जुलाई

सर रिचार्ड टेम्पल के यहाँ से सरकार वापिस आये और लार्ड रिपन से मिलने पधारे। दूसरे दिन लार्ड मिडलटन के निमन्त्रण पर उनके यहाँ रेल द्वारा गये। रात को उन्हीं के यहाँ ठहरे।

ता० २८ जुलाई

एक घोड़ा दो लाख रुपये की कीमत का मु० वेलबेक (Welback) पधार के मुलाहिजे फरमाया। इस घोड़े से एक बार घोड़ी भराने के ८०००) रु० लगते हैं।

ता० ३० जुलाई

आज महाराजा कर्नल सर प्रतापसिंहजी साहब की जोधपुर पार्टी हिन्दुस्थान को जानेवाली थी। इसलिये सरकार एलेक्जेण्ड्रिया होटल जाकर उनसे मिले और विक्टोरिया स्टेशन तक साथ पधारे। पार्टी रेल में सवार हुई। मि० एच० एम० स्टेनली (Mr. H. M. Stanley) पार्लियामेण्ट के एक मेम्बर से भी आज मिलना हुआ, जिसने बीस पचीस वर्ष पहले अफ्रिका में बड़ी मुसीबतें उठायीं थीं। वहां तीन-तीन फुट का और ज्यादे से ज्यादा चार फुट का आदमी बतलाते हैं।

ता० १ अगस्त

आज तीज के त्यौहार का दिन है। थाल वगैरह का खास तौर पर इन्तजाम किया गया और खेतड़ी तथा शाहपुरा पार्टी ने खूब जलसा मनाया। होटल के एक अंग्रेज लड़के को बुला कर नचाया। उसने गाया भी।

ता० ५ अगस्त

सरकार अपनी पार्टी के साथ कल वाटरलू रेलवे स्टेशन से रवाना होकर रात को पोर्टस्माउथ (Portsmouth) पहुँच गये थे। होटल में ठहर के आराम किया और सबेरे जहाज और जहाजों का कारखाना मुलाहिजे किया। यहाँ पहले इण्डिया आफिस की ओर से सूचना पहुँच गयी थी इस लिये एक कैप्टेन दिखलाने में साथ रहा। शाम को ६ बजे वापिस लौटे।

ता० ६ अगस्त

क्वीन के हिन्दुस्थानी सेक्रेटरी ने सरकार और महाराजकुमार की तस्वीरें मंगवायी क्वीन के हुक्म से। ये तस्वीरें क्वीन के अलबम (Album) में रक्खी जायँगी।

ता० ११ अगस्त

आज सरकार, महाराजकुमार सहित गणेश और एक कोरियर[1] को लेकर स्काटलेंड आदि के दौरे के लिये रवाना हुए।

---

१ कोरियर—जर्मन, फ्रेंच और इटेलियन आदि भाषाएँ जाननेवाले को कहा जाता है। राजाजी बहादुर ने अपने दौरे के लिये एक 'कोरियर' नौकर रख लिया था।

ता० १३ अगस्त

सरकार दौरे में हैं। आज विजयसिंहजी और शाहपुरा-वाले ला० सूरजनारायणजी, सुजानसिंहजी तथा बाबू ज्वाला-प्रसादजी—ये चारों बम्बई के लिये रवाना हुए। लंदन में सरकार की खिदमत के लिये केवल रामलाल मास्टर और चुन्नी-लाल—दो रह गये।

ता० २६ अगस्त

आज सरकार की सवारी महाराजकुमार शाहपुरा सहित स्काटलैंड की तरफ के अपने दौरे से वापिस लंदन पहुँची।

ता० १ सितम्बर

दिन के १ बजे सरकार ने इण्डिया आफिस पधार कर सर एलफ्रेड लायल (Sir Alfred Lyall) से भेंट की।

ता० २ और ३ सितम्बर

ता० २ की रात को ८ बजे अपने कोरियर को साथ लेकर सरकार और महाराजकुमार साहब, रामलाल मास्टर और गणेश सहित विक्टोरिया स्टेशन से जर्मनी के मुकाम फ्राइडबर्ग (Friedburg) के लिये रवाना हुए, जहां कि, ड्यूक आफ् हेसी (H. R. H. Grand Duke of Hessee) ने आपको

बुलाया था। ११ बजे क्वीनबर्ग (Queenborough) स्टेशन गाड़ी पहुँची। वहां से जहाज में बैठे और ता० ३ को सबेरे ४॥ बजे फ्लुसिंग (Flusing) पहुँचे। पांच बजे फिर रेल में सवार हुए और हालेंड इलाके से गुजरते हुए १२॥ बजे दोपहर को कालोगनी (Cologne) पहुँचे। वहाँ गाड़ी बदली। दो जगह गाड़ी और बदलनी पड़ी। हालेंड और जर्मनी की सरहद पर कष्टम (राहदारी) वालों ने सामान की देखभाल की। गाड़ी आधा घण्टा लेट हो गयी। इससे आगे का कनेक्सन मिस हो गया। मैंज (Mainz) स्टेशन में १ घंटा ठहरना पड़ा। तार से ड्यूक आफ हैसी को ७ बजे शाम को पहुँचने की सूचना दी। ग्रेंड ड्यूक फ्राइडबर्ग स्टेशन पर पेशवाई में आये और हाथ मिलाया। गाड़ी सजी हुई तैयार थी। सवारी विराजी। रास्ते में दोनों ओर दर्शकों की भीड़ खुशी के नारे (हुर्रा हुर्रा) लगाती रही। गाड़ी के राज-महल में पहुँचते ही गार्ड ने सलामी ली।

ता० ४ सितम्बर

सबेरे ८॥ बजे सरकार ड्यूक और डचेज के साथ पांच घोड़े की गाड़ी में सवार हुए। ड्यूक और डचेज के ए-डी० सी० दो लेडीज् और ३ जनरल भी बैठे। बेड हमबर्ग (Bed Homburg) जो यहां से १० मील है, पहुँच कर सब घोड़ों पर सवार हुए। प्रेड ग्राउण्ड में १० बजे पहुँचे। वहाँ ४२००० फौज

जमा थी। आगे की लाइन में जर्मनी के इम्परर और इटली के किंग अपने अपने घोड़े पर सवार थे। दूसरी लाइन में बड़े बड़े ड्यूक, प्रिंसेज और किंग्स वगैरह थे। तीसरी लाइन में भी इसी तरह बड़े बड़े आदमी थे। सब घोड़ों पर सवार थे। अब मार्च शुरू हुआ। जर्मनी के इम्परर (विलियम कैसर) भी एक रेजिमेंट के अफसर की हैसियत से उपस्थित थे। जब उनकी रेजिमेंट निकली तो लाइन से निकल कर रेजिमेंट के शामिल हो उन्होंने सब को सलामी दी। फौजी हिस्से से सब को सलाम करना पड़ा अगर्चे—वे बहुत बड़े दर्जे के हैं। इसी तरह इटली के बादशाह ने जो जर्मन-पलटन के एक अफसर हैं और हर रायल हाइनेसूस ग्रेंड डचेज आफ हैसी ने किया। यह दृश्य देख कर १ बजे सरकार वापिस बेड हमबर्ग आये। होटल मेट्रोपोली में ठहरे। भोजन किया। यहीं हिज रायल हाइनेस प्रिंस एलबर्ट से, जो हर मेजेष्टी क्वीन इम्प्रेस (विक्टोरिया) के दौहित्र हैं, मुलाकात हुई।

ता० ५ सितम्बर

जर्मनी के इम्परर (सम्राट्) का निमन्त्रण मिला।

ता० ६ सितम्बर

फ्राइडबर्ग से बेड हमबर्ग आकर उसी होटल मैट्रोपोली में ठहरे और ड्यूक और डचेज के साथ नियत जगह पहुँचे।

वहां सरकार (राजाजी बहादुर) को जर्मन इम्परर और इम्प्रेस (सम्राट और सम्राज्ञी) के सामने ड्यूक आफ हैसी ने पेश किया। अलग शेक हैंड (हाथ मिलाना) हुआ, खूब मित्रतापूर्ण बातें हुईं। इटली की रानी (Queen of Italy) से भी मिलना हुआ[१]। रात को ११॥ बजे फ्राइडबर्ग वापिस लौटे। ड्यूक और डचेज ने आपस में तस्वीरें दीं और लीं। रात को ही इजाजत ली।

ता० ७ सितम्बर

११—१० बजे रेल में सवार हुए। ११॥ बजे फ्रेंकफर्ट (Frankfurt) पहुँचे। यह अच्छा स्टेशन है। दो जगह गाड़ी बदल कर ब्रूसल्स (Brussels) रात को ६॥ बजे पहुँचे। यहाँ पहले से ठहरने का इन्तजाम किया गया था। बड़ा सुन्दर शहर है।

---

१ श्रीमान् राजाधिराज श्री उम्मेदसिंहजी साहब शाहपुराधीश के (जो साथ थे) नोट में लिखा है—"प्रिंस बिस्मार्क से भी भेंट हुई थी और प्रसिद्ध जर्मन संस्कृतज्ञ विद्वान मैक्समूलर से उनके स्थान पर जाकर मिले थे। मैक्समूलर साहब से संस्कृत-साहित्य और उसकी शिक्षा के विषय में राजा साहब ने बातें की थीं। पण्डित मैक्समूलर ने अपना पुस्तकालय दिखलाने के साथ अपनी अभ्यास शैली भी बतलायी थी और याद के लिये अपनी तस्वीर दी थी।"

ता० ८ सितम्बर

बृटिश मिनिष्टर के यहाँ गये। वह छुट्टी में था। उसके इञ्चार्ज से मिलना हुआ। इसके बाद प्रदर्शिनी देखी। बेल-जियम के राजा (His Majesty King of Belgium) के यहाँ से कल के १२॥ बजे का निमन्त्रण-कार्ड आया।

ता० १० सितम्बर

सरकार बेलजियम के राजा के यहां पधारे। मि० जी० ई० वेल्बी (Mr. G. E. Welby, in charge of affairs of British legation) लिवा लेने को आये थे। महल में पहुँचते ही सलामी हुई। मि० वेल्बी द्वारा मिनिष्टरों से परिचय कराया जाने के बाद बेलजियम के राजा से भेंट हुई। श्याम के राजा (H. M. King of Siam) से खुद बेलजियम के राजा ने सरकार का परिचय कराया और मिलाया। बेलजियम के किंग की किताब में सरकार ने अपना नाम लिखा।

ता० ११ सितम्बर

६ बजे सरकार अपनी पार्टी सहित ब्रुसेल्स स्टेशन से रवाना होकर आष्टेण्ड (Ostend) पहुँचे। वहाँ से बोट में बैठे। ३ बजे शाम को डॅावर (Dover) से फिर रेल में सवार होकर शाम को लंदन—विक्टोरिया स्टेशन वापिस

पहुँच गये। स्टेशन पर कर्नल ला मिले और विक्टोरिया होटल में सवारी दाखिल हुई।

ता० १६ सितम्बर

टावर आफ लंदन देखा।

ता० २० सितम्बर

कल ता० १६ रविवार को रामलाल मास्टर, गणेश और एक कोरियर के साथ सरकार दिन के ११ बजे विक्टोरिया स्टेशन लंदन से रेल में सवार होकर शाम को ७। बजे ब्रुसेल्स पहुँच गये थे। मेट्रोपल होटल में ठहरे और आज दिन के १ बजे रेल से रवाना होकर शाम को ६ बजे पेरिस पहुँचे। होटल विंडसर में ठहरे।

ता० २१ सितम्बर

बृटिश राजदूत से मिले। पेरिस के कितने ही देखने लायक स्थान देखे। एफेल टावर (Effiel Tower) के ऊपर चढ़े। यह टावर लोहे का बना हुआ जमीन से ३०० मीटर ऊँचा है। करीब ५० मील तक के दृश्य इसके ऊपर से दिखलाई देते हैं।

ता० २२ सितम्बर

पेरिस में रहनेवाले युनाइटेड स्टेट्स (अमेरिका) के कौंसल जनरल से मुलाकात हुई। बृटिश-राजदूत मिलने को आया।

ता० २५ सितम्बर

ता० २१ से २४ तक पेरिस में रहने के बाद आज सबेरे रवाना हुए और रात को ८-२० बजे जेनेवा (Geneva) पहुँचे। बीन रेवेज (Bean Revage) होटल में डेरा किया।

ता० २७ सितम्बर

जेनेवा से सबेरे ७ बजे चल कर रेल और स्टीमर से १॥ बजे दिन को इण्टरलेकन (Interlaken) पहुँचे। यहाँ रेल द्वारा बहुत ऊँचे पहाड़ पर पहुँच कर जल प्रपात (Water Fall) का दृश्य देखा। ६६० फीट ऊँचे से पानी गिरता है।

ता० २८ सितम्बर से ३० तक

सबेरे रेल से ग्रिंडलवाल (Grindelwal) स्टेशन पहुँच कर सरकार घोड़े पर सवार हो बर्फ के पहाड़ के पास पहुँचे और बर्फ की एक गुफा में घुसे। २०० गज करीब बर्फ के ऊपर चले। ४॥ बजे शाम को इण्टरलेकन वापिस पहुँच कर ५ बजे वहाँ से रवाना हुए। रात भर चले और ता० २६ को दिन रात चलते रहे। ता० ३० को सबेरे ४॥ बजे वेनिस पहुँचे। यहाँ का तो दृश्य ही निराला है। शहर बड़ा अच्छा है। लेकिन बाजार में सड़कों और गली-कूचों की जगह पानी की नहर जारी है। गाड़ी और घोड़ों का काम बोट (Boat) देते

हैं। यहां तक कि, सामनेवाले मकान या पड़ोस के घर में जाना पड़े तो भी बोट बिना नहीं जा सकते। काँच का कार-खाना—ग्लास वर्क्स यहाँ का दुनियाँ भर में एक ही है, ऐसा कहा जाता है। कल यहाँ और परसों रोम का मुकाम है। वहाँ से बम्बई के लिये रवानगी।

\+ \+ \+ \+

जर्मनी की यात्रा से लौटने के बाद महाराजकुमार (शाह-पुरा) रिचवंड में ही रहे और सरकार ने स्विटजरलेंड आदि की सैर की और सीधे ही आकर जहाज में सवार हो गये। महा-राजकुमार भी पेरिस होते हुए खबर पाकर उसी रोज आ शामिल हुए।

हां—इंगलेंड को जाते समय बृटेनिया जहाज जब अदन (Port Aden) पहुँचा तब शेखावाटी की तरफ के रहनेवाले लोग सूचना पाकर जहाज पर आये। बड़ा सम्मान प्रकट किया और यह उपालंभ दिया कि, पहले सूचना क्यों नहीं दी ? उनको उस समय कहा गया था कि, वापिसी के समय सूचना दे दी जायगी, तदनुसार इत्तिला दे दी गयी थी। जिस समय हमारा जहाज कालेडोनिया पहुँचा उन लोगों की दुगुनी चौगुनी भीड़ मौजूद मिली। ठहरने का बहुत आग्रह किया। लेकिन बहुत दिन हो गये थे और बंबई शीघ्र पहुँचने की उत्सुकता थी। इस लिये उनके प्रेम के लिये सबको धन्यवाद देकर वहां से विदा हुए।

भौतिक ज्ञान-लब्ध सामग्री के विलास-स्थल योरप में पहुँच जाने पर भी राजा साहब अपने भारतीय गौरव के सूचक राजपूती वेश और भाषा को नहीं भूले। खेतड़ी के शासन-विवरण के साथ ही वे अपने राज-परिवार और प्यारी प्रजा के समाचार जानने को सदा समुत्सुक रहते थे। आपने अपनी रवानगी के समय नियमित रूप से स्थिति सूचक पत्र और आवश्यक कामों में आज्ञा चाहने के कागजात भेजते रहने का हुक्म दे दिया था। तदनुसार प्रति सप्ताह आपके पास डाक पहुँचती और बाकायदा पेशी होकर आपका सेक्रेटरी उसका जवाब रवाना करता। आवश्यकतानुसार तार भी आते जाते रहते थे।

लन्दन से खास राजस्थानी (शेखावाटी की बोली) में लिखा हुआ राजा साहब का एक पत्र हम यहां इसलिये उद्धृत करना चाहते हैं कि, जिससे उनके हृदय के सद्भावों का पाठक पाठिकाओं को किञ्चित् आभास मिले। समुद्रों पार बैठ कर वे अपनी प्रजा की सुख-समृद्धि की कारणीभूत सुवृष्टि और सुसंवत् की ही कामना करते थे। भरत के मिलने पर भगवान् श्री रामचंद्र ने कृषि और किसानों की दशा पूछी थी। राजाजी बहादुर के पत्र में भी उसी भाव की झलक है। यह पत्र उन्होंने अपनी कौंसिल के सीनियर मेंबर पण्डित गोपीनाथजी को लिखा था।

LONDON,
Northumberland Avenue,
Victoria Hotel.

पण्डितजी श्री गोपीनाथजी सूं म्हारी नमस्कार बंचसी अपरंचि म्हारै याद पड़े है के अदन "Port Aden" से मैं आपने लिख्यो हो पण अब की डाक में लक्ष्मीनारायण की अरज सूँ मालूम पड़ है के स्यायद म्हारो लिख्यो नहीं पूंच्यो जैसूँ फेर लिखूँ हूँ—म्हे सब खुशी हां, अठे सब शाहजादा सूँ लेकर छोटा मोटा सब लोग म्हां की सब तरां सूं खातर करैं हैं—यो मुलक वा अठे का लोग जसा कुछ हैं यो किताबां सूँ आपां लोग पढ़ कर असली हाल कै १००० वैं हिस्से ने भी नहीं जाण सकां—रामलाल यकीन है, कुछ हाल मुफस्सिल वैं की समझ मुवाफिक लिखतो होसी। आपणे जद सारै चोखी तरां मेह हो ज्यावै जैं दिन मनै तार दे दीज्यो फकत २ लफज काफी हैं Enough rain और दसरावै कनै म्हारो पाछो देसनै आण को विचार है क्यूं के चोमांसै में समुद्र ठीक नहीं रहै खास करके Arabian Sea—जै में लगातार ४ या ५ दिन चालणू पड़ै है। भादवै में भी जद साख सब तरां ठीक आगली साल की पूरी उम्मेद पड़बा लाग ज्यावै जद फेर १ तार Crops Excellent or good बीच में दे दीज्यो और उम्मेद है सब काम ठीक चालतो

होसी और सब लोग खुशी होसी और ईश्वर सम्वत् आछ्यो करसी के जैसूँ सबने फायदो पूँचै।

ता० १८ जून सन् १८६७

जिन दिनों राजाजी बहादुर विलायत के प्रवास में थे, उन्हीं दिनों खेतड़ी के परगना कोटपूतली के गांव नारहड़ा और बणेटी के कुछ उद्दण्ड और अज्ञान राजपूतों ने बगावत करके बड़ा बखेड़ा मचा दिया था। बागियों का करीब ५०० आदमियों का एक गिरोह बन गया था, जिसके मुखिया १२ व्यक्ति थे। उन्होंने हथियारों से तैयार होकर राज का खुला मुकाबला किया था। मार-धाड़ मचाकर राज की सत्ता बिलकुल उठा दी थी। बड़ी अशान्ति और आतङ्क फैल गया था। उस समय कोट के नाजिम नवाब महम्मद ईसेखांजी साहब थे। तार द्वारा जयपुर में खबर पाकर मुन्शी जगमोहनलालजी ने रेजिडेंट साहब को इस स्थिति की सूचना दी, जिस पर उन्होंने बागियों को काबू में करने का हुक्म दिया। बागियों के मुखिया पकड़े जाकर कैद में डाल दिये गये किन्तु अशान्ति की अग्नि शान्त होने की अपेक्षा अधिक भड़क उठी। अतएव अन्त में विवश होकर रेजिडेंट साहब की अनुमति से खेतड़ी-सेना ने जो कोटपूतली के नाजिम महम्मद ईसेखांजी[1] की अधीनता में

---

१ महम्मद ईसेखांजी का जन्म सन् १८५० ई० में हुआ था। झुंझुनू

मौके पर पहुँची हुई थी, विवश होकर ता० १३ अगस्त सन् १८९७ ई० को दमन नीति का प्रयोग किया—गोली चलायी जिसके परिणाम में दोनों ओर के कई लोग मारे गये और कई घायल हुए।

इस शोचनीय काण्ड की खबर राजा साहब के पास उस समय पहुँची, जिस समय कि वे जर्मनी में थे। उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने उसी समय पं० गोपीनाथजी के नाम आज्ञा भेज कर दोनों पक्ष के घायलों की सँभाल और इलाज कराने के साथ मृतकों के निस्सहाय परिवार वालों की सहायता करने का विशेष रूप से ध्यान दिलाया।

इस सम्बन्ध में जर्मनी से लिखा हुआ, राजा साहब का एक पत्र इस प्रकार है:—

के कायमखानी नवाबी खानदान में से थे। उनके पूर्व पुरुष झुंझुनू छूट जाने के बाद रेवाड़ी के समीपवर्ती 'धामलावास' में आबाद हो गये थे। ईसेखांजी राजा अजीतसिंहजी बहादुर के शासन-भार ग्रहण करने के बाद ही खेतड़ी में नौकर हुए। विभिन्न महकमों में कार्य किया। बड़े हौसिले के आदमी थे। प्रायः १२ वर्ष कोट के नाजिम रहे। संवत् १९४८ में परगना कोटपूतली में राजा साहब के नाम पर अजीतपुरा गांव आबाद किया वहां की विस्वेदारी राजाजी बहादुर से प्राप्त की। सन् १९०५ ई० में खेतड़ी की नौकरी से अवकाश ग्रहण किया।

9th September, 1897

Dear Panditji Sahib,

I write this to congratulate you on the success yon have obtained in subduing Narehra and Baneti as well.

I wish you had given me a detailed account as to all the proceedings of the battle on the 16th. August at Narehra, so that I could learn all about what my brave men had done there that day. I wanted to see your remarks on the different persons who fortunately had opportunity to prove their loyalty to the state by manifesting their active services.

Please express my hearty appreciations to one and all from an ordinary soldier to my brave Thakur Rambuxji for the admirable services they have rendered at Narehra, not withstanding my absence to such a long way off from my country. Tell them that I always felt proud of my brave men but this time they have more strengthened the idea by this verification. They ought to remember that Shekhawati is always

famous for bravery throughout the Govt. of India, but I should like them called bravest of the already braves of our country.

I so much wish that I could remark suitably for every one who took a distinguished part in the affair, had I known more.

"I draw your special attention for taking care of the wounded on either sides. For I am sorry to feel that both the parties are alike dear to me. I feel so grieved that a handful of foolish subjects of my those villages have created all this, otherwise I should have seen them unanimously acting for the good of our state" I hope you will convey my appreciations to Nazim Md. Ishe Khanji.

I think Thakur Harnathsinghji, Jorwarsingh and Luxminarain have also been sucessful in lending a helping hand in any way in the affair, I mean in consultation as to the steps adopted in subduing the refractory people by pacific means. So you will suitably say them on

my part what they deserve. I wonder whether the officers of our troops as Col. Raghubir Singh, Khait Singh and others may be expecting a word from me. But I am unable to say anything, I am afraid till I have heard something from you.

You might have heard through other sources about my present short trip in Germany, in which I have had the honour of remaining a guest of His Royal Highness the Grand Duke of Hesse for four days, besides having the great honour of visiting their Imperial Majesties the Emperor and Empress of Germany who had introduced me Her Majesty the Queen of Italy who too was there with H. Majesty the King and several other Royalties, the different Kings and G. Dukes & Princes of Germany.

We might have left here today, but we have been invited tomorrow 12-30 at the palace by His Majesty the King here (of Belgium). The King of Siam is to reach here this afternoon, so

he too will be present tomorrow at the palace. Hoping you are well.

Yours Sincerely
S/d. **Ajit Singh**
Raja of Khetri

(On the Cover)

Pandit Gopinath
Chief Member of Council
KHETRI, (Rajputana)

From:-
Raja of Khetri

इस पत्र का भाषान्तर यों है :—

ता० ६ सितम्बर, सन् १८६७

प्रिय पण्डितजी साहिब,

मैं यह पत्र आपको उस सफलता पर बधाई देने के लिये लिख रहा हूँ, जो आपने नारहड़ा और बणेटी को वश में करने में प्राप्त की है।

ता० १६ अगस्त की नारहड़ा की लड़ाई में जो कुछ हुआ, उसका विस्तारयुक्त विवरण आप मुझे लिखते तो बहुत अच्छा होता, जिससे कि, मैं जान सकता कि वहाँ मेरे सब बहादुर लोगों ने उस दिन क्या किया ? जिन भिन्न-भिन्न पुरुषों को

अपने कार्य से राज्य के प्रति अपनी राजभक्ति प्रदर्शित करने का सौभाग्य मिला, उनके सम्बन्ध में मैं आपकी सम्मति देखना चाहता था।

अपने देश से इतनी दूर—मेरे अनुपस्थित रहने पर भी उन्होंने जो प्रशंसनीय सेवा की है, उसके लिये सब को—मामूली सिपाही से लेकर मेरे बहादुर रामबक्सजी तक हर एक को कृपाकर मेरा हार्दिक परितोष दीजिये। उन्हें कहियेगा कि मुझे अपने बहादुर लोगों का सदा अभिमान तो था ही पर इस समय उन्होंने प्रत्यक्ष प्रमाण देकर उस भाव को और भी दृढ़ कर दिया है।

उन्हें याद रखना चाहिये कि, भारत सरकार में शेखावाटी सदा अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध रहती आयी है किन्तु हमारे देश के जो अभी तक वीर कहलाते हैं उनमें भी मैं अपने लोगों का वीरवर कहलाया जाना चाहता हूँ।

यदि मैं अधिक जानता तो मेरी कितनी इच्छा थी कि, इस काम में जिस जिसने प्रशंसा योग्य भाग लिया है उस उसके लिये उचित सम्मति लिखता। दोनों पक्ष के घायलों की संभाल करने की ओर मैं अपका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करता हूँ। मुझे यह जान कर दुःख होता है कि दोनों ही पक्ष मुझे समान रूप से प्रिय हैं। मुझे दुःख है कि इन गाँवों के मुट्ठी भर बे-समझ लोगों ने इतना बखेड़ा कर दिया, नहीं तो मैं उन्हें अपने राज्य की भलाई के लिये मिलजुल कर काम करते देखना

चाहता। मैं आशा करता हूँ, कि नाजिम मुहम्मद ईसेखांजी को आप मेरे सुप्रसाद कह देंगे।

मैं समझता हूँ कि, ठाकुर हरनाथसिंहजी, जोरावरसिंह और लक्ष्मीनारायण ने भी इस मामले में किसी न किसी तरह सहायता दी होगी—इस मशविरे में कि, शान्ति के उपायों से इन बिगड़ैल लोगों को किस तरह दबाना चाहिये। इसलिये आप उन्हें मेरी ओर से यथायोग्य कह दीजियेगा। हमारी सेना के अफसर कर्नल रघुवीरसिंह, खेतसिंह प्रभृति भी मेरी ओर से कुछ (प्रशंसा के) शब्द चाहते होंगे पर जब तक मैं आपका पत्र न पा लूँ तब तक क्या करूँ, कुछ भी नहीं कह सकता।

आपने औरों के द्वारा मेरी जर्मनी की यात्रा के सम्बन्ध में सुना होगा। इस (यात्रा) में मैं हिज रायल हाईनेस ग्रैंड ड्यूक आफ हैसी का चार दिन के लिये मेहमान रहने का मान पा चुका हूँ। जर्मनी के सम्राट् और सम्राज्ञी से मिलने का बड़ा गौरव भी मुझे मिला। उन्होंने मुझे इटली की महारानी से मिलाया जो इटली के महाराज के साथ उनके यहां ठहरी हुई थी।

और भी बहुत से राजवंशीय जर्मनी के कई प्रान्तों के राजा, ग्रैंड ड्यूक और राजपुत्रों से मैं मिलाया गया।

हम यहां से आज चल पड़ते परन्तु कल १२॥ बजे यहां के (बेलजियम के) महाराजा ने हमें महल में बुलाया है। श्याम

देश के महाराजा भी आज तीसरे पहर यहां पहुँच जायँगे और वे भी कल महल में उपस्थित होंगे।

मैं आशा करता हूँ कि आप प्रसन्न होंगे।

आपका

अजीतसिंह

(खेतड़ी के राजा)

(लिफाफे पर)

पण्डित गोपीनाथ

कौंसिल के चीफ मेंबर,

खेतड़ी (राजपूताना)

कोटपूतली का परगना बृटिश गवर्नमेंट से खेतड़ी को जागीर में मिला हुआ है। इसलिये विरोधी पक्ष ने राजपूताना एजेंसी में खेतड़ी के कई अफसरों के विरुद्ध नारहड़ा और बणेटी के झगड़े की जांच कराने के लिये पुकार की। इस पर राजपूताना के एजेंट टू दी गवर्नर-जनरल ने ठगी-डकैती डिपार्टमेंट के मि० एच० क्लाक्स्टन (Mr. H. Cloxton) को नियुक्त किया। सूचना पाकर इस सम्बन्ध में भी राजा साहब ने यही आज्ञा अपने प्रधान कार्यकर्त्ता पं० गोपीनाथजी के नाम भेजी थी कि निष्पक्ष जांच में पूरी सहायता पहुँचानी चाहिये। उनकी यह इच्छा

नहीं रही कि, निर्दोषी को दोषी और दोषी को निर्दोष बनाया जाय। राजा साहब की आज्ञा के अनुसार मि० क्लाक्स्टन के लिये सब तरह की सुविधा कर दी गयी थी। जांच खेतड़ी के कई अफसरों के सम्बन्ध में होने पर भी किसी प्रकार से कोई दबाव नहीं डाला गया। जांच समाप्त करने के बाद अपने पत्र में मि० क्लाक्स्टन ने यह स्वयं स्वीकार किया है।

मि० क्लाक्स्टन लिखते हैं:—

[.........I can say with confidence that no single attempt has been made to influence either the conduct of the enquiry much as it concerned several officers of the state nor any opinion I may have subsequently formed."........अर्थात् जाँच राज्य के कई अफसरों के सम्बन्ध में थी, तो भी मैं कह सकता हूँ कि, जांच पर किसी प्रकार का प्रभाव डालने का एक भी यत्न नहीं किया गया और मैंने पीछे से जो कुछ विचार स्थिर किया उस पर भी किसी प्रकार का दबाव नहीं डाला गया।

मि० क्लाक्स्टन ने अन्त में यह भी लिखा था कि, "I trust that the result of the trial of those concerned will secure permanent peace and submission to their chief in the villages connected my

enquiry."[1]—अर्थात् इस सम्बन्ध में जो लोग उलझे हुए हैं, उनके मुकद्दमे का परिणाम मेरी जांच जिन गांवों के बारे में थी, उनमें स्थायी शान्ति और अपने राजा के प्रति अधीनता का भाव उत्पन्न करेगा, मुझे ऐसी आशा है।

ऐसा ही हुआ, फिर कभी कोई विरुद्ध भावना पैदा नहीं हुई और बिलायत से लौटने के बाद जब राजा साहब ने स्वयं स्थिति का निरीक्षण किया तब वहां वालों को उन्होंने अपने संस्थान के दूसरे गांवों की तरह ही अनुगत पाया। अपने सदयता पूर्ण बचनों से श्रीमान ने परितृप्त करके उन्हें और भी संतुष्ट कर दिया।

अपनी विलायत-यात्रा निर्विघ्न और सानन्द समाप्त कर प्रायः ६ महीने के बाद ता० २२ अक्टूबर सन् १८९७ ई०, तद्-नुसार कार्तिक बदि ११ शुक्रवार संवत् १९५३ वि० को श्री० राजाजी बहादुर ने अपनी पार्टी सहित 'कालोडोनिया' नामक जहाज द्वारा पहुँच कर भारत के द्वार रूप बम्बई बन्दर पर पदार्पण किया। आपके स्वागत के लिये पालिताना के राज-कुमार श्री० सावन्तसिंहजी, राजकुमार श्री० सरदारसिंहजी (शाहपुरा), राजश्री ठाकुर साहबान जसवन्तसिंहजी, शिव-

---

1. From a letter of Mr. H. Cloxton to Pandit Gopinath, Senior Member, Khetri Council Kotputly,—dated 26th. September 1897.

सिंहजी, चन्द्रसिंहजी (अलसीसर) और खेतड़ी के राज कर्म-चारियों में से श्री० ठा० रामबख्शसिंहजी, ठा० हरनाथसिंहजी, ठा० जोरावरसिंहजी, मुन्शी जगमोहनलालजी, कर्नल रघुवीर-सिंहजी, पं० लक्ष्मीनारायणजी, चौधरी नारायणदासजी, मोदी गङ्गासहायजी, जोशी देवीसहायजी, श्रीगोविंदजी, वसन्तीलालजी चौधरी तथा बसन्तीलाल साहू आदि एवं सीकर की ओर से श्री० ठा० श्यामसिंहजी और श्री कँवर नारायणसिंहजी चांपा-वत की तरफ से श्री० मोहनलालजी इत्यादि के अतिरिक्त खेतड़ी, सीकर और पालिताना की प्रजा के बहु संख्यक प्रतिष्ठित सेठ साहूकार उपस्थित थे।

एक शानदार जुलूस के साथ राजा साहब की सवारी बालकेश्वर पधारी। वहीं निवास का प्रबन्ध किया गया था। बम्बई में राजा साहब के स्वागतार्थ एक स्वागतकारिणी समिति बनायी गयी थी, जिसके सेक्रेटरी बम्बई हाईकोर्ट के एडवोकेट मि० एस० एस० सेतवूर, बी० ए०, एल०-एल० बी० थे।

दूसरे दिन (ता० २३ अक्टूबर को) गिरगांव बैक रोड[1] पर मि० त्रिभुवनदास मंगलदास नाथू भाई के विशाल भवन में राजाजी बहादुर को अभिनन्दन-पत्र प्रदान करने के लिये एक असाधारण सार्वजनिक सभा हुई। राजस्थानियों और

---

१ आजकल गिरगांव बैक रोड का नाम विट्ठल भाई पटेल रोड हो गया है।

बम्बई के अन्य प्रतिष्ठित नागरिकों की उपस्थिति से सभा-स्थान भर गया था। इस स्वागत-सभा के सभापति का आसन बंबई हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश जष्टिस महादेव गोविंद रानाड़े, सी० आई० ई० महोदय ने ग्रहण किया था। अभिनन्दन-पत्र मि० त्रिभुवनदास मङ्गलदास ने पढ़ कर सुनाया। उसमें बम्बई के हिन्दू नागरिकों की ओर से अपने प्रेम एवं प्रतिष्ठा के चिह्न स्वरूप अभिनन्दन-पत्र प्रदान करने की अनुमति देने के लिये धन्यवाद देने के साथ ही कहा गया था कि, श्रीमान् क्षत्रिय वंश के एक योग्य प्रतिनिधि हैं। आपने मानसिक दृढ़ता का अवलम्बन कर जो इङ्गलेण्ड की समुद्र-यात्रा की इसके लिये हम आपकी प्रशंसा करते हैं। अपनी इस यात्रा में उस देश के प्रत्येक भाग में जहां पधारना हुआ, श्रीमान् को उत्कृष्ट सम्मान दिया गया है और श्रीमती भारतेश्वरी महारानी विक्टोरिया ने आपको खास तौर से अपने विंडसर-भवन में मेहमान-रूप से सादर निमन्त्रित कर स्वर्ण-पदक द्वारा विभूषित किया, यह आपके लिये जैसे गौरव की बात है, वैसे ही हमारे लिये परम हर्ष का विषय है।

आज के इस समारोह में आपकी प्रजा का, जो बम्बई में निवास करती है एवं अन्य राजस्थानियों का एकत्र होना और बहुत से सज्जनों का यहाँ दूरवर्ती स्थानों से आकर उपस्थित होना आपके प्रति प्रेम और भक्ति को प्रमाणित करता है।

आपके उत्तम और उदार प्रबन्ध के कारण आपकी प्रजा को सर्व प्रकार से सुख-सम्पदा प्राप्त है।

इस बात के लिये भारतवर्ष श्रीमान् का ऋणी है कि, सब से प्रथम आपने स्वामी विवेकानन्दजी की चमत्कारिक योग्यता का अनुभव करके उन्हें आश्रय दिया और अमेरिका तथा योरप में वेदान्त-प्रचार के लिये उन्हें भेजने में सहायक हुए, जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारे हिन्दू-धर्म ने आजकल के सभ्य-संसार में वह आदर एवं प्रतिष्ठा लाभ की कि, जिसका वह अधिकारी है।

हम हृदय से श्रीमान् का अभिनन्दन करते हैं और श्रीमान् की दीर्घायु के साथ प्रत्येक कार्य में सफलता के लिये ईश्वर से प्रार्थी हैं[1]। यह अभिनन्दन-पत्र चांदी के सुन्दर कास्केट में रखकर राजा साहब के भेंट किया गया। अभिनन्दन के उत्तर में सबको धन्यवाद देते हुए अपनी यात्रा के सम्बन्ध में राजा साहब ने जो भाषण दिया, उसका उपस्थित जनता पर बड़ा

---

१ अभिनन्दन-पत्र पर श्री० त्रिभुवनदास मंगलदास, जे० पी० (नगर सेठ), डा० सर भालचन्द्र कृष्ण भाटवड़ेकर, गोकुलदास के० पारिख बी० ए०, एल्-एल्० बी०, चिमनलाल एच० सीतलवाड, बी० ए०, एल-एल० बी०, दामोदर ठाकुरसी मूलजी, जे० पी०, मामराज रामभगत और एस० एस० सेतलूर, बी० ए० एल-एल० बी०—इत्यादि प्रमुख सज्जनों के नाम अङ्कित थे।

प्रभाव पड़ा। आपने अपनी इङ्गलेंड-यात्रा का अनुभव सुनाने के साथ वहां के दृश्यों का, वहाँ के उन्नतिकारक कामों का चित्र सा अङ्कित कर दिया था। आपके धारावाहिक भाषण को सुनकर सभापति जष्टिस रानाड़े महोदय ने प्रसन्नता प्रकट की और राजपूताना के नरेशों के सामने विलायत-यात्रा का आदर्श उपस्थित करने के लिये आपके उत्साह एवं साहस की सराहना करते हुए आपका हार्दिक स्वागत किया। स्वागत-कारियों की पहनायी हुई पुष्पमालाओं से आप लथपथ हो गये थे।

ता० २४ अक्टूबर को राजा साहब बंबई से खेतड़ी के लिये रवाना हुए। बीच में आपको श्रीमान् हिज हाइनेस महारावत सर रघुनाथसिंहजी साहब बहादुर के आग्रह पूर्ण अनुरोध से देवलिया-प्रतापगढ़ ठहरना पड़ा। वहाँ महारावत साहब ने आपका स्वागत कर अपना आन्तरिक प्रेम प्रकट किया। प्रताप-गढ़ से विदा होकर आप जयपुर होते हुए नवंबर के आरम्भ में अपनी राजधानी खेतड़ी पधारे। मार्ग में शेखावतों के टीकाई मनोहरपुर के श्रीमान् राव प्रतापसिंहजी साहब ने आपका आतिथ्य-सत्कार किया। खेतड़ी में आपकी प्रजा द्वारा आपके सकुशल लौटने पर सोत्साह उत्सव मनाया गया और खुशी के जलसों का सिलसिला कई दिनों तक जारी रहा।

इसके अनंतर फरवरी (सन् १८९८) में राजाजी बहादुर का जयपुर जाना हुआ। वहां उन्हें तीन प्रीति-भोजों में प्रमुख

सरदारों के साथ भोजन करने का अवसर मिला। तदनन्तर उन्होंने अपनी ओर से पोकरण (मारवाड़) के ठाकुर साहब की, जो जयपुर आये हुए थे और श्रीमान् चोमू—सरदार के जामाता थे, दावत का आयोजन किया और उसमें उन सभी सरदारों को निमंत्रित करना आवश्यक शिष्टाचार समझा जिनके साथ कि वे स्वयं दावतों में निमंत्रित होकर भोजन कर चुके थे। उस दावत के अवसर पर विरुद्ध वातावरण के कारण उन्हें मानसिक संताप सहन करना पड़ा। यह स्थिति देख कर भावी अनिष्ट की आशंका से स्थानीय रेजिडेंट साहब ने जयपुर दरबार के मनमुटाव और अकृपा भाव को मिटाने की अपनी ओर से बड़ी कोशिस की थी।

जयपुर से राजाजी बहादुर आबू पधारे। वहां अपनी श्रीमती महारानी साहिबा की सालगिरह के उपलक्ष में आयोजित प्रीति भोज में जोधपुर के तत्सामयिक महाराजाधिराज श्री० सरदारसिंहजी साहब बहादुर ने आपको सप्रेम निमंत्रित किया। उस समय आबू में जितने क्षत्रिय नरेश तथा अन्य प्रतिष्ठित सरदार उपस्थित थे वे सभी उस भोज में निमंत्रित हुए थे। तत्पश्चात् आबू में ही श्री० बीकानेर-महाराजाधिराज ने अपने यहां निमंत्रित करने का राजा साहब को सम्मान दिया। वस्तुतः राजपूताना के प्रायः सभी नरेशों एवं सम्मानित सरदारों में राजा साहब के प्रति सम्मान का उच्च भाव था और उस भाव का परिचय उन्हें सर्वत्र मिला।

अध्याय नवां

कश्मीर-पर्य्यटन



सन् १९०० ई० में अजीतसिंहजी बहादुर ने कश्मीर-पर्य्यटन किया था। आपकी यह यात्रा भी स्वास्थ्य लाभ के लिये ही थी। इस यात्रा में श्री राजकुमार जयसिंहजी एवं दोनों राजकुमारियों सहित रानी साहिबा श्रीमती चांपावतजी और उनकी सेविकाएँ, श्री राजकुमार उम्मेदसिंहजी साहब (वर्तमान राजाधिराज शाहपुरा), श्री ठा० जसवंतसिंहजी साहब (अलसीसर), श्री ठा० दलपतसिंहजी साहब (अब राव बहादुर रोहेट के सरदार)— इनके अतिरिक्त मुन्शी जगमोहनलालजी (सकुटुम्ब), मि० पिस्तनजी पारसी (सकुटुम्ब), पण्डित लक्ष्मीनारायणजी, पं० रामचन्द्रजी, मास्टर रामलालजी, नन्दरामजी बीनकार, ठा० शिवबख्शसिंहजी गोपालका, ठा० भूरसिंहजी मेड़तिया, पं० अञ्जनरामजी वैद्य, डा० जीवणदासजी, ठा० बख्शीरामजी चिराणा, बलसिंहजी, भूरसिंहजी, हुसेन अलीखाँजी पठाण, गुलाबखाँजी कोटवाला, महम्मदखाँ चोबदार, चुन्नीलाल खवास, उमर मीर,

जान आलम किस्सा-गो और देवीसहाय चपड़ासी वगैरह १२५ आदमियों का दल साथ था।

मास्टर रामलालजी की डायरी के अनुसार श्रीमान् की कश्मीर-यात्रा का संक्षिप्त विवरण यों है :—

ता० २७ मार्च सन् १६०० ई० को अपने परिजनों सहित राजा साहब लाहौर पहुँचे। कोठी मेलाराम नं० ५ ठंढी सड़क के पास ठहरने का पहले से प्रबन्ध किया गया था। ता० २८ मार्च को बबाई के अब्दुल्ला व्यापारी ने, जो लाहौर में रहता है, हाजिर होकर १ मोहर नजर की।

ता० २६ मार्च को राजाजी बहादुर "मियाँ मीर छावनी" देखने के लिये पधारे।

ता० ५ अप्रिल को राजा साहब ने पंजाब के लाट साहब से भेंट की।

ता० २५ अप्रिल को लोहारू स्टेट के नवाब साहब के शाह-जादा साहब मिलने के लिये आये, जो यहाँ पढ़ते हैं। लाहौर में ही सेठ दुलीचन्दजी चिड़ावावाले मिले।

लाहौर पहुँचने पर श्री० राजकुमार जयसिंहजी और दोनों राजकुमारियों के बोदरी (खसरा) निकल आयी, जिससे करीब दो महीने वहीं ठहर जाना पड़ा।

मई के अन्त में लाहौर से रवाना होकर रावलपिंडी होते हुए ता० २ जून को कश्मीर के स्थान 'बारा मूला' पहुँचे।

श्रीमान् कश्मीर-नरेश की ओर से स्थान और सरबराह की व्यवस्था थी। कश्मीर-दरबार के आदमी यहाँ मौजूद मिले।

ता० ३ जून को रेजिडेंट साहब से मुलाकात हुई।

ता० २२ जून को राजा साहब की सवारी श्रीनगर पधारी। कश्मीर-दरबार की ओर से आपके ठहरने के स्थान पर बा० महेशाचन्द्रजी रिसेप्सन-सुपरिंटेंडेंट उपस्थित थे।

ता० २८ जून को कश्मीर-नरेश हिज हाईनेस श्री० महाराजा मेजर जनरल सर प्रतापसिंहजी साहब बहादुर, के० सी० एस० आई-- से राजा साहब की भेंट हुई। कश्मीर दरबार के रिसेप्सन सुपरिंटेंडेंट श्री० बा० महेशाचन्द्रजी नियत समय पर लेने को आये थे। स्वरूप के अनुरूप आदर एवं आतिथ्य हुआ। खूब बातें हुईं। इत्र का दस्तूर खुद हिज हाइनेस और उनके कनिष्ठ भ्राता श्री० राजा अमरसिंहजी साहब ने किया।

इस दिन एक बड़ी दुर्घटना हुई। राजाजी बहादुर बोट द्वारा पधार रहे थे कि नदी के बीच बोट में खराबी पैदा हो गयी—पानी भरने लगा। बड़ी फुर्ती से श्रीमान् अपने साथियों सहित दूसरे बोट में विराज कर गन्तव्य स्थान पर पहुँचे और वह बोट डूब गया। ईश्वर ने ही रक्षा की। जब कश्मीर-दरबार को इस घटना की सूचना बा० महेशाचन्द्रजी ने दी तब उन्होंने परमात्मा का बहुत धन्यवाद किया और राजा साहब को बधाई दी। उस बड़ी विपत्ति से रक्षा पाने के शुभ उपलक्ष में दूसरे ही दिन ता० २९ जून को राजाजी बहादुर की ओर

से बहु संख्यक भूखों—दरिद्रनारायणों को खाना खिलाया गया और प्रत्येक को दक्षिणा दी गयी।

ता० ५ जुलाई को श्री० राजा अमरसिंहजी साहब डेरे मिलने के लिये आये।

ता० १३ जुलाई को राजा साहब, कश्मीर-दरबार की 'जियाफत' जीमने के लिये शालामार बाग पधारे।

ता० ५ सितंबर को रेजिडेंट साहब से श्रीमान् मिले और खेतड़ी को वापिस लौटने का प्रबन्ध किया।

झालावाड़-नरेश महाराजा सर भवानीसिंहजी साहब जो कश्मीर सैर के लिये आये हुए हैं, मिलने को पधारे। बदले में राजा साहब ने उनके यहाँ पधार कर मुलाकात की।

ता० ६ सितंबर को हिज हाइनेस महाराजा साहब बहादुर जम्बू—कश्मीर, अपने भाई श्री० राजा अमरसिंहजी साहब के साथ राजाजी बहादुर की मिजाज-पुर्सी (स्वास्थ्य-जिज्ञासा) के लिये पधारे। कुछ तबियत खराब रहने की सूचना पाकर।

श्री० कश्मीर-नरेश ने—जिनसे कि गहरी मित्रता हो गयी थी और जो अपने को कछवाहा—आम्बेर राजवंशोद्भव मानते थे, राजपूताना के क्षत्रियों के साथ अपना व्यवहार बढ़ाने की उत्सुकता प्रकट की और श्रीमान् राजा साहब ने उनके इस विचार को प्रोत्साहन दिया।

कश्मीर दरबार ने श्री० राजा साहब की रवानगी के समय

अपनी ओर से विदाई (रुखसत) के दस्तूर में प्रायः दश हजार रुपये का सामान भेजा।

दस्तूर लानेवालों को थालों में २५) रु० देने के अतिरिक्त पण्डित किशनप्रसाद कौल को राजा साहब की ओर से एक सोने की कंठी और चूड़ जोड़ी (स्वर्ण-कटक) बख्शीस में दी गयी।

कश्मीर में जब तक अवस्थान रहा, राजा साहब खूब पर्य्य-टन करते और दृश्य देखते रहे। उन्हें प्राकृतिक दृश्य देखने का बड़ा अनुराग था।

इस यात्रा में पाँच महीने से कुछ अधिक समय लगा था। किन्तु इस यात्रा से भी राजा साहब के बिगड़े हुए स्वास्थ्य को कोई विशेष लाभ नहीं पहुँचा।

वापिसी के समय रावलपिंडी में श्रीमान् की सालगिरह (वर्ष-गांठ) का उत्सव मनाया गया था। बस, वही साल-गिरह अन्तिम रही।

रावलपिंडी से रवाना होकर दीपावली (संवत् १९५७ वि०) की रात्रि को राजा साहब सकुटुम्ब आगरे पहुँचे और अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक वहीं रहे।

श्री० राजाजी बहादुर की कश्मीर-यात्रा की स्मृति में पण्डित लक्ष्मीनारायणजी लिखते हैं:—

कश्मीर देखनेवाले जानते होंगे कि वहां काठ के मकान,

घर आदि हैं। एक दिन अचानक शहर में एक जगह आग लगी और वायु की सहायता से उसने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया। कोलाहल सुनने के साथ ही आग की उठती हुई लपटें देखकर अपने अनुचरों सहित श्री० राजाजी बहादुर तुरन्त मौके पर पहुँचे। वहां देखा कि, जल-कल (फायर ब्रिगेड) के काबू में अभी अग्नि नहीं आयी और जल-कल-चलाने वाला थक जाने के कारण साहस-शून्य सा हो रहा है। तत्क्षण श्रीमान् कमर कस खुद लपक कर जल-कल के ऊपर पहुँच गये और उसका धुरा पकड़ के पानी छोड़ने लगे। अपने संगी—साथियों और उपस्थित जन-समूह को आग बुझाने के लिये अधिकाधिक उत्साहित करते हुए उन्होंने कहा था— "दूसरों के कष्ट की निवृत्ति के लिये स्वयं कष्ट उठाना ही सच्चा परोपकार है और यही मनुष्य की मनुष्यता है।" अविरत रूप से पानी की धारा आग पर पड़ी और सभी लोग एक नरेश को जुटा हुआ देख द्विगुणित उत्साह एवं जोश से आग बुझाने लग गये। फल यह हुआ कि अग्नि शीघ्र शान्त हो गयी—अधिक बढ़ने नहीं पायी। इसके लिये नगर भर में राजाजी बहादुर की प्रशंसा हुई और स्वयं कश्मीर दरबार ने मुक्त-कण्ठ से धन्यवाद दिया।

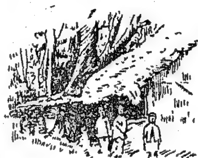
राजाजी बहादुर के कश्मीर से लौटते समय की एक घटना भी उल्लेखनीय है। श्रीनगर के मार्ग में 'कुहाले' और कोह-मरी के बीच सड़क पहाड़ काटकर बनायी गयी है। वहां एक

ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और दूसरी ओर एक दम नीचे पाताल में झेलम नदी की पतली सी धारा। सड़क की चौड़ाई इतनी ही है कि घोड़ागाड़ी आमने सामने से आ-जा सकें। वहाँ जरा पाँव या पहिया फिसला कि बस फिर ठिकाना नहीं। बड़ी भयानक जगह है। उन दिनों मोटरों का दौरदौरा नहीं था। बग्घी, इक्के और तांगे ही सवारी के काम में आते थे। डाक भी ताँगों द्वारा ही आती जाती थी। डाक के ताँगों के घोड़ों की चौकी तीन-तीन, चार-चार कोस के अन्तर पर बनी हुई थी। वहाँ घोड़ों की पलटी या बदली होती रहती थी। निश्चित स्थान पर शीघ्रता से पहुँचने के अभिप्राय से राजाजी बहादुर राजकुमार को लेकर बारामूला से ही ताँगे की पिछली बैठक में बिराजा करते थे। आगे की बैठक में कोचवान के पास मीर मुन्शी पं० लक्ष्मीनारायणजी शर्मा बैठते थे। उक्त कुहाले से आगे चढ़ाई होने के कारण जब श्रीमान् प्रातःकाल ताँगे में सवार हुए तब अपने पास राजकुमार श्री जयसिंहजी को और पं० लक्ष्मीनारायणजी के पास श्री० दलपतसिंहजी को बिठाया। दोनों की अवस्था प्रायः सात-सात वर्ष की होगी। संयोगवश वहाँ से रवाना होने के साथ ही ताँगे के घोड़े बिगड़ गये और बेतहाशा दौड़ पड़े। कोचवान ने घोड़ों को रोकने का बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु घोड़े काबू में नहीं आये। लाचार होकर कोचवान ने कह दिया—'सरकार, घोड़े काबू में नहीं आते हैं और जगह खतरनाक है इसलिये राजकुमार साहब को

लेकर आप फुर्ती से उतर जाने की कोशिश करें तो अच्छा है। मुमकिन है, इस कोशिश में थोड़ी बहुत चोट भी आ जाय, लेकिन उसकी परवा नहीं करनी चाहिये। मौका ऐसा ही आ गया है। इस आकस्मिक घटना से सब घबराये हुए तो थे ही, कोचवान की बात को सुन कर कलेजा काँप उठा, किन्तु राजाजी बहादुर ने साहस और धैर्य नहीं छोड़ा और फरमाया कि सब को इस अवस्था में छोड़ कर मैं अकेला नहीं उतर सकता, तुम घबड़ावो मत और परमात्मा पर भरोसा करके प्रार्थना करो। वही प्रभु इस समय रक्षा करेगा।" कोचवान को आपने हुक्म दिया कि हिम्मत मत हारो और घोड़ों को काबू में लाने को कोशिश करते रहो, एक तरकीब मैं काम में लाता हूँ—यह कह कर आप ताँगे की टप को पकड़ कर खड़े हो गये और अपने एक पाँव को ताँगे की लकड़ी पर अच्छी तरह जमा कर दूसरे पाँव को जमीन पर टेकते हुए पीछे की ओर जोर लगाया। इस तरकीब का बिलक्षण असर हुआ। रेल-इंजिन के ब्रेक की तरह एक दम घोड़ों का बेग घट गया और थोड़ी दूर चल कर घोड़े ठहर गये। घोड़ों के ठहरते ही सब के सब ताँगे से उतर पड़े और ईश्वर को धन्यवाद दिया। पृथ्वी की रगड़ से राजा साहब के पाँव का जूता छिन्न-भिन्न होकर एडी की सुकोमल खाल छिल गयी थी, जिससे खून टपकने लगा था। उस ताँगे का कोचवान श्रीमान् की इस साहस-पूर्ण दक्षता के लिये पाँवों में पड़ गया था।

अध्याय दशवां

जयपुर-दरबार की अकृपा, अस्वास्थ्य और परलोक-वास



इस पुस्तक के किसी गत अध्याय में राजा अजीतसिंहजी बहादुर पर जयपुराधिपति महाराजाधिराज श्री० सर सवाई रामसिंहजी बहादुर की असीम कृपा का वर्णन पाठक पढ़ चुके होंगे। वे उन्हीं राजा साहब पर उन्हीं जयपुरेन्द्र के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज श्री सवाई सर माधवसिंहजी बहादुर की अकृपा होने की बात सुन कर आश्चर्य करेंगे, किन्तु आश्चर्य करने का इसमें कोई कारण नहीं है और न चौंकने की बात ही। राजनीति—उतार चढ़ाव, बनाव बिगाड़ अथवा पटक पछाड़ का क्षेत्र है। इसमें बनते और बिगड़ते देर नहीं लगती। ताजा उदाहरण लीजिये—इङ्गलेंड और फ्रांस का विरोध इतिहास प्रसिद्ध था और जर्मनी एवं इङ्गलेंड का रिश्ता भी किसी से छिपा नहीं। परन्तु योरप के गत महायुद्ध में फ्रांस इङ्गलेंड का मित्र बन गया और जर्मनी शत्रु! यही क्यों स्वार्थ का प्रश्न उपस्थित होने पर भाई भाई तो क्या पिता पुत्र तक एक दूसरे के विरोधी—जानी दुश्मन बन जाते हैं। इसके उदाहरणों की राजपूताना के इतिहास में कमी नहीं है।

महाराजाधिराज सवाई श्री० सर रामसिंहजी बहादुर का स्वर्गवास होने के कुछ समय पश्चात् ही खेतड़ी—राजा साहब अजीतसिंहजी बहादुर पर जयपुर की कृपा अकृपा के रूप में धीरे धीरे परिणत होने लगी। राजाजी बहादुर स्वयं शिक्षित और नीति-निपुण थे। वे अपने अधिकारों का उपमर्दन अथवा अपहरण होने देना नहीं चाहते थे। इसके अतिरिक्त जयपुर दरबार की अप्रसन्नता के मूल में एक कारण यह था कि जयपुर के तत्सामयिक प्रधान मंत्री रावबहादुर बा० कान्तिचन्द्र मुकर्जी महाशय, जिनका श्री० महाराजाधिराज पर असाधारण प्रभाव जमा हुआ था, राजा साहब से प्रसन्न नहीं रह सके। किसी विशेष कारण से नाराज हो गये थे। आगे चल कर जयपुर दरबार और राजा अजीतसिंहजी बहादुर के बीच वैमनस्य की अग्नि को भड़काने का काम उन लोगों ने किया, जो किसी कारणवश खेतड़ी से अलग कर दिये गये थे या अपने हृदय की कालिमा के कारण राजा साहब से ना-खुश होकर जयपुर में डेरा डाल चुके थे।

सन् १८८२ ई० में जयपुर दरबार का एक रोबकार (आज्ञा-पत्र) [१] राजा साहब के नाम पहुँचा। केवल खेतड़ी

---

१ जयपुर दरबार का वह रोबकार इन शब्दों में था :—

"ठिकानेजात को अख्तियारात समात मुकदमात दीवानी व फौजदारी नहीं है सो आइन्दा के लिये राजाजी खेतड़ी को कागज इस मजमून का

ही नहीं सीकर आदि भी उसकी व्यापकता में सम्मिलित थे। राजा साहब ने उस रोबकार को अपने परम्परागत दीवानी और फौजदारी के मुकदमों का विचार करने के अधिकारों के विपरीत समझा और इसलिये वे उसके प्रतिकार के लिये यत्नवान हुए। सीकर के तत्सामयिक राव राजा माधवसिंहजी साहब तथा अन्य प्रमुख शेखावत सरदारों के सहयोग, सम्मति और स्वीकृति से भारत सरकार की सेवा में एक प्रार्थना-पत्र भेजा गया [1]। वह प्रार्थना-पत्र जयपुर के रेजिडेंट साहब के द्वारा

लिखा जाना मुनासिब है कि, जो कोई अमर सीगे फौजदारी ठिकाने के अन्दर वकू में आवे उसकी इत्तिला मारफत थानेदार, निजामत में दिया करें। तहकीकात इब्तिदाय हस्ब अख्तियार थानेदार थाने में होकर कागजात तहकीकात मय आसामियान अन्दर मियाद हफ्ता थाने से निजामत में आया करे और निजामत से कार्रवाई हस्ब जाब्ता हुआ करे और कुल थानेजात मुतालिक ठिकाने से रिपोर्ट हफ्तेवार कुलिया अमूर की निजामत में आती रहे। इसमें अगर गफलत थानेदार वजहूर आवेगी तो तदारुक मुनासिब बहक थानेदारान अमल में आवेगी और इत्तला इसकी नाजिमान शेखावाटी तोरावाटी को इस गरज से लिखी जावे हस्ब तजवीज सदर बइलाके खुद अमल दरामद रखें।

ता० २६ जुलाई सन् १८८२ ई०।"

१ प्रमुख शेखावत सरदारों की ओर से जयपुर दरबार की ता० २६ जुलाई सन् १८८२ ई० की आज्ञा के प्रतिवाद में ता० १३ सितम्बर सन्

भारत सरकार के विदेश-विभाग के मंत्री (फॉरेन सेक्रेटरी) के पास जब पहुँचा, तब जयपुर से कैफियत मांगी गयी। इस पर जयपुर ने सीकर और खेतड़ी के दीवानी एवं फौजदारी

१८८२ ई० को प्रार्थना-पत्र भेजा गया था और उस पर निम्नलिखित सज्जनों के क्रमानुसार दस्तखत थेः—

राजा आनन्दसिंहजी, खंडेला पानाकलां
ठा० जैतसिंहजी मंडावा
ठा० हरिसिंहजी श्यामगढ़
राजा अजीतसिंहजी खेतड़ी
ठा० शिवसिंहजी नवलगढ़
ठा० आनन्दसिंहजी मंडावा
ठा० जीवनसिंहजी सूरजगढ़
ठा० मंगलसिंहजी चौकड़ी
ठा० चन्द्रसिंहजी दुर्जनशालजी नवलगढ़
ठा० भूरसिंहजी मलसीसर
राव राजा माधवसिंहजी सीकर
ठा० बैरीशालसिंहजी नवलगढ़
राजा पदमसिंहजी पाना खुर्द खंडेला
ठा० चन्द्रसिंहजी डूंडलोद
ठा० अजीतसिंहजी मंडावा
ठा० जगतसिंहजी बिसाऊ

अधिकारों में दस्तंदाजी करने की बात से इनकार कर दिया। अतएव जयपुर स्थित रेजिडेंट मेजर प्रीडो ने राजाजी बहादुर (खेतड़ी) को अपने पत्र में लिख भेजा कि, "मैं समझता हूं, आपने जयपुर दरबार के २६ जुलाई १८८२ के रोबकार का अर्थ समझने में गलती की है।" इसके बाद के दूसरे पत्र में उक्त रेजिडेंट साहब ने फिर लिखा कि ता० २६ जुलाई १८८२ ई० के हुक्म से आपके ऊपर कोई नयी शर्त कायम नहीं की गयी है[1]। इसी सिलसिले में रेजिडेण्ट साहब का राव राजाजी सीकर और राजाजी बहादुर खेतड़ी को ता० २८ नवम्बर सन् १८८२ ई० का लिखा एक और पत्र मिला, जिसका तर्जुमा अदालती भाषा में यों है:—

"जयपुर दरबार के रोबकार मो० २६ जुलाई सन् १८८२ ई० की मनशाय और मकसद की तसरीह समझाने के लिये तारीख ७ अक्टूबर सन् १८८२ को मैंने आपके नाम चिट्ठी लिखी थी और उसमें यह लिखा था कि, रोजनामचाजात और इमसलात हर एक खफीफ मुकदमे की जो ठिकाने में वाकै होते हैं, दरबार आपसे तलब नहीं करते हैं। सिर्फ ऐसे मुकदमात का रोजनामचाजात और इमसलात वह तलब करते हैं जो संगीन सकल के हों, जिस किस्म के मुकदमात राज की अदालत में पहले से हमेशा दायर होते रहते हैं। दरबार के उस

1 Letter of the Jaipur Resideney, 7th October 1882

हुक्म की मनशाय हकीकत व असलीयत को न समझ कर आपने १३ सितम्बर १८८२ ई० को फॉरेन सेक्रेटरी गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के पास यह नालिश की कि राज ने हमारे ठिकाने की निस्बत जदीद अहकाम जारी किये हैं। आपके इस्तगासा पर गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया ने तवज्जोह के साथ गौर किया—बाद आपको इत्तला देने के वास्ते मुझे यह हिदायत की है कि चूंकि ऐसी मनशाय हुक्म दरबार मजकूर बाला और उसी हुक्म का इजरा जरूरी होना आपको पहले ही समझा दिया है, लिहाजा अब जनाब गवर्नर जनरल साहब बहादुर बइजलास कौंसिल आपकी जानिब से की दरबात में दस्तन्दाजी करने से कतई इनकार फरमाते हैं। अब मैं यकीन करता हूँ कि आप खुशी से और खैरख्वाही के साथ रियासत के उस हुक्म का कि जो इस बाबत में सादिर हुआ है, तामील करेंगे और कुल जरायम संगीन वकुआ अपने अपने ठिकानों की रिपोर्टें ठीक वक्त पर नाजिम के पास भेजते रहेंगे ताकि ऐसे मुकदमात का फैसला अदालत हाय राज से होता रहे। अन्दरी बाब मुकदमात दीवानी के दफ्तर रेजिडेण्टी के पिछले कागजात से जाहिर है कि, मेजर थर्स्बी साहब बहादुर या मेजर रिकार्ड साहब बहादुर यह कायदा मुकर्रर कर गये हैं कि कुल ऐसे मुकदमात दीवानी जिनमें फरीकैन ठिकाने सीकर, खेतड़ी के रहनेवाले हों, उनका फैसला ठिकाना सीकर, खेतड़ी से होता रहे और ऐसे मुकदमात का तस्फिया जिनमें एक फरीक इलाका

सीकर का और दूसरा फरीक निजामत शेखावाटी का वा किसी दूसरी जगह इलाका राज का हो, निजामत झुँझुनू में होता रहे और उसी निजामत में दायर होते रहें। इस मौके पर इसका तजकरा करना भी मुनासिब समझा गया और यही कायदा मेरे नजदीक भी मुनासिब है। इस वास्ते यह बात पसन्द दीदा समझी जा सकती है के राज में भी और दफ्तर ठिकानेजात देख कर खेतड़ी की तरफ से भी इस पर पुख्ता अमल-दरामद रहे। फकत[1]

दस्तखत

कायम मुकाम रेजिडेंट

\+ + + +

इस प्रसंगक्रम में जयपुर दरबार की ओर से भी एक रोबकार ता० १४ अगस्त सन् १८८३ ई० को जारी हुआ था। जिसमें लिखा थाः—

"दरबार के रोबकार मो० २६ जुलाई सन् गुजिस्ता जो कत्ल के मुकदमात के बाबत जारी हुई थी वह सिर्फ मुकदमात संगीन से मुतालिक थी, लेकिन जाहिर है कि, इस पर गलत-

---

१ जिस असली पत्र का यह तर्जुमा है, उसकी नकल उस समय के कायम मुकाम रेजिडेण्ट साहब जयपुर स्टेट ने अपने डाकेट नम्बर २५३३ ता० २८ नवंबर सन् १८८२ ई० के साथ जयपुर राज्य की कौंसिल के सेक्रेटरी के नाम सूचनार्थ भेजी थी।

फहमी वकू में आई और इस सहव के सबब से राव राजाजी सीकर व खेतड़ी वगैरह ने खयाल किया कि दरबार की मनशा यह है कि कदीमी दस्तूर व हक़ में कुछ फर्क व कमी करे—हालाँ कि, यह बात दरबार की मनशा में बिलकुल नहीं थी।"

अन्त में लिखा था—"रोबकार मो० २६ जुलाई सन् १८८२ ई० की मनशा यह थी कि ठिकानेजात में जो जो जरायम संगीन वकू में आवें तो हस्ब दस्तूर कायदे साबिक के उनकी रिपोर्ट मुनासिब तरह से दरबार की इत्तिला के वास्ते फौरन आया करे। क्योंकि जो रिपोर्ट देर से करे और नीज दीगर कार्रवाई में चंद ठिकानेजात में अर्से से मालूम हुई है। ऐसी देर पर आयन्दा चश्म पोशी दरबार से न होगी। इसलिये लाजिम है कि जब कभी जुर्म संगीन वकू में आवे तो फोरन रिपोर्ट दरबार मोसूफ में आवेगी तो दरबार खयाल करेंगे कि क्या हुक्म जारी करना मुनासिब होगा। मजमून मुन्दरजा बाला से वाजेह होगा, कि जब तक सरदारान ठिकाना के तालिक जो जो काम करना फर्ज और लाजिम है और सरदारान मोसूफ वह सब काम मुनासिब तरह से बजा लावेंगे जब तक दरबार को कुछ ख्वाहिश नहीं है कि पुराने दस्तूर में मदाखलत वाहमी करे। इत्यादि।"

यों यह बात समाप्त हुई। किन्तु इस आन्दोलन के मुखिया राजाजी बहादुर समझे गये और इसलिये श्रीमान् जयपुर दरबार के हृदय में उनकी ओर से वैमनस्य की एक ग्रन्थि लग गयी।

सन् १८९१ में खेतड़ी की खानों (Mines) का ठेका लेने के लिये एक व्यापारी तैयार हुआ, जिससे ५००००) रुपये सलामी और २००००) रुपये वार्षिक मालगुजारी के रूप में खेतड़ी को मिलते। सब शर्तें तय हो चुकी थीं कि जयपुर की ओर से यह कह कर आपत्ति की गयी कि, बबाई की खानों पर खेतड़ी का अधिकार नहीं है। जयपुर के आपत्ति उठाने से ठेका देने का काम रुक गया और बिलंब होता देख ठेकेदार घबड़ाकर चल दिया। जयपुर दरबार की ओर से इत्तिला पाकर तत्सामयिक रेजिडेंट ने खेतड़ी-राजा साहब को अपने १० अप्रिल सन् १८९१ ई० के पत्र में लिखाः—"मुझे सूचना मिली है कि, बबाई तालुका की खानों पर आपका अधिकार नहीं है।" इस पर राजाजी बहादुर ने बबाई की खानों पर खेतड़ी के अधिकार के जब रेजिडेंट साहब के समक्ष प्रमाण उपस्थित किये, तब जयपुर ने अपनी आपत्ति उठा ली और अतएव जयपुर के स्थानापन्न रेजिडेंट कर्नल एच० बी० एब्बट (Colonel H. B. Abbet) ने ता० २८ दिसम्बर सन् १८९१ ई० के अपने पत्र में राजाजी बहादुर को लिख दिया कि, "अब दरबार को सन्तोष हो गया है कि, बबाई तालुका की खानों पर पूरा अधिकार आपका है। बबाई की खानों को आपके प्रस्तावित ठेके में शामिल करने में दरबार को आपत्ति नहीं है (The Darbar being now satisfied that you are entitled to all mining rights in the Babai Taluka, has no objection to your

including the Babai mines in the proposed lease.)"

इस प्रकार आपत्ति उठाने और फिर उसका स्वयं प्रत्याहार करने में जयपुर की चाहे हानि न हुई हो किन्तु खेतड़ी को क्षति-ग्रस्त होना पड़ा।

जयपुर दरबार के अकृपा-भाव के ये कुछ मोटे उदाहरण हैं। यों छोटी छोटी छेड़छाड़ तो दोनों ही तरफ से बराबर होती रहती थी। छोटी सी बात को तिल का ताड़ बना दिया जाता था। इस अवाञ्छनीय विरोध-भाव का— पारस्परिक वैमनस्य का दुष्परिणाम वही हुआ जो होतव्य था। सदा चिंतित रहने के कारण राजाजी बहादुर का स्वास्थ्य गिरने लग गया और फिर सुधरने नहीं पाया।

डाक्टरों की सम्मति से राजाजी बहादुर को प्रायः स्वास्थ्य-प्रद स्थानों में आवश्यकतानुसार जाना और रहना पड़ता था। था। परन्तु वे कर्तव्य के पाबंद ऐसे थे कि, उस दशा में भी अपने कार्य सम्पादन में त्रुटि नहीं रखते थे। जहाँ रहते, वहीं आपके इजलास में नियमित रूप से कागज पहुँचते और हुक्म के लिये आपके सामने पेश किये जाते। खेतड़ी के इलाके में कहीं कोई असंतोष नहीं था और शासन-कार्य यथा नियम सञ्चालित हो रहा था। उसी अवसर में राजा साहब के विरुद्ध जयपुर दरबार के कान उन लोगों ने भरने शुरू किये, जो पीढ़ियों से खेतड़ी का नमक खाते आ रहे थे किन्तु अपनी आदत से

लाचार होकर राजा साहब का अनिष्ट कराने पर उतारू हो रहे थे। इसके परिणाम स्वरूप जयपुर दरबार के प्रधान मंत्री राव बहादुर बा० कान्तिचन्द्र मुकर्जी [1] महाशय ने राजा साहब के नाम एक पत्र लिख भेजा। वह पत्र उन्हें अस्वस्थावस्था में ही कश्मीर से लौटने पर आगरे के मुकाम में मिला। उस पत्र को और उसके साथ ही राजा साहब के उत्तर को हम यहां उद्धृत करते हैं।

---

१ रावबहादुर बा० कान्तिचन्द्र मुकर्जी महाशय का जन्म बङ्गाल प्रान्तीय श्यामनगर के निकटस्थ 'राहुत' नामक छोटे से गांव में एक बहुत ही साधारण स्थिति के ब्राह्मण कुटुम्ब में हुआ था। स्कूली शिक्षा पाने के बाद कुटुम्ब के भरण-पोषण की चिन्ता में वे विद्यालय छोड़ने को विवश हुए। उसी स्थिति में उन्होंने एक ग्राम-पाठशाला में अध्यापक वृत्ति स्वीकार की। साधारण स्कूली शिक्षा पाकर भी अध्ययन-क्रम जारी रक्खा और अंग्रेजी तथा संस्कृत के विविध ग्रन्थों के अनुशीलन द्वारा असाधारण योग्यता प्राप्त की। उसी योग्यता ने उनको स्कूल के साधारण माष्टर से जयपुर के राजकीय महाविद्यालय का 'प्रिंसिपल' बनाया और अन्त में जयपुर-राज्य के प्रधान मन्त्री के पद पर प्रतिष्ठित किया। अपनी सेवाओं के पुरष्कार में श्री० मुकर्जी महाशय ने जयपुर दरबार से उच्च सम्मान के साथ स्थायी जमीन-जागीर पायी। बृटिश गवर्नमेंट ने "राववहादुर" और सी० आई० ई० की पदवियां प्रदान कर उनका सम्मान बढ़ाया।

ता० ४ जनवरी सन् १९०१ ई० को उनका देहान्त हुआ।

दशवां अध्याय

जयपुर के प्रधान मन्त्री का पत्र

Delhi 24th. Nov. 1900.

My Dear Sir,

Reports have reached His Highness the Mahraja that the state affairs in Khetri are not satisfactory and I am desired by His Highness to call your attention to it.

The mismanagement of the estate is understood to be the consequence of your continued absence from Khetri and His Highness therefore strongly advices you to return at-once to Khetri and put an end to the complaints of your subjects, which His Highness fears are only too well founded, and in the event of your not seeing your way, at present, to take the Maharaja's advice, His Highness is of opinion that a trust-worthy Kamdar should be appointed by the Darbar to look after the interests of the Khetri Ryots.

Please let me hear from you soon what you think of the above proposals.

Yours very sincerely,

Kanti Chandra Mookerji.

(अनुवाद)

जयपुर ता० २४ नवम्बर, १९००

प्रिय महाशय,

हिज हाइनेस महाराज के पास रिपोर्टें पहुँची हैं कि, खेतड़ी में राज-काज की दशा सन्तोषजनक नहीं है और हिज हाइनेस ने मुझे आज्ञा दी है कि, इसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करूँ।

इष्टेट का प्रबन्ध आपके लगातार खेतड़ी से अनुपस्थित रहने का फल माना जाता है, इसलिये हिज हाइनेस आपको आग्रहपूर्वक सलाह देते हैं कि, आप तुरन्त खेतड़ी को लौट जायँ और अपने प्रजा-जनों की शिकायतों का अन्त कर दें। हिज हाइनेस को आशंका है कि, वे शिकायतें प्रमाण युक्त हैं। आप इस समय (यदि) महाराज की सलाह मान कर अपना मार्ग न देखेंगे तो हिज हाइनेस की सम्मति है कि, एक विश्वास योग्य कामदार दरबार से नियुक्त होना चाहिये, जो खेतड़ी की रैयत की हित-रक्षा करे।

कृपया मुझे शीघ्र सूचित कीजिये कि, इन प्रस्तावों पर आप क्या सोचते हैं ?

आपका

कान्तिचन्द्र मुकर्जी

दशवां अध्याय

श्री राजाजी बहादुर का उत्तर

Agra. the 28th Nov. 1940

My dear Rao Bahadur Sahib,

Thanks for your letter of the 24th instant which comes just now and which conveys that His Highness has at heart the wellbeing of the affairs in Khetri. Please convey my respectful thanks to His Highness for it.

It would have been for better in my humble opinion if the unsatisfactory reports were specified individually in your letter under reference because there is in Khetri a competent machinery of officials at work and defects if any prove true, can be removed satisfactorily.

Before leaving Khetri I personally made a thorough supervision of most of the work of the Departments and minutely looked into the details of business, not only at Khetri but also in the districts by sending my trust-worthy officials as well as by going myself. It was so much that

partly owing to over-work I became dangerously ill, in January last at Khetri.

After immediate treatment by competent professional men it became necessary for me to go out to some cold place in the hot weather and I did this under medical advice.

Change of climate was, doing me some good, but about the time when I was determined to return to Khetri I unfortunately got some physical complaints, which more or less continued with breaks here and there.

On my way back I intended going to Simla to consult Dr. Lukis, but fever came on at Amballa and thus I was prevented.

After coming to Agra I got fever and diarrhoea which successively lasted more than two weeks. Here I am under the medical treatment of Colonel Anderson the Civil Surgeon whose opinion is that I should return to Khetri after my health has been established beyond fear of breakdown that the worry at present would prove injurious, and that the case is one which

requires medical supervision for some time. I can safely assure you that my stay here is not in any way connected with luxury, and the matter of health is one which rather calls for the sympathy of the Darbar.

Ordinarily affairs come to me by post and I dispose of them usually. The officials in Khetri are the same who worked satisfactorily when I went to England as also during my hot weather visits to Abu etc. I wonder what mismanagement is reported, for things appear to go on as ever. If my subjects have any complaints they are lodged in the departments concerned and if the complaints are not satisfied with the decision of the lower courts they, step by step, can and do put grievances before higher courts upto mine. I have never neglected work whenever permitted by health, and you know full well how very thoughtful of my affairs I have always been.

On the other hand when such Sirdars as remain at Jaipur (at distance from their homes)

on appointments in Jaipur Departments, can satisfactorily do their own work additionally, why I, who have no such appointment but only my own affairs to attend to, should be considered otherwise.

As for a trustworthy Kamdar, you know very well that my present Kamdar Pandit Gopinath received his education under you and is a gentleman of charactor always liked by you. We have always found on return that my officials as for as they could, discharged their duties in a proper way and any thing like new appointment of the sort is sure to reflect discreditably on the honesty of purpose etc. at this stage of their advanced experience. Moreover such a step would be unprecedented.

Kindly oblige by putting the above facts before His Highness and beg the favour of a favourable consideration. If there be any groundless complaints made by any selfish man, they should not only be not relied upon but that the

complaints should be directed to lay his complaints in the proper courts of Khetri.

Yours very sincerely,

SD. AJIT SINGH

(अनुवाद)

आगरा २८ नवम्बर, १९०० ई०

प्रिय रावबहादुर साहिब,

धन्यवाद है, आपके इसी महीने की २४ तारीख के पत्र के लिये जो अभी आया है। उससे मालूम होता है कि हिज हाइनेस के हृदय में खेतड़ी के राज-काज की अवश्य ही शुभचिन्तना है। आप कृपया इसके लिये मेरी ओर से हिज हाइनेस को मान-संयुक्त धन्यवाद निवेदन कीजियेगा।

मेरी तुच्छ सम्मति में यह बहुत अच्छा होता कि, असंतोष की शिकायतें आपके इस पत्र में एक एक करके खोल दी जातीं, क्योंकि, खेतड़ी में योग्य कर्मचारियों का दल काम कर रहा है और यदि त्रुटियों में कोई सत्य प्रमाणित हों तो वे संतोषजनक रीति पर ठीक की जा सकती हैं।

खेतड़ी छोड़ने के पहले मैंने स्वयं सब महकमों के काम की पूरी जांच की थी, कार्य की सूक्ष्मताओं को खूब छान बीन कर देखा था। खेतड़ी में ही नहीं—किन्तु जिले में भी अपने विश्वास-पात्र अधिकारियों को भेज कर और स्वयं जाकर

जाँच पड़ताल की थी। गत जनवरी में मैं खेतड़ी में बहुत बीमार हो गया था, इसका कारण किसी अंश में अधिक काम करना ही था, योग्य चिकित्सकों से झटपट सलाह करने के पश्चात् मेरे लिये यह आवश्यक हो गया कि, गर्मी के दिनों में मैं किसी ठंढी जगह जाऊँ और चिकित्सकों की सलाह से मैंने यही किया।

जलवायु बदलने से मुझे कुछ लाभ हो रहा था, किन्तु जिस समय मैं खेतड़ी को लौट जाने का विचार करने लगा, उस समय दुर्भाग्यवश मुझे कुछ शारीरिक अस्वास्थ्य हो गया जो कभी कभी कुछ समय के लिये अच्छा होकर लगातार न्यूनाधिक चलता रहा। लौटते हुए मैं डाक्टर ल्युकिस से सलाह लेने को शिमले जा रहा था कि अम्बाले में ज्वराक्रान्त हो गया और इससे मुझे वहीं ठहर जाना पड़ा।

आगरे आने पर मुझे ज्वर और दस्त हो गये, जो एक के पीछे एक—लगभग दो दो सप्ताह तक रहे। यहाँ मैं सिविल सर्जन कर्नल एण्डरसन की चिकित्सा में हूँ। उनकी राय है कि जब मेरा स्वास्थ्य इतना सुधर जाय कि फिर बिगड़ने का भय न हो, तब मुझे खेतड़ी लौटना चाहिये और इस समय किसी भी प्रकार की चिन्ता हानिकारक होगी तथा मेरी दशा ऐसी है कि, कुछ समय तक चिकित्सक की सँभाल जरूरी है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि, मेरे यहाँ रहने का आमोद प्रमोद या विलास से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है और

स्वास्थ्य का विषय ऐसा है कि जिसके लिये दरबार को सहानुभूति दिखलानी चाहिये।

साधारणतः राज की बातें मेरे पास डाक द्वारा आती हैं और मैं साधारणतया उन्हें निबटा देता हूँ। खेतड़ी में कर्मचारी वे ही हैं जिन्होंने मेरे इंगलेण्ड जाने पर या गर्मियों में आबू आदि के प्रवास में सन्तोषजनक रीति पर कार्य किया है। मुझे आश्चर्य होता है कि, किस प्रकार के कुप्रबन्ध की शिकायतें आयी हैं, क्योंकि काम सदा की भाँति चल रहा है। यदि मेरी प्रजा को कोई शिकायत होती है तो वह यथायोग्य महकमे में की जाती है और नीचे की कचहरियों के फैसलों से वे शिकायतें पूरी नहीं होतीं तो प्रजा ऊपर की अदालतों में मुझ तक अपनी पुकार सुना सकती है और सुनाती है। जब स्वास्थ्य ने मुझे काम करने दिया है, तब मैंने कभी काम की उपेक्षा नहीं की है और आप पूरी तरह जानते हैं कि, मेरे काम-काज की मुझे कैसी चिन्ता रहती है।

साथ ही यह बात है कि, जब वे सरदार, जो जयपुर ष्टेट के महकमों में काम करते हैं, जयपुर—अपने घरों से दूर रहते हैं, अपने काम को भी राज्य-कार्य के अतिरिक्त सन्तोषदायक रीति से कर सकते हैं, तब मुझे दूसरी तरह क्यों समझा जाता है, जब कि, कोई राज्य का काम मेरे पास करने को नहीं, केवल अपना ही काम है?

विश्वास-पात्र कामदार के विषय में यह कहना है कि, आप अच्छी तरह जानते हैं कि, मेरे वर्तमान कामदार पण्डित गोपीनाथ ने आप से शिक्षा प्राप्त की थी और वे सच्चरित्र सज्जन सदा आपके कृपापात्र रहे हैं, हमें सदा उनके विषय में आदर पूर्ण उच्च-भाव रहा है। मैंने लौटने पर बराबर यह पाया है कि जहाँ तक संभव है, मेरे कर्मचारियों ने अपना कर्तव्य उचित रीति पर पूरा किया है। किसी प्रकार की नयी नियुक्ति से उद्देश्य की सचाई आदि के विषय में अपमानजनक कल्पनाएँ उठेंगी, विशेषतः जब उन लोगों के अनुभव इस दशा में बढ़े हुए हैं तथा अब तक कभी ऐसा हुआ भी नहीं।

कृपया इन सब बातों को हिज हाइनेस के समक्ष उपस्थित करके मुझे अनुगृहीत कीजिये और इन पर कृपापूर्वक विचार करने की प्रार्थना कीजिये। यदि किसी स्वार्थी ने निर्मूल शिकायतें की हों तो उन पर विश्वास न करना चाहिये। इतना ही नहीं,—किन्तु शिकायत करनेवालों को आज्ञा होनी चाहिये कि, खेतड़ी के यथायोग्य महकमों में अपनी शिकायतें पेश करें।

आपका अत्यन्त सच्चा—

अजीतसिंह

निरन्तर की चिन्ता एवं राज-कार्य सञ्चालन में विशेष परिश्रम के प्रभाव से राजा साहब का स्वास्थ्य बिगड़ चुका था। विश्राम के अभाव से वे अधिक थके हुए दिखलायी देने

लग गये थे। उनके अन्तरङ्ग सेवकों की दलबन्दी के कारण स्वरूप विरोधी विचारों ने भी उनकी चिन्ता और व्यथा को कम नहीं बढ़ाया। फलतः उनके हृदय एवं मस्तिष्क से दुर्बलता के लक्षण प्रकट हो रहे थे।

राजा साहब की इस रुग्णावस्था में सेवा और सँभाल का भार उनकी रानी साहिबा श्रीमती चाँपावतजी ने अपने ऊपर ले रक्खा था। वे पतिव्रताओं के कर्तव्यानुसार छाया की तरह उनके साथ रहीं। राजा साहब का क्षण भर का वियोग भी रानी साहिबा के लिये असह्य था। उस समय वे सिविल सर्जन कर्नल एण्डरसन के चिकित्सा-प्रबन्ध में आगरास्थ बो० टी० साहब की हरिपर्वतवाली कोठी में सकुटुम्ब निवास कर रहे थे।

उन्हीं दिनों राजा साहब के एक विश्वस्त सेवक के कथनानुसार, श्रीमान् ने अपनी शारीरिक स्थिति के विचार से एक बार अपने कुछ अन्तरङ्ग कार्यकर्ताओं से खेतड़ी के वफादार रहने और दगा न करने की प्रतिज्ञा के अतिरिक्त अपना शरीर छूट जाने की दशा में दाह-कर्म भगवान् श्रीकृष्ण की पुराण प्रसिद्ध पवित्र पुरी मथुरा में कराने की इच्छा प्रकट की थी। यह घटना बतलाती है कि, उस समय जीवन उनके लिये भार स्वरूप हो रहा था।

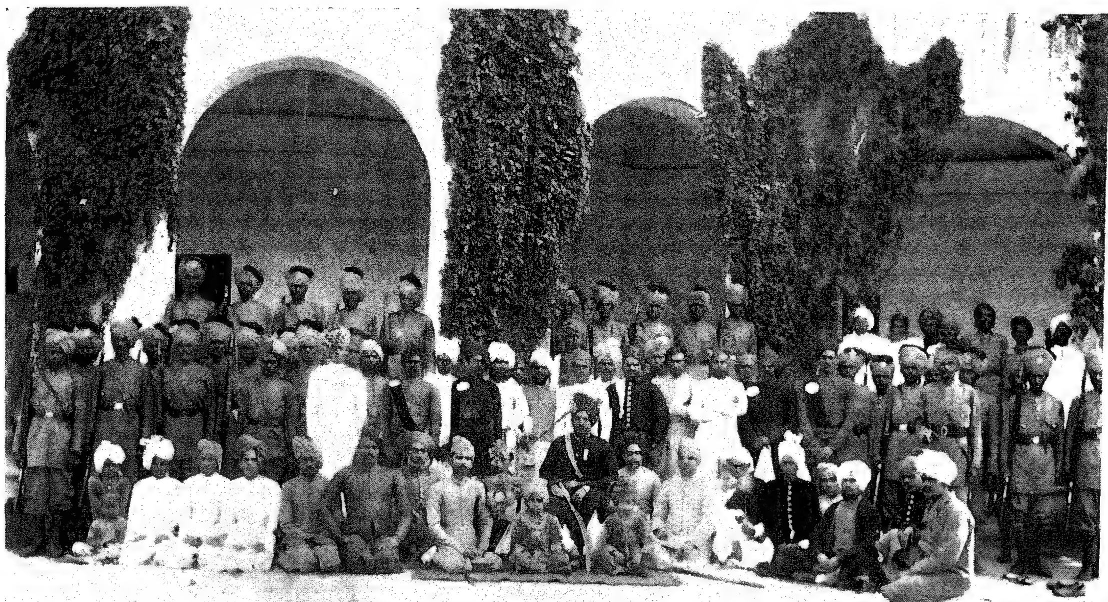
ता० १५ दिसम्बर को जयपुर के प्रधान मंत्री बा० कांतिचंद्र मुकर्जी महाशय आगरे होते हुए कलकत्ते जा रहे थे। इसकी

सूचना पाकर राजा साहब उनसे मिलने के लिये फोर्ट स्टेशन पधारे। जयपुर-दरबार के हुक्म से लिखा हुआ श्री० मुकर्जी साहब का पूर्वोद्धृत पत्र उन्हें इससे पहले मिल ही चुका था। अतएव अपनी वस्तु-स्थिति का परिचय दे कर दूसरे लोगों द्वारा उत्पन्न किया हुआ वैमनस्य दूर कराने का उनसे अनुरोध किया, जिस पर बाबू साहब ने सहानुभूति के साथ इस यात्रा से वापस लौटते ही जयपुर दरबार के समस्त संदेहों को निवारण करने का वचन दिया था। परन्तु दैव-दुर्विपाकवश उस यात्रा से श्री० बाबू कान्तिचन्द्रजी लौटे ही नहीं। कलकत्ते से नागपुर पहुँचने के बाद ही (ता० ४ जनवरी सन् १६०१ ई० को) उनका देहान्त हो गया। बाबूजी की मृत्यु से राजा साहब को बड़ी निराशा हुई।

सन् १६०० ई० का दिसंबर मास समाप्त हुआ। सन् १६०१ के जनवरी महीने की १ तारीख नयी शताब्दी (बीसवीं) का पहला दिन था। उस दिन राजा साहब ने अपने पूरे ष्टाफ (staff) का, जो आगरे में साथ था, एक चित्र उतरवाया। वही उनका अन्तिम चित्र है।

ता० १८ जनवरी सन् १६०१ ई०—खेतड़ी की प्रजा और राज-परिवार के लिये बड़े दुर्भाग्य का दिन था। उस दिन प्रातःकाल राजा साहब अपने सम्बन्धी श्री० राजाधिराज सर

श्री० राजा साहब का अन्तिम चित्र—मुकाम आगरा



खेतड़ी के परिजनों और राजकुमार श्री जयसिंहजी एवं श्री० दलपतसिंहजी के साथ। १—१—१९०१ ई०

नाहरसिंहजी साहब [1] शाहपुराधीश के साथ साइकिल पर घूमने के लिये निकले थे। किन्तु बीच मार्ग से ही—उन्होंने श्री० राजाधिराज साहब को यह कह कर वापिस स्थान पर भेज दिया कि, 'मैं थोड़ी देर बाद जरा आगे तक घूम कर आता हूं, जब तक आप स्नान एवं सन्ध्या से निवृत्त हो लें—भोजन साथ करेंगे।' इधर राजाधिराज साहब स्थान पर आ गये और उधर राजा साहब साइकिल की तेज रफ्तार से सिकन्दरे [2] पहुँचे। वहां बादशाह अकबर के मकबरे के सदर दरवाजे में एक ओर अपनी साइकल खड़ी कर दी और सिकन्दरे के जमादार को, जिसका नाम मूलचन्द सिंह था, सोडा लाने के लिये भेज कर स्वयं एक कोने की मीनार पर चढ़ गये, जिसकी ऊंचाई

---

१ श्रीमान् राजाधिराज सर नाहरसिंहजी साहब अपनी द्वितीया कन्या के विवाहोत्सव के अवसर पर खेतड़ी नरेश को सकुटुम्ब शाहपुरे लिवा लाने के लिये उस समय आगरे पधारे थे और राजा साहब ने उनका प्रेमपूर्ण अनुरोध स्वीकार कर लिया था।

२ आगरे से ५॥ मील सिकन्दरा गांव में बादशाह अकबर का दर्शनीय मकबरा है और वह सिकन्दरा के नाम से ही प्रसिद्ध है। उसके सदर दरवाजे के चारों कोनों पर चार मीनार हैं। सन १६१४ ई० में मुगल बादशाह अकबर के पुत्र बादशाह जहांगीर ने अपने पिता की यादगार में यह मकबरा बनवाया था। मकबरा १२० एकड़ भूमि पर है और उसकी प्रत्येक दीवाल की लंबाई ७७२ गज के करीब है।

८६ फीट है। ऊपर से अपनी स्वाभाविक प्रकृति के अनुसार वे दूर तक के दृश्य देख रहे थे कि हवा का झोंका आया और वे नीचे फर्श पर आ गिरे। गिरते ही प्राण परलोक को प्रयाण कर गये। धड़ाका सुनते ही लोग दौड़ पड़े और तुरंत पहचान लिया कि, खेतड़ी नरेश हैं। उनके हाथ की कलाई के बँधी हुई घड़ी दूर जा पड़ी थी—साफा उसी तरह सिर के नीचे तकिये की तरह लग गया था। सबसे पहले उनको उसी मकबरे के जमादार ने देखा, जिसको उन्होंने सोडा लाने के लिये भेजा था।

राजा साहब के आकस्मिक स्वर्गवास का दुःसंवाद बिजली की तरह फैल गया। कोठी पर खबर पहुँचते ही राजान्तःपुर में हाहाकार मच गया। तुरन्त राजाधिराज साहब अपने धाभाई किशनलालजी और खेतड़ी के राज-कर्मचारियों सहित घटना-स्थल पर पहुँचे और राजा साहब का 'शव' उनके निवास-स्थान—हरिपर्वत वाली कोठी पर लाया गया। शाहपुरा के युवराज-राजकुमार श्री० उमेदसिंहजी साहब को तार द्वारा सूचना दी गयी। वे उन दिनों दिल्ली ठहरे हुए थे। उसी रात्रि में स्पेशल ट्रेन द्वारा श्रीमान् का 'शव' मथुरा ले जाया गया। दिल्ली से ठीक समय पर मथुरा पहुँच कर श्री० युवराज राजकुमार साहब (शाहपुरा) ने अपने हाथों शास्त्र-विधि से अन्त्येष्ठि क्रिया सम्पन्न की और तदनंतर आगरे पधारे। आगरे से श्री० राजकुमार जयसिंहजी सहित पति-शोक-संतप्ता श्रीमती

रानी साहिबा चाँपावतजी की सवारी को खेतड़ी पहुँचा कर आप फिर दिल्ली को वापिस चले गये, जहां आपका इलाज हो रहा था।

राजा साहब के दुर्घटना-घटित-निधन संवाद को उस समय के अंग्रेजी और हिन्दी समाचार-पत्रों ने सशोक प्रकाशित किया था। जो कोई एक बार भी श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर से मिल लिया था अथवा किसी प्रकार परिचय प्राप्त कर चुका था, वही उनकी असामयिक और आकस्मिक मृत्यु को सुन कर गम्भीर शोक-सागर में मग्न हो गया। खेतड़ी की प्रजा के शोक का तो पारावार ही न था। उस समय राजाजी बहादुर के एक मात्र पुत्र राजकुमार श्री० जयसिंहजी की अवस्था केवल ८ वर्ष की थी। दो पुत्रियों में से बड़ी राजकुमारी श्रीमती सूर्यकुमारीजी का विवाह वे कर चुके थे और छोटी राजकुमारी श्रीमती चन्द्रकुमारीजी अविवाहिता थीं।

राजा साहब ने अपनी सन्तान की शिक्षा का भी सर्वोत्तम प्रबन्ध किया था। यद्यपि राजपूताने में—राजघरानों में पुत्री का जन्म सुखकर नहीं समझा जाता, तथापि राजा साहब ने कभी पुत्र एवं पुत्रियों में अन्तर नहीं समझा और उनका लालन पालन तथा शिक्षा का प्रबन्ध समान भाव से अपने निज के तत्वावधान में रक्खा और उसमें कोई त्रुटि नहीं रहने दी। परन्तु कराल काल ने ऐसे सद्गुण सम्पन्न पिता माता के सुख से उनकी सन्तानों को वञ्चित कर दिया।

राजा साहब अपनी पुत्रियों को कितना प्यार करते थे, इसका किञ्चित् आभास इसीसे मिल सकता है कि, उन्होंने अपनी दोनों राजकुमारियों के लिये जीवन पर्यन्त हाथ खर्च के रु० २५०) मासिक (वार्षिक ३०००) रु०) की जागीर का प्रबन्ध उनके बाल्य-काल में ही कर दिया था और खास अपने हाथ से पट्टे लिख कर ऐसी स्थायी व्यवस्था बाँध दी थी कि, जिसको कभी कोई बन्द न कर सके।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, इस समय शिक्षा का महत्त्व प्रायः सभी ने समझ लिया है, किन्तु ५० वर्ष पूर्व के राजपूताने में राजा साहब के समान क्या प्रजा और क्या अपनी सन्तान—सभी के लिये स्वास्थ्य रक्षा के साथ ही समुचित शिक्षा दिलाने की सुव्यवस्था करने के उदाहरण बहुत ही स्वल्प थे।

राजा साहब अलसीसर से गोद आकर खेतड़ी की गद्दी के मालिक बने थे, किन्तु स्वर्गीय राजा फतहसिंहजी बहादुर की रानियों और रक्षिताओं—पासवानों तक के प्रति उन्होंने जो भक्ति युक्त व्यवहार—बर्ताव रक्खा, उससे उन्हें यह अनुभव नहीं हो सका कि ये गोद आये हुए पुत्र हैं। अपने अलसीसर के कुटुम्बियों के भी राजा साहब पूर्ण प्रेम-भाजन बने हुए थे। ठाकुर साहबान श्री० गणपतसिंहजी, श्री० जसवंतसिंहजी और श्री० चन्द्रसिंहजी (अलसीसर) को प्रायः अपने पास ही रखते थे। राजा साहब अपनी सदाशयता एवं महानुभावता से न

केवल आत्मीय राज-परिवार, आश्रित कर्मचारीगण और प्रजाजनों के ही, बल्कि बाहरी मित्रों तथा सुपरिचित सज्जनों के भी श्रद्धा-पात्र रहे। वस्तुतः उनका उदार चरित "वसुधैव कुटुम्बकम्" का उज्ज्वल दृष्टान्त था।

हिन्दी-साहित्य-संसार के प्रसिद्ध बाबू बालमुकुन्दजी गुप्त ने अपने सम्पादित 'भारतमित्र' में स्वर्गीय राजाजी बहादुर का चित्र प्रकाशित करने के साथ ही लिखा था:—

"गत ता० १८ जनवरी को शेखावत-वंशज राजा अजित-सिंहजी बहादुर खेतड़ी-नरेश सिकन्दरे की इमारत से गिर कर परलोकगामी हुए। सिकन्दरा आगरे में है। वह अकबर बादशाह की कबर की इमारत है। उसी पर चढ़कर राजा साहब दूर दूर की चीजों को देख रहे थे। एक मीनार से पाँव फिसला। नीचे गिरे और तुरन्त प्राण विसर्जन हुआ। जिन अकबर बादशाह की वह कबर है उन्हीं के पिता हुमायूँ बाद-शाह ने 'दीन पनाह' की सीढ़ियों से गिर कर प्राण दिया था। उसके बाद एक नरेश के गिर कर मरने की घटना यही सुनने में आयी।"

"जयपुर-नरेश स्वर्गवासी महाराज रामसिंहजी को राजाजी से बड़ा स्नेह था। उन्होंने जयपुर बुलाकर राजा साहब को शिक्षा दिलाई। राजा अजितसिंहजी संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी में अच्छी योग्यता रखते थे। वेदान्त के बड़े ही प्रेमी थे। संगीत में भी अच्छा दखल था। उनका राज्य छोटा

होने पर भी वह अपने अच्छे गुणों से बड़े बड़े नरेशों के प्रिय-पात्र बने थे। जोधपुर-नरेश महाराज जसवन्तसिंहजी आपका बड़ा आदर करते थे। जम्मू और काश्मीर नरेश से भी मेल था। महारानी विक्टोरिया की हीरा जुबिली पर आप विलायत जाकर जर्मनी के सम्राट् से मित्रता कर आये थे। दुःख की बात है कि, जयपुर के मृत दीवान बाबू कान्तिचन्द्र मुखर्जी दूसरे योग्य रईसों पर जिस प्रकार प्रसन्न न रह सकते थे वैसे ही इन पर भी न रहते थे। इसी से विलायत से लौटने के बाद राजा अजितसिंहजी को कुछ बिरादरी के झगड़े में फँसना पड़ा था। पर अन्त में उन्हीं की जय हुई। खेतड़ी-नरेश ने दूसरे राजा महाराजों की भाँति बहुत से विवाह नहीं किये। केवल एक ही किया। उनको ८ वर्ष का पुत्र और दो कन्याएँ हैं।"

"राजा साहब की अचानक मृत्यु हुई जिससे उनकी सारी प्रजा शोकाकुल है। खेतड़ी-नरेश दो बार कलकत्ते पधारे थे। एक बार संवत् १९४७ में और दूसरी बार संवत् १९५३ में। यहां उनकी बड़ी खातिरदारी हुई थी।"

"कलकत्ते के मारवाड़ियों को खेतड़ी नरेश के मरने का बड़ा शोक हुआ। उनकी प्रजा में से बहुत लोगों ने मुण्डन कराया। २० जनवरी (सन् १९०१) को मारवाड़ी एसोसियेशन के वार्षिकोत्सव में खेतड़ी-नरेश की प्रजा की राजभक्ति का हमने अपूर्व दृश्य देखा। बा० शिवप्रसादजी झुँझुनूवाला (रायबहादुर) मुण्डन कराये हुए थे, सेठ दुलीचन्दजी ककरानियां भी मुण्डन

कराये हुए थे तथा उन्होंने एक ओजस्विनी वक्तृता द्वारा राजा साहब के लिये बड़ा शोक प्रकट किया। जान पड़ता था राजा साहब की अकाल मृत्यु के लिये लोगों का चित्त बड़ा ही व्यथित है।"

अन्त में भारतमित्र-सम्पादक ने यह लिखते हुए अपना लेख समाप्त किया है—"राजा अजितसिंहजी की जो मूर्त्ति है, वर्त-मान राजा महाराजों में ऐसी सुन्दर क्षत्रिय मूर्ति और दिखलाई नहीं देती। मानों ब्रह्मा ने रूप और क्षत्रियत्व लेकर यह मूर्ति बनायी थी[1]।"

राजा अजीतसिंहजी बहादुर की आकस्मिक मृत्यु के लिये जयपुरेन्द्र श्री महाराजाधिराज सवाई सर माधवसिंहजी बहादुर ने भी शोक के साथ दुःख प्रकट करते हुए यह फरमाया था कि "मेरे राज्य का एक रत्न जाता रहा।"[2] परन्तु स्वार्थी लोगों

---

१ भारतमित्र—कलकत्ता ता० २ फरवरी सन् १९०१ ई० की संख्या।

२ श्रीमान् जयपुर दरबार ने राजा अजीतसिंहजी बहादुर के परलोक-वास की सूचना पाकर निम्नलिखित आशय का एक रोबकार (हुक्म) जारी किया था:—

"मालूम हुआ कि, राजा अजीतसिंहजी बहादुर खेतड़ी के फोत हो गये और उनके पिसर नाबालिग हैं। इस वास्ते यहां से इन्दरसिंहजी

की चालबाजियों से जो वैमनस्य की गांठें घुल गयीं थीं, वे राजा साहब के जीते जी नहीं खुलीं।

जो हो, बुरे कर्म करके कोई सुखी नहीं रह सकता। जिन स्वार्थलोलुप लोगों ने अपनी कल्पित बातों को आधार बनाकर जयपुरेन्द्र श्री० महाराजाधिराज सवाई सर माधवसिंहजी बहादुर और राजा साहब के मनों में वैमनस्य उत्पन्न करने का पाप किया था, वे लोग भी सुखी नहीं रह सके और उन्होंने अपने कर्मों का फल मानसिक सन्ताप की अग्नि में जलते हुए इसी जन्म में पा लिया। अस्तु,

---

पालड़ी व महम्मद हमीदुल्लाखांजी व नाजिमजी शेखावाटी को खेतड़ी भेजा जावे। ये वहां जाकर रानी चाँपावतजी व भले आदमियांन व मुलाजमांन खेतड़ी की तसल्ली व तसफीह करें और मुलाजमान खेतड़ी को हिदायत करें कि अपना अपना काम मुतलिके होशियारी के साथ दयानत व अमानत से देते रहें और नुकते (द्वादशाह) के काम में मदत देवें और ऐसे मौके पर जो रस्म हस्ब रिवाज खेतड़ी अदा होने का कायदा हो, अच्छी तरह से अदा करा देवें। फिर बाद हो जाने नुकते के व अदा हो जाने रस्मियात के इन्दरसिंहजी पालड़ी के व महम्मद हमीदुल्लाखांजी यहाँ आ जावें और नुकते वगैरह का हाल मुफस्सिल मालूम करें और पण्डित हरिनारायणजी नाजिम शेखावाटी अपने काम पर चले जावें। हस्ब कायदे मातमी के लिये पिसर राजा अजीतसिंहजी को यहाँ बुलाया जावे और उनके साथ कामदार वगैरह भले आदमी भी हमराह आवें।"

राजा अजीतसिंहजी बहादुर चले गये और उस लोक को चले गये, जहाँ किसी व्यक्ति की प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता कुछ बना या बिगाड़ नहीं सकती, परन्तु वे जो कीर्तिकर-कार्य कर गये हैं उनके कारण उनका नाम एक प्रजारंजक, सुधार-प्रिय, विद्या-प्रेमी, गुण-ग्राहक आदर्श नरेश के रूप में चिर-काल तक स्मरण किया जायगा।

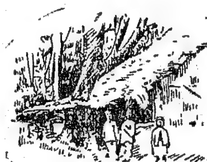
"मूरति से कीरति बड़ी, बिना पंख उड़ जाय,
मूरति कबहु न थिर रहे, कीरति कबहु न जाय।"

कीर्तिर्यस्य स जीवति।

अध्याय ग्यारहवाँ

रानी साहबा श्रीमती चाँपावतजी और उनकी सन्तानें



श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर ने राजस्थान के क्षत्रिय-समाज में प्रचलित बहु-विवाह की हानिकारक कुप्रथा को आश्रय न देकर केवल एक ही विवाह किया था। उनकी रानी साहबा श्रीमती चाँपावतजी पतिव्रता, उदार-हृदया, स्वधर्मपरायणा तेजस्विनी महिला-रत्न थीं। विवाह हो जाने के अनन्तर श्रीमतीजी ने राजा साहब के अनुरूप ही विद्याभ्यास कर लिया था। वे हिन्दी के सिवाय थोड़ी संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू भी जानती थीं। उन्होंने ड्राइंग—पेंटिंग, सीना तथा बुनना आदि कलाओं में अपनी अभिरुचि से विज्ञता सम्पादन की थीं। अपने निजी पुस्तकालय में उन्होंने दो हजार से अधिक उत्तमोत्तम पुस्तकें मंगाकर एकत्र की थीं। लेडी डाक्टर मिस स्वेन के प्रायः १२ वर्ष सेवा में रहने के कारण उन्हें डाक्टरी में भी अच्छा अनुभव हो गया था। वे साधारण बीमारियों को पहचान के एलोपैथिक दवा—मिकश्चर आदि

ठीक तोल और मात्रा से बनाकर दे देती थीं। पुस्तकावलोकन द्वारा अयुर्वेदीय औषध-प्रयोग विज्ञान में भी उन्होंने व्युत्पन्नता लाभ की थीं। दवाओं के बॉक्स उनके साथ-साथ रहते थे।

स्वास्थ्य-रक्षा के नियमों की रानी साहबा कभी अवहेलना नहीं करती थीं। स्वच्छ वायु और विशुद्ध (गर्म और फिल्टर किया हुआ) जल आदि का पूरा विचार रखती थीं। जादू-टोना या भूत-प्रेतादि की वाधाओं पर विदूषी होने के कारण उनका विलकुल विश्वास नहीं था। परन्तु अपने धर्म में उनकी पूरी श्रद्धा थी। प्राचीन मर्यादा का पालन करने में वे इतनी दृढ़ थीं कि खेतड़ी से बाहर प्रवास में भी उन्होंने पर्दे की पावंदी बड़ी कड़ाई के साथ रक्खीं। अपनी सन्तानों को सच्चरित्र बनाने के कर्तव्य में श्रीमती रानी साहबा चाँपावतजी स्नेह एवं यत्न के साथ सदा तत्पर रहीं।

हमारे राज-दम्पती का गार्हस्थ्य-जीवन सब तरह से सुखमय था। उनके तीन सन्तानें हुईं—दो पुत्रियाँ और एक पुत्र, जिनका परिचय यहाँ क्रमानुसार दिया जाता हैः—

राजकुमारी श्रीमती सूर्यकुमारीजी

बड़ी राजकुमारी श्रीमती सूर्यकुमारीजी का जन्म सं० १९३९ भाद्र शुक्ला ४ को हुआ था। विवाह से पहिले और पीछे तक भी अपनी प्रिय पुत्री को शिक्षिता बनाने की ओर राजा अजीत-

सिंहजी बहादुर ने विशेष लक्ष्य रक्खा। आरंभ में हिन्दी की पूर्ण शिक्षा दिलाने के सिवाय संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू भी पढ़ायीं। अंग्रेजी भाषा और बाजा सिखाने के लिये एक योरोपियन महिला मिस ड्राइवर शिक्षिका नियुक्त की गयी थी। ड्राइंग—पेंटिंग की शिक्षा श्रीमती सूर्यकुमारीजी को विवाह के बाद मिस एटकिन्सन से दिलायी गयी थी। इसके अतिरिक्त रागरागिनियों की पहचान तथा देशी संगीत हारमोनियम, सितार, मृदंग इत्यादि का भी बहुत अच्छा अभ्यास कराया गया था। सीना, बुनना तथा कसीदे के काम में भी राजकुमारीजी ने निपुणता प्राप्त की थीं। उनकी प्रकृति ही अध्ययनशील थी। वे सदा कुछ न कुछ सीखती ही रहती थीं। उनका यह क्रम जीवन पर्यन्त रहा। उस समय राजपूताने के राजघरानों में अपनी पुत्रियों को इतनी शिक्षिता बनाना नयी बात थी।

श्रीमती सूर्यकुमारीजी का विवाह राजा साहब ने संवत् १६५१ में शाहपुरा (राजपूताना) के वर्तमान श्रीमान् राजाधिराज (उस समय युवराज) श्री० उम्मेदसिंहजी साहब [1]

---

१ राजाधिराज श्री० उम्मेदसिंहजी साहब का जन्म संवत् १९३४ वि० (सन् १८७७ ई०) में हुआ। आपने मेयो कालेज अजमेर में शिक्षा पायी है। उक्त कालेज के पुराने विद्यार्थी-सङ्घ के आप मंत्री रहे हैं। अपने पिता के जीवनकाल में आपने "मुसाहब आला" की हैसियत से शासन-कार्य का संचालन योग्यता पूर्वक किया। सन् १८९७ ई० में आपने श्री

आदर्श नरेश ५८



श्री० राजाधिराज उम्मेदसिंहजी साहब, शाहपुरा-नरेश

के साथ बड़े उत्साह एवं समारोह से किया था। उस अवसर पर बरात के सिवाय शेखावाटी के प्रायः सभी सरदार तथा अन्य कितने ही रईस राजा साहब के मेहमान बन कर खेतड़ी पधारे थे। बरात की खातिरदारी करने में उन्होंने अपनी उदारता की हद कर दी थी। शेखावाटी में वह समारोह अभूतपूर्व था और उससे खेतड़ी की कीर्ति राजपूताना भर में फैल गयी थी।

राजा अजीतसिंहजी बहादुर के साथ प्रथम वार विलायत-यात्रा की थी। आप पर राजा साहब का अत्यधिक स्नेह था। उनकी अस्वस्थावस्था में भी प्रायः आप साथ रहे। आप अपने पिता राजाधिराज सर नाहरसिंहजी साहब के परलोकवास के अनन्तर आषाढ़ शुक्ला ७ रविवार संवत् १९८९ तदनुसार ता० १० जुलाई सन् १९३२ ई० को शाहपुरा की राजगद्दी पर बैठे। अपने राज्याभिषेक के समय प्राचीन पद्धति के अनुसार आपने प्रजा एवं धर्म का संरक्षण करने का संकल्प किया था। क्षत्रियों की उन्नति के उद्देश्य से संस्थापित क्षत्रिय महासभा के आप एक मुख्य स्तम्भ हैं। उसके सभापति-पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। सङ्गठन के प्रवल समर्थक और हिन्दू धर्म के आप एक माने हुए संरक्षक हैं। आपके परलोकवासी पिता आर्य-समाज के संस्थापक श्री० स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज के कृपापात्र प्रधान शिष्य थे। आप भी आर्यसमाज के अनुयायी भक्त हैं। हिन्दी साहित्य के प्रचार में आपकी सदा रुचि रहती है।

खेद है कि, गुणवती सुशीला राजकुमारी श्रीमती सूर्य-कुमारीजी ने उम्र अधिक नहीं पायी और पिता, माता एवं अन्त में अपने एक मात्र स्नेहाधार सहोदर भाई के चिर वियोग का असहनीय दुःख सहन करने के बाद वे क्षय-रोगाक्रान्त हो श्रावण शुक्ला ७ संवत् १९७० वि० को स्वर्गवासिनी हो गयीं।

श्रीमती सूर्यकुमारीजी का जीवन धर्म-भाव-युक्त दया, उदारता और परोपकारमय था। हिन्दी के प्रति श्रीमती का कितना अनुराग था, यह जानने के लिये उनका हिन्दी पुस्तकों का संग्रह पर्याप्त है, जो शाहपुरा के राज-महल में सुरक्षित है। वे हिन्दी लिखती भी सुन्दर थीं। उनके बनाये हुए बहु रंग-रञ्जित चित्र (आइल पेंटिंग) और दस्तकारी की चीजें उनकी कुशलता का परिचय दे रही हैं। पितृ-गृह में स्वामी विवेका-नन्दजी के उपदेशों को सुनने और पीछे उनके व्याख्यानों तथा लेखों को पढ़ने के बाद श्रीमती सूर्यकुमारीजी की भक्ति अद्वैत वेदान्त पर जम गयी थी। उनकी कोई सन्तान जीवित नहीं रही। देहान्त होने के पूर्व जब वे मरणासन्न थीं, तब अपने पतिदेव को वंशरक्षा की भावना से द्वितीय विवाह करने की अन्तिम अनु-मति दे गयी थीं। तदनुसार ही राजाधिराज श्री उम्मेदसिंहजी साहब ने रलायता (किशनगढ़) के राजा समर्थसिंहजी राठोड़ की पुत्री के साथ पौष वदि ९ संवत् १९७१ को अपना दूसरा विवाह किया। इनके गर्भ से श्री राजकुमार सुदर्शनदेवजी और दो राजकुमारियों (श्रीमती चन्द्रप्रभा एवं श्रीमती ज्योति-

प्रभा) का जन्म हुआ। श्रीमान् राजकुमार सुदर्शनदेवजी का विवाह ध्रांगधड़ा के हिज हाईनेस महाराजा श्री घनश्यामसिंहजी बहादुर की पुत्री के साथ हुआ है।

कई वर्ष हुए श्रीमती सूर्यकुमारीजी के स्मारक में राजाधिराज श्री उम्मेदसिंहजी साहब ने एक लाख रुपये उत्सर्ग किये थे। उन रुपयों के व्याज की आमदनी में से १७ हजार रुपये 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' को प्रदान कर आपने 'सूर्यकुमारी पुस्तक-माला' [1] के प्रकाशन की व्यवस्था करायी। इस व्यवस्था के

---

१ स्वर्गीय पण्डित चन्द्रधरजी शर्मा गुलेरी बी० ए० की सम्मति के अनुसार काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा सूर्यकुमारी पुस्तक-माला के प्रकाशन की व्यवस्था हुई थी और पुस्तक-माला के सम्पादन का भार भी पण्डित गुलेरीजी ने उत्साह पूर्वक स्वयं ग्रहण किया था। पुस्तक-माला के आरंभिक परिचय में वे लिखते हैं :—

................"श्रीमती सूर्यकुमारीजी बहुत शिक्षिता थीं। उनका अध्ययन बहुत विस्तृत था। उनका हिन्दी पुस्तकालय परिपूर्ण था। हिन्दी इतनी अच्छी लिखती थीं और अक्षर इतने सुन्दर होते थे कि देखनेवाला चमत्कृत रह जाय। स्वर्गवास के कुछ समय पूर्व श्रीमती ने कहा था कि, स्वामी विवेकानन्दजी के सब ग्रन्थों, व्याख्यानों और लेखों का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद मैं छपवाऊंगी। वाल्यकाल से ही स्वामीजी के लेखों और अध्यात्म, विशेषतः अद्वैत वेदान्त की ओर श्रीमती की रुचि थी। श्रीमती के निर्देशानुसार इसका कार्यक्रम बाँधा गया। साथ ही श्रीमती ने यह

अनुसार 'सूर्यकुमारी पुस्तक-माला' में कई एक उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी और हो रही हैं।

इसके अतिरिक्त श्री राजाधिराज साहब ने श्रीमती सूर्य-कुमारीजी की स्मृति को चिरस्थायिनी बनाने के सदुद्देश्य से ३० हजार रुपये गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी (हरिद्वार) को सूर्यकुमारी-हिन्दी-गद्दी (Chair) के लिये और ५ हजार रुपये सूर्यकुमारी-निधि की स्थापना पूर्वक सूर्यकुमारी ग्रन्थावली के प्रकाशन-प्रबन्ध के लिये दिये हैं और शाहपुरा के दरबार हाई

इच्छा प्रकट की कि इस सम्बन्ध में हिन्दी में उत्तमोत्तम ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये एक अक्षय नीवी की व्यवस्था का भी सूत्रपात हो जाय। इसका व्यवस्था-पत्र बनते न बनते श्रीमती का स्वर्गवास हो गया।

राजकुमार श्री उमेदसिंहजी ने श्रीमती की अंतिम कामना के अनुसार लगभग एक लाख रुपया श्रीमती के इसी संकल्प की पूर्ति के लिये विनियोग किया। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के द्वारा इस ग्रन्थ-माला के प्रकाशन की व्यवस्था हुई है। स्वामी विवेकानन्दजी के यावत् निबन्धों के अतिरिक्त और भी उत्तमोत्तम ग्रन्थ इस ग्रन्थ-माला में छापे जायेंगे और लागत से कुछ ही अधिक मूल्य पर सर्वसाधारण के लिये सुलभ होंगे। इस ग्रन्थ-माला की बिक्री की आय इसी अक्षय नीवी में जोड़ दी जायगी। यों श्रीमती सूर्यकुमारी तथा श्रीमान् उमेदसिंहजी के पुण्य और यश की निरंतर वृद्धि होगी और हिन्दी भाषा का अभ्युदय तथा उसके पाठकों का ज्ञान-लाभ।

—श्री चन्द्रधर शर्मा।

स्कूल में "सूर्यकुमारी विज्ञान-भवन" की स्थापना की है, जो श्रीमती के जीवन-काल की प्रिय अभिलाषा थी[१]।

राजकुमारी श्रीमती चन्द्रकुमारीजी

श्री राजा अजीतसिंहजी बहादुर की द्वितीय सन्तान श्रीमती चन्द्रकुमारीजी का जन्म पौष शुक्ला १५ संवत् १९४५ को हुआ था। उनका लालन-पालन भी पिता-माता के संरक्षण में बड़े लाड़-प्यार से हुआ। विशेषकर अपने जन्म के चतुर्थ वर्ष में ही सहोदर राजकुमार श्री जयसिंहजी का जन्म हो जाने से श्रीमती चन्द्रकुमारीजी बड़ी भाग्यशालिनी समझी गयीं। उनका सम्बन्ध राजा साहब ने स्वयं देवलिया—प्रतापगढ़ के हिज हाईनेस महारावत सर रघुनाथसिंहजी साहब बहादुर के युवराज श्रीमान महाराजकुमार मानसिंहजी साहब के साथ कर दिया था, किन्तु काल-वश होजाने के कारण कन्या-दान अपने हाथ से करने का वे सुयोग न पा सके। राजा साहब के स्वर्गवास के बाद संवत् १९५६ माघ कृष्णा ५ को श्रीमती चन्द्रकुमारीजी का विवाह सम्पन्न हुआ।

---

१ राजपूताने का इतिहास (श्री० जगदीशसिंह गहलोत) पहला भाग पृष्ठ ५७०।

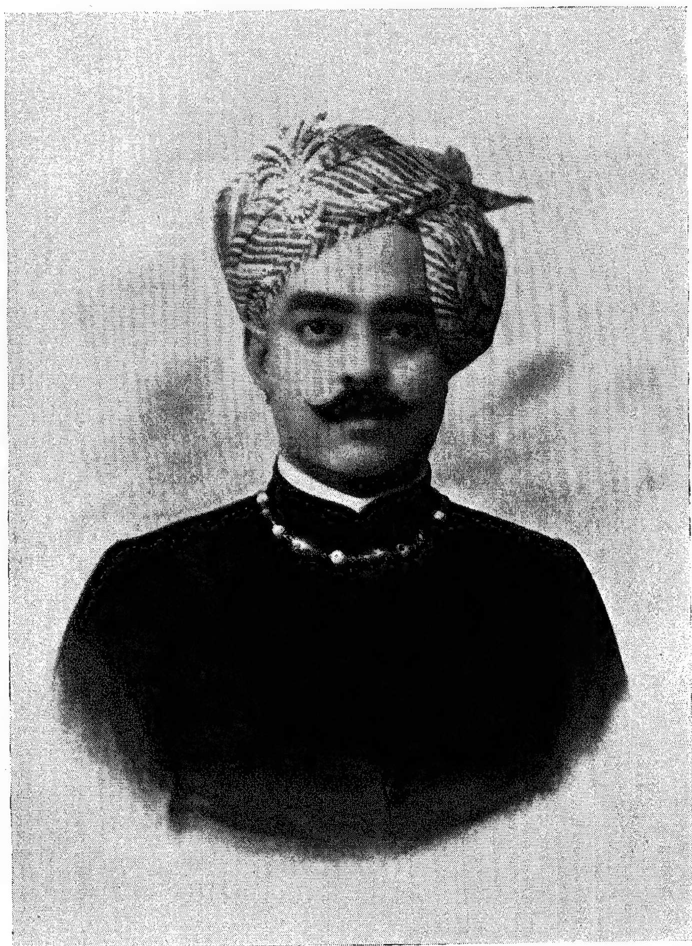
श्रीमती चन्द्रकुमारीजी भी अपनी बड़ी बहिन श्रीमती सूर्यकुमारीजी की भाँति ही परम विदुषी, दयावती एवं स्वधर्म-निष्ठा हैं। धार्मिक ग्रन्थों को बड़े अनुराग से पढ़ती हैं और अच्छी हिन्दी लिखती हैं।

बड़े ही परिताप का विषय है कि सुयोग्य युवराज महाराज कुमार श्री० मानसिंहजी साहब [१] का गत संवत् १९७५ (सन् १९१८ ई०) में इनफ्लुएञ्जा रोग के आक्रमण से असामयिक स्वर्गवास हो गया। भ्रातृ-वियोग की असह्य ज्वाला से श्रीमती चन्द्रकुमारीजी का हृदय उत्तप्त था ही कि, वैधव्य का वज्रादधिक दुःख भी उन पर टूट पड़ा।

---

१ प्रतापगढ़ के युवराज महाराजकुमार श्री० मानसिंहजी साहब का जन्म चैत्र शुक्ला १० संवत् १९४२ (सन् १८८५ ई०) को हुआ था। आप 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की कहावत को बचपन से ही चरितार्थ करने लगे थे। आपकी शिक्षा मेयो कालेज में हुई थी, जहाँ आपने प्रेम-पूरित व्यवहार से कालेज के सहपाठी विद्यार्थियों और अध्यापकों को अपने प्रेम-बन्धन में बाँध लिया था। आप कालेज में राइडिंग, क्रिकेट, फूट-बॉल आदि खेलों में सदा अग्रणी रहते थे। कालेज छोड़ने के बाद आपने पोलिटिकल एजेंट होम साहब (A. T. Home Esqr.) से सेटलमेंट का काम सीखा और अनन्तर प्रतापगढ़ रहने लगे थे। आपकी योग्यता देख कर आपके पिताजी ने आपको राज्य-सञ्चालन-भार दे दिया था। आपने प्रायः १३ वर्ष तक राज्य-शासन बड़ी उतमता से किया। राज्य के सभी

आदर्श नरेश ९८



श्री० महाराजकुमार मानसिंहजी साहब, प्रतापगढ़ (राजपूताना)

उनके एकमात्र आशास्थल—प्राणाधार पुत्र प्रतापगढ़ के वर्तमान हिज हाईनेस महारावत श्रीमान् सर रामसिंहजी साहब बहादुर की अवस्था उस समय दश वर्ष की थी। आपको देखकर ही श्रीमती चन्द्रकुमारीजी ने अपने हृदय को सान्त्वना दी। आपका जन्म चैत्र शुक्ला ११ रविबार संवत् १९६५ (सन् १९०८ ई०) को अपने मामा साहब श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर की नाबालिगी के समय खेतड़ी में हुआ था। आप संवत् १९७६ (सन् १९१९ ई०) में मेयो कालेज (अजमेर) में प्रविष्ठ हुए। शिक्षा-प्राप्ति के समय आप सदा सगौरव उत्तीर्ण होते रहे। सन् १९२८ ई० में आपने 'डिप्लोमा' परीक्षा पास की। आपके गार्डियन कर्नल ट्विस (Col. Twis) और

विभागों को समुन्नत किया। श्री महाराजकुमार साहब बड़े तेजस्वी, प्रतिभावान एवं शौर्यशाली थे। अपने सुयोग्य श्वसुर की तरह आप में भी क्षत्रिय नरेशोचित अनेक गुण विद्यमान थे। अच्छे शिकारी, घुड़सवार, साहसी, विद्यारसिक, विद्वानों की कद्र करनेवाले तथा साहित्य और सङ्गीत के मर्मज्ञ थे। आपको भारतीयता एवं भारतीय संस्कृति का बड़ा अभिमान था। सन् १९१२ ई० में मेयो कालेज में दी हुई अपनी वक्तृता में भारत के बड़े लाट लार्ड हार्डिंज ने कालेज की प्रतिष्ठा बढ़ानेवाले सुयोग्य प्रसिद्ध राजकुमार के रूप में आपका नामोल्लेख किया था। आप हृदय के उदार और दानी थे, किन्तु 'कालस्य कुटिला गतिः'। स्वर्गवास के समय आपकी उम्र केवल ३२ वर्ष की थी।

ट्यूटर मौलवी गफ्फार सैयद साहब रहे। आप अपने पितामह हिज हाईनेस श्री० महारावत सर रघुनाथसिंहजी साहब बहादुर के स्वर्गवास के अनन्तर ता० ८ जनवरी सन् १६२६ ई० को प्रतापगढ़ के राज सिंहासन पर विराजमान हुए।

आप अपने पिता के अनुरूप ही गुणों से विभूषित, शिक्षित, शान्त, प्रियदर्शी, मृगयानुरागी और अंग्रेजी खेलों में प्रवीण नरेश हैं। आपको यदि अपने पिता की छत्र-छाया में उनके उच्च विचारानुसार अधिक शिक्षा पाने का अवसर मिलता तो आप निस्सन्देह शिक्षा-सम्पादन में बहुत आगे बढ़ते। आपके प्रजा-प्रेम का परिचय समय समय पर दिये हुए आपके भाषणों से मिलता है। विगत पूर्व वर्ष आपके राज्यवर्ती श्री शान्तिनाथ के मेले में समवेत भारतवर्ष के विभिन्न और सुदूरवर्ती स्थानों के जैन मुनियों, श्रावकों और विशिष्ट सज्जनों ने अभिनन्दन-पत्र-प्रदान पूर्वक आपके प्रति अपना सम्मान प्रकट किया था। आपने अपनी दयालुता से बलिदान बन्द कर अहिंसा प्रचार का पुण्य लाभ किया है। शिक्षा का आपको बड़ा ध्यान है। राजकीय हाई स्कूल में साइन्स के अतिरिक्त आपकी आज्ञा के अनुसार गृह-शिल्प-शिक्षण की व्यवस्था की गयी है। कन्याओं के लिये 'श्री युवराज मानसिंह कन्या-पाठशाला' चल रही है। राजपूत कन्याओं के लिये छात्रावास की दर्शनीय इमारत बनवायी है। अस्पताल और देशी दवाखाना तो था ही गत पूर्व वर्ष आपने स्त्रियों के लाभार्थ "भुवनेश्वरी देवी

जनाना अस्पताल" की स्थापना करायी है। यह अस्पताल आपने अपनी विमाता श्रीमती भुवनेश्वरी देवीजी की, जो टेहरी (गढ़वाल) * के स्वर्गीय महाराजा कीर्तिशाहजी साहब की पुत्री थीं और जिनका सन् १९१४ ई० में परलोकवास हो गया, स्मृति में बनवाया है। श्रीमती भुवनेश्वरी देवीजी के साथ श्रीमान् महाराजकुमार मानसिंहजी साहब ने अपना दूसरा विवाह संवत् १९६७ में किया था। उनके गर्भ से एकमात्र राजकुमारी श्रीमती मोहनकुमारीजी का जन्म हुआ। श्रीमती मोहनकुमारीजी हिन्दी और अंग्रेजी—दोनों भाषाओं में अच्छी योग्यता रखने के साथ दस्तकारी के कार्य में भी निपुण हैं। उनका विवाह सीतामऊ (मध्यभारत) के प्रसिद्ध विद्वान् श्रीमान् युवराज डाक्टर रघुवीरसिंहजी साहब, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी-लिट् के साथ आपने संवत् १९८६ में समारोह पूर्वक किया।

* टेहरी राज्य का क्षेत्रफल ४१८० वर्गमील है। यह राज्य पश्चिमोत्तर प्रदेश के गढ़वाल जिले में अवस्थित है। श्रीनगर को अपनी राजधानी बना कर राजा अजयपाल ने गढ़वाल राज्य की स्थापना की थी। सन् १८०३ ई० में राजा अजयपाल के वंशज राजा मानशाह पर आक्रमण कर नेपालियों ने गढ़वाल ले लिया। सन् १८१५ ई० में अंग्रेजी सरकार द्वारा नेपालियों को पराजित होना पड़ा और गढ़वाल प्रदेश के दो विभाग हुए, जिनमें से एक विभाग अलकनन्दा की घाटी का प्रदेश अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया और दूसरा भाग टेहरी राज्य के रूप में राजा मानशाह के पुत्र सुदर्शनशाह को दे दिया गया। श्री० महाराजा कीर्तिशाहजी, सुदर्शनशाह के पुत्र थे। उनके

आपकी दूसरी विमाता ध्रांगधरा (काठियावाड़) * के हिज हाईनेस श्रीमान् मेजर महाराना सर घनश्यामसिंहजी साहब बहादुर जी० सी० आई० ई०, के० सी० एस० आई० की गुणवती बहिन हैं। अपना तीसरा विवाह श्रीमान् महाराजकुमार मानसिंहजी साहब ने संवत् १९७० में इनके साथ किया था। इनके उत्तराधिकारी वर्तमान टेहरी-नरेश श्रीमान् हिजहाईनेस कैप्टेन महाराजा नरेन्द्रशाहजी साहब सी० एस० आई० हैं। आप प्रमार (पँवार) क्षत्रिय हैं।

* ध्रांगधरा काठियावाड़ की प्रसिद्ध रियासतों में से है। इस राज्य का क्षेत्रफल ११५६ वर्गमील है। यहाँ का राजवंश झाला राजपूतों की मकवाना शाखा में है। आरम्भ में यह वंश सिन्ध में राज्य करता था। सिन्ध से वीरवर केशरजी के तीन पुत्र हरपालजी, विजयपालजी और संताजी गुजरात में चले गये। इनमें हरपालजी की राजधानी 'पटादी' हुई। हरपालजी के वंशज राजोधरजी ने सन् १४८२ ई० में हलवद गांव की नींव डाली। राजोधरजी के पौत्र मानसिंहजी से खानखाना की अधीनता में बादशाही सेना ने लड़ाई लड़ कर अपनी वश्यता स्वीकार करायी। मानसिंहजी की सन् १५६४ ई० में मृत्यु हुई। मानसिंहजी के वंशजों का जीवन गजसिंहजी के समय तक बड़ी विपत्तियों में व्यतीत हुआ। गजसिंहजी का देहान्त सन् १७८२ ई० में हुआ। इनके पुत्र जसवंतसिंहजी ने ध्रांगधरा को अपनी राजधानी बनाया। उनका परलोकवास सन् १८०१ ई० में होने के अनन्तर क्रमानुसार रायसिंहजी, अमरसिंहजी, रणमलसिंहजी, मानसिंहजी और अजीतसिंहजी गद्दीस्थ हुए। अजीतसिंहजी के पश्चात् वर्त्तमान हिजहाईनेस महाराना श्रीमान् सर घनश्यामसिंहजी साहब बहादुर ध्रांगधरा की राजगद्दी की शोभा बढ़ा रहे हैं।

कोई संतान नहीं हुई। ये भी आपके प्रति मातृवत् स्नेह रखती हैं और इसी प्रकार आपका उनके प्रति भक्तिपूर्ण आदर-भाव है।

श्रीमान् महारावत साहब बड़े उन्नतिशील और सुधारप्रिय हैं। आपके आदेश से म्युनिसिपल कौंसिल और विलेज बोर्ड्स स्थापित किये गये हैं। कृषि-सुधार एवं ग्रामोद्धार का प्रशंसनीय कार्य हो रहा है। राज्य के सभी विभागों को यथेष्ट तरक्की दी गयी है। श्रीमान् अपनी विदुषी राज-माता (श्रीमती चन्द्रकुमारीजी) के आज्ञानुवर्ती भक्त एवं प्रजाप्रिय नरेश हैं।

आपका पहला विवाह संवत् १९८१ (सन् १९२४ ई०) वैशाख शुक्ला १० को सीकर (शेखावाटी—जयपुर) के स्वर्गीय राव राजा माधवसिंहजी बहादुर की बड़ी पुत्री के साथ हुआ, जिनका पौष शुक्ला १४ संवत् १९८७ को देहान्त हो गया। इनसे एक राजकुमारी हैं। इसके बाद आपने अपना दूसरा विवाह चैत्र शुक्ला १५ संवत् १९८९ को डुमरांव (विहार) के ताल्लुकेदार स्वर्गीय श्री० महाराजा केशवप्रसादसिंहजी साहब की पुत्री के साथ किया. जिनसे चार राजकुमारियां हैं। आपका तीसरा विवाह ध्रांगधरा-नरेश श्रीमान हिजहाईनेस महाराना सर घनश्यामसिंहजी साहब बहादुर की पुत्री के साथ ता० १६ मई सन् १९३४ ई० (द्वितीय वैशाख शुक्ला ३) को सम्पन्न हुआ। इन श्रीमती महारानी साहबा के गर्भ से प्रथम एक राजकुमारी जन्म ग्रहण कर चुकी थी। चिर-प्रतीक्षा के पश्चात गत ता० १७ मार्च सन् १९४० ई० को श्री० महाराजकुमार

साहब का जन्म हुआ है। जगन्नियंता जगदीश्वर इनको दीर्घायु कर सुयोग्य एवं यशस्वी बनावे।

श्री० महारावत साहब को सरकार ने 'सर' तथा के० सी० एस० आई० की पदवी प्रदान कर सम्मानित किया है। आप प्रिंसेस् चेम्बर (नरेन्द्र-मण्डल) के सदस्य हैं। श्री पण्डित चन्द्रधरजी शर्मा गुलेरी के शब्दों में आपसे आपके मातामह राजा श्री० अजीतसिंहजी का कुल प्रजावान् है।

ठिकाना बिसाऊ की माजी साहबा श्रीमती चाँपावतजी * (खेतड़ी की श्रीमती रानी साहबा चाँपावतजी की छोटी बहिन) और उनके पुत्र लेफ्टिनेंट कर्नल रावल श्री० विशनसिंहजी साहब ने श्रीमती चन्द्रकुमारीजी के साथ अपना प्रेम-व्यवहार निजी पुत्री एवं सगी बहिन के समान रक्खा है। श्री० राजा जयसिंहजी साहब का स्वर्गवास हो जाने के बाद सन् १९११ ई०

* बिसाऊ की श्रीमती माजी साहबा चाँपावतजी बुद्धिमती, साहस-सम्पन्ना, धैर्यशालिनी और शासन-कार्य-दक्षा थीं। छोटी उम्र में ही उन्हें वैधव्य का दारुण दुःख सहन करना पड़ा था। उस समय वर्तमान बिसाऊ-चीफ की उम्र दो वर्ष से भी कम थी। उस दशा में उन्होंने अपनी कार्य-कुशलता से बिसाऊ ठिकाने का कार्य बड़ी उत्तमता से सञ्चालन किया। श्री० बिसाऊ-चीफ की सच्चरित्रता उन्हीं की शिक्षा का फल है। श्रीमती चाँपावतजी ने अपनी बड़ी बहिन की सन्तानों के प्रति माता की तरह ही सदा प्रेम और बरताव रक्खा और उसी प्रकार इन तीनों भाई-बहिनों ने भी उनका मातृवत् समादर किया। संवत् १९७४ फाल्गुण शुक्ला ६ को श्रीमती चाँपावतजी का स्वर्गवास हुआ।



श्री० हिज-हाईनेस महारावत
सर रामसिंहजी साहब बहादुर, के० सी० एस० आई० प्रतापगढ़-नरेश

में श्रीमती चन्द्रकुमारीजी को खांसी और जीर्णज्वर की शिकायत रहने लगी थी, उस समय श्री० बिसाऊ-चीफ ने ६ महीने आपको जयपुर रख कर हकीम रामप्रसादजी से इलाज कराया था। इसके पश्चात् जब वे आपको पहुँचाने के लिये साथ प्रतापगढ़ पधारे, तबसे उनकी श्री महाराजकुमार मानसिंहजी साहब से भी विशेष प्रीति हो गयी थी। श्री महाराजकुमार साहब के असामयिक स्वर्गवास की अकाण्डापतित विपत्ति के बाद तो श्री० बिसाऊ-चीफ ने अपनी मौसेरी बहिन श्रीमंती चन्द्रकुमारीजी की चिन्ता अधिक तत्परता के साथ रक्खी और यहां तक कि, वे ही शोक का क्लेश भुलाने के लिये उपस्थित होकर उन्हें प्रतापगढ़ से बिसाऊ लिवा ले गये थे। वर्तमान हिज हाईनेस श्री० महारावत साहब की शिक्षा-प्राप्ति की अवधि में मेयो कालेज में उनकी सँभाल और देख-रेख वे हृदय की लगन के साथ करते रहे और जब तक उनका विवाह नहीं हुआ, तब तक श्रीमती चन्द्रकुमारीजी साहबा को वर्ष में एक बार बिसाऊ बुलाने का उन्होंने नियम रक्खा। प्रतापगढ़-नरेश का सीकरवाला पहला विवाह-सम्बन्ध कराने में भी श्रीमान् बिसाऊ-चीफ का ही उद्योग एवं आग्रह था। उस विवाह के उपलक्ष में उन्होंने राजपूताने की रीति के अनुसार प्रशंसनीय “भात” (माहेरा) देकर श्रीमती चन्द्रकुमारीजी के हृदय में सहोदर भाई का दुःखजनक अभाव अखरने नहीं दिया,—यद्यपि यह कर्तव्य खेतड़ी का था। अब भी केवल खास-खास मौकों पर ही नहीं, बल्कि

जब आवश्यकतानुसार श्रीमती चन्द्रकुमारीजी बुलाती हैं, तभी अपने सब काम छोड़ कर वे तुरंत प्रतापगढ़ पहुँचे रहते हैं। गत २६।३० वर्षों से वही प्रेम-भाव है। श्रीमती चन्द्रकुमारीजी भी लेफ्टिनेंट कर्नल रावल श्री० बिशनसिंहजी साहब (बिसाऊ-चीफ) को अपना सहोदर-प्रतिम स्नेहास्पद भाई समझती हैं।

श्रीमान् राजाधिराज उम्मेदसिंहजी साहब शाहपुराधीश श्रीमती सूर्यकुमारीजी का स्वर्गवास हो जाने पर भी श्रीमती चन्द्रकुमारीजी के प्रति पूर्ववत् स्नेह-युक्त बर्ताव रखते हैं। स्वर्गीय श्री महाराजकुमार साहब (प्रतापगढ़) के साथ भी आपका पूर्ण सौहार्द रहा। वर्तमान महारावत साहब की नाबालिगी के समय से अब तक उनकी शिक्षा आदि के सम्बन्ध में आप सदा उचित परामर्श देते रहे हैं और श्री महारावत साहब से आपका बड़ा प्रेम है।

इसी प्रकार श्रीमती चन्द्रकुमारीजी साहबा के प्रति रोहेट (जोधपुर—मारवाड़) के लेफ्टिनेण्ट कर्नल राव बहादुर श्री ठा० दलपतसिंहजी साहब भी अपने भ्रातृ-भाव को निभाते आ रहे हैं।

श्रीमती चन्द्रकुमारीजी का कृतज्ञ हृदय यह मान रहा है कि, इन सब आत्मीय जनों के ममत्व, प्रेम, सच्ची सहानुभूति एवं सहायता से ही पिछले दुःख के दिन व्यतीत हुए हैं।



श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर, खेतड़ी

श्री राजा जयसिंहजी बहादुर

स्वर्गीय राजा अजीतसिंहजी बहादुर की तीसरी और अन्तिम सन्तान—श्री० जयसिंहजी थे, जिनका जन्म संवत् १९४९ माघ शुक्ला ९ को आगरे में हुआ था [१]। श्रीमती चन्द्र-कुमारीजी के जन्म के अनन्तर प्रजा यह विशेष रूप से मनाने

---

१ अपने राजकुमार के शुभ जन्मोपलक्ष में राजाजी बहादुर ने आगरे में सिकन्दरे के पास से यमुना के तटवर्ती कैलाश देवालय तक एक प्रायः २ मील लम्बी सड़क बनवायी थी। यह सड़क जहां से आरंभ होती है, वहां एक स्तम्भ पर इस प्रकार अङ्कित है:—

॥ श्री रामजी ॥

यह श्री कैलाश की सड़क श्रीमान राजा अजीत सिंहजी साहब बहादुर बालिये खेतड़ी ने अपने राज-कुमार जयसिंहजी का जन्म संवत् १९४९ में आगरे में हुआ, जिसकी खुशी में बनवाई मारफत रामप्रसाद आलमगंजवाले के।

This Kailash Road is constructed by Raja Ajit Singhji Sahib Bahadur of Khetri, to celebrate the birth of his son Rajkumar Jai Singhji who was born at Agra in 1893.

लगी थी कि, राजकुमार का जन्म हो। राजा साहब का चित्त भी वंश-रक्षक पुत्र के बिना कुछ खिन्न सा रहता था। विशेष कर इस कारण से कि उनके हितैषी उन्हें दूसरा विवाह कर लेने के लिये दबाते थे। एक दिन तो एक आत्मीय ने यह प्रस्ताव आग्रह पूर्वक किया था कि आप दूसरा विवाह अवश्य करें, क्योंकि, इन रानी के गर्भ से पुत्र होने की आशा नहीं है। परन्तु राजा साहब ने बड़े मीठे शब्दों में उन सज्जन के प्रस्ताव का प्रतिबाद करते हुए स्पष्ट कह दिया था कि, मैं बहु-विवाह का पक्षपाती नहीं हूँ। इसके अतिरिक्त पुत्र होना न होना प्रारब्ध संयोग पर निर्भर है। ईश्वर की कृपा और देव-द्विजों के आशीर्वाद से श्रीमान् के लिये पुत्र मुख-दर्शन का आनन्ददायक अवसर उपस्थित होते ही खेतड़ी की प्रजा तथा अन्य हितैषी शुभचिन्तक मित्रों के हर्ष का पारावार न रहा। राजकुमार श्री० जयसिंहजी के जन्म का समाचार आगरे से तार द्वारा खेतड़ी पहुँचा था। उस समय नित्योत्सव से खेतड़ी मुखरित हो उठी।

केवल खेतड़ी में ही नहीं, स्थानान्तर में भी जहाँ राजा साहब के प्रतिष्ठित प्रजाजन, अनुरागी मित्र और पुरस्कृत गुणी-गण थे, वहीं उन्होंने उत्सव मनाकर अपना आनन्द प्रकाश किया और राजकुमार के दीर्घजीवी होने की कामना की। राजा साहब के अन्यतम सेवक पण्डित लक्ष्मीनारायणजी लिखते हैं:—

"मैं कार्यवश बम्बई गया हुआ था। अचानक मुझे राज-

कुमार के जन्म का समाचार तार द्वारा मिला। बम्बई में जो हर्ष मनाया गया, उसका उल्लेख करने की तो आवश्यकता नहीं परन्तु दूसरे दिन सायंकाल की ट्रेन से जब मैंने आगरे के लिये प्रस्थान किया, तब रास्ते में अहमदाबाद, खैराडी, खारची और अजमेर आदि ष्टेशनों पर मैंने उत्सव मनाये जाते देख कर आश्चर्य पूर्वक ज्ञात किया कि, खेतड़ी नरेश के राजकुमार के जन्म की खुशी मनायी जा रही है।"

एक महीने बाद राजाजी बहादुर सपरिवार आगरे से खेतड़ी पधारे और राजकुमार के जन्म का महोत्सव विशेष उत्साह से मनाने का आयोजन किया गया। शेखावाटी में कभी ऐसा समारोह दृष्टि-पथ में नहीं आया। श्री० राजा अजीतसिंहजी साहब ने उस समय अपना खजाना ही खोल दिया था। उस अवसर पर सीकर, नवलगढ़, मंडावा, बिसाऊ, सूरजगढ़, मलसीसर, अलसीसर आदि संस्थानों के प्रायः सभी प्रमुख शेखावत सरदारों का दल-बल के साथ आगमन हुआ था। स्वनामधन्य स्वामी विवेकानन्दजी, महाराजा कर्नल सर प्रतापसिंहजी बहादुर, नरसिंहगढ़ (मध्य भारत) के महाराज महताबसिंहजी बहादुर, रामपुर के नबाव हमीदअली खां जी साहब बहादुर और लुहारू के नवाब अमीरुद्दीनजी साहब बहादुर जैसे मेहमानों ने खेतड़ी में पदार्पण कर उस संस्मरणीय महोत्सव की शोभा बढ़ायी थी। विद्वानों, सङ्गीत-पारङ्गत-गुणियों, कवियों तथा अन्यान्य याचकों का दर्शनीय जमाव हुआ

था। वे यथोचित रूप से पुरस्कृत हुए थे। वृद्ध चारणों के बनाये हुए गीत उस समय के अब तक शेखावाटी में गाये जाते हैं।

राजा साहब ने धूमधाम से उत्सव मनाकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं कर डाली, उन्होंने कैदियों को बन्धन-मुक्त करने के साथ ही किसानों की ओर एक लाख से अधिक का जो लगान बाकी चला आता था, वह छोड़ दिया और राजकर्मचारियों की "पौतेदारी की कटौती" (एक तरह का कर) भी सदा के लिये माफ कर दी थी। उस पौतेदारी की कटौती की रकम को खेतड़ी के स्वामिभक्त राजकर्मचारियों ने अपनी ओर से मुन्शी जगमोहनलालजी के द्वारा प्रस्ताव करा के एक अनाथालय की स्थापना के सदनुष्ठान में लगाने का प्रशंसनीय कार्य किया। उस अनाथालय के द्वारा कितने ही अनाथों का पालन-पोषण और रक्षण होता आ रहा है। उसी महोत्सव के उपलक्ष में जयपुर-राजकीय संस्कृत-पाठशाला के अध्यापक दाधीच वंशोद्भव पण्डित गोपीनाथजी ने "सुत जन्ममहोत्सवम्" नामक एक सुन्दर संस्कृत श्लोकात्मिका वर्णना रचकर राजाजी बहादुर की भेंट की थी। उसकी पुस्तिका के रूप में प्रतियाँ छपवा के वितरित की गयी थी।

बाल्य-काल में राजकुमार जयसिंहजी कुछ अस्वस्थ रहने लग गये थे, इस लिये राजा साहब की गृह-चिकित्सिका डाक्र मिस स्वेन की सम्मति के अनुसार प्रति वर्ष ग्रीष्म-ऋतु में उन्हें स्वास्थ्य-

प्रद शीतल स्थानों में रहने का प्रबन्ध किया गया था। वस्तुतः अपने वंश-प्रदीप राजकुमार को स्वस्थ और सम्पन्न रखने के लिये राजा साहब ने कोई उपाय बाकी नहीं रख छोड़ा।

राजकुमार की उम्र के साथ-साथ पिता-माता और प्रजा का आनन्द बढ़ रहा था। पाँचवें वर्ष में उनको विद्यारम्भ कराया गया। उसी समय वे होनहार दिखलाई देने लगे थे। जब राजकुमार ने पाँचवाँ वर्ष पूर्ण कर छठे में पदार्पण किया, तब उनके समवयस्क—हमउम्र करीब ५० राजपूत और दरोगों के लड़के उनके साथ रक्खे गये। उन सब के लिये खान-पान, वस्त्र, शिक्षा और खेल-कूद की समुचित व्यवस्था राज की ओर से की गयी। यह बाल-मण्डली राजकुमार की 'अर्दली' कहलाती थी। राजाजी बहादुर का विचार यह था कि, राजकुमार के साथ ही विभिन्न विभागों का कार्य-भार ग्रहण करनेवाले उनके विश्वास-पात्र, समशील, समवयस्क योग्य शिक्षित ५० युवक तैयार हो जायँगे और यथा समय हम शासन-सञ्चालन का भार युवराज राजकुमार को सौंप कर स्वयं अध्यात्म-चिन्तन एवं परमार्थ-साधन में लग जायँगे।

यह संभावना किसे थी कि, प्राचीन क्षत्रिय नरेशों के उच्च आदर्श पर ऐसी शुभ-भावना रखनेवाले राजा साहब अचानक चल बसेंगे और प्रजा के आशा-स्थल उनके प्रिय राजकुमार भी, जिनके लिये इतना सब प्रबंध किया जा रहा है यौवन आते

न आते यशः शेष हो जायँगे ? काल की गति को कौन जान सकता है ?

सन् १९०१ ई० की १८ वीं जनवरी को अकस्मात् राजा अजीतसिंहजी बहादुर का स्वर्गवास हो गया और राजकुमार जयसिंहजी पितृ-सुख से वञ्चित हुए। केवल ८ वर्ष की उम्र में ३० वीं जनवरी सन् १९०१ ई० तदनुसार संवत् १९५७ माघ शुक्ला ११ बुधवार को वे खेतड़ी की राज-गद्दी पर विराजे। पिता-पुत्र का अनन्य स्नेह था। अतएव शोकाघात से बचाने के लिये इस दिन तक आप पर यह प्रकट नहीं किया गया था कि, राजा साहब का स्वर्गवास हो गया, किन्तु जब आपको गद्दी पर बिठाया गया, तब स्वतः ही जान लिया। आठ वर्ष के बालक के लिये यह बुद्धि की विचक्षणता थी।

गद्दी पर बैठते ही राजकुमार से आप श्री राजा जयसिंहजी साहब बहादुर कहलाये। खेतड़ी के अधीन जागीरदारों, राज-कर्मचारियों और प्रजाजनों ने यथाविधि 'नजर' पेश कर आपके प्रति अपना सम्मान प्रकट किया। उस अवसर पर बड़े राज्य जयपुर के प्रतिनिधि-रूप से श्री ठा० इन्द्रसिंहजी (पालड़ी) और हमीदुल्ला खाँजी सहित तत्सामयिक नाजिम साहब पुरोहित पं० हरिनारायणजी बी० ए० श्रीमान् जयपुर दरबार की आज्ञा के अनुसार उपस्थित हुए थे।

कुछ दिनों बाद ही मातमपुर्सी के लिये श्री० राजा जयसिंह जी बहादुर को अपने खेतड़ी के विश्वस्त राज-पदाधिकारियों

और राज-माता श्रीमती चांपावतजी साहिबा सहित जयपुर जाना पड़ा। वहां खेतड़ी-भवन (Khetri House) में जयपुरेन्द्र हिज हाईनेस श्रीमान् महाराजाधिराज सवाई सर माधवसिंहजी साहब बहादुर ने चिर-प्रथानुसार ता० १ एप्रिल सन् १६०१ ई० को पधार कर 'मातमपुर्सी' की रश्म अदा की और ता० ५ एप्रिल को रेजिडेंट साहब ने उपस्थित होकर अपनी समवेदना-प्रकाश करते हुए सान्त्वना दी। अनन्तर राज-माता एवं अपने परिजनों सहित आपकी सवारी आउवा (मारवाड़) पधारी। वहां से श्री० ठा० प्रतापसिंहजी साहब राजपूताने की प्रथा के अनुसार लिवाने को आये थे।

खेतड़ी का राज-कार्य राज-माता श्रीमती चाँपावतजी साहबा की आज्ञा के अनुसार स्वर्गीय राजा साहब के वृद्ध मंत्री पण्डित गोपीनाथजी [1] चलाते रहे परन्तु थोड़े समय के अनन्तर

---

१ पण्डित गोपीनाथजी का जन्म मङ्गल गोत्री खाण्डल ब्राह्मण-कुलोत्पन्न पण्डित रामजीलालजी के घर में जयपुर-राज्य के रामजीपुरा नामक ग्राम में संवत् १९०१ पौष कृष्ण १२ को हुआ था। पण्डित रामजीलालजी के आप दूसरे पुत्र थे। स्वजातीय पण्डित रामनाथजी के गृह में दत्तक पुत्र होकर अपनी उम्र के १२ वें वर्ष में आप जयपुर आये और जयपुर का निवास स्वीकार किया। प्रारम्भ में सारस्वत, चन्द्रिका, अमरकोष, रघुवंश एवं रुद्री दण्डक आदि व्यवहारोपयोगी पुस्तकें पढ़ कर संस्कृत में व्युत्पन्न होने के पीछे अपने एक पड़ोसी के परामर्श से आपने

पण्डितजी ने वृद्धावस्था के कारण अपने पद का त्याग-पत्र श्री जयपुर-दरबार की सेवा में भेज दिया और उसकी सूचना रेजिडेंट साहब को भी दे दी। पण्डितजी का त्याग-पत्र खेद के साथ स्वीकार किया गया और शासन-कार्य रेजिडेंट साहब की देख-रेख में होने लगा। यह देख-रेख बृटिश गवर्नमेंट-प्रदत्त परगना कोटपूतली के कारण थी। इसके बाद राजा साहब की नाबालिगी में श्रीमान् जयपुर-दरबार की योजना और गवर्नमेंट के अनुमोदन (Approval) से यू० पी० के अवसर-प्राप्त

महाराजाज् कालेज में प्रविष्ट हो, अंग्रेजी पढ़ना आरंभ किया। पढ़ने में खूब मन लगाया। महाराजाज् कालेज से सबसे पहले इन्ट्रेंस की परीक्षा पास करने वाले तीन विद्यार्थियों में से एक आप थे। आपकी प्रकृति स्वाध्याय-परायण, बुद्धि तीक्ष्ण और आचरण प्रशंसनीय था अतएव परीक्षोत्तीर्ण होने के अनन्तर संवत् १९२७ में खेतड़ी-नरेश के शिक्षक-पद पर आपकी नियुक्ति हुई। संवत् १९३६ में शासन-भार ग्रहण करने के पीछे राजा साहब ने आपको खजाना और फौज विभाग का आफिसर बनाया और तदनन्तर क्रमशः आपने खेतड़ी के प्रधान मन्त्रीत्व का कार्य योग्यता के साथ सम्पादन किया। राजा और प्रजा दोनों के आप विश्वास और श्रद्धा भाजन रहे। श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर के स्वर्गवास के बाद सन् १९०१ ई० के सितम्बर में आपने राजकीय कार्य से अवकाश ग्रहण कर अपना समय भगवत् भजन में लगाया। संवत् १९६३ में खेतड़ी में आपका परलोकवास हुआ।

(Retired) डिपुटी कलक्टर पण्डित शिवनाथ चक खेतड़ी के मुनसरिम नियुक्त हुए [1]। ता० २६ दिसम्बर सन् १९०१ ई० को उन्होंने खेतड़ी का प्रबन्ध-भार ग्रहण किया था। नये प्रबन्ध के अनुसार पण्डित कन्हैयालालजी को हाकिम खजाना (Treasury Officer), लाला शोभालालजी श्रीमाल को हाकिम दीवानी (Revenue Officer) और मुन्शी महम्मद जमीर अलीजी को हाकिम जुडिशियल (Judicial Officer) बनाया गया। थोड़े समय बाद बाबू योगेन्द्रनाथ सेन जुडिशियल हाकिम नियुक्त हुए और मुन्शी महम्मद जमीर अलीजी फिर पूर्ववत् फौजदार (Magistrate) बना दिये गये।

राजा साहब जयसिंहजी को खेतड़ी शिक्षा-विभाग के सुपरिंटेंडेंट पण्डित शङ्करलालजी विद्याभ्यास कराते थे। उसी समय उनकी पढ़ने में अपूर्व अभिरुचि देखकर लोग चकित होने लग गये थे। कुछ समय तक राजा साहब अपनी माजी साहबा के साथ ननिहाल (आउवा—मारवाड़) रहे। आपके ममेरे भाई श्री० दलपतसिंहजी साहब पहले से ही आपके साथ रहते आ

---

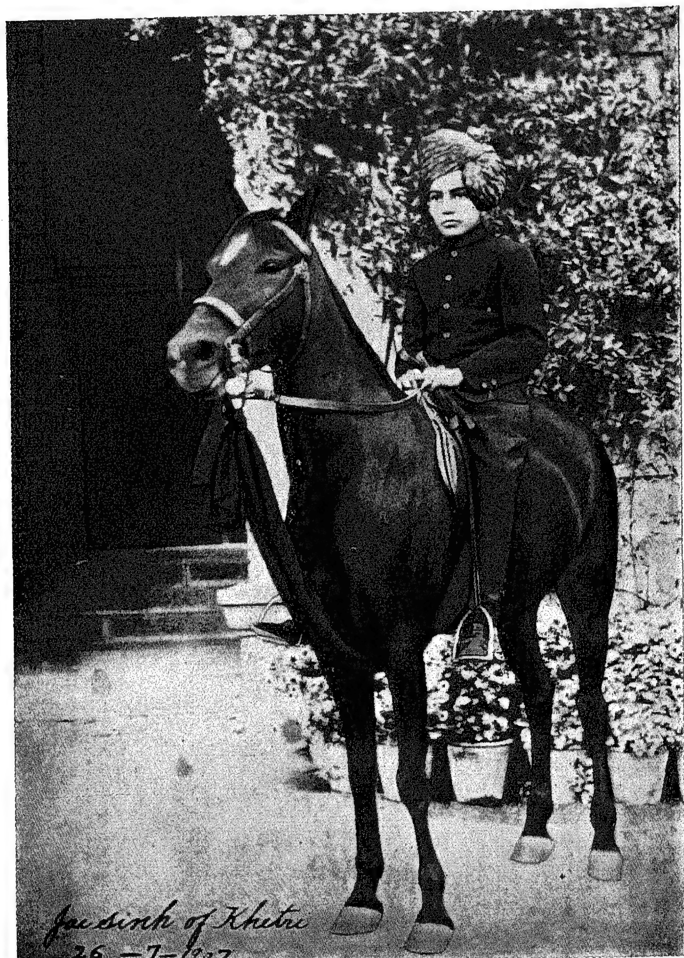
१ खेतड़ी के नाम जयपुर स्टेट कौंसिल का ता० १५ सितम्बर सन् १९०१ ई० का हुक्म इस आशय का आया था कि "४००) रु० वेतन और १५०) रु० लवाजमा—कुल रुपये ५५०) मासिक पर पण्डित शिवनाथ चक को मुनसरिम नियुक्त किया गया है।"

रहे थे। खाना, पीना, रहन-सहन, आना-जाना और पढ़ना-लिखना सब साथ ही होता था।

संवत् १९५९ में कनिष्ठा राजकुमारी श्रीमती चन्द्रकुमारीजी के विवाह के निमित्त राज-माता श्रीमती चाँपावतजी साहबा सहित श्री० राजा साहब का आउवा से खेतड़ी में शुभागमन हुआ। उस समय आपकी उम्र १० वर्ष की थी। खेतड़ी की प्रजा आपके दर्शन कर अपने भावी सुख की कल्पना से अत्यन्त प्रसन्न हुई। श्रीमती चन्द्रकुमारीजी का विवाह देवलिया प्रतापगढ़ के युवराज महाराज कुमार श्री० मानसिंहजी साहब के साथ सम्पन्न हुआ था। स्वर्गीय राजा अजीतसिंहजी बहादुर के परम मित्र सीकर के रावराजा श्री० माधवसिंहजी बहादुर ने स्वयं खेतड़ी उपस्थित रह के बालक राजा जयसिंहजी साहब को अपने साथ रखते हुए समस्त वैवाहिक रीतियाँ पूर्ण करायी थीं।

विवाह की सम्पन्नता के बाद ही राजा साहब फिर राज-माता के साथ आउवे को पधार गये। वहाँ आपकी तबियत खूब लग गयी थी। पण्डित शङ्करलालजी से पढ़ने के अतिरिक्त प्रातः-सायं—दोनों समय आप अपने मामा श्री० ठा० शिवदान सिंहजी और ममेरे भाई श्री० दलपतसिंहजी के साथ घोड़े पर चढ़ने का अभ्यास करते थे। खेल-कूद में भी भाग लेते थे।

संवत् १९६० (सन् १९०४ ई०) में श्री० जयपुर-दरबार के आह्वान से राजा साहब ने माजी साहबा सहित आउवा से जयपुर पधार कर खतड़ी हाउस में रहना आरम्भ किया।



श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर, खेतड़ी

आउवा में ही माजी साहबा का शरीर अस्वस्थ रहने लगा था और अस्वस्थावस्था में ही जयपुर आना हुआ। वहां राज-यक्ष्मा के लक्षण प्रकट हो गये। चिकित्सा कराने का कोई फल न निकला। अन्त में ता० १६ मई सन् १९०४ ई० ज्येष्ठ शुक्ला २ संवत् १९६१ को माजी साहबा श्रीमती चाँपावतजी आपको भगवान् के भरोसे छोड़ कर स्वर्ग-गामिनी[1] हो गयीं। पिता की छत्र-छाया सिर से उठ गयी थी, कि स्नेहमयी जननी का सुख भी जाता रहा।

---

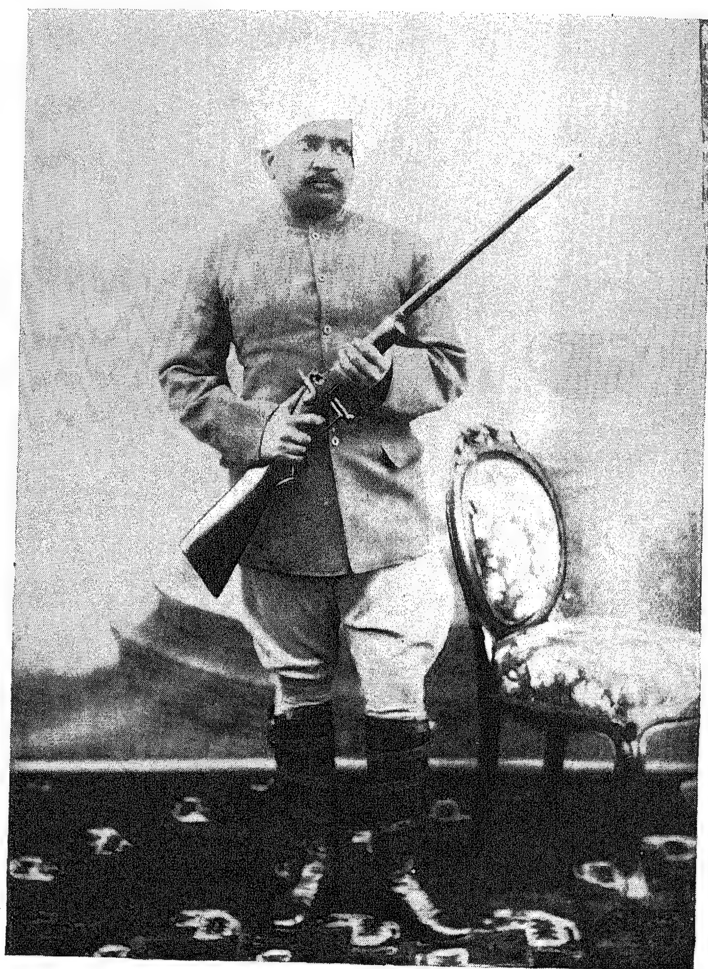
१ राज-माता श्रीमती चाँपावतजी साहब के स्वर्गवास के उपलक्ष में कलकत्ते के तत्सामयिक प्रसिद्ध मासिक पत्र "वैश्योपकारक" की ज्येष्ठ संवत् १९६१ की संख्या में उसके सम्पादक स्वर्गीय पण्डित माधवप्रसादजी मिश्र रचित "स्वर्ग-गामिनी" शीर्षक एक मर्मस्पर्शिनी कविता प्रकाशित हुई थी, जो इस प्रकार है:—

वीर खेतड़ी भूप की जननी तजि परिवार,
चाँपावतजी हू गयी, हा! अब स्वर्ग सिधार।
अजितसिंह नर-नाह को, जब ते भयो वियोग,
माजी! तुम चिंतित रही, मिट्यो न मन को रोग।
विषम राज्य, नृप कोप अरु, सन्मुख देखि अनर्थ,
कुछ दिन हा! जीवन रख्यो जानि सुतहिं असमर्थ।
पै इतनी अब शीघ्रता, कहो कीन्ह किहिं काज?
जो निज नैनन ते लख्यो नहिं निज सुत को राज।

जिस समय राज-माता का स्वर्गवास हुआ, उस समय श्री ठा० शिवदानसिंहजी साहब भी वहां नहीं थे और न श्री ठा० दलपतसिंहजी साहब ही थे। दोनों राजकुमारियाँ भी उपस्थित नहीं थीं। बीमारी के दिनों में माजी साहबा के पास रहने पर भी उनके अन्तिम समय में दोनों श्रीमती राजकुमारियों की अनुपस्थिति का कारण यह हुआ कि, विशेष कार्यवश उन्हें शाहपुरा और प्रतापगढ़ जाना पड़ा था।

सींच सींच मुकलित कियो जो तुमने उद्यान,
ताके कुसुम विकास सों पहले कियो पयान।
कि धौं प्राणपति के बिना जीवन भयो जु भार ?
ता सों मा ! पतिव्रत वरा ! तुम गयिं स्वर्ग सिधार।
देख चक्र दुर्नीति को ताकी करन पुकार,
रामसिंह वर भूप ढिग कि धौं गयीं इस वार ?
कि धौं दुःख निज चित्त को पर पुरुषन के माहिं,
गुप्त राखिबे जोग लखि सकीं कहन कछु नाहिं।
महरानी विक्टोरिय हिं तिय-कुल पालन-हार,
जानि निकट ताके गयीं, यहां देखि अविचार।
जाहु देवि पति-लोक महँ सुख से करहु निवास,
सकल व्यथा निज चित्त की करहु प्राणपति पास।

वैश्योपकारक का मासिक पत्र खेतड़ी इलाका के अजीतगढ़-निवासी बाबू रामलाल नेमाणी के राम प्रेस (कलकत्ता) द्वारा प्रकाशित होता था।



श्री० ठा० शिवदानसिंहजी साहब, लांबिया (जोधपुर)

ग्यारहवाँ अध्याय

श्रीमती माजी चाँपावतजी साहबा का पुत्र पर इतना अधिक स्नेह था कि अपने जीवन-काल में एक दिन भी उनको अपने से अलग रखने का अवसर नहीं आने दिया और राजा साहब को भी माता के बिना चैन नहीं पड़ता था। इस स्थिति में अचानक मातृ-वियोग का दुःख उपस्थित हो जाने पर भी बालक राजा जयसिंहजी साहब ने स्वयं ही धैर्य का अवलंबन कर माता की अन्त्येष्ठि-क्रिया और पिण्डदानादि कर्म अपने हाथ से किये।

माजी साहबा के स्वर्गवास के दूसरे दिन तार द्वारा समाचार पाकर श्री ठा० शिवदानसिंहजी एवं श्री ठा० दलपतसिंहजी जयपुर पहुँचे थे। ठाकुर साहब शिवदानसिंहजी का कथन है कि, "उस समय राजा साहब को अकेले देख कर मेरा हृदय भर आया था। मैं उन्हें कुछ भी सान्त्वना नहीं दे सका, बल्कि, उलटा उन्होंने ही मुझे धैर्य बँधाया। मैं उनकी वृद्ध और ज्ञानी-जनोचित धीरता देख कर चकित हो गया था।"

मातृ-शोक-विह्वला अपनी दोनों बहिनों को भी राजा साहब ने सान्त्वना दी थी। उनके ये शब्द थेः—"मा-बाप का सुख तो अमृत की घूंट के समान है, जिससे सारी उम्र भी कोई तृप्त नहीं हो सकता। अपने भाग्य में माता-पिता का इतना ही सुख बदा था यही विचार कर धीरज रखना चाहिये।" शान्ति के साथ कहे हुए उन शब्दों को सुनकर दोनों बहिनों के आश्चर्य का भी ठिकाना न रहा। क्योंकि उन्हें इस बात का बड़ा खयाल

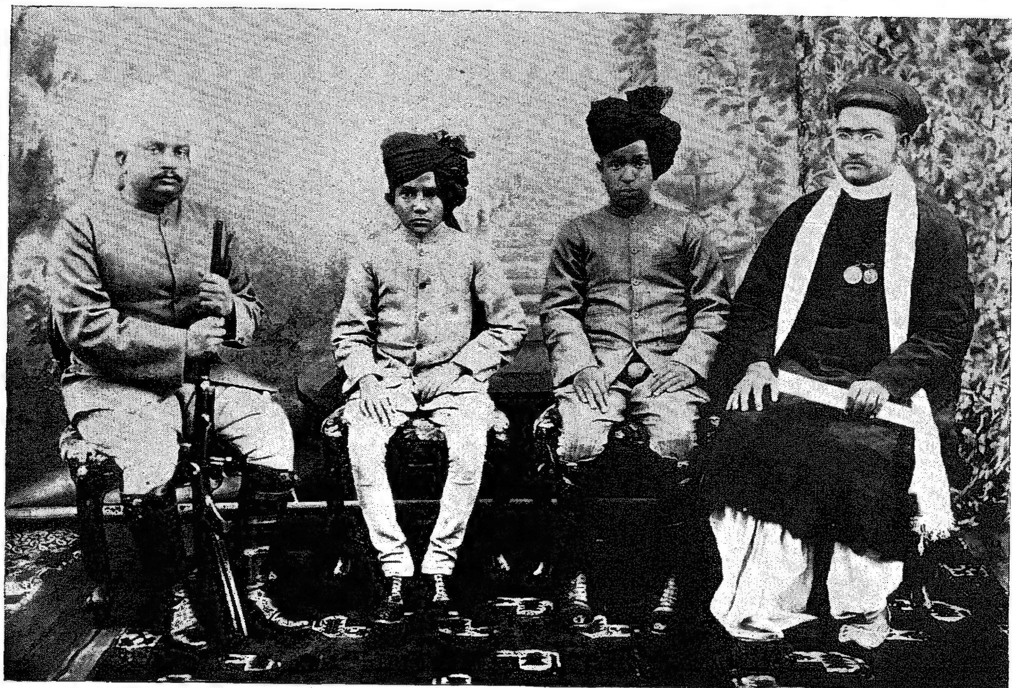
था कि, माजी साहबा के वियोग में न मालूम भाई की कैसी हालत देखने को मिलेगी। परन्तु जयपुर पहुँच कर उन्होंने राजा साहब को अपूर्व शान्ति और धैर्य धारण किये हुए पाया। इतना ही नहीं, द्वादशाह तक एक समय भोजन और भू-शय्या आदि शास्त्रीय नियमों का पालन आपने दृढ़ता के साथ किया। यह सब देखकर लोग दङ्ग रह गये थे। वास्तव में कोमलमति बालक राजा साहब के लिये यह कम साहस का काम नहीं था।

श्रीमती माजी साहबा के देहावसान के अनंतर श्रीमान् जयपुर-दरबार ने श्री० राजा जयसिंहजी साहब की समुचित शिक्षा की व्यवस्था के लिये पण्डित चन्द्रधरजी शर्मा गुलेरी बी० ए० को अभिभावक और शिक्षक (गार्डियन—ट्यूटर) नियुक्त किया। सन् १९०४ ई० का जून महीना आबू में बिता कर राजा साहब अपने बाल-शखा श्री ठा० दलपतसिंहजी साहब (रोहेट—मारवाड़) के साथ मेयो कालेज (अजमेर) में प्रविष्ट हुए। सँभाल और निगरानी आपके मामा श्री ठा० शिवदान-सिंहजी साहब (लांबिया) [१] की रही।

---

१ राजा अजीतसिंहजी बहादुर का स्वर्गवास होने के बाद श्रीमती माजी चाँपावतजी साहबा ने अपने भाई लांबिया के श्री० ठाकुर शिवदानसिंहजी साहब को अपने पास बुला लिया था। उसी समय से सदा साथ रह कर वे श्री० राजा जयसिंहजी साहब की देख-रेख रखते थे। जब मेयो कालेज



श्री० ठा० शिवदानसिंहजी साहब (लांबिया) और श्री० पं० चन्द्रधरजी शर्मा गुलेरी बी० ए० के साथ
श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर और उनके मौसेरे भाई श्री बिशनसिंहजी साहब (बिसाऊ)

कालेज में प्रविष्ट होते ही राजा साहब पढ़ने में विशेष रूप से दत्तचित्त हुए। आपके आदरणीय अध्यापक पण्डित गुलेरीजी के मतानुसार गुण-सञ्चय में इतनी तत्परता कहीं नहीं देखी गयी। पठन-पाठन के समय आप किसी को अपने कमरे में नहीं आने देते थे और नियमित समय से भी अधिक काल तक रात्रि में पुस्तकावलोकन करते थे। गुरुजनों की आज्ञा का आपने कभी उलङ्घन नहीं किया। गर्मी की छुट्टियों में प्रायः आपका निवास आबू [1] में ही रहता था। भाई का स्नेह दोनों श्रीमती बहिनों को भी वहीं खींच लाता था। श्रीमान् बीकानेर-नरेश, तत्सामयिक श्रीमान् जोधपुर-नरेश, जयपुर के रेजिडेंट और राजपूताने के ए० जी० जी० साहब आदि से आपकी गहरी प्रीति

में पढ़ाई होती तब लांबिया चले जाते और कालेज की छुट्टी होते ही राजा साहब के पास पहुँच जाते। उनका आन्तरिक प्रेम था। राजा साहब के असामयिक निधन का उन्हें मर्मान्तक दुःख हुआ और शोकाघात से स्वास्थ्य बिगड़ गया। दोनों बहिनों के सुख-दुःख में भी ठाकुर साहब हृदय से सदा साथी रहे। बड़े सज्जन थे। वैशाख शुक्ला १४ संवत् १९८३ (ता० १५-५-२७ ई०) को जोधपुर में हृदय की गति बन्द (हार्ट फेल) हो जाने से उनकी मृत्यु हुई। उनके निःसंतान जाने के कारण जोधपुर-राज्य ने लांबिया जब्त कर लिया।

१ आबू (Mount Abu) में राजा अजीतसिंहजी बहादुर के समय की बनी हुई खेतड़ी की कोठी (Khetri House) है।

हो गयी थी। मेयो कालेज के प्रिंसिपल[1], अध्यापक एवं सहाध्यायी विद्यार्थियों का तो रात दिन का साथ था, अतएव उनके प्रेम का कहना ही क्या? आपके व्यवहार और बातों में निस्सीम सौजन्य समाया हुआ था। आपके शालीनतामय सदालाप और अगर्व मिलन की स्मृति आपसे मिलनेवालों के हृदय में विद्यमान है। पण्डित चन्द्रधरजी की प्रकृत शिक्षा ने आपको सदाचारनिष्ठ, विनयी, मृदुभाषी और दुर्व्यसन-विरोधी बना दिया था।

संवत् १९६२ के दशहरे की छुट्टियों में पहले पहल श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर का खेतड़ी में आगमन हुआ। उस समय आपकी सवारी का जुलूस राजसी ठाठ के साथ देख कर प्रजा के हृदय उमङ्ग से भर गये थे। दोनों श्रीमती राजकुमारियाँ भी अपने प्रेमास्पद भाई के साथ खेतड़ी पधारी थीं। जब राजा साहब का अपनी राजधानी में आगमन होता, तब दोनों बहिनें प्रायः पहुँच जातीं। भाई को पिता-माता के वियोग दुःख याद न आ जाय—इस बात का वे बड़ा ध्यान रखतीं थीं।

---

१ मेयो कालेज (अजमेर) के प्रिंसिपल उस समय मि० सी० डबल्यू० वेडिंगटन (Mr. C. W. Waddington) थे।



श्री० लेफ्टिनेंट कर्नल रावबहादुर
ठा० दलपतसिंहजी साहब, रोहेट (जोधपुर)

उस बार शाहपुरा के युवराज राजकुमार (वर्तमान राजाधिराज) साहब ने भी पधार कर दशहरे के उत्सव की शोभावृद्धि की थी।

सन् १६०५ ई० की गर्मी की छुट्टियों में राजा साहब ने आबू में ही निवास किया था। जब आप किसी उच्च पदाधिकारी या रईस से मिलने जाते, तब राजपूताने के क्षत्रियों की प्राचीन प्रथा के अनुसार तलवार हाथ में लेकर राजपूती ठाठ से जाते। एक दिन आप राजपूतानास्थित गवर्नर जनरल के एजेण्ट (A. G. G.) से मिलने गये। ए० जी० जी० साहब बड़े सम्मान और प्रेम के साथ आपसे मिले। उस समय एक मजेदार बात हुई। आपकी तलवार को देख कर साहब बहादुर ने अपनी कलम उठायी और कहा कि "राजा साहब आजकल इस (तलवार) का नहीं,—इस (कलम दिखला कर) का जमाना है। आप इसे पकड़ना सीखिये।" इसके उत्तर में राजा साहब ने हँसते हुए कहा कि, हमारे लिये तो दोनों जरूरी हैं। इसके बाद साहब ने नीति और कानून सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने की केवल सलाह ही नहीं दी, वल्कि अपनी मेज पर से दो पुस्तकें दीं, जिसके लिये राजा साहब ने उनका धन्यवाद किया।

सन् १६०५ ई० में ही आपकी इच्छा और आदेश से खेतड़ी के राजकीय अस्पताल का मकान बनवाया जाकर उसका नाम

आपके स्वर्गीय पिता की स्मृति में "अजीत अस्पताल"[1] किया गया।

अब तक राजा साहब का उपनयन-संस्कार नहीं हुआ था। अतएव आपने यज्ञोपवीत धारण करने की अभिलाषा प्रकट की। तदनुसार ज्योतिषियों की सम्मति से माघ शुक्ला ५ संवत १९६४ का दिन स्थिर हुआ, साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि, यह शुभ समारंभ खेतड़ी में ही सम्पन्न होना चाहिये।

यथा समय राजा साहब खेतड़ी पधारे। खेतड़ी की पण्डित-मण्डली तो थी ही जयपुर से भी कई एक विद्वान् बुलाये

---

१ अस्पताल-भवन में लगे हुए शिला-लेख में इस प्रकार स्मारक लिपि अङ्कित है:—

AJIT HOSPITAL

BUILT BY

RAJA JAISINGHJI BAHADUR

OF

KHETRI

IN THE YEAR 1905 A. D. IN MEMORY OF HIS FATHER RAJA AJITSINGHJI BAHADUR.

अजीत अस्पताल

राजा जयसिंहजी बहादुर खेतड़ी ने अपने पिता राजा अजीतसिंहजी बहादुर की यादगार में सन् १९०५ ई० में बनवाया।



उपनयन संस्कार के समय पण्डित-मण्डली सहित श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर

गये, जिनमें पण्डित गोकुलचन्द्रजी ज्योतिर्विद्, पं० श्रीलालजी सामवेदी, पं० रामकिशोरजी शर्मा यजुर्वेदी, पं० बालचन्द्रजी शास्त्री और पं० सोमदेवजी शर्मा गुलेरी के नाम उल्लेखनीय हैं। गायत्री मन्त्र का उपदेश पण्डित बालचन्द्रजी शास्त्री ने किया था और वेद-पाठ कराया था खेतड़ी-राजकीय संस्कृत पाठशालाध्यापक पण्डित नारायणदासजी ने। इन्हीं पण्डित नारायणदासजी से खेतड़ी में रह कर जगत् प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्दजी ने अष्टाध्यायी और पातञ्जल योगदर्शन आदि-आदि ग्रन्थ पढ़े थे।

इसी संवत् १९६४ में पण्डित चन्द्रधरजी शर्मा गुलेरी बी० ए०[1] जयपुर-राज्य के समस्त सामन्त सरदारों की शिक्षा के

---

१ जयपुर महाराजाधिराज सवाई सर रामसिंहजी साहब बहादुर के आश्रित पण्डित-प्रधान एवं जयपुर की संस्कृत शिक्षा के आद्याचार्य पण्डित शिवरामजी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीचन्द्रधरजी शर्मा गुलेरी का जन्म जयपुर में संवत् १९४० में हुआ था। उनका विद्वत्कुल पंजाब प्रान्तीय गुलेर (जिला कांगड़ा) के राजवंश का पुरोहित है। सन् १८९७ ई० में मिडिल परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास करने के बाद गुलेरीजी सन् १८९९ ई० में प्रयाग विश्वविद्यालय की इन्ट्रेंन्स परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और विश्वविद्यालय भर में प्रथम रहे। सन् १९०३ ई० में उन्होंने बी० ए० परीक्षा दी और परीक्षोत्तीर्ण छात्रों में प्रथम होने का सम्मान लाभ किया। सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी होने के फलस्वरूप जयपुर महाराजाज् कालेज का 'नार्थब्रुक मेडल'

सुपरिंटेण्डेण्ट बना दिये गये और उनकी जगह जयपुर निवासी पण्डित सूर्यनारायणजी पाण्डेय एम० ए० राजा जयसिंहजी साहब के शिक्षक नियुक्त हुए और अन्त तक अपने पद पर रहे।

उन्हें मिला। अनन्तर एम० ए० तक पढ़ाई करने पर भी अस्वस्थ हो जाने के कारण वे परीक्षा नहीं दे सके। संस्कृत उनके घर की विद्या थी। प्राचीन वैदिक साहित्य एवं काव्य, पुराण, इतिहास आदि का उन्होंने खास तौर पर अनुसंधान की दृष्टि से अध्ययन किया था। वे प्राच्य एवं प्रतीच्य—उभय शास्त्र प्रवीण थे। अपने विद्यार्थी जीवन में ही उन्होंने जयपुर राज्य के ज्योतिष-यन्त्रालय के जीर्णोद्धार-कार्य में कर्नल सर एस० जेकब और कैप्टेन ए० एफ० गैरेट की बड़ी सहायता की थी। इसके लिये धन्यवाद के साथ उन्होंने पुरस्कार भी प्राप्त किया था। सन् १९०४ ई० में श्रीमान् जयपुर दरबार के द्वारा जयपुरस्थ रेजिडेन्ट कर्नल टी० सी० पीयर्स (Col. T. C. Pears, I. A.) के अनुमोदन से श्री० गुलेरीजी, खेतड़ी के श्री राजा जयसिंहजी बहादुर के अभिभावक एवं शिक्षक (Guardian-Tutor) नियुक्त हुए और बड़ी योग्यता तथा प्रेम से अपने कर्तव्य का पालन करते हुए राजा साहब के श्रद्धा-पात्र बने। सन् १९०७ ई० में वे जयपुर-राज्य के समस्त सामन्तों की शिक्षा के सुपरिंटेंडेंट बना दिये गये। सन् १९१६ ई० में जयपुर हाउस के मोतमिद-पद पर उनकी नियुक्ति हुई। इसी वर्ष मेयो कालेज में 'हेड पण्डित' का पद उन्हें मिला। अन्त में उनकी योग्यता पर मुग्ध होकर महामना पण्डित मदनमोहन मालवीयजी ने भारत सरकार से लोन पर लेकर पण्डित गुलेरीजी को हिन्दू विश्वविद्यालय



यज्ञोपवीत धारण करने के बाद ब्रह्मचारी श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर अपने मामा श्री० ठा० शिवदानसिंहजी और विद्या-गुरु श्री० पं० चन्द्रधरजी शर्मा गुलेरी के साथ।

संवत् १९६५-६६ में अपने इलाके के साथ ही प्रजा की दशा का वास्तविक अनुभव प्राप्त करने के लिये राजा साहब ने दौरे किये थे। उन दौरों में आपके मामा श्री ठा० शिवदानसिंहजी साहब (लांबिया), पण्डित सूर्यनारायणजी एम० ए० (शिक्षक) पण्डित शिवनाथजी चक्र मुनसरिम और कई कर्मचारी साथ रहे। आप अपने प्रजाजनों से बड़े प्रेम से मिलते थे और उनके दुःख-दर्द अभाव-अभियोग भी पूछते थे। खेतड़ी में रहने के दिनों में सर्वसाधारण से मिलने के लिये प्रति दिन आपका एक घण्टा नियत था। खेतड़ी के सब विभागों के कामों को भी ध्यान से देखते थे। अपने पिता की भाँति शिक्षा का प्रेम आप में पूर्ण रूप से विद्यमान था। आप खेतड़ी हाई स्कूल के परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों को पुरस्कृत करके उनका उत्साह बढ़ाते रहते

में प्राच्य-विभाग के अध्यक्ष का पद प्रदान किया। परन्तु काशी उन्हें फलद नहीं हुई और वहीं ५।६ दिन ज्वराक्रान्त रह कर ८-९-२२ ई० को वे स्वर्गवासी हुए। पण्डित गुलेरीजी भारतवर्ष के ख्यातिलब्ध विद्वान्, हिन्दी साहित्य के चिन्ताशील लेखक और ग्रन्थकार थे। उनकी संस्कृत गद्य एवं पद्य-रचना भी बड़ी मधुर होती थी। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के वे प्रभावशाली सदस्य, सहायक और एक ट्रष्टी थे। बड़े सहृदय सज्जन थे।

थे। खेतड़ी हाई स्कूल को कालेज बनाने की अपने स्वर्गीय पिता की अपूर्ण इच्छा को पूर्ण करने का आप शुभ विचार रखते थे।

राजा साहब को व्यायाम का खूब शौक था। खेलों में आप राइडिंग, क्रिकेट, फुट-बाल आदि को बहुत पसन्द करते थे। ज्येष्ठ मास की कड़ी धूप में भी 'मैच' खेलने को खड़े हो जाते और घण्टों तक लगातार खेलते रहते। आलस्य का आप में नाम भी न था। मौका पड़ने पर धूप में भी आप कोसों तक पैदल दौड़े चले जाते थे। निशाना लगाने में भी सिद्धहस्त हो गये थे। सिगरेट, तंबाकू आदि देखा-देखी के दुर्व्यसनों से आपको घृणा थी। अपने भाव, अपनी भाषा, अपने देश और अपने वेश का आपको आग्रहपूर्ण अनुराग था।

श्री० रावल लेफ्टिनेंट कर्नल विशनसिंहजी साहब [१] और

---

१ जयपुर-राज्यवर्ती बिसाऊ (शेखावाटी) के श्री० रावल लेफ्टिनेंट कर्नल विशनसिंहजी साहब का जन्म संवत् १९४८ फाल्गुन शुक्ला ७ (सन् १८९१ ई०) को हुआ। आपने मेयो कालेज (अजमेर) में डिप्लोमा तक शिक्षा प्राप्त की है। राजा साहब जयसिंहजी आपको 'दादा भाई' कह कर सम्बोधित किया करते थे। परस्पर में गहरा प्रेम था। मद्यपान आदि दुर्व्यसन-जनित चरित्र की कोई कमजोरी आपमें नहीं आने पायी है। आप



श्री० लेफ्टिनेंट कर्नल

रावल बिशनसिंहजी साहब (बिसाऊ)

श्री राय बहादुर लेफ्टिनेंट कर्नल दलपतसिंहजी साहब [1] आपके प्रेमास्पद बन्धु एवं सहाध्यायी थे। आपके सहाध्यायी मित्रों में जयपुर चीफ कोर्ट के भूत पूर्व माननीय जज भगवद्भजन-परायण साधु-चरित श्री ठा० कुशलसिंहजी साहब (गीजगढ़) का नाम भी उल्लेखनीय है।

सुचतुर व्यवहारज्ञ हैं। दो बार योरप की यात्रा कर आये हैं। वर्तमान जयपुरेन्द्र हिज हाईनेस श्री महाराजाधिराज सवाई सर मानसिंहजी साहब बहादुर ने आपको "रावल" और "लेफ्टिनेंट कर्नल" की पदवियां देकर अपनी कृपा प्रकट की है। आपके पुत्र श्री० रघुवीरसिंहजी साहब का जन्म माघ शुक्ला २ संवत् १९७० को हुआ। उन्होंने मेयो कालेज की शिक्षा के बाद फौजी तालीम भी पायी है। वे स्ववंश के निकटतम ठिकाने सूरजगढ़ के दत्तक रूप से मालिक हैं। अब श्रीमान जयपुर दरबार की कृपापूर्ण आज्ञा के अनुसार ठिकाना सूरजगढ़ बिसाऊ में सम्मिलित हो गया है।

१ श्री राव बहादुर लेफ्टिनेंट कर्नल दलपतसिंहजी साहब (रोहेट-मारवाड़) ठिकाना आउवा (जोधपुर—मारवाड़) के स्वर्गीय ठा० शम्भूसिंहजी साहब के द्वितीय पुत्र हैं। ठिकाने रोहेट गोद गये हैं। संवत् १९५६ में जब आपकी उम्र केवल ६ वर्ष की थी, तब खेतड़ी की रानी साहबा श्रीमती चाँपावतजी ने आपको प्रेमवश अपने पास बुला कर रख लिया था। रानी साहबा और राजा साहब आपको पुत्रवत् प्यार करते थे।

यद्यपि बाल्य-काल में राजा साहब का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था, तथापि पिता के स्वर्गवास के बाद ठंढे स्थानों में न जाने पर भी आपकी तनदुरुस्ती ठीक रही और स्वास्थ्य में कोई बाधा नहीं पहुँची। परन्तु जिस वर्ष मेयो कालेज से शिक्षोत्तीर्णता का प्रशंसा के साथ आप डिप्लोमा पानेवाले थे, उसी वर्ष पहले आपको खांसी (हूपिंग कफ) हुई और दुर्भाग्यवश वही बढ़ते बढ़ते राजयक्ष्मा की भयंकर व्याधि के रूप में परिणत हो गयी।

इलाज के लिये आपको अजमेर से जयपुर लाया गया और कर्नल पेंक का इलाज शुरू हुआ। सूचना पाकर दोनों बहिनें (श्रीमती सूर्यकुमारीजी और श्रीमती चन्द्रकुमारीजी) जयपुर

उस समय से श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर का स्वर्गवास होने तक आप बराबर साथ रहे। मेयो कालेज में साथ ही प्रविष्ट हुए थे। कालेज की डिप्लोमा तक की शिक्षा पूरी करने के बाद आप फौजी तालीम के लिये श्रीमान् जोधपुर दरबार की ओर से केडेट कोट (देहरादून) भेजे गये। तदनन्तर जोधपुर के महाराजाधिराज श्री सुमेरसिंहजी साहब बहादुर के ए-डी० सी० हुए और बाद में मिलिटरी सेक्रेटरी रहे। आप हँसमुख सरल स्वभाव के मिलनसार सरदार हैं। अंग्रेज सरकार की ओर से आपको "राव बहादुर" का खिताब मिला हुआ है और श्री० जोधपुर दरबार की तरफ से "लेफ्टिनेंट कर्नल" का।

आदर्श नरेश ५८

श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर



अपने बालक भानजे वर्तमान प्रतापगढ़-नरेश को गोद में लिये हुए

ही पहुँच गयी[1]। बिसाऊ-माजी साहबा श्रीमती चाँपावतजी भी उन दिनों जयपुर ही थीं। बीमारी के अधिक बढ़ जाने पर दोनों—(शाहपुरा और प्रतापगढ़) श्रीमान् युवराज साहबान ने भी वहां पहुँचने में विलम्ब नहीं किया। कर्नल पेंक के इलाज से लाभ न देख कर अन्त में यूनानी चिकित्सा करायी गयी किन्तु बीमारी बढ़ चुकी थी—। 'टूटी की बूंटी नहीं'—कहावत के अनुसार सब प्रयत्न निष्फल हुए और ३० मार्च सन् १९१० ई० को जयपुरस्थ खेतड़ी हाउस में राजा साहब का—स्वर्गीय राजा अजीतसिंहजी बहादुर के वंशप्रदीप—एक मात्र पुत्र का स्वर्गवास हो गया। आप तीन महीने बीमार रहे। आपकी असामयिक मृत्यु से खेतड़ी की प्रजा के हृदय पर दुःख की गहरी चोट पहुँची। दोनों श्रीमती बहिनों की समस्त आशाओं पर पानी फिर गया और उनके सुयोग्य पतियों के मर्मान्तक क्लेश की सीमा न रही।

---

१ उस समय आपके भाग्नेय वर्तमान प्रतापगढ़-नरेश की उम्र दो वर्ष की थी। जब श्रीमती राजकुमारी चन्द्रकुमारीजी उन्हें रोग-ग्रस्त राजा साहब के पास ले गयीं, तब उन्होंने बड़ी गम्भीरता के साथ कहा था:—"इन्हें मेरे पास मत लाओ। यह छूत की बीमारी है। कहीं इनको न लग जाय। ईश्वर इन्हें खुश रक्खे। इनके द्वारा हमारे स्वर्गीय पिता (राजा अजीतसिंहजी बहादुर) का नाम बना रहेगा।"

श्री राजा जयसिंहजी बहादुर के स्वर्गवास के समाचर को सम्पादकीय स्तम्भ में सशोक एवं सचित्र प्रकाशित करते हुए हिन्दी की गौरवमयी मासिक पत्रिका सरस्वती के तत्सामयिक मनस्वी सम्पादक, आचार्य श्री पण्डित महावीरप्रसादजी द्विवेदी महाशय ने लिखा था :—

"राजपूताना के राजाओं की पिछली पीढ़ी में ऐसा होनहार और सद्गुण-सम्पन्न युवक और कोई नहीं हुआ। उनके विनय, शील, विद्याभिनिवेश, सदा हँसते हुए मुख, देशप्रेम और लोकोपकार के उच्च विचार सभी का स्मरण इस अकाल-मृत्यु की वेदना को और काल की कराल गति के अनुशोचन को कई गुना कर देता है। संस्कृत और हिन्दी की ओर उनका प्रेम बहुत था और दोनों का कितना ही उपकार उनके हाथों होता। एक समय खेतड़ी के एक उच्च कर्मचारी ने उन्हें सम्मति दी कि आप उर्दू का भी अभ्यास कीजिये क्योंकि उससे बहुत काम पड़ेगा। आपने हँसते हुए उत्तर दिया कि, मैं अपने यहां उर्दू रहने दूँगा तब काम पड़ेगा न ? उनके एक गुरुजन लिखते हैं कि, शरीर की गठन और गुणों के उपचय से यद्यपि वे हम लोगों से बढ़कर होते जाते थे, तो भी सदा विनय से नम्र हुए रहते थे। कभी गुरुओं के सामने उन्होंने अग्रासन नहीं लिया। हां, जाते-जाते यह अविनय कर गये कि, हम लोगों को यहां पर तुषाग्नि में अपने हृदय को पकाने को छोड़ा और स्वयं अभय—अमर अशोक पद को चले गये।"



खेतड़ी के परिजनों सहित श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर

अजमेर मेयो कालेजस्थ जयपुर हाउस में स्वर्गीय राजा जयसिंहजी बहादुर की स्मृति में उनके सहपाठी मित्रों द्वारा एक शिला-लेख लगाया गया है, जिसकी प्रतिलिपि यों है:—

ॐ

IN MEMORY OF

RAJA JAISINGH BAHADUR

OF

KHETRI

Who joined the Mayo College.

July 13th. 1904.

He gave promise of a very brilliant career and a life of useful public service but passed away, at the early age of 17.

March 30th. 1910

DEEPLY MOURNED BY ALL

This tablet has been erected by his sorrowing friends of the Jaipur House.

"न शोचन्मृतमन्वेति न शोचन्म्रियते नरः
एवं सा सिद्धिके लोके किमर्थमनुशोचसि।
अभावादीनि भूतानि भाव मध्यानि भारत
अभावे निधनं यान्ति कातत्र परि देवना।"

स्वधर्म में स्वर्गीय राजा जयसिंहजी बहादुर की बड़ी श्रद्धा थी और थी विद्वानों तथा प्रकृत महात्माओं में परम भक्ति। श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी आत्मानंद स्वयं प्रकाश सरस्वतीजी [1] के प्रति आपके हृदय में बड़ा आदरभाव था। संवत १९६५ की गर्मी की छुट्टियों में आपने स्वामीजी महाराज को सादर खेतड़ी बुलाया था। अन्त में रोग की असाध्यावस्था में आपकी इच्छानुसार दर्शनों के लिये श्री स्वामीजी का अह्वान किया गया था। राजा साहब के अन्यतम कृपा-पात्र चिराना के श्री० ठा० बालूसिंहजी ने दक्षिण के विकट स्थानों में घूमकर

---

१ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री स्वामी आत्मानन्द स्वयं प्रकाश सरस्वतीजी कई वर्ष हुए अपने नश्वर शरीर का त्याग कर चुके हैं। वे समाधि सिद्धि प्राप्त अष्टाङ्ग योगी थे। उनका जन्म पुराण-प्रसिद्ध केरल प्रान्त के (जिसका वर्तमान नाम कनाड़ा है) सशल नामक ग्राम में हुआ था। पूर्वाश्रम का नाम शङ्कर था। अपनी अवस्था के १७ वें वर्ष में उन्होंने संन्यास धारण किया था। संन्यास ग्रहण करने के पहले ११ वर्ष तक वे अपने गुरुकुल में रहे थे। संस्कृत के अगाध विद्वान् थे। प्रायः सभी तीर्थों की यात्रा कर चुके थे। एकान्तवास उन्हें बहुत प्रिय था। समाधि अवस्था में एक वार उन्हें सिंह उठाकर ले गया था, जो पीछे छोड़ गया। बिठूर में उनके भक्तों ने उनके लिये एक स्थान भी बनवा दिया था। हिन्दी-संसार के प्रसिद्ध स्वर्गीय राय देवीप्रसादजी पूर्ण बी० ए० स्वामीजी महाराज के अनुरक्त भक्त थे।

आदर्श नरेश

योगनिष्ठ महात्मा



श्री० स्वामी आत्मानंद स्वयं प्रकाश सरस्वती

उनका उस समय बड़ी कठिनता से पता लगाया था। राजा साहब के स्वर्गबासी होने के पूर्व दिन स्वामीजी महाराज जयपुर पहुँचे थे। उनके दर्शन कर आपने संतोष एवं प्रसन्नता प्रकट की थी। अन्त समय में आपके इच्छा प्रकाश करने पर स्वामीजी ने पास बैठ कर गीता के श्लोक सुनाये थे। आप शान्ति के साथ एकाग्रचित्त से सुनते हुए बीच-बीच में अर्थ भी पूछते जाते थे। इसी अवस्था में आपका स्वर्गारोहण हुआ।

श्री ठा० बालूसिंहजी[१] लिखते हैं:—आज्ञानुसार श्री स्वामीजी महाराज को लेकर मैं उस दिन—ता० २६ वीं मार्च सन १९१० ई० की रात को १ बजे जयपुर पहुँचा था। जब स्वामीजी राजा साहब के पास पधारे, तब उन्होंने भक्तिपूर्ण दृष्टि से उनकी ओर देखा और ये शब्द कहे—"महाराज, पहले जब कभी आप पधारे हैं, मैं आपको साष्टाङ्ग प्रणाम किया करता था, परन्तु इस समय मेरी इतनी भी शक्ति नहीं कि मैं उठकर प्रणाम कर सकूँ। क्षमा कीजियेगा।" इस समय के दृश्य से सब के नेत्र अश्रु-पूर्ण हो गये। दीप-निर्वाण होने ही वाला था! अन्त में स्वामीजी से गीता के श्लोक मनोयोग पूर्वक श्रवण करते हुए राजा साहब ने शरीर छोड़ा था। उस समय खेतड़ी भवन

---

१ श्री ठा० बालूसिंहजी शेखावत चिराणा निवासी राजा साहब के पार्श्ववर्तियों में से एक योग्य सज्जन हैं। इस समय सिरोही (राजपूताना) राज्य में वहां की श्रीमती छोटी महारानी साहबा के कामदार हैं।

(Khetri House, Jaipur) से करुणा क्रन्दन की एक मर्म-स्पर्शिनी हृदय-भेदक ध्वनि उठी और आकाश में विलीन हो गयी। सुननेवालों के हृदय रो उठे। संसार-त्यागी आत्मदर्शी संन्यासी स्वामीजी का हृदय भी द्रवीभूत हो गया और आँखों से आसूं टपक पड़े। स्वामीजी ने मुझ से कहा था—"राजा साहब एक संस्कारी आत्मा थे। देखो हम सन्यासी हैं, जो माता-पिता, भाई-बन्धु—किसी से नाता नहीं रखते। किन्तु इनका प्रेम यहां खींच लाया और मुझे भी अश्रुपात करना पड़ा। इससे पहले इस प्रकार मेरी आंखों से किसी के लिये अश्रुपात होने की घटना मुझे याद नहीं है।"

राजा साहब के अस्थि-सञ्चय के बाद स्वामीजी महाराज जयपुर से काशी चले गये थे।

स्वर्गीय राजा साहब को क्षत्रियों को शिक्षा-प्राप्त देखने की विशेष अभिलाषा थी। और कई एक क्षत्रिय कुमारों को शिक्षा के लिये उन्होंने प्रोत्साहन दिया था। खेतड़ी में कोठी जयनिवास का शिलारोपण आपने ही किया था किन्तु कराल-काल ने उसमें निवास करने का आपको अवसर नहीं दिया। आप मद्य-पानादि दुर्गुणों को अपने पास नहीं फटकने देते थे, केवल यही नहीं अपने समवयस्क मित्रों एवं सहाध्यायी सहचारियों से पवित्र जीवन निर्वाह करने की आप प्रतिज्ञा कराते थे। उस समय के प्रतिज्ञा करनेवालों में से मैं जानता हूँ कई क्षत्रिय सच्चरित्र रह रहे हैं। देश को राजा साहब से बड़ी आशाएँ थीं।



श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर, खेतड़ी

स्वर्गीय राजा जयसिंहजी साहब के निकट सम्पर्क में रहनेवाले एक महानुभाव ने, जिन्होंने उनके जीवन-क्रम का अध्ययन किया था, अपना अनुभव इन शब्दों में व्यक्त किया है :—

राजा जयसिंहजी बहादुर की मनोवृत्ति में एक विलक्षण परिवर्तन देखा गया। खासकर श्रीमती माजी साहबा (चाँपावतजी) का स्वर्गवास हो जाने पर, अजमेर मेयो कालेज में वे प्रविष्ट हुए—इसके बाद भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की ऐसी बातें करने लगे थे कि, जिन्हें सुन कर बड़ा आश्चर्य होता था। भर्तृहरि के नीति और वैराग्य-शतक के कई श्लोक राजा साहब को कण्ठस्थ थे, जिनका उच्चारण वे प्रायः करते रहते थे। जैसे "भोगानभुक्ता वयमेव भुक्ता" इत्यादि।

संसार की असारता के सम्बन्ध में उनके मुँह से सुना करते थे, कि "यह संसार तो स्वप्नवत् है, इसमें लिप्त नहीं होना चाहिये। यहाँ दुःख ही दुःख है, "पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम्।" सच्चा सुख तो ईश्वर के स्मरण में है। मेरी तो यही इच्छा होती है कि हिमालय के एकान्त स्थान में गङ्गा के किनारे बैठ के भगवद्भजन करूँ। वह अवस्था कितनी सुखकर होगी? उसका विचार करने से ही आनन्द आता है।"

ऐसी बातें प्रायः होती रहती थी। सन्ध्यावन्दनादि कर्म यज्ञोपवीत धारण करने के बाद वे नित्य नियम से करते थे। अध्यात्म-चिंतन की ओर उनकी इतनी रुचि देख कर और संसार

की असारता एवं उससे अलिप्त रहने के साथ भगवद्भजन की आकांक्षा सम्बन्धी बातें सुनकर न केवल सेवक लोग, दोनों श्रीमती बहिनें ही, बल्कि उनके विद्वान् गुरु श्री पण्डित चन्द्रधरजी शर्मा गुलेरी तक भी आश्चर्य करते थे और यह सोचते थे कि, कालेज की पढ़ाई में संलग्न रहते हुए भी राजा साहब को अध्यात्म-चिन्तन का इतना अनुराग कैसे उत्पन्न हो गया और इन्होंने ज्ञान-वैराग्य की ये बातें कहाँ से सीख लीं ? अवश्य ही ये पूर्व जन्म के कोई संस्कारी पुरुष हैं, जिन्होंने जन्म ग्रहण कर लिया है। गीता का वचन भी है --

"शुचीनां श्रीमतां गेहे योग भ्रष्टोऽभिजायते।"

अन्त में अपनी खास इच्छा से श्री स्वामी आत्मानन्द स्वयं प्रकाश सरस्वतीजी से गीता के श्लोक सुनते हुए राजा साहब ने परलोक-यात्रा की,—उस दृश्य को देख कर तो उनके पूर्व जन्म के ज्ञान विभूति सम्पन्न होने में कोई सन्देह ही नहीं रहा।

राजा साहब ने कभी राज्याधिकार पाने या विवाह कराने की इच्छा प्रकाश नहीं की। हाँ, यह तो कहा करते थे कि डिप्लोमा करने के बाद मैं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये विलायत जाने का विचार रखता हूँ। किन्तु—

"रात्रिर्गष्यति भविष्यति सुप्रभातं
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः।



श्री० राजा अमरसिंहजी बहादुर, खेतड़ी

ग्यारहवाँ अध्याय

इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार।"

स्वर्गीय राजा जयसिंहजी बहादुर अन्तिमावस्था में अपना स्थानापन्न अलसीसर के श्रीमान् ठा० जसवंतसिंहजी साहब के पुत्र श्री० अमरसिंहजी को बनाया जाने की इच्छा प्रकट कर गये थे। तदनुसार दोनों श्रीमती बहिनों की प्रेरणा और शाहपुरा एवं प्रतापगढ़ के दोनों श्रीमान् युवराज साहबों के प्रयत्न से खेतड़ी की राज-गद्दी पर राजा अमरसिंहजी बहादुर [१] बैठे। इस सम्बन्ध में जयपुर के तत्सामयिक रेजिडेंट कर्नल शावर्स ने (जो स्वर्गीय राजा जयसिंहजी साहब के भी मित्र थे, उनकी अन्तिम इच्छा पूर्ति के लिये) स्वयं स्वीकृति देने और श्रीमान् जयपुर दरबार से दिलाने में बड़ी सहायता की थी।

श्री राजा अमरसिंहजी बहादुर के समय में विशाल भवन निर्माण-पूर्वक खेतड़ी हाई स्कूल को "जयसिंह हाई स्कूल" नाम देने की प्रतिष्ठा प्रदान की गयी। ता० २३ अक्टोबर सन् १९२३ ई०

---

१ श्री राजा अमरसिंहजी बहादुर का जन्म अलसीसर में ता० २७ सितम्बर सन् १८९८ ई० में हुआ था और वे जनवरी सन् १९११ ई० में खेतड़ी के राजा मनोनीत हुए थे। ता० ६ मई सन् १९२७ ई० को उनका प्रबल क्षय रोग से स्वर्गवास हुआ।

को जयसिंह हाई स्कूल भवन [1] की उद्घाटन क्रिया जयपुर के रेजिडेंट कर्नल एस० बी० पेटर्सन सी० आई० ई० (Col. S. B. Patterson, C. I. E.) के द्वारा सम्पन्न हुई थी। उद्घाटनोत्सव के अवसर पर रेजिडेंट साहब को सम्बोधित करते हुए श्री० राजा अमरसिंहजी बहादुर ने कहा था :—

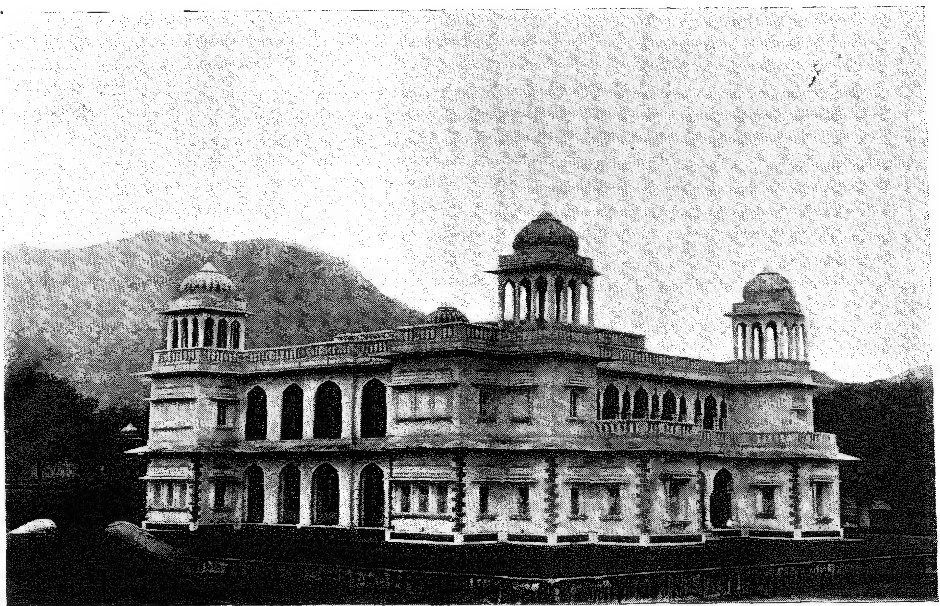
……"This building is the Jaisingh High School, named after my father Raja Jaisinghji Bahadur. He took a very keen interest in all matters concerning education in his all too short life. And so, when before death he expressed to wish that Rs. 50,000/- should be spent in charity, it was thought that this sum of money could be utilised to no better purpose than the building of a High School."……[2]

अर्थात् यह जयसिंह हाई स्कूल-भवन मेरे पिता राजा जयसिंहजी बहादुर के नाम पर है। वे अपने थोड़े से जीवन-काल

---

१ जयसिंह हाई स्कूल भवन का डिजाइन कर्नल स्विनटन के० सी० आई० ई०, आई० सी० एस० की सहायता से तैयार कराया गया था। आधार-शिला-स्थापन की क्रिया कर्नल बेली (Col. Bayley) पूर्ववर्ती जयपुर के रेजिडेंट साहब ने सम्पन्न की थी। उस समय खेतड़ी के मुनसरिम पण्डित दीनदयालुजी तिवाड़ी थे।

२ The Englishman, 1-11-1923.



जयसिंह-हाई स्कूल-भवन, खेतड़ी

में शिक्षा सम्बन्धी कामों में बहुत दिलचस्पी लेते थे। उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले पचास हजार रुपये धर्मार्थ लगाने की इच्छा प्रकट की थी। इस पर यह निश्चय किया गया कि, इस रकम को लगाने के लिये हाई स्कूल भवन से बढ़ कर दूसरा काम क्या हो सकता है।

जयपुर में राजा जयसिंहजी बहादुर के दाह-स्थान पर एक सुन्दर और बड़ी छतरी [1] बनबायी गयी है, जिसमें शिव पूजा की नियमित व्यवस्था है।

---

१ इस छतरी के बाहर स्मारक-शिला में निम्नलिखित इबारत खुदी हुई है:—

IN MEMORY OF THE

LATE RAJA JAISINGH BAHADUR

OF

KHETRI

Who passed away at Jaipur on the 30th. March 1910, at the early age of 16th. years and which still a student of the Mayo College, Ajmer greatly loved and sincerely mourned by all his subjects.

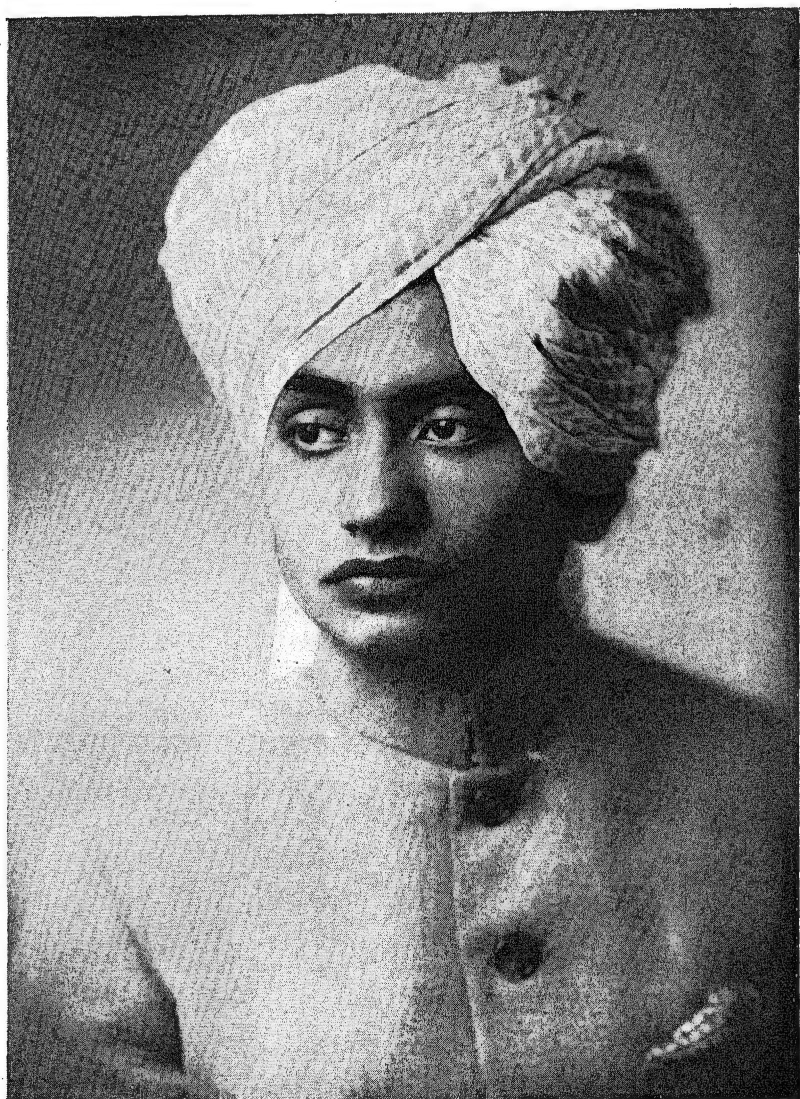
Born 27th. January 1893, died 30th. March 1910

This building was erected by his successor Raja Amar Singh Bahadur of Khetri.

सन् १६२७ ई० में श्रीमान् राजा अमरसिंहजी बहादुर का असामयिक परलोकवास होने पर ता १७ वीं मई सन् १६२७ ई० को उनके पुत्र वर्तमान खेतड़ी-नरेश श्रीमान् राजा सरदार सिंहजी बहादुर गद्दीस्थ हुए। आपका जन्म १६ वीं मार्च सन् १६२० ई० को हुआ। आप बड़े अध्ययनशील हैं। आपकी प्रतिभा में स्वर्गीय राजा जयसिंहजी बहादुर की प्रतिभा का प्रतिविंब है। खेतड़ी के तत्सामयिक सुपरिंटेण्डेण्ट मिस्टर जी० ए० कैरल (G. A. Carroll Esqr.) के तत्त्वावधान में आपकी शिक्षा-व्यवस्था हुई। आपने स्वीट्जरलेंड में शिक्षा पाकर सन् १६३४ ई० में सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा पास की। उस समय आपकी उम्र केवल १४ वर्ष की थी। इसके बाद आप मेयो कालेज अजमेर में प्रविष्ठ हुए और सन् १६३६ ई० की "पोष्ठ डिप्लोमा" परीक्षा में सर्व प्रथम रहे। सन् १६३८ ई० में आपने हायर डिप्लोमा (Higher Diploma) परीक्षा सगौरव पास की। इस समय आप कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की बी० ए० और बार-एट-ला—दोनों परीक्षाएँ पास करने के लिये इंगलेंड गये हुए हैं। ईश्वर ओपको सफलता दे। आशा है, आप अपने शासन को अपने प्रपितामह स्वर्गीय राजा अजीतसिंहजी बहादुर के आदर्श पर "राजा प्रकृतिरञ्जनात्" के सिद्धान्तानुसार सर्व-लोक-सुखावह बनाने का उद्योग करेंगे।

वर्तमान खेतड़ी नरेश



श्री० राजा सरदारसिंहजी बहादुर

परिशिष्ट

श्री० राजा साहब की स्मृतियाँ

श्री० स्वामी अखण्डानन्दजी[1] महाराज लिखते हैं :—

मेरा परिचय खेतड़ी-नरेश राजा अजीतसिंहजी बहादुर से सर्व प्रथम सन् १८९३ ई० में हुआ था। इससे पहले ही राजा साहब पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्दजी महाराज की कृपा पाकर धन्य हो चुके थे। स्वामीजी की आज्ञा के अनुसार बहुत दिनों तक मुझे भी खेतड़ी में रहने का अवसर मिला। खेतड़ी राज्य और उसकी प्रजा की उन्नति के लिये विविध प्रकार के सदनुष्ठानों में मैं भाग लेता रहा। शिक्षा-प्रचार की ओर ही मेरा मुख्य लक्ष्य था। राजा अजीतसिंहजी बहादुर स्वयं ही बड़े गुणग्राही और विद्योत्साही पुरुष-रत्न थे। फिर स्वामीजी के सत्सङ्ग के प्रभाव से उनका चरित अधिकतर समुज्ज्वल हो गया था। राजाजी का जोड़ा आज के राजस्थानी नरपति-

---

१ स्वामी अखण्डानन्दजी, प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्दजी के गुरुभाई और सहकारी कार्यकर्ता। पूर्वाश्रम का नाम गङ्गाधर। गत पूर्व वर्ष बेलूड़-मठ में परलोकवास हुआ। स्वामीजी रामकृष्ण मिशन के प्रधान थे।

समूह में दिखलाई नहीं देता। मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि, राजाजी नितिमत्ता, नम्रता एवं शिष्टाचार के मूर्तिमान स्वरूप थे। सब तरह के गुणवानों का आदर और सत्कार करना ही उनका स्वभाव था। गुणियों की परीक्षा करने की रीति भी उनकी अनूठी थी। क्षमा-गुण के तो वे आदर्श थे। मैंने स्वयं देखा कि एक पंजाबी फक्कड़ राजाजी के समीप उपस्थित होकर अकारण उन्हें गालियाँ देने लगा, फिर भी उनकी धैर्य-च्युति नहीं हुई बल्कि उसकी सेवा का यथोचित प्रबन्ध कर अपनी स्वाभाविक शिष्टता का परिचय देने में ही उन्होंने आनन्द माना। इस क्षमा-शीलता एवं अतिथि-सत्कार-परायणता का उनके दरबारियों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा था।

प्राचीन नीति वचन है—

'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।' किन्तु राजा अजीतसिंहजी बहादुर के मुँह पर अप्रिय वचन बारम्बार कह कर मैंने उनकी जो धैर्य-युक्त क्षमा देखी, वह अन्यत्र किसी राजा या रईस में दृष्टिगोचर न हुई। राजाजी वस्तुतः अति कठोर हितकारी सत्य वचन के जैसे आदर्श श्रोता थे, वैसे ही अद्भुत कर्मी भी थे।

वे अच्छे कवि थे और उनका हृदय प्रेम पूरित था। उनके रचित एक मधुर पद की याद मुझे अभी तक बनी हुई है। पद की टेक थी—"विन बिन मोकूं कछु न सुहावै। तड़फत जिय अति ही अकुलावे॥" इस पद की समाप्ति में था—"मरण न

देत आस मिलबे की।"—बस, इस शेष पंक्ति के भाव की प्रशंसा करते समय पद गाते हुए स्वामी विवेकानन्दजी महाराज मगन हो जाते थे। यह एक ही पद राजाजी के प्रेमपूर्ण भावुक हृदय का प्रकृष्ट परिचायक है। राजाजी अपनी प्रजा की उन्नति के लिये सदा तत्पर रहते थे। राजाजी की मृत्यु के थोड़े ही समय बाद स्वामी विवेकानन्दजी ने इह-लीला संवरण की। राजाजी के वियोग का उनके हृदय में बड़ा दुःख था और उस दुःख को उन्होंने कई बार हम लोगों के सामने व्यक्त किया था। वास्तव में राजा अजीतसिंहजी स्वामीजी के अनुरक्त भक्त और एक प्रधान सहायक स्तम्भ थे[1]।

श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर की शुभानुस्मृति के प्रसङ्ग में इन पंक्तियों के लेखक के जिज्ञासा करने पर स्वामी अखण्डानंदजी ने अपनी स्वानुभूत एक घटना का विवरण सुनाया था, जो उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है:—

एक वर्ष में जितने त्यौहार आते हैं, खेतड़ी में रह कर उन सब को मैंने देखा है। त्यौहार मनाने में निस्सन्देह राजपूताना बड़ा उत्साह रखता है। एक दिन राजाजी की वर्ष-गांठ का महोत्सव देखने का भी मुझे अवसर मिला। उस दिन जन्म-

---

१ "खेतड़ी नरेश और विवेकानन्द" नामक पुस्तक की प्रस्तावना से गृहीत।

तिथि के उपलक्ष में देव-पूजा, ब्राह्मण-भोजन आदि आवश्यक कृत्यों के अनन्तर दरबार होता है और राज्य के कर्मचारी तथा अन्य प्रजा के लोग नजर देते हैं। मैं यद्यपि दरबार में सम्मिलित नहीं हुआ, क्योंकि, संन्यासी के लिये यह आवश्यक नहीं था, तथापि लोगों के आग्रह से ऊपर बरिंडे में ऐसे स्थान पर बैठ गया कि, जहाँ से मुझे दरबार का दृश्य अच्छी तरह दिखलाई दे रहा था। दरबार के बीच में राजाजी खूब चमकीली पोशाक में विराजमान थे। उनके दाहिने और बाएं पार्श्व में यथाधिकार राज के सरदार और उमराव बैठे हुए थे। इनके सिवाय हाकिम अमला और प्रजा के गण्यमान्य सज्जनों से दरबार पूर्ण था। दीवानखाने से बाहर आसा-सोटाधारी चोपदार पहरे पर डटे हुए थे। दरबार के बीच एक अहलकार सूची लेकर खड़ा हुआ और जिसका नाम उसने पुकारा, वही मुहर या रुपये राजाजी की नजर करके यथास्थान बैठ गया। इसी समय एक घटना ऐसी देखने में आयी कि, जिससे मेरा हृदय विदीर्ण हो गया। मैंने देखा कि कुछ किसान, जिनके शरीर कठिन परिश्रम से पक कर श्याम हो रहे थे, झुण्ड के झुण्ड बाहर दूर खड़े हुए हैं। अपने राजा के दर्शन की लालसा से वे नजर करने के लिये दूर दूर से आये थे। उनमें से जो लोग उत्साह पूर्वक आगे बढ़ कर दरबार की शोभा देखना चाहते थे, वे बुरी तरह चोपदारों द्वारा विताड़ित कर दिये जाते थे—भेड़ बकरियों की तरह भगा दिये जाते थे।

मैंने वहां के आदमी से पूछा कि, क्यों भाई, यह क्या बात है ? उसने मुझ से कहा कि "महाराज, बात क्या ? यही राज के आधार अन्नदाता किसान हैं। किन्तु अभागों की यह दशा है कि, राजा के दरबार को देखने का भी इन्हें मौका नहीं दिया जाता। ये राजाजी को नजर देने के लिये आये हैं, परन्तु राज-दर्शन इनके भाग्य में कहाँ ? शाम को राजा का मुसाहिब बैठ कर इनसे नजर के नाम पर रुपये वसूल कर लेगा और ये गरीब रुपयों से राज के खजाने को भर कर अपने घरों को चले जायँगे। जो कर्मचारी एक दो मुहर देकर इतना सम्मान पा रहे हैं, वे बारहों महीने राज को, प्रजा को लूट कर अपना घर भरते हैं और एक दिन मुहर देकर सम्मान-भाजन बनते हैं किन्तु ये गरीब कठिन परिश्रम से अन्नोत्पादन करके राज को देते हैं, प्रजा को देते हैं और ऊपर से नजर देने के समय ऐसा सम्मान पाते हैं।"

किसानों के इस अपमान में मुझे राज-लक्ष्मी का अपमान दिखलाई दिया और मेरा हृदय जल उठा। दरबार विसर्जित हो गया, परन्तु मैं दिन भर व्याकुल रहा। सायंकाल जब राजा साहब अपने खास सरदारों के साथ बैठे, तब उन्होंने मुझ से पूछा - कहिये महाराज, दरबार का आनंद कैसा रहा ? आनंद का नाम सुनते ही मेरे चित्त में क्षोभ की लहर फिर जाग उठी। मैंने कहा—आनन्द ? कैसा आनन्द ? जिस समय आपका दरबार हो रहा था, उस समय मैं सन्ताप से जल रहा था,

मानों मेरी छाती पर एक एक पत्थर गिर रहा था। यह सुनते ही सब आश्चर्य्य चकित हो मेरी ओर ताकने लगे। राजाजी ने नम्रता से पूछा—यह क्यों महाराज ? इस पर मैंने दरबार के समय गरीबों के साथ दुर्व्यवहार होने का वृत्तान्त कह सुनाया। उस कष्ट-कथा को कहते-कहते मेरा कण्ठावरोध हो गया, आँखों से अश्रुधारा बह चली ! यह देख कर सहृदय राजाजी की भी आँखें गीली हो गयीं। उनके हृदय पर बिलक्षण बिजली सी दौड़ गयी। बड़े गम्भीर स्वर में धीरता के साथ उन्होंने कहा—"गङ्गासहाय,[1] इस बात को याददाश्त के लिये लिख लो कि, अगले दरबार में किसी को नहीं रोका जाय और सब की नजर मैं स्वयं लूँगा।"

इसके वर्ष भर बाद वर्ष-गाँठ का दरबार फिर सदा की भाँति हुआ। उसमें स्वामी विवेकानन्दजी भी उपस्थित थे। राजा साहब अजीतसिंहजी ने अपने वचन को स्मरण रक्खा और प्रजा के छोटे बड़े—सभी लोगों ने दरबार में सम्मिलित होकर स्वयं नजर देते हुए अपनी भक्ति प्रदर्शित की। वह दृश्य

---

१ गङ्गासहायजी मोदी। राजा साहब के हाथ खर्च के अहलकार। जन्म संवत् १९१२। मृत्यु संवत् १९८४।

चिरस्मरणीय था, वह भाव स्वर्गीय था और वह समय अपूर्व सुखकर था† ।

देशभक्त नेहरू-परिवार का स्वर्गीय राजा फतहसिंहजी साहब के समय से ही खेतड़ी के साथ सम्बन्ध चला आता है। वर्तमान भारत के संसार प्रसिद्ध तेजस्वी नेता श्री पण्डित जवाहरलालजी नेहरू ने स्वयं अपने आत्म-चरित में खेतड़ी का नामोल्लेख किया है। पण्डित नन्दलालजी नेहरू,—स्वनाम-धन्य पण्डित मोतीलालजी नेहरू के बड़े भाई, राजा फतहसिंहजी के मन्त्री थे अतएव पण्डित मोतीलालजी भी अपने बाल्य-काल में खेतड़ी रहने का अवसर पा चुके थे। इस सम्बन्ध-परम्परा के विचार से श्री राजा अजीतसिंहजी बहादुर और श्री पण्डित मोतीलालजी साहब के बीच सदा मित्रतापूर्ण घरू व्यवहार रहा। पण्डितजी के पुत्र-रत्न श्री जवाहरलालजी के जन्म की सूचना पाकर राजा साहब ने जो बधाई का पत्र भेजा था, उससे उनकी पारस्परिक प्रीति प्रकट होती है। श्री जवाहरलालजी की जन्म-पत्रिका राजा साहब के द्वारा खेतड़ी के राज-ज्योतिषी से ही बनवा कर मंगायी गयी थी।

---

† श्री रामकृष्ण मिशन, कलकत्ता के मुखपत्र "समन्वय" (वर्ष ४ अङ्क १ संवत् १९८१) में प्रकाशित लेखक के "खेतड़ी में स्वामी विवेकानन्द और उनके गुरुभाई" शीर्षक लेख से।

श्री राजा साहब के बधाई सूचक पत्र की नकल यों है :—

KHETRI
9th. December, 1889.

My dear Panditji,

I am glad to acknowledge the reciept of your two letters and feel very much please to learn that you have been pleased with a son. I congratulate you for this.

As the horscope, it will be sent to you some time afterwards.

....

Yours Sincerely,
Sd. **Ajit Singh**

To.

Pandit Motilalji Nehru
Vakil High Court,
Allahabad.

(अनुवाद)

खेतड़ी

ता० ९ दिसम्बर १८८९ ई०

प्रिय पण्डितजी,

मैं सहर्ष आपके दो पत्रों की पहुँच स्वीकार करता हूं और यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि, आप पुत्र प्राप्ति-द्वारा आनंदित

हुए हैं। मैं इसके लिये आपको बधाई देता हूं। जन्म-पत्रिका कुछ समय बाद भेजी जायगी।

भवदीय,

पण्डित मोतीलालजी नेहरू (हस्ताक्षर) अजीतसिंह

वकील हाईकोर्ट, इलाहाबाद।

लेखक ने श्री० पण्डित जवाहरलालजी नेहरू की सेवा में पूर्वोद्धृत पत्र की नकल भेज कर स्वर्गीय राजा अजीतसिंहजी बहादुर का स्मरण दिलाया था। उत्तर में श्री० नेहरूजी ने आनन्द-भवन इलाहाबाद से अपने ता० २४-२-४० के पत्र में लिखा है:—

प्रिय शर्माजी,

आपका पत्र मिला और उसके साथ जो आपने राजा अजीतसिंहजी के पत्र की नकल भेजी है। धन्यवाद। मुझे खुशी है कि आपने श्री० राजा अजीतसिंहजी का जीवन-चरित्र लिखा है।.....................................

भवदीय,

जवाहरलाल नेहरू

काशी भारत-धर्म महामण्डल के श्री० स्वामी ज्ञानानंदजी ने लेखक के अनुरोध पर राजा साहब के संस्मरण में जो वक्तव्य दिया, वह यों है:—

मैं जब गृहस्थाश्रम छोड़ने के दो वर्ष बाद वन-प्रदेश में तपस्यादि करने के अनंतर आबू पहाड़ के शिखर को, जहाँ छावनी है, देखने के लिये गया, तब वहीं अचानक मुझे खेतड़ी नरेश श्री० राजा अजीतसिंहजी सन-सेट् पाइन्ट पर—(जहाँ बैठ कर सूर्यास्त का दर्शन किया जाता है) मिले। एक दिन की पहली मुलाकात में ही इतना प्रेम हो गया कि, जैसे बहुत दिनों की मुलाकात हो। मैं उन दिनों किशनगढ़ के महाराजा साहब की कोठी में ठहरा हुआ था और रात्रि में प्रति दिन खेतड़ी की कोठी में चला जाता था। वहाँ धर्म-चर्चा रहती थी। राजा साहब योग दर्शन पढ़ते थे। उन्हें वेदान्त का बड़ा शौक था और वे सूक्ष्म बातों को खूब समझते भी थे। जब वेदान्त सम्बन्धी उनकी शङ्काओं का समाधान किया गया, तब उनको इतना उत्साह हुआ कि जिन पण्डित गोपीनाथजी दाधीच से उन्होंने वेदान्त पढ़ा था, उन्हें पत्र भेज कर खास तौर पर मुझ से मिलाने के लिये जयपुर से बुलाया। वेदान्त विषयक शङ्का-समाधान के समय मैं अन्य दर्शनों के साथ वेदान्त का समन्वय सिद्ध करता था। मैंने यह समझाने का प्रयत्न किया था कि, वेदान्त के साथ अन्य दर्शनों का जो विरोध है, वह वास्तविक विरोध नहीं है। हमारे यहाँ सात ज्ञान-भूमियाँ मानी गयी हैं और उन ७ ज्ञान-भूमियों के अनुसार सातों (?) दर्शनों का विभाग यथाक्रम से बाँधा गया था। यथाः—पहली दो ज्ञान-भूमियों का न्याय और वैशेषिक से सम्बन्ध है और दूसरी दो

ज्ञान-भूमियों का योग एवं सांख्य से सम्बन्ध है। बाकी तीन ज्ञान-भूमियों से वेद के तीनों मीमांसा शास्त्र सम्बन्ध रखते हैं। उनमें से अन्तिम ज्ञान-भूमि के साथ वेदान्त का सम्बन्ध है। इस कारण यदि ज्ञान-भूमियों के रहस्य के साथ इन दर्शनों का सम्बन्ध देखा जाय तो विरोध कुछ भी नहीं है। इसी सिद्धान्त को लक्ष्य में रख कर एकात्मवाद और बहु-पुरुषवाद आदि सिद्धान्तों पर विचार हुआ करता था। उसमें राजा साहब को अपने पूर्वाङ्कित संस्कार से कुछ विरोध मालूम देता था। इसीलिये उन्होंने जयपुर से पण्डित गोपीनाथजी दाधीच को बुलाया था। पण्डितजी के आने के बाद कई दिनों तक विचार होता रहा—उसमें हम तीनों को और कई सभासदों को बड़ा आनन्द आता था। परस्पर के विचार-विनिमय के फल से फिर सिद्धान्त का विरोध भी न रहा।

श्री राजा अजीतसिंहजी को योग की सिद्धियों का बड़ा शौक था और इस प्रसङ्ग में उनका कई धूर्तों से पाला पड़ चुका था, इसलिये उन्हें कुछ अश्रद्धा सी हो गयी थी। परन्तु योग-दर्शन पढ़ने के बाद उनकी सब शङ्काएं दूर हो गयीं और मालूम हो गया कि, सिद्धियां कुल-कामिनी के अङ्गदर्शन की भाँति हैं। राजा साहब बड़े सङ्गीत-प्रिय भी थे और उनसे मेरी प्रथम भेंट का कारण भी उनकी सङ्गीत-प्रियता ही हुआ। मैं आबू पहाड़ पर अकेला सूर्यास्त के दृश्य को देख कर कुछ भगवत् गुण गुन-गुना रहा था कि राजाजी चुपके से पीछे आकर खड़े हो गये

और ज्यों ही मैंने पीछे को मुड़ कर देखा तो उन्होंने बड़े विनम्र शब्दों में मुझ से परिचय किया। इसके बाद खूब साथ रहा।

तदनन्तर दो तीन बार अजमेर में भी राजा साहब से मिलने का मुझे अवसर मिला। अजमेर में खास बात यह हुई कि, दिल्ली में यदि आप ज्योतिष-यन्त्रालय खोलेंगे—जिसमें पूर्वीय और पश्चिमीय—दोनों प्रकार के यंत्र रहें, तो मैं एक लाख रुपये नकद दूंगा और एक लाख रुपये के करीब के यंत्र प्रदान करूंगा। राजाजी से यह सलाह होने के बाद मैंने लार्ड कर्जन (तत्सामयिक गवर्नर जनरल और वाइसराय) से प्रस्ताव किया था कि उनके नाम से एक आवजरवेटरी (ज्योतिष -यन्त्रशाला) दिल्ली के मान-मन्दिर के स्थान पर खोली जाय, जिससे उस मंदिर का जीर्णोद्धार होकर एक अच्छे ज्योतिष-यंत्रालय के अभाव की पूर्ति हो जाय। लार्ड कर्जन ने इस प्रस्ताव को बड़े उत्साह से स्वीकार किया था और विलायत के बड़े बड़े विशेषज्ञों से परामर्श करके एक वर्ष बाद मुझे जवाब दिया और बिलंब के लिये क्षमा माँगी। लार्ड कर्जन ने लिखा था कि १४ लाख रुपये इस काम में व्यय होंगे। इनमें से आधे रुपये का प्रबंध हो जाय तो आधे—अर्थात् सात लाख रुपये गवर्नमेंट दे सकती है। जिस समय बड़े लाट (लार्ड कर्जन) का मुझे यह उत्तर मिला, दुःख है कि उस समय इस काम में खास दिलचस्पी रखनेवाले राजा अजीतसिंहजी बहादुर की मृत्यु हो चुकी थी और इससे मेरा

उत्साह टूट गया था। अतएव मैंने फिर इस सम्बन्ध में कुछ उद्योग नहीं किया।

मैंने एक भारतवर्ष-व्यापी वर्णाश्रम धर्मियों की संस्था स्थापित करने का अपना विचार जब राजा साहब को सुनाया, तब उन्होंने उस संस्था के व्यय निर्वाहार्थ एक सौ रुपये की मासिक सहायता देने का वचन दिया था।

संयोगवश सन् १६०१ ई० के जनवरी महीने में मैं आगरे जाकर रायबहादुर ला० बैजनाथ (जज) के यहाँ ठहरा हुआ था। मृत्यु दिवस से एक दिन पहले मैं राजा साहब से मिला था। पश्चात् कार्यवश मैं आगरे से चला आया। इसके बाद हाथरस स्टेशन पर मुझे शाहपुरा के महाराजकुमार से यह दुःसंवाद मिला कि, अचानक सिकन्दरे पर से गिर जाने की दुर्घटना के कारण राजा साहब की मृत्यु हो गयी! वे एक उदाराशय एवं उच्च भावापन्न नर-रत्न थे।

श्री राजा अजीतसिंहजी बहादुर के समय में पण्डित रामचन्द्रजी दूबे खेतड़ी हाई-स्कूल में अध्यापक थे। उन्होंने खेतड़ी के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखी है, वह अभी छपी नहीं है। उसमें श्री दूबेजी ने राजाजी के प्रकरण में लिखा है :—

श्रीमान् राजा साहब अजीतसिंहजी बहादुर एक अच्छे खुशरू जवान थे। वर्ण गौर, शारीरिक संघटन सुदृढ़, कद लम्बा, ललाट उच्च, मस्तिष्क बड़ा, मुखाकृति प्रभावशालिनी

और वक्षस्थल चौड़ा था। आपका स्वभाव हँसमुख, मिलनसार और नम्र था। राजसी उद्दण्डता तथा गर्व आपके पास फटकने नहीं पाया था। यद्यपि आपकी स्कूल या कालेज की शिक्षा उच्च नहीं हुई थी, परन्तु आपका स्वाध्याय बहुत बढ़ा-चढ़ा था। आपने संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू-फारसी आदि भाषाओं तथा गणित, ज्योतिष, विज्ञान और दर्शन आदि विषयों में स्वाध्याय द्वारा ही अच्छी प्रगति प्राप्त कर ली थी। जब से स्वामी विवेकानन्दजी महाराज से साक्षात्कार हुआ था, तब से आपकी अभिरुचि विशेष रूप से दर्शन शास्त्र तथा आध्यात्मिक विषयों की ओर अधिक हो गयी थी। सरस्वती-सेवा का आपको एक प्रकार से व्यसन था। आप हिन्दी भाषा में भक्ति-रस के पदों की रचना भी करते थे।

राजा साहब पुरुष-परीक्षा में बड़े निपुण थे। अच्छे विद्वान्, गुणी एवं कारीगर आपने एकत्र किये थे और वह भी बहुत सस्ते मूल्य पर। श्रीमान् में एक ऐसी मोहिनी शक्ति थी कि, जिसके द्वारा कोई भी, जिसका एक बार श्रीमान् से साक्षात्कार हो जाता फिर कदापि आपसे अलग होने की इच्छा न करता। आपके स्वर्गारोहण के पश्चात् वह मण्डली बिखर गयी। श्रीमान् की सेवा में रहते हुए जो एक पेटिये पर मस्त थे, उन्हीं को सौ-सौ दो-दो सौ रुपये मासिक के निमन्त्रण आने लगे।

श्रीमान् राजा साहब, उचित प्रार्थना मानने को सदा तैयार रहते थे। लेखक जब सन् १८९७ ई० में खेतड़ी आया, तब वहाँ

यह नियम प्रचलित था कि, चोपदारों (जिनकी संख्या लगभग ४०० होगी) या दारोगों (जो संख्या में ४०० या इससे कुछ अधिक होंगे) में से कोई मर जाय तो प्रत्येक कर्मचारी की एक रोज की तनख्वाह काट कर मृतक के वारिस को दी जाय। स्थानीय लोगों को यह नियम अखरता भी नहीं था, क्योंकि, शादी-गमी के मौकों पर उनको भी राज से कुछ-न-कुछ सहायता मिल ही जाती थी। परन्तु बाहरवालों को यह नियम असह्य था। लेखक को—जो यू० पी० का निवासी, फिर कालेज से ताजा निकला हुआ था, यह बहुत अखरा। उसने निवेदन-पत्र दिया कि बाहरी लोगों से यह 'कर' न लिया जाय और भी कई महाशयों ने उक्त निवेदन-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये किन्तु कार्रवाई होते-होते एक वर्ष से अधिक बीत गया। इस बीच में कई दिनों की तनख्वाह कट गयी। इससे खिन्न हो लेखक इस्तीफा देकर चला गया। परन्तु जब अन्त में यह निवेदन-पत्र श्रीमान् की सेवा में उपस्थित हुआ, तब उन्होंने एक दम सब विदेशियों का यह एक रोजा माफ फरमाया और लेखक को फिर वापस बुलाया, जिस से सन् १९०० ई० में वह पुनः अपने पद पर लौट आया।

राजा साहब गुण ग्राहिकता में एक ही थे।

राजा साहब के मित्रों की संख्या बहुत बड़ी थी। परन्तु यहाँ श्रीमान् के कतिपय उन्हीं विशिष्ट मित्रों की नामावली—

जिनसे पत्राचार तथा घनिष्ठ व्यवहार था, उस समय के रजि-ष्टरों से छाँट कर दी जाती है:—

(१) श्री० दादा भाई नौरोजी (M. P.) (२) श्री० एम० एम० भावनगरी (M. P.) (३) जष्टिस श्री० महादेव गोविन्द रानाड़े (४) लार्ड रिपन (५) लार्ड लैंसडाउन (६) सर डबल्यू ली० बार्नर (७) सर ए० सी० लायल (८) डाक्टर हेंडली (६) जनरल जे० सी० ब्रुक (१०) कर्नल वायली (११) कर्नल बाल्टर (१२) कर्नल ट्रेवर (१३) कर्नल ला (१४) जी० आर० इर्विन इस्कायर (१५) मुन्शी हाफिज अब्दुल करीम, सी० आई० ई० (श्रीमती सम्राज्ञी महारानी विक्टोरिया के भारतीय सेक्रेटरी) (१६) श्री० महाराजा सरदार सिंहजी साहब बहादुर, जोधपुर (१७) श्री० महाराजा गङ्गासिंहजी साहब बहादुर, बीकानेर (१८) श्री० महाराजा जयसिंहजी साहब बहादुर, अलवर (१६) श्री० महाराजा प्रतापसिंहजी साहब बहादुर, जम्मू-कश्मीर (२०) श्री० महाराजा कर्नल सर प्रतापसिंहजी साहब बहादुर, जोधपुर (२१) श्री० महारावत रघुनाथसिंहजी साहब बहादुर, प्रतापगढ़ (२२) श्री० महाराजा भँवरपाल देवजी साहब बहादुर, करौली (२३) श्री० महाराव उमेदसिंहजी साहब बहादुर, कोटा, (२४) श्री० प्रिंस रणजीत सिंहजी साहब (प्रसिद्ध क्रिकेट के खिलाड़ी) (२५) श्री० राजा-धिराज नाहरसिंहजी साहब, शाहपुरा (२६) श्री० महाराव केशरीसिंहजी साहब, सिरोही (२७) श्री० महाराजा महताब

सिंहजी साहब, नरसिंहगढ़ (२८) श्री० ठाकुर साहब गोंडाल (२६) श्री० ठाकुर साहब मोरवी (३०) श्री० नवाब हमीद अलीखाँजी साहब, रामपुर (३१) श्री० नवाब अमीरुद्दीनजी साहब, लोहारू (३२) श्री नवाब शेखमियांजी साहब, मंगरोल (३३) श्री राजकुमार सामन्तसिंहजी साहब, पालिताना (३४) श्री० राव राजा माधवसिंहजी साहब बहादुर, सीकर (३५) श्री० रावबहादुर ठा० गोविंदसिंहजा साहब चोमू (३६) श्री० कुँवर नारायणसिंहजी साहब चाँपावत (३७) श्री० ठा० गङ्गा सिंहजी साहब, कमाण्डर-इन-चीफ, अलवर स्टेट (३८) श्री० सर सौरिन्द्रमोहनजी टैगोर, राजवाटी, कलकत्ता (३६) श्री पण्डित मोतीलालजी नेहरू, इलाहाबाद (४०) श्री० राजा सेठ गोकुलदासजी वल्लभदास, जब्बलपुर (४१) श्री० संघी वच्छराजजी साहब बख्शी और मेंबर कौंसिल, जोधपुर (४२) श्री० राजा लक्ष्मणसिंहजी साहब, आगरा (४३) श्री० सेठ लछमनदासजी साहब, मथुरा । इत्यादि ।

\+ + +

श्री० राजा लक्ष्मणसिंहजी साहब (आगरा) [१] ने अपनी कृति—"रघुवंश का भाषान्तर" की लिखित प्रति श्री० राजाजी

---

१ श्री राजा लक्ष्मणसिंहजी साहब, आगरा निवासी पुराने प्रसिद्ध हिन्दी साहित्य-सेवी । जन्म ता० ९ अक्टूबर सन् १८२६ ई० । यदुवंशी क्षत्रिय । आगरा कालेज से सीनियर परीक्षा पास की । आरंभ में पश्चिमोत्तर देश के

बहादुर को भेजकर आपकी सम्मति जाननी चाही थी। उत्तर में अजमेर के मुकाम से अपने २५ फरवरी सन् १८६० ई० के पत्र में श्री० राजाजी बहादुर ने श्री० राजा साहब को लिखा था :—मुझे आपके १३ फरवरी के पत्र की प्राप्ति स्वीकार करते हुए प्रसन्नता होती है। आपने अपनी रचित पुस्तक 'रघुवंश' की लिखित प्रति भेजी, इसे मैं अपने पास रक्खूंगा और खेतड़ी पहुँचने के बाद इसके सम्बन्ध में आपको अपनी सम्मति लिखूंगा और यह भी लिखूंगा कि, इस अनुवाद को मेरे यहाँ के लोग कैसा पसन्द करते हैं। मैं पिछले १२ दिनों से यहां—अजमेर आया हुआ हूँ। यहाँ "वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा" की तीसरी मीटिंग होने वाली है। सभा के मेम्बर सब यहाँ एक दो दिन में पहुंच जायँगे। A. G. G.— कर्नल वाल्टर, H. R. H. प्रिंस एलबर्ट विक्टर के साथ कल वापस आने वाले हैं। हिज राईट ऑनरेबल प्रिंस, जयपुर से यहाँ ता० १७ (फरवरी) को आये थे और उसी दिन शाम को रवाना हो गये। उनके लिये यहाँ उस दिन अच्छा जल्सा हुआ। मैंने भी

छोटे लाट के दफ्तर में अनुवादक, फिर तहसीलदार, डिप्टी कलेक्टर और अन्त में पहले दर्जे के डिप्टी कलेक्टर। सन् १८८९ ई० में सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण किया। मुख्य कृति—शकुन्तला, मेघदूत और रघुवंश,—तीनों का भाषानुवाद। देहांत—ता० १४ जुलाई सन् १८९६ ई०। (हिन्दी कोविद रत्नमाला, भाग १ पृष्ठ ८-१०)

रेजिडेंसी बंगले पर श्रीमान् प्रिंस से मिलने का सम्मान प्राप्त किया।”............

श्री राजाजी बहादुर के उक्त पत्रांश से जहाँ हिन्दी साहित्य-सेवी श्री० राजा लक्ष्मणसिंहजी साहब के साथ घनिष्ठता प्रकट होती है, वहाँ हिज राइट ऑनरेबल प्रिंस एलबर्ट के साथ भेंट होने की सूचना के साथ यह भी प्रकट होता है, कि श्री० राजा जी बहादुर राजपुत्र हितकारिणी सभा के कार्यकारी सदस्यों में से थे, जो राजस्थानी क्षत्रिय-समाज के हित-साधनार्थ ही स्थापित हुई थी।

\+ + +

मुन्शी जगमोहनलालजी [१] श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर के एक विश्वस्त सेवक थे। लेखक ने मुन्शीजी को राजा

---

१ मुन्शी जगमोहनलालजी, खेतड़ी के स्वर्गीय राजा फतहसिंहजी बहादुर के विश्वास-पात्र कामदार मुन्शी हरिबख्शजी माथुर कायस्थ, जयपुर निवासी के पुत्र थे। संवत् १९२३ में उनका जन्म हुआ था। अपनी उम्र के १७ वें वर्ष तक वे जयपुर रहे और विद्याध्ययन किया। संवत् १९४१ में पिता का देहान्त हो जाने के कारण श्री राजा अजीतसिंहजी साहब की सेवा में उपस्थित हुए। राजा साहब ने शिक्षा दिला कर उन्हें सब तरह से योग्य बनाया और उन से राजकीय सेवाएं लीं। विभिन्न पदों पर कार्य करने के अनंतर वे खेतड़ी की मुख्तियारी (राज-सभा) के वैदेशिक विभाग के सदस्य बना दिये गये थे। राजा साहब के स्वर्गवास के बाद सन् १९०१ ई० में

साहब के जीवन की विशेष बातें जानने के लिये एक प्रश्नात्मक पत्र लिखा था। उसके उत्तर में उनका जो पत्र मिला, वह यहां ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है :—

मुन्शीजी खेतड़ी की सेवा से अलग हुए। तदनंतर प्रायः २॥ वर्ष वे खेतड़ी के प्रतिष्ठित प्रजाजन भारत विख्यात शौकीन सेठ दुलीचंदजी ककरानियां (चिड़ावा निवासी—कलकत्ता प्रवासी) के आतिथ्य में कलकत्ते रहे। सन् १९०३ ई० में अलवर के महाराजा सर श्री जयसिंहजी देव महोदय ने मुन्शीजी की अपने यहां नियुक्ति की। वहां क्रमशः उन्होंने अलवर-दरबार के डिपार्टमेंटल सेक्रेटरी, जुडिशियल सेक्रेटरी, प्राइवेट सेक्रेटरी, स्टेट सेक्रेटरी और महकमा आलिया हुजूरी के जनरल सुपरिंटेंडेंट—इत्यादि पदों पर रहकर बड़ी दक्षता से कार्य किया। सन् १९१६ ई० में श्री अलवरेन्द्र ने इतिहास कार्यालय की स्थापना कर मुन्शीजी को उसका अध्यक्ष बनाया। मुन्शीजी संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू—फारसी के अतिरिक्त और भी कई एक प्रान्तीय भाषाएं जानते थे। अलवर के इतिहास का अधिकांश भाग मुन्शीजी के तत्त्वावधान में सम्पादित हुआ था। स्वर्गीय अलवरेन्द्र ने उन्हें 'ताजीम' का सम्मान देनेके बाद 'राज्यरत्न' की पदवी प्रदान की थी। सन् १९२१ ई० में मुन्शीजी का परलोकवास हुआ। 'तीर्थयात्रा,' 'रामधर्म,' 'हितकी-बात' आदि पुस्तकें मुन्शीजी की रचित हैं। वे कविता भी करते थे।

परिशिष्ट

श्रीहरिःशरणम्

अलवर

ता० ३-१-१९२१ ई०

श्रीयुक्त पण्डितजी महाराज,

सादर प्रणाम। आपका कृपा-पत्र मिला। धन्यवाद। 'जगत् में मुंह देखे की प्रीति'—यह कहावत प्रचलित है; किन्तु आप हमारे स्वामी स्वर्गीय राजा अजीतसिंहजी बहादुर का जीवन-चरित्र लिखने की धुन में इतना परिश्रम उठा रहे हैं? इससे यह सिद्ध हो गया कि, सभी लोग मतलबी नहीं हैं। दुःख केवल यही है कि इस परिश्रम का महत्त्व समझ कर उपकृत होने वाले श्री० राजा जयसिंहजी बहादुर आज संसार में नहीं हैं। मैं तो यही कहता हूं कि, आप धन्य हैं, धन्य हैं, धन्य हैं।

आपने राजा साहब की कविता तथा जीवन सम्बन्धी विशेष बातें जानने की इच्छा प्रकट की। आपका अनुरोध सिर माथे पर। इसी पत्र में यथाशक्ति आपके प्रश्नों का उत्तर लिखाता हूं। मेरी तबियत अब रोज बरोज गिरती जाती है, फिर शायद इतना लिखाने का भी संपट न बँधे। बड़ा अशक्त हो गया हूं। राजाजी बहादुर के सम्बन्ध में क्या क्या लिखूं महाराज, वे विद्या के अनुरागी एक ही थे। बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। सङ्गीत के शौकीन और अच्छे ज्ञाता थे। फौजी कामों में तथा पोलो आदि मरदाने खेलों में अच्छी निपुणता थी। अपने राज्य का प्रबन्ध उन्होंने ऐसा उत्तम किया कि, सब देखते

रह गये। उनका साइन्टिफिक ब्रेन देख कर लोग बहुत चकित हुए थे। बन्दूक का निशाना लगाने में अद्वितीय थे। चतुराई और सूक्ष्म-विचारशीलता तो मानों उनके हिस्से में ही आ गयी थी। उन्होंने इतने भारी भारी सिंहों का और इतने अधिक खुले पर्वतों में शिकार किया कि, जिनकी संख्या का बोध केवल रजिस्टरों के देखने से ही हो सकता है। वे अच्छे कवि थे। उनकी रची हुई अनेक कविताओं का संग्रह मैंने एक कापी में किया था, वह कापी मेरे अलवर से जामनगर जाते समय सिद्ध-पुर के मुकाम पर बहुत माल-असबाब कागज-पत्तर पुस्तक आदि चोरी चले गये, जिनके साथ चोरी गयी। ऐसी बहुमूल्य बातें अत्यन्त परिश्रम से संग्रह की हुई, उस मेरी प्राइवेट कापी में थीं वे सब क्षण भर में नष्ट हो गयीं। चोरों को कुछ लाभ न हुआ और मेरा सर्वस्व जाता रहा। जबानी इतनी बातें याद कैसे रह सकती हैं? खैर,

टोंक के वर्तमान नवाब साहब इब्राहिम अलीखांजी की रची हुई एक ठुमरी किसी ने अच्छी ध्वनि से गायी थी। ठुमरी के आरम्भ का टुकड़ा था:—"तरफत जियरा समझत नाहीं, बरजत हूं, पर मानत नाहीं।" श्री० राजाजी बहादुर ने हम लोगों (दरबारियों) को उसी वजन की ठुमरियाँ बनाने का हुक्म दिया। कई ठुमरियाँ बनीं, परन्तु सब में श्रेष्ठ श्रीमान् राजा साहब की रचित ही थी। उसकी टेक थी—"विन बिन मोहि को कछु न सुहावै, तरफत चित अति ही अकुलावै।"

श्रीमान् की बनायी हुई देवीजी की एक स्तुति भी भाव पूर्ण थी, परन्तु याद नहीं है। एक पद लंदन-यात्रा के समय श्रीमान् राजाजी बहादुर ने जहाज में बैठे-बैठे समुद्र की लहरों पर लक्ष्य करके विहाग-राग में चित्त की वृत्तियों को स्थिर करने का बड़ा विलक्षण लिखा था। "लखत आनँद समुद्र अपार, कि थिर मन होत है तिहिं वार—" इस आस्ताई के आगे प्रत्येक अन्तरे में मन को स्थिर करने की एक एक रीति बतलाई थी। मसलन किसी अन्तरे में था कि—"भ्रूमधि दृष्टि धार, जय मन ओंकार।" इत्यादि लंदन के निकट लिखा हुआ असल पद नरेश की स्वयं लेखिनी का उसी कापी में था, जो चोरी गयी। उस कापी में एक, दो, तीन, चार, (अङ्कात्मक) वर्णमाला भी श्रीमान् नरेश की आविष्कार की हुई थी, जिससे कोसों दूर होने पर भी दिन में झण्डियों आदि से और रात को लालटेनों से बातें की जा सकतीं और हम लोग बराबर किया करते थे। कहाँ तक कहूँ—चातुर्य और कविता तो उनकी रग-रग में घुसी हुई थी। उनकी वीणा-वादन में तत्परता संङ्गीत पर अधिकार, चित्रकारी पर क़ब्जा और राजनीति में दक्षता आदि सब बातें स्वप्न की सम्पत् हो गयीं।

आश्विन में दशहरा आता है। उसके तीसरे दिन शुक्ला १३ को "साल-गिरह" आया करती थी। चार-पाँच दिन लगा-तार उत्सव रहता था। यह उत्सव अन्तिम बार कश्मीर से

लौटते समय रावलपिण्डी में हुआ था। उस उत्सव में न जाने एक गायक ने यह गाना क्यों गाया कि,

"लुत्फ़े ज़िन्दगी खोया दफ़ातन जुदा होकर।
यार ने दिया धोखा उम्रे-बेवफा होकर॥

हम लोग इस भेद को कुछ न समझ सके और गाने वाले को रोक भी दिया कि दुःख का ऐसा गीत न गाओ, खुशी का गाना गाओ। परन्तु वहाँ तो दूसरा ही नक़शा जमा हुआ था। हाय! फिर दूसरी वर्षगांठ या सालगिरह उनको तो नहीं आयी। ता० १८ जनवरी सन् १६०१ को जब आगरे में वैकुण्ठबास हुआ तब वह बात याद जरूर आयी कि ओह! उस उत्सव में ऐसा गीत गाया गया था। बस,—पुराना दुःख याद आ गया। अब अधिक नहीं लिखा जाता महाराज, क्षमा कीजियेगा।

आपका,

जगमोहनलाल

\+ \+ \+

श्री० पण्डित लक्ष्मीनारायणजी[1] जयपुर से अपने ता० १-१-२५ ई० के विस्तृत पत्र में लिखते हैं :—

---

१ श्री पण्डित लक्ष्मीनारायणजी श्रीमान् राजा साहब के विद्या-गुरु और प्रधान मंत्री स्वर्गीय पण्डित गोपीनाथजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। मुन्शी

परिशिष्ट

संवत् १९५१ में श्रीमान् राजा अजीतसिंहजी बहादुर को Sunstroke की व्याधि हो गयी थी और इसलिये डाक्टर सी० पी० ल्युकिस की सम्मति से जल-वायु परिवर्तन के लिये प्रवास में ही रहना पड़ा। अयोध्या, लखनऊ, देहली, मथुरा, वृन्दावन, शाहपुरा, बड़ोदा, बम्बई, महाबलेश्वर पहाड़, पूना, हैदराबाद दक्षिण, आबू और जोधपुर तक –१४ महीने का लंबा सफर करना पड़ा, उस यात्रा में चिकित्सक की सलाह के अनुसार श्रीमान् की देख-रेख और काम-काज का भार मुझ पर ही था। मैं मीर मुन्शी था। उसके बाद कश्मीर-यात्रा में भी मैं पूर्ववत् सेवा में रहा। मेरी सेवा से श्रीमान् प्रसन्न थे।

स्वस्थावस्था में जब श्रीमान् राजा साहब खेतड़ी में निवास करते, तब आपकी दिन-चर्य्या यह थी कि, प्रातःकाल शैय्यात्याग पूर्वक शौचादि से निवृत्त हो, दीवानखाने की छत पर

जगमोहनलालजी की तरह उन्हें भी श्रीमान् राजासाहब ने स्वयं व्यावहारिक शिक्षा दिलवायी थी। खेतड़ी की राज-सेवा में प्रविष्ट होकर पण्डित लक्ष्मीनारायणजी ने फौजदारी, दीवानी, खजाना और मुख्तियारी आदि विभागों की 'नायबी' की और श्रीमान् राजाजी बहादुर की पेशी में "मीर मुन्शी" पद के कार्य का सम्पादन भी किया। पण्डितजी राजा साहब के निजी सेवकों में से थे और बड़े गहरे आदमी थे। संवत् १९९३ मार्गशीर्ष कृष्णा ८ रविवार (ता० ६ दिसम्बर सन् १९३६ ई०) को जयपुर में उनका देहान्त हो गया।

दक्षिणवाले "साइवान" में आराम-कुर्सी पर विराज कर अश्वालय के घोड़ों की फिरत, अथवा "पलटन तिलंगान" या "रिसाला खास" की कवायद (जिसके लिये आज्ञा होती) का निरीक्षण करते। यदि कहीं किसी प्रकार की त्रुटि दृष्टि-गत होती, किम्वा किसी तरह की नवीनता लानी अभीष्ट होती तो आवश्यक आदेश देते जाते। इसी समयान्तर में "सलाम" करने वाले लोग उपस्थित होते, उनकी सलाम लेते। अनन्तर ७।७।। बजे डाक पहुँचने पर सब चिट्ठियों को स्वयं पढ़ते और उनके सम्बन्ध में उचित आज्ञा प्रदान करने के पश्चात् अखबारों को पढ़ते और सुनते। श्रीमान् की यह खुली आज्ञा थी कि, जिस किसी को अपने अभाव, अभियोग या दुःख-दर्द का निवेदन करना हो, वह प्रातःकाल ९ बजे अश्वालय (अस्तबल) की छत पर अपना निवेदन-पत्र लेकर उपस्थित हो जाय। इस आज्ञा के अनुसार ९।। बजे उपस्थित प्रार्थियों के प्रार्थना-पत्र मीरमुंशी से सुनकर उनके विषय में हुक्म फरमाते। पश्चात् ११ बजे भोजन करते और १२ बजे से २ बजे तक राज्य कार्य-सम्बन्धी कागज, पत्र मिसल आदि मीरमुंशी से सुनते तथा मंत्रियों से परामर्श करते। २ बजे से ४ बजे तक एकान्त में पुस्तकावलोकन और सङ्गीत का अभ्यास करते। ४ बजे के पश्चात् नित्य के काम से फ़ारिग होकर श्रीमान् बग्घी अथवा घोड़े पर सवार हो अजीत-निवास बाग में पधारते। वहाँ टेनिस का खेल होता। सायंकाल को वापस पधार कर दीवानखाने की छत अथवा कमरे में समुप-

स्थित अभिवादन (सलाम) करनेवालों का अभिवादन स्वीकार करते और गायक-मण्डली का गाना सुनते। ७ बजे के लगभग "छवि-निवास" में अथवा छत पर विराज कर पण्डित मण्डली से धर्म और शास्त्र-विषयक विचार करते। ९ बजे थाल आने पर भोजन करते और पश्चात् शयन। दिन-चर्य्या का मोटा-मोटी यह हिसाब था। इसमें आवश्यकतानुसार आगा-पीछा और कभी कभी घटा-बढ़ी भी हो जाती थी। श्रीमान् की आज्ञा थी कि श्रावणी पूर्णिमा को शाह पन्ना-लालजी के तालाब अथवा बन्ध-अजीत-समन्द पर त्रिवर्ण के लोग उपस्थित होकर धर्म-सभा के आदेशानुसार सभा के सदस्यों सहित श्रीमान् की उपस्थिति में उपाकर्म यथाविधि करें। उपाकर्म के पश्चात् ब्राह्मण-मण्डली को आदर-पूर्वक भोजन कराया जाता था। यह भी नियम था कि सन्ध्या-बन्दन की परीक्षा भी उसी दिन हो और किसी व्यक्ति में किसी प्रकार की त्रुटि और भूल हो तो वह उसका संशोधन और धर्म-सभा के निर्दिष्ट नियम से प्रायश्चित्त करे। प्रति दिन भोजन के पूर्व श्रीमान् भगवान् का चरणामृत लेते थे और गौओं को रोटियाँ, कबूतरों को अन्न, लंगूरों को भुने हुए चने और भिक्षुकों को आमान्न बँटवाते थे। प्रति व्यतिपात को ब्राह्मण-भोजन कराने का श्रीमान् का नियम था और एक स्वर्ण-मुद्रा के दान का भी। व्यतिपात के ब्राह्मण-भोजन का नाम पर्वी था।

घासीराम दाधीच प्रभृति विदूषक श्रीमान् के विनोद की सामग्री थे।

✤ ✤ ✤ ✤

श्री० राजा साहब पर-दुःख-कातर थे। जिन दिनों आप नैनीताल विराजते थे, वहीं अलवर के तत्सामयिक हिज हाईनेस श्री० महाराजा मङ्गलसिंहजी साहब बहादुर का परलोकवास हो गया था। अलवर का सेवक-समूह बड़ी चिन्ता और दुःख में पड़ गया। चिन्ता महाराजा साहब के शव को अलवर पहुँचाने की थी। उस कठिन समय में राजा साहब ने केवल समुचित व्यवस्था ही नहीं की, बल्कि, महाराजा साहब के मृत शरीर के साथ अपने एक हुजूरी ठाकुर रिधसिंहजी परशरामजीका को अलवर भेजकर अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया। वे सदा कहा करते थे कि, कष्ट पीड़ित—विपद्ग्रस्त जनों की सहायता करना मनुष्य का अवश्य पालनीय कर्त्तव्य है और यदि कोई अपने एक भाई के सङ्कट काल में, दुःख-दर्द में सहायक न हो तो उसका होना न होना बराबर है। स्वर्गीय हिज़ हाईनेस अलवरेन्द्र महाराजा सर जयसिंहजी देव बहादुर राजा साहब की उस समय की सहायता के लिये साभार उनका संस्मरण किया करते थे।

✤ ✤ ✤

संवत् १९४४-४५ के लगभग राजा अजीतसिंहजी बहादुर सर्व प्रथम कलकत्ते पधारे थे। उस समय उनका जैसा असा-

धारण स्वागत हुआ, वैसा आज तक किसी बड़े से बड़े देशी नरेश का भी नहीं हुआ। इसका कारण था श्रीमान् की प्रजा-वत्सलता-प्रधान सर्वप्रियता। विशिष्ट सज्जनों, विद्वानों, गायकों और गुणियों की उनके यहाँ भीड़ जमा रहती थी। एक दिन नजर का दरबार था। बड़े बड़े सेठ साहूकार उपस्थित थे। मध्य में स्वयं श्रीमान् विराजमान थे। रायबहादुर सेठ सूरजमलजी झुंझूनूवाला[१] प्रभृति का प्रबन्ध था। उपस्थित बड़े लोगों की 'नज़र' ली जा रही थी, कि इतने में एक बूढ़ा मनियार, जिसके चेहरे और पहनावे से गरीबी झलक रही थी हाथ में लाख की रंगदार गोलियां लिये हुए आगे बढ़ने लगा। सिपाही ने उस मैले-कुचैले आदमी को राजाजी बहादुर के पास जाने देना उचित न समझा और उसे डपट कर रोक ही नहीं दिया—बल्कि हटा दिया। संयोगवश श्रीमान् की दृष्टि उधर

रायबहादुर सेठ सूरजमलजी झुंझुनूवाला (तुलसान) चिड़ावा निवासी खेतड़ी संस्थान के प्रतिष्ठित नागरिक, कलकत्ते के व्यापार-क्षेत्र एवं मारवाड़ी समाज के एक प्रमुख नेता और भारत-विख्यात दानी सज्जन थे। तीर्थ-स्थानों पर धर्मशालाएँ बनवाना, दीन दरिद्रों को सदाव्रत देने की नियमित व्यवस्था करना और लछमनझूले का पुल बँधवाना—इत्यादि जनहितकारी कार्यों द्वारा सेठजी अपना नाम अमर कर गये हैं। उनका जन्म १४ मार्च सन् १८४७ ई० को हुआ था और १२ मार्च सन् १८९५ ई० को मृत्यु हुई।

चली गयी। उन्होंने उसी समय सिपाही को डाँट बतलायी और उस बूढ़े मनियार को अपने पास बुलाकर नाम धाम के साथ वहाँ आने का कारण पूछा। मालूम हुआ कि, वह चिड़ावे का रहने वाला खेतड़ी का एक प्रजाजन है और लाख की रंगीन गोलियां नजर करने को आया है। अतएव उसकी भेंट (वही रंगीन गोलियां) श्रीमान् ने बड़े प्रेम से ली और कहा कि "मेरे निकट तो बड़े सेठ लोग और तुम सब समान हो।"

× × ×

वर्षा ऋतु की बात है। एक दिन श्रीमान् अपने सहचर सेवकों और कृपा-पात्रों सहित साह पन्नालालजी के तालाब की पूर्व कोण-स्थित छतरी की दूसरी मंजिल में बैठे हुए थे। यह तालाब शेखावाटी भर में अपना जोड़ा नहीं रखता। प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्दजी से वार्तालाप हो रहा था। इसी समय धर्माध्यक्ष मिश्र अम्बादत्तजी ने उपस्थित होकर निवेदन किया कि एक संन्यासी बाबा श्रीमान् से मिलना चाहते हैं। मूर्ति और प्रकृति दोनों ही अद्भुत् हैं। संस्कृत भाषण में 'इदम्' शब्द का बहुल प्रयोग करने के मिश्रजी आदी थे, इसलिये श्रीमान् राजा जी उन्हें विनोद में 'मिदम्' नाम से ही सम्बोधित किया करते थे। आसन की व्यवस्था करके संन्यासी को आदर-पूर्वक लिवा लाने की श्रीमान् ने 'मिदम्' को आज्ञा दी। संन्यासी कान्तिमान, हृष्ट-पुष्ट-बलिष्ठ था। उचित अभिवादन और आदर प्रकट करने के पश्चात् आसन पर बिराजने के लिये श्रीमान् ने

संन्यासी को कहा। परन्तु संन्यासी बैठा नहीं—और खड़े-खड़े ही बोला—"क्या यहाँ के राजा तुम्हीं हो? श्रीमान् ने मुसकरा कर कहा"—हाँ, आप लोगों का सेवक मैं हूँ।" इस पर संन्यासी ने कुछ उत्तेजित भाव से कहा "इस शहर में राजा का कर्त्तव्य ही मेरी दृष्टि में नहीं आया, फिर सेवक के कठिन कार्य (सेवा-धर्म) पर अपनी आरूढ़ता प्रकट करना मिथ्याभिमान के सिवाय और क्या समझा जा सकता है?" स्वामी विवेकानन्दजी तथा प्रमुख उपस्थित लोग संन्यासी के इस कथन पर चकित हो देखने लगे। राजाजी विनयावनत हो फिर बोले—"महात्मन्, मैं तो एक क्षुद्र जीव हूं। भूल-चूक होना जीव का स्वाभाविक धर्म है। यदि कोई भूल चूक हुई हो तो कृपया क्षमा पूर्वक आज्ञा कीजिये। आगे के लिये ध्यान रक्खा जायगा।" यह सुन कर संन्यासी ने अपने क्रोध-पूर्ण स्वर में फिर कहा—"राजा! तुम्हें स्वाँग भरना तो खूब याद है, पहले मिथ्याभिमान और अब इतनी नम्रता!" मतलब कि—जैसे जैसे अपने नम्र भाषण—द्वारा राजाजी ने संन्यासी को सन्तुष्ट करने की चेष्टा की, वैसे ही वैसे वह अग्नि शर्मा का रूप धारण करता गया। यह देख कर पं० आनन्दीलालजी (अञ्जनरामजी) वैद्य से न रहा गया और उन्होंने कहा कि, महात्माजी ने बाना तो संन्यासी का धारण कर लिया, परन्तु हैं क्रोध की मूर्ति। यह सुनते ही संन्यासी आपे से बाहर हो गया। स्वामी विवेकानन्दजी ने शान्ति धारण के लिये कहा

तो उन पर भी संन्यासी कुवाक्यों की वर्षा करने लगा। यों सीमातिक्रमण होते देख श्रीमान् राजाजी ने गम्भीरता के साथ कहा—बस, महात्मन्! बहुत हो चुका। अपने लिये मुझे पूरा अधिकार है, परन्तु मैं अन्य लोगों के साथ कर्त्तव्य-वश अन्याय पूर्ण दुर्व्यवहार देख नहीं सकता। लाचार होकर मुझे न्याय पथ का अवलम्बन करना ही पड़ेगा। इस पर आप विचार कर लीजिये।" यह सुनते ही संन्यासी हँस पड़ा और कहने लगा कि —'राजन्, क्षमा और न्याय दोनों गुणों को आप में देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। तुम धन्य हो, तुम्हारे उप-देष्टा धन्य हैं।' मालूम हुआ कि संन्यासी कोरा बाबाजी नहीं—विद्वान्-चरित्रवान साधु था। शरीर का नाम रामा-नन्द था। श्रीमान् राजाजी और स्वामी विवेकानन्दजी से घण्टों तक विविध विषयों पर संन्यासी का संलाप हुआ।

एक बार राजाजी बहादुर ने कोई आपरेशन कराया था। चिकित्सकों ने रात्रि में नींद न लेने का उपचार उस दिन विशेष रूप से आवश्यक बतलाया। यह प्रयत्न होने लगा कि किसी प्रकार श्रीमान् को नींद न आने पावे। कविराज बलदेवजी कहानियाँ सुनाने में भी एक ही थे। लोगों का इशारा और राजाजी का आदेश पाकर उन्होंने एक भाग्य-घटना-घटित आश्चर्य-पूर्ण मनोहर कहानी सुनानी आरम्भ की जिसका सूत्र यह सवैया था :—

नृप मार चली अपने पिव पै पिव सांप डस्यो दुख यों परि है,
बन माँहि गई, बिनजार लई जिन बेच दई गनिका घरि है।
सुत सेज रमी जब काठ चढ़ी जल पूर थयो नदिया तरि है,
महाराजकुमार भई गुजरी अब छाछ को सोच कहा करि है।[1]

कविराजाजी के कहानी कहते कहते प्रातःकाल के ८ बज गये। सुननेवालों की उत्सुकता घटना-वैचित्र्य के कारण बढ़ती ही जाती थी। ८॥ बजे उन्होंने अपनी कहानी समाप्त की। चिकित्सकों की सम्मति के अनुसार राजाजी की आँख झपने भी नहीं पायी। कविराजाजी के इस चातुर्य से श्रीमान् विशेष प्रसन्न हुए थे। प्रसङ्ग प्रसङ्ग पर कविराजाजी अपनी रचनाएँ भी सुनाते रहते थे।

सम्वत् १९४८ में खिलाड़ी नटों की एक मण्डली खेतड़ी में आयी और श्रीमान् से तमाशा दिखलाने की आज्ञा चाही।

---

१ उस कहानी के सूत्र रूप उक्त सवैये का आधार संस्कृत का निम्न लिखित श्लोक है :—

हत्वा नृपं पतिमवेक्ष्य भुजङ्ग दष्टं
कालान्तरे विधिवशाद् गणिकाऽस्मिजाता।
पुत्रेण सङ्गतिमवाप्य चितां प्रविष्टा
शोचामि गोप गृहणी कथमद्य तक्रम् ॥"

आज्ञा दे दी गयी। आतिश का सुविशाल चौक तमाशे का मैदान बना। दर्शकों की बड़ी भीड़ लग गयी। श्रीमान् दीवानखाने के ऊपर दक्षिण कोण में आ बैठे। दिन के १० बजे तमाशा आरम्भ हुआ। तमाशे का एक भाग बड़ा टेढ़ा था। कुछ नंगी तलवारें जमीन पर तिरछी और खड़ी रख दी गयीं। एक नट ने दोनों हाथों पाँवों में तलवार बाँधी, मुँह में तलवार लगायी और लगा जमीन पर रक्खी हुई—उन तेजधार तलवारों पर कूदने फाँदने। दैव-दुर्विपाक से कुछ ग़फ़लत या असावधानी हो जाने के कारण उस नट का पाँव फिसल गया और वह घायल होकर गिर पड़ा। नट को पड़ा देख डाक्टर को शीघ्र बुलाने की आज्ञा दे श्रीमान् छत पर से स्वयं दौड़ पड़े और डाक्टर के पहुँचने तक निज का सर्जरी बक्स मँगाकर अपने हाथ से नट के घाव धो डाले और अपनी उपस्थिति में घावों के टांके लगवा कर उसे अस्पताल पहुँचवाया। डाक्टर को पूरी सावधानी से घायल की देख-रेख एवं शुश्रूषा करने की आज्ञा देकर भी आप निश्चिन्त न हुए। थोड़ी थोड़ी देर में उसकी दशा जानते रहे। घायल नट के अन्य साथियों के खान-पान की उचित व्यवस्था राज्य की ओर से कर दी गयी थी। नट के पूर्ण आरोग्य हो जाने पर श्रीमान् ने उसे इनाम देकर विदा किया और दुःख के साथ फरमाया—"ओह! पेट की ज्वाला की शान्ति के लिये मनुष्य को कैसे कैसे नाच नाचने पड़ते हैं?"

श्रीमान् राजाजी बहादुर पितृ-पक्ष में खेतड़ी और अलसीसर दोनों के पूर्व पुरुषों के निमित्त सपात्रक श्राद्ध किया करते थे। श्राद्ध का कर्म श्रद्धापूर्वक शास्त्र-विधि के अनुसार श्रीमान् स्वयं करते थे। शास्त्र-विश्वासी होने पर भी आप दम्भ और दाम्भिकों के विरोधी थे। संवत् १९५० में श्रीमान् अपनी पार्टी के साथ चिड़ावे पधारे हुए थे। रायबहादुर सेठ सूरजमलजी झुँझुनूवाला भी उस समय कलकत्ते से वहाँ आये हुए थे। पण्डित स्नेहीरामजी, पण्डित रामजीलालजी, पण्डित कालूरामजी और सिद्ध पुरुष श्री० गणेशजी प्रभृति के साथ खूब धर्म-चर्चा और शास्त्र-विचार होता रहता था। कविवर नानूलाल राणा और गोविन्दराम दर्जी अपनी अपनी कविताओं की बानगी दिखलाते थे और श्री० डेडराजजी तिवाड़ी आदि अपनी शतरंज की चातुरी। एक मौका खाती बड़ा मशहूर मसखरा—दिल्लगीबाज था, उसकी दिल्लगियों का ठाठ जमता था। राजा साहब के कृपा-पात्र उमर मीर और मौका खाती की हाजिर जवाबी की बातें सुननेवालों के दिल में हँसी की लहर पैदा करती थी। उसी अवसर में वहां अलवर से एक तांत्रिक आया। वह भैरव का प्रत्यक्ष दर्शन कराने का दावा रखता था। राजा साहब कौतूहल-प्रिय भी थे। उसे अपनी करामात दिखलाने का आपने हुक्म दिया। दम्भी तांत्रिक ने एक सामग्री की लंबी फेहरिस्त पेश की। नुसखा २५०) ३००) रु० का था। पहले दिन तो तांत्रिक ने झाँसा दे दिया। दूसरे दिन फिर सामग्री

संग्रह की गयी। विधि के उपरान्त 'बाकलों' (रँधे हुए मोठों) की बलि तैयार करके ज्यों ही आवाज लगायी कि "सुन्दर बाल रूप में कूदते हुए भैरवजी" आ उपस्थित हुए। सुचतुर राजा साहब तांत्रिक की उस्तादी को ताड़ गये और अपने एक पार्श्व-वर्ती को इशारा कर दिया। उसने तुरन्त भैरवजी के पाँवों में पड़ कर ऐसे ज़ोर से पाँव दबाया कि भैरवजी रो पड़े। तांत्रिक की पोल खुल गयी। बाल-भैरव के रूप में बालक लड़का श्री० रूड़मलजी पुजारी के बँगले में रहनेवाले बड़ागांव निवासी आनंदीलाल का था। उसे फुसला कर अपना मतलब साधने के लिये तांत्रिक ले आया था। तांत्रिक को श्री० राजाजी बहादुर ने तत्काल हवालत में बन्द करा दिया और दो दिन के बाद यह चितौनी देकर छुड़वा दिया कि—"फिर ऐसा दम्भ रच कर किसी को धोखा न देना।"

श्रीमान् राजाजी सब तरह की विद्याओं के अनुरागी थे। आपको ज्योतिष—गणित के साथ अधिक दिलचस्पी थी। आकाश के ग्रह नक्षत्र आदि देखने के यन्त्रों का आपने अच्छा संग्रह किया था और आप ज्योतिषियों को नवीन बातें समझाते रहते थे। एक दूर-वीक्षण (दुर्बीन) छवि-निवास कोठी के ऊपर लगा रक्खा था। आजकल के पञ्चाङ्गों में गणित सम्बन्धी बड़ा घोटाला है। इसलिये श्रीमान् ने खेतड़ी का पञ्चाङ्ग बनवा कर

प्रकाशित कराना आरम्भ किया था। पण्डित रूड़मलजी ज्योतिर्विद् पञ्चाङ्ग-निर्माता थे। उनके सहायक ज्योतिषियों पण्डित गौरीशङ्करजी और सीतारामजी के नाम स्मरण आते हैं। पञ्चाङ्ग बनवाने का किस्सा भी मजेदार है। पण्डित रूड़मलजी ज्योतिर्विद् ने श्रीमान् का वर्ष-फल तैयार किया था। वर्ष-फल में ग्रह जयपुर पञ्चाङ्ग के अनुसार रक्खे गये थे। मङ्गल जिस राशि पर लिखा था, श्री मान् राजा साहब को दुर्बीन से देखने पर वह दूसरी राशि पर दिखलाई दिया। उन्होंने ज्योतिर्विदूजी से इसका कारण पूछा। ज्योतिर्विदूजी ने फिर जाँच की। ग्रहलाघव की गणित से देखा तो पञ्चाङ्ग के अनुसार मिला और दृश्यगणित से देखा तो राजाजी बहादुर के कथनानुसार मङ्गल दूसरी राशि पर दिखलाई दिया। इस पर यह निश्चय हुआ कि पञ्चाङ्ग का गणित ही अशुद्ध है। अन्य ग्रहों के उदय, अस्त और ग्रहण की परीक्षा की गयी तो उसका मिलान भी नहीं बैठा। फलतः श्री० राजा साहब ने दृश्य-गणित के अनुसार पञ्चाङ्ग बनाने की आज्ञा दी। परन्तु दृश्य-गणित-ज्ञान से तब तक ज्योतिर्विद् पण्डित रूड़मल्लजी अनभिज्ञ थे। अतएव उन्हें काशी भेजा गया। काशी में प्रसिद्ध पण्डित वापूदेवजी शास्त्री से राजाजी बहादुर की आज्ञा के अनुसार पञ्चाङ्ग—दृश्य-गणित सीख कर पण्डित रूड़मल्लजी ने पञ्चाङ्ग तैयार करने में हाथ लगाया और दो वर्ष तक श्री० राजाजी बहादुर स्वयं उनके बनाये हुए पञ्चाङ्ग की

परीक्षा करते रहे। जब दुर्बीन से निरीक्षण करने पर भी कोई अन्तर दिखलाई नहीं दिया, तब आपने पञ्चाङ्ग के प्रकाशन की आज्ञा प्रदान की। तदनुसार खेतड़ी का "अजित प्रकाश" पञ्चाङ्ग प्रकाशित हुआ। खेतड़ी के पञ्चाङ्ग के प्रकाशित होते ही जयपुर की ओर से यह आपत्ति की गयी कि जयपुर के सिवाय, किसी माण्डलिक का पञ्चाङ्ग नहीं निकल सकता। बात रेजिडेंसी तक पहुँची। अन्त में जयपुर ने प्रति-षेध हटा लिया और खेतड़ी का "अजित प्रकाश पञ्चाङ्ग" संवत् १९५६ तक निकलता रहा। पञ्चाङ्ग पर पण्डित रूड़मल्लजी ज्योतिर्विद् का यह श्लोक रहता था :—

यस्यां क्षितीशोऽजितसिंह नामा,
स्वाचारनिष्ठः सुगुणैक धाम,
सा खेतड़ीति प्रथिता जगत्यां
जनोपकर्त्री विपदां प्रहर्त्री।"[1]

राजा साहब का हृदय कृतज्ञता के भावों से पूर्ण था। स्वर्गीय महाराजाधिराज सर सवाई रामसिंहजी साहब बहादुर

---

१ जहाँ अपने आचार में निष्ठा रखने वाले और सुन्दर गुणों के धाम श्री अजीतसिंह भूपति हैं, वह जनता का उपकार करनेवाली तथा विपत्तियों को हरनेवाली खेतड़ी संसार में प्रसिद्ध है।

(जयपुर) की आप पर अत्यधिक कृपा थी और उनकी देख-रेख में ही आप शिक्षा-गुण-सम्पन्न हुए थे। महाराजाधिराज साहब के परलोक वास का आपने बड़ा शोक माना और अपनी पगड़ी के साथ सदा शोक सूचक चिन्ह "सफेद पेची" लगाते रहे। चाहे कैसी ही खुशी का उत्सव क्यों न हो? रंगीन पोशाक धारण करने पर भी—वह पेची तो सफेद ही रहती थी। अपने उपकारक के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का कैसा अच्छा ढंग आपने तलाश किया?

मराठा-युद्ध के समय ईष्ट इण्डिया कम्पनी के सर्वेसर्वा लार्ड लेक (Lord Lake) थे। लार्ड लेक के समय में ही खेतड़ी को कोटपूतली का परगना प्राप्त हुआ था। लार्ड लेक खेतड़ी के भूतपूर्व राजा अभयसिंहजी साहब के पगड़ी-बदल दोस्त बने थे। जब राजा साहब सन् १८९७ ई० में इंगलैंड गये, तब वहां आपने इस बात का अनुसंधान किया कि, लार्ड लेक के वंश में इस समय कौन है और कहाँ रहता है? मालूम हुआ कि, उसकी एक पौत्री-प्रपौत्री स्काटलैंड के किसी गांव में रहती है। बस—इतना ज्ञात होते ही आप स्काटलैंड गये और गांव का पता लगाकर उस लड़की से मिले। आपके द्वारा पुरस्कृत होकर वह लड़की बड़ी प्रसन्न हुई।

अंग्रेज लोग समय का मूल्य समझते हैं और इसलिये समय के बड़े पाबन्द होते हैं। श्री राजा साहब ने अपनी विलायत-यात्रा में एक अंग्रेज को भी समय की पाबन्दी रखने का पाठ पढ़ाया था। आपने वहां एक साहब को नौकर रक्खा। साहब बहादुर को उपस्थित होने में प्रायः विलम्ब हो जाता था। एक दो बार आपने समय का खयाल रखने को कहा। किन्तु वह भी आदत से लाचार था। एक दिन उसको समय की पाबन्दी रखने के लिये अच्छी तरह सावधान किया गया किन्तु उसने यह जवाब दिया कि मेरी घड़ी लेट है। इसपर आपने उसे यह कह कर अलग कर दिया कि, अपनी घड़ी को दुरुस्त रखने के तुम्हीं जिम्मेवार हो। समय का मूल्य न समझनेवाला मेरा नौकर होने के योग्य नहीं।

राजा साहब के स्वर्गवासी होने के एक वर्ष पूर्व खेतड़ी में हैजे की बीमारी फैल गयी थी। उन दिनों श्रीमान् सपरिवार बबाई तहसील के गांव कांकरिये जा रहे थे। कांकरिया काटली नदी के किनारे एक स्वास्थ्य-प्रद स्थान है। कुछ समय तक वहाँ आपने निवास किया। कांकरिये की बावड़ी पर पानी पीने के लिये एक दिन एक किसान आया। चक्कर आ जाने के कारण वह बावड़ी में गिर गया। पानी निकालनेवालों ने हल्ला मचाया कि एक आदमी बावड़ी में गिर पड़ा। सुनते ही राजा

साहब तत्क्षण वहाँ पहुँचे और उस गरीब को पानी में से निकलवाया तथा उसे दवाओं के अपने बाक्स से दवा निकाल कर स्वयं दी। गर्म कपड़े पहनाने की जरूरत हुई तो आपने अपना गर्म कोट उतार कर पहनाने में भी सङ्कोच न किया। दो तीन दिन यत्न पूर्वक रखने के बाद जब वह ठीक हो गया, तब कुछ देकर आपने उसके घर भेजा। उस गरीब और उसके घर वालों ने श्रीमान् को अन्तःकरण से अनन्त आशीर्वाद दिये।

एक दिन की बात—कांकरिये में ही एक मीणी अपने बेटे के लिये खाने को ले जा रही थी, जो खेत में काम कर रहा था। राजा साहब ने उस औरत को बुलवा कर पूछा—बुढ़िया, कहाँ जाती है और यह क्या है? उसने साफ कह दिया कि, खेत में अपने बेटे के लिये खाने को ले जा रही हूँ। जौ का दलिया है। श्रीमान् ने 'दलिया' देखा और एक ठंढी सांस के साथ १०) रु० मीणी को देकर जाने की इजाजत दे दी। अपने निवासस्थान पर पहुँच कर आप लेट गये। किसान के खाद्य—दलिया को देखने के वाद—आपका मन उदास हो गया था। यथा समय जब आपके सामने भोजन के लिये 'थाल' आया, तब आपने सखेद कहा—"मेरे थाल में इतनी सामग्री? और मेरी प्रजा के लोगों का ऐसा निकृष्ट खाना......और कितने ही अभागों को

वक्त पर यह भी नसीब नहीं होता।" उस दिन आपने अच्छी तरह भोजन नहीं किया।

एक दिन राजा साहब अपने पार्श्ववर्तियों के साथ विराजे हुए थे। स्वामी विवेकानन्दजी के गुरु-भाई स्वामी अखण्डानन्दजी भी उपस्थित थे। स्वामीजी ने वेदान्त की चर्चा ज्यों ही आरम्भ की कि, पण्डित अम्बादत्तजी राज-मिश्र बोल उठे—"स्वामीजी महाराज, हमारे श्रीमान् ये सब बातें जानते हैं।" मिश्रजी का कथन सुनते ही स्वामीजी ने तेजस्विता के साथ कहा—"क्या खाक़ जानते हैं? आप जैसे ख़ुशामदी ही तो राजा-रईसों को बिगाड़ देते हैं। ऐसी ख़ुशामद की बातें सुनकर ही यह अभिमान हो जाता है कि हम जानते हैं। तीन लाख प्रमेय ग्रन्थ हैं। एक संसार-त्यागी संन्यासी निरन्तर अध्ययन करे और मनुष्य की परमायु १०० वर्ष—पर्यन्त अध्ययन-क्रम चलता रहे तो भी वह सब नहीं जान सकता और दिन भर राज-कार्य में व्यस्त रहनेवाले राजा साहब के लिये आप कहते हैं कि हमारे श्रीमान् सब जानते हैं। यही ख़ुशामद है। ख़ुशामदी को और जिसकी ख़ुशामद की जाय—उसको—दोनों को गिरानेवाली चीज है। कोई साधु-संन्यासी आवे और अपना उपदेश सुनावे तो आप जैसे ख़ुशामदियों के कारण उपदेश का लाभ राजा नहीं उठा सकता।" स्वामीजी ने इसी विषय में

प्रायः एक घंटा व्याख्यान फटकार दिया। सब स्तम्भित हो गये। श्री राजा साहब बड़े ध्यान से सुनते रहे और अन्त में नम्रतापूर्वक बोले—"महाराज आपको यही चाहिये था। आप लोगों से ऐसा ही स्पष्ट कथन और उपदेश हम लोग सुनना चाहते हैं। अब आप अपनी मूल चर्चा आरम्भ कीजिये।"—इसके बाद स्वामीजी ने वेदान्त सम्बन्धी अपना उपदेश सुनाया।

लेखक के प्रश्न करने पर सन् १९२३ ई० में कलकत्तास्थ प्रसिद्ध संगीतज्ञ वृद्ध सहृदय बाबू श्यामलालजी खत्री ने राजा साहब की स्मृति में लिखाया था:—

श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर खेतड़ी-नरेश से मुझे तीन बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ—दो बार कलकत्ते में और तीसरी बार लाहौर में, जब कि राजा साहब कश्मीर को जा रहे थे। राजा साहब राग-रागनियों से पूरे परिचित थे। उनके पास सब तरह के गुणियों का जमाव रहता था। पहली बार जब वे कलकत्ते पधारे; तब हाथी बागान में बाबू कीर्तिचन्द्र मित्र के मकान में ठहरे थे। यह मकान बहुत विशाल था। उस समय राजा साहब का इतना भारी स्वागत हुआ था कि वैसा प्रिंस आफ वेल्स के सिवाय किसी राजा का नहीं हुआ।

लोगों का यह कहना भी है कि सेठ दुलीचंदजी ककरानियां[1] जो भारतवर्ष के अमीरों और शौकीनों में अपने ढंग के एक ही शौकीन हैं, उनमें जो कुछ अमीराना बिलक्षणता है, वह राजा साहब की ही छाया की प्रतिच्छाया है। सेठ दुलीचन्दजी को खेतड़ी की प्रजा होने का गौरव प्राप्त है। सेठजी को राजा साहब ने ताजीम और सोने का कड़ा बख्शा था। हां,— कलकत्ते में राजा साहब ने विद्वानों और गुणियों का यथोचित स्वरूप के अनुरूप सत्कार किया था। अब वैसा कोई रईस दिखलाई नहीं देता। राजा साहब वीणा बजाने में बड़े निपुण थे। आपका वीणा-बजाना सुनकर समझनेवाले मुग्ध हो जाते

---

१ सेठ दुलीचन्दजी ककरानियां मेसर्स हरसुखदास दुलीचन्द—फर्म के मालिक, चिड़ावा (इलाका खेतड़ी) निवासी, भारतवर्ष में अपनी अमीरी और शौकीनी के लिये एक प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। कलकत्ते के दर्शनाकांक्षी देशी और विदेशी यात्रियों के लिये उनका दमदम रोड स्थित "ओरकिड डेल" नामक विलास उद्यान (बगीचा) एक विशेष स्थान बना हुआ था। अपने समय के कलकत्ते के मारवाड़ी समाज के प्रधान पुरुषों में सेठजी की गणना थी। श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय आदि संस्थाओं की स्थापना और संचालन में आपका भी सहयोग था। अन्त में भाग्यवश आर्थिक स्थिति बिगड़ गयी थी। संवत् १९८६ में काशी में परलोकवासी हुए। जन्म संवत् १९१७।

थे। एक बार आप वीणा बजा रहे थे। उस समय स्वामी विवेकानन्दजी भी मौजूद थे। स्वामीजी सिर हिला कर दाद देने लगे। स्वामीजी ने कहा था—"राजा साहब आप वीणा क्या बजाते हैं, मोहनी-मंत्र का प्रयोग करते हैं।"

सन् १९३८ ई० ता० १० एप्रिल को लाला लछमनदासजी धुँवालिया कामदार खंडेला पानां-कलां, जिनकी उम्र ७५ वर्ष के लगभग होगी—लेखक से मिले और यह कह कर अपना परिचय दिया कि, "मैं भी खेतड़ी की रिआया हूँ। श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर की कृपा और प्रजा-प्रेम से ३१ वर्ष की उम्र में उनका नौकर हुआ था। राजा साहब के स्वर्गवास के बाद संवत् १९६१ में खेतड़ी की सेवा से अलग होकर अपना जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।" लेखक ने राजाजी बहादुर के सम्बन्ध में अपना संस्मरण लिख देने का अनुरोध किया। अनुरोध की रक्षा में उसी समय लालाजी ने एक नोट लिख कर दे दिया, जो यहाँ दिया जाता है :—

बैकुण्ठवासी श्री० राजा अजीतसिंहजी बहादुर बड़े कद्रदाँ, दयालु और नीतिमान थे। अपनी रिआया और मुलाजिमों की खूब कद्र करते थे। वह हर-दिल-अजीज थे। यह उन्हीं की विशेषता थी कि, रिआया के लोग जानते थे कि, श्रीमान् हम से खुश हैं, हाकिम जानते थे कि, हम से खुश हैं और अह-

लकार समझते थे कि, हम से खुश हैं। उनका बर्ताव ही ऐसा था।

एक कहावत है—"मजदूर खुश दिल कुनदकार वेश" सो यह दया हमारे स्वर्गवासी राजाजी बहादुर में थी। अचानक रेवाड़ी स्टेशन पर मैं श्रीमान् से मिला। पढ़ लिखकर तैयार हुआ ही था। नौकरी की तलाश में था। जब आपको मालूम हुआ कि, मैं खेतड़ी की रिआया का आदमी हूँ तब मुझे अपना समझ कर ही साथ ले आये और नौकरी दे दी। स्कूल-माष्टरी, इन्स्पेक्टरी, तहसीलदारी और अन्त में नायबी माल—जैसे ओहदे दिये और भरोसे के साथ मुझ से सेवाएँ लीं।

कोटपूतली में जब टकर साहब के मार्फत माल का बन्दोबस्त (सेटलमेंट) हुआ, तब मुझे तहसीलदार मुकर्रर कर के कोट भेजा गया था। श्रीमान् राजा साहब ने कोट में गोशाला कायम करने का मुझे हुक्म दिया था। उस हुक्म की तामील में मैंने कोशिश कर के वहाँ गोशाला कायम करायी। गोशाला में एक शिला-लेख भी लगाया गया था, जिसकी इमारत के ये दोहे मुझे याद हैं :—

जय जय जय रघुवंश मणि, यादवेन्द्र नँदलाल,
गोप-ईश राधारमण, करुणामय गोपाल।

नृप दिलीप गुरु-बचन तें पुत्र जन्म कहि काज,
सेवहि धेनू नंदनी छांड़ि काम सब राज।

परिशिष्ट

यह लखि रीति अजीत नृप वंश-वृद्धि के काज,
लछमन को आज्ञा दिई कर गोशाला-काज ॥

संवत् १९५६ के भयंकर अकाल में राजा साहब ने खेतड़ी इलाके में अपने तहसीलदारों की मार्फत मुनासिब इन्तजाम कराके रिआया और मवेशियों को बचाया। अनाथों का पालन-रक्षण अनाथालय में होता था। राजा साहब के स्वर्ग-वास के बाद उनके कितने ही निजी सेवक काम छोड़ कर चले गये और जहाँ गये अच्छे ओहदों पर काम किया।

राजा साहब का दौरे के समय जहाँ मुकाम होता, वहाँ से आप अक्सर अकेले पैदल या घोड़े पर गाँव वालों की हालत मालूम करने को जाते और उनके सुख-दुःख की पूछते। आप उन्हें यह मालूम नहीं होने देते कि, राजा साहब यही हैं। जिसको गरीब—सहायता के योग्य समझते उसको देते भी। जिनका काम अटका हुआ होता, उनको केम्प (डेरे) पर बुलाकर उनका काम निकलवाते। श्रीमान राजा साहब प्रजा के सुख-दुःख का सच्चा हाल खुद मालूम करने के आदी थे।

अगर्चे राजा साहब का वैकुण्ठवास हुए ३७ वर्ष व्यतीत हो चुके, मगर मेरे जैसे सेवक और रिआया के लोग, जो अब तक जीवित हैं, वे सब श्रीमान् को भक्ति के साथ याद करते है।

लछमन दास।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१६	अधिक	अथक
५	१२	अवसाद्-मस्त	अवसाद्-ग्रस्त
७	५	सम्बन्ध में	सम्बन्ध से
८	२२	Vol. II	Vol. III
६	२०	पाप्त	प्राप्त
१२	१७	स्टेट	इष्टेट
२६	२२	राजाश्री	राजश्री
३८	१७	उमर मीद्	उमर मीर
४५	३	दान की	प्रदान करने की
४६	१८	करबी	कड़बी
५७	१३	अस्थि	अस्थियाँ
५७	२०	के	का
८३	२	आत्त्म	आत्म
६६	२१	१६१८ वि०	१६८१ वि०
१११	१६	उसी	उस
१६८	४	his	him

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६६	१२	appealants	appellants
१८५	८	मेडेटेरेनिय	मेडेटेरेनियन
२०१	१८	हिन्दू	हिन्दुस्थानी
२१२	५	गया	था
२६५	२	Delhi	Jaipur
३०५	१	रहने	रखने
३११	६	साहव	साहबा
३१४	१३	बाल-शखा	बाल-सखा
३३४	२	कर्गल	कर्नल
३३८	२	नितिमत्ता	नीतिमत्ता
३५२	६	ली० बार्नर	ली० वार्नर
३५२	८	कर्नल बाल्टर	कर्नल वाल्टर
३८२	१६	इमारत	इबारत